MANAV ASTRO & VEDIC 8586094945 , 8302680069

सभी प्रसंगों व विवादों का न्याय क्षेत्र बालोतरा ही होगा।

संवत्-२०८२

“त्रिकाल ज्योति” समाचार पत्र का पंचांग विशेषांक

राजा,फलेश-शनि

उपराजा, मंत्री, मेघेश, दुर्गेश-सूर्य

।।श्री महालक्ष्म्यै नमः।।

सस्येश,नीरसेश,धनेश -बुध

धान्येश- मंगल

चतुरंग बलोराजा जगती वशमानयेत् ।
अहं पंचांग बलवान् आकाशं वशमानये।।

त्रिकाल ज्योति पंचांगम् सर्व शास्त्र समन्वितम्।
सरलं सुलभं सर्वमान्यं भारतादि देशकम् ।।

पंचांग प्रवर्तक
दैवज्ञ स्व.पं.भवानीशंकर द्विवेदी

ग्रामे नगरे पुरे प्रान्ते प्रचारं बहुवर्तते । त्रिकाल ज्योति पंचांगम् ब्रह्मपक्षादिनिर्मितम्।।

त्रिकाल ज्योति

श्री विक्रम संवत् २०८२ शकः १९४७ सन् 2025–26 ई.

प्रकाशक एवं मुद्रक पं.पृथ्वीराज द्विवेदी-गणित फलित हस्तरेखा विशेषज्ञ
सम्पादक-अरुण दवे,वास्तुविज्ञ,याज्ञिक व स्नातक
त्रिकाल ज्योति पंचांग कार्यालय,बालोतरा 344022 (राज.)
फोन-कार्यालय-02988 224230,मो.9414688805,9460666431,9414755236

पंचांगकर्त्ता
पं.पृथ्वीराज द्विवेदी

प्रकाशन वर्ष
वर्ष ४४ अंक १ पक्ष १

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशन तिथि
ता.१ जनवरी २०२५ ई.
मूल्य 120/–

रसेश- शुक्र

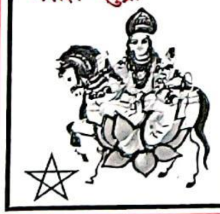

गुरु

चंद्र

संवत्सरः
वर्ष नाम
रोहिणी निवास
समय निवास
मेघ नाम
संवत्विश्वा-

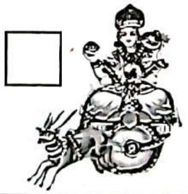

काल
मार्गशीर्ष
संधि
वैश्य
नील
द्वादश

राहु

केतु

प्राक्कथन

अहोरूप महोध्वनि !!!

सौर ब्रह्मपक्षादि पंचांग समाप्त प्रायः!

अब दृक्पक्षाभिमत (निर्णय) एक होगे। मतभेद मिटेगा। ऐकरूपता होगी। भारत सरकार को चित्रा पक्षीय गणना मान्य। पी.ए.सी.कलकत्ता से 12 भाषाओं में चित्रापक्षीय राष्ट्रीय पंचांग प्रकाशित जो इंग्लिश में **"दी इण्डियन ऐफेमेरिस एण्ड नेशनल अल्मानक"** में छपे व्रतपर्व सभी पंचागकारों को मानने होगें, बाधित! चित्रा, रेवतपक्षीय पंचांग एकमत। भूपृष्ठीय भेद समाप्त। एक केन्द्रस्थलीय पंचांग के तिथ्यादि मान्य। प्राचीन धर्मशास्त्र सूत्रों से दृष्य पंचांग धर्मकृत्य व्यवस्था एक। साम्प्रदायिक भेद समाप्त। ग्रीक, अरब, यवन, यूरोपीय अंग्रेजिदा ज्योतिषी खुश! अब भरतीय आर्ष ज्योतिष अनुसंधान समाप्त, एकाधिपत्य! केरोपन्त, वैंकटेश बापू केतकर के **नाटिकल आल्मनाक प्रोंच ग्रंथ के ज्योतिर्गणित** से निर्मित पंचांग अब मान्य। वेधशालाओं से भी मान्य। सायन निरयन भेद समाप्त। सूर्य चंद्रग्रहणादि प्रमाणित। अब हमारा धर्मशास्त्र चलेगा। सबकी छोटी हमारे हाथ में। प्राचीन अर्वाचीन समर्थक पण्डित परमुखानुपेक्षी। किंकर्तव्य विमूढ़, हमारा मुंह ताकेंगे। आपने क्या खेल खेला है **अहोरूप महोध्वनि** वत् प्रशंसा!

वस्तुतः शताब्दी पंचांग के तिथ्यादि में कुछ हेराफेरी करके पंचांगकर्ता अब खुश! **मार्त्तण्ड पंचांगकर्ता** प्रियव्रत जी शर्मा ने भी मुझे बताया था कि पी.ए.सी. कलकत्ता राष्ट्रीय पंचांग समिति का मैं भी सदस्य हूँ वहां से अंग्रेजी में प्राप्त पंचांग की हिन्दी में रूपान्तरित कर मार्त्तण्ड पंचांग छापता हूँ। आपको भी वहां का सदस्य बनवा दूं, इत्यादि! बहुमत बढ़ रहा है! वोटर बढ़ रहे है। आर्ष पंचांगकर्ता घट रहे हैं। अब बहुमत से निर्णय मान्य होंगे। सरकार बहुमत देखेगी। इनको अब कोई रोकनें, टोकनें वाला नहीं है। सम्मेलन में अपने अपनों के परस्पर हस्तोन्मेलन करतल ध्वनि से निर्णय मान्य, विजय होगी। **अहोरूप महोध्वनि गुंजायमान!**! अब दीपावली प्रदोष, निशीथ काल में नहीं, दिन में **"दीप ज्योति नमोस्तुते"** की दुंदुभी बजेगी, एक्यता होगी! ऋषियों, पूर्वाचार्यों के आर्ष ज्योतिष प्रमाण सब समाप्त। अपनें पैरों पर कुल्हाड़ी मारने की कृतघ्नता! कृतकृत्य हो गये। ऐसा हर्षोल्लास "**अहोरूप महोध्वनी**" वराहमिहर कहते हैं कि **मत्तःशास्त्रैक देशेन त्याज्यस्तादृङ् महीक्षिता**- थोड़े से ही ज्ञान से मतवाले होने वाले दैवज्ञ को राजा त्याग दे।

आस्तिन के साँप : वेदांग ज्योतिष ह्रास के कारण!

पूर्वाचार्यों के अनुसार- **लक्षंतु चतुरो वेदा, लक्षं भारत मेवच। लक्षं व्याकरणं प्रोक्तं, चतुर्लक्षंतु ज्योतिषः ।।1 ।।** वस्तुतः संपूर्ण विश्व में एक मात्र भारत ऐसा देश है जहां एक लाख वेद विज्ञान के ग्रंथ, एक लाख महाभारतादि ग्रंथ व एक लाख व्याकरणादि ग्रंथ परन्तु इन सब में ज्योतिष विज्ञान के **चार लाख ग्रंथ** ऋषि प्रणीत, अनुसंधानरत पूर्वाचार्यों द्वारा लिखे होने की गणना है। संसार के बुद्धिजीवी इसे असंभव मानते हैं! ऐसा क्या लिख दिया? बिना कम्प्युटर के कैसे लिख दिया? ऐसी कम्प्युटर बुद्धि किसकी? बिना यान, दूरबीन के ब्रह्माण्ड को कैसे छानमारा? पुरुषों में ऐसी अपुरुषेय शक्ति कैसे? आदि अनेंकानेक प्रश्नों से उद्वेलित है! समाधान खोज रहे हैं! इनका समाधान भी भारत की देवभूमि में ही मिलेगा यथा- **यत्पिण्डे तत्ब्रह्माण्डे, यत्ब्रह्माण्डे तत्पिण्डे"** यह भारत का योग शास्त्र कह रहा है। ऋषि मुनि ब्रह्मवेत्ता इसी योग क्रिया से अपने इस स्थूल शरीर में सूक्ष्मातिसूक्ष्म सारे ब्रह्माण्ड के लोकों भू, भुव, स्व, मह, जन, तप, सत्यं आदि सप्तलोकों में प्रवेश कर सब कुछ जान लेते थे। ग्रह तारा पितृलोकादि को छान मारा था। नचिकेता तो सशरीर यमलोक जाकर **मृत्यु के उस पार का सारा रहस्य** जान आया था। **चिरंजीवी हनुमान "बाल समय रवि भक्ष कियो तब तीनहुं लोक भयो अंधियारों"** के अनुसार बालक हनुमान ने सूर्य को मुँह में रख दिया था। भारतीय मय राक्षस तो अपने बनाये सोना चांदी, ताम्र इन तीनों धातुओं के विमानों से ब्रह्माण्ड में विचरण करता था। सूर्य सिद्धान्त इस सूर्यांश शिष्य मय द्वारा निर्मित भारतीय ज्योतिष गणना का प्रमुख ग्रंथ है। भगवान वामन ने तीन पांव में पृथ्वी व आकाश को नापकर दानवीर राक्षस राजा बली की परीक्षा लेकर भूगर्भ में (1) तल (2)वितल (3) सुतल (4) तलातल (5) रसातल (6)महातल (7) पाताल लोक का उसे राजा बना दिया । ये अवतारों के कथानक पुराणों में सारी सृष्टि के कल्याण करने के प्रतीक है। महाभारत को लिखने के लिये वेदव्यास जी ने गणेश जी से लिखने का निवेदन किया कि मैं बोलु आप लिखे। तब गणेश जी ने कहा कि- **श्रुत्वैतत् प्राह विघ्नेशो यदि में लेखनी क्षणम् । लिखितो नाव तिष्ठेत तदास्यां लेखको ह्यहम् ।**(महाभारत) मैं सुनता रहूंगा लिखता रहूंगा, मेरी एक क्षण भी लेखनी आपके कारण रुक गयी मैं लिखना छोड़ दूंगा। ऐतदर्थ अविराम महा भारत लिखा गया। सत्य है कि इस विशाल ज्ञान सम्पन्न इस आर्यावृत देश व सोनें की चिड़ियां कहे जाने वाले भारत को म्लेच्छों ने लूटा नष्ट भ्रष्ट किया। यथा- **चातुर्वर्ण्य व्यवस्था नं यस्मिनदेशे न विद्यते। स म्लेच्छ देशा विज्ञेय आर्यावर्त स्ततः पर।**।(धर्मशास्त्र) अर्थात् जहां वर्ण

व्यवस्था नहीं वे म्लेच्छ देश है। यथार्थतः करीब एक हजार वर्ष तक मुगलों, यवनों ने इस देश को लूटा। सरस्वती के भण्डार नालंदा विश्व विद्यालय को जलाकर भस्मि भूत कर दिया, सहस्त्रों ग्रंथ स्वाहा हो गये। इनके बाद एक सौ वर्ष तक अंग्रेजों ने इस देश को लूटा। लॉर्ड मेकाले की शिक्षा प्रणाली ने करीब चार हजार शिक्षा के केन्द्र गुरुकुलों को बंद करवा लिया। देश के लोगों का सब हुनर छीन लिया। पैसे लो, नौकरी करो। आज भी यह रोग भारतीय युवा को भटका रहा है। आरक्षण, नौकरी के आन्दोलन पूरे देश को परेशान किये हुए है। अंग्रेजों ने अपनी झूठन अंग्रेजी सिखा कर ''आस्तिन के सांप'' पैदा कर दिये। इन अंग्रेजी सांपों ने देश को खण्ड खण्ड कर दिया। ''**पयपानं भुजंगानाम् केवलं विषवर्धनम्**'' केवल विष वर्धन कर रहे हैं। इनका कहना है यूरोपियों, यवनों, अंग्रेजों से भारतीयों ने ज्योतिष सीखा है आर्ष गणना के पंचांग स्थूल, दूर भ्रष्ट अदृश्य है। इस प्रकार ये आर्ष पंचांगों के लिये प्राण घातक व अंग्रेजीदा पंचांगों के जीवन रक्षक है। सौर ब्रह्म पंचांगकर्ता पूर्णायु को प्राप्त कर गये, पंचांग बनना बंद, दृश्य पंचांगाभिमानी हर्षोल्लासित प्रसन्न है। इनके द्वारा किया जाने वाला खण्डन भी आर्ष पंचांगों के ह्रास का मुख्य कारण है।

गुरुकुल समाप्त। वंशानुगत ज्योतिषादि विद्याओं का पठन पाठन नहीं रहा, नौकरी की चाह ने इस गुरुतर विद्या को पढ़नें से मुंह मोड़ दिया। कुछ अंग्रेजीदा नौकरों ने पैतृक विद्या का आधा अधूरा ज्ञान लिया ''**यदा किंचिदज्ञोहं द्विपईवमंदाध समभवं**'' किंचित ज्ञान से भी मदांध हो गये। कहते हैं कि ''**अधूरा डाक्टर व अधूरा ज्योतिषी** '' प्राण घातक होते हैं इस विद्या के ह्रास के कारण बने। पुराने वडील कहते थे कि ''**ज्योतिषं गारुडी विद्या पिता पुत्रों न दीयते**'' योग्यताहीन कुपुत्र को भी ज्योतिष के दिव्य चक्षु का ज्ञान नहीं देते थे। शास्त्रभिज्ञ कहते हैं कि ''**आपद्यपि हि घोरायां न त्वेनामिरिणे वपेत्**'' - अर्थात् आपात काल में विद्या सहित मर जावे किन्तु अपात्र में विद्यारूपी बीज नहीं बोवे। **विद्या ब्राह्मणमेत्याह शेवधिस्तेऽस्मि रक्षमाम्। असूयकाया मां मादा स्तथा स्यां वीर्यवत्तमा।।** (धर्मशास्त्र) अर्थात् विद्या ब्राह्मण के समीप आकर बोली कि मैं तुम्हारी निधि हूं, तुम मुझे यत्नपूर्वक रक्षा करो श्रृद्धाहीन आदि दोषों से दूषित अपात्रों को मुझे मत देवो, ऐसा करने से मैं बलवती रहूंगी। तात्पर्यथः ब्राह्मण कर्मभ्रष्ट, नौकर हो गये, ब्राह्मण ब्राह्मण नहीं रहे, माँ भारती सरस्वती बलवती नहीं हुई। आस्तिन के साँपों ने उसे कमजोर कर दिया। पूत कपूत हो गये! विद्या का ह्रास हो गया!

पंचांगों में एकरूपता : चिन्तनीय बिन्दु

(1) दृश्य गणित – दृक् दृग् तथा दृश्य गणना से अभिप्राय आंखों से वह सब कुछ जो दर्शक को दृष्टि गोचर हो जाता है। सूर्यसिद्धान्त, ब्रह्मसिद्धान्त, ग्रह लाघव, मकरंद, करण कुतूहल, जय विनोद आदि आर्ष सिद्धान्तों पर बनने वालें भारतीय आर्ष पंचांग दृक्सिद्ध, वेधसिद्ध नहीं है। शताब्दी पंचांगकर्ता ने सौ वर्ष पूर्व सब देख लिया ? इस प्रकार की निंदा व प्रोपेगण्डा को छोड़ना होगा, समाधान करना होगा? पढ़े संवत् 2039 (त्रिकाल ज्योति पंचांग) के प्राक्कथन में।

(2) **सूक्ष्म दृष्टि**– मनुष्य को उदय दिखाई देने के तीन चार दिन बाद तक भी मन्द दृष्टि को दिखाई नहीं देता, ऐसा अनुभव हुआ है(भारतीय ज्योतिषी पं.बालकृष्ण पृ.586)

(3) तिथि वृद्धिः क्षय– आर्ष पंचांग ''**बांण वृद्धि रसक्षय**'' गणनासे तिथियां चलती है परन्तु दृकपक्षीय शताब्दी पंचांग में ''**सप्तवृद्धिःदशक्षयः** '' का उल्लंघन कर ''**अंकवृद्धि सार्द्धकादश क्षय**'' ही नहीं अष्टमी तिथि के आसन्न दिनों में **15 घटी** तक का अंतर हो जाता है जो झगड़े का मूल कारण है सुधारना होगा ? पढ़े संवत् 2041 का प्राक्कथन।

(4) सौर वर्षमान से–''**तिलक पंचांग पुणे**'' के विद्वानों को अन्य पंचांगों से चार पांच दिन पूर्व शुद्ध निरयन संक्राति सूर्य दृश्यमान कैसे हो रहा है ? चित्रापक्षीय निरयन दृक्सिद्ध मार्तण्ड के सौर वर्षमान अन्य स्वमतीय केतकी पंचांगों से खराब घड़ी के सुईयों की तरह आगे पीछे सांतरित रहने पर भी दृक्सिद्ध कैसे ? शताब्दी पंचांग से निर्णयसागर पंचांग नीमच व श्रीधर पंचांग किशनगढ़ **तीस पल** की हेरा फेरी से वेधसिद्ध जोधपुर चण्डू संज्ञक कैसे ? ठीक इसी प्रकार 2 पल की हेराफेरी से बिसाऊ निवासी पं.भोलाराम भवानीशंकर शर्मा चण्डू पंचांग निकाल रहे हैं चण्डू वंशियों की बपौती के नाम धोखाधड़ी क्यों ? **पंचांगों में एक रूपताःअधूरा प्रयास**–भारत सरकार द्वारा गठित ''**भारतीय समायन और ज्योतिष्क गणित पुनर्विचार समिति**'' का परिपत्र संयोजक कमोडर एस.के.चटर्जी द्वारा भेजा था। जवाब दिया गया, समाधान नहीं। पढ़े सं.2044(त्रि.ज्यो.)के प्राक्कथन में।

(5) धर्मशास्त्रीय वचनों से तिथि उत्पत्ति नहीं ?– पं.ईश्वरदत्त जी के धर्मशास्त्रीय 15 वचनों को अर्थ सहित छापकर सिद्ध किया कि इन वचनों से तिथि गणितागत उत्पत्ति नहीं है ? आगे एक पत्र में **पू.पा.जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री निरंजन देवतीर्थ** लिखते है कि ईश्वदत्त की आदत निरंतर झूठ बोलने की है। वे सदा हारने पर अपने को जीता बताते हैं। पढ़े (त्रिकाल ज्योति) संवत् 2046के व 2049 के प्राक्कथन में

(6) **तिथि मान**– भारतीय गणना से बनें पंचांगों से अलग ही नवीन दृक्पक्ष के तिथिमान होते हैं व करीब करीब हर पक्ष में तिथि टूटना व जल्दी तिथि बढ़ जाना होता ही रहता है। कभी कभी तो 10 या 15 घटी तक के फेरफार से व्रत पर्व, उत्सव बदल जाते हैं। बार– बार 13 दिन का पक्ष आ जाता है **अगस्त्योदय भिन्न** क्यों ? पढ़े (त्रिकाल ज्योति)

संवत् 2047 के प्राक्कथन में।

(7) शक प्रवेश कब ?- प्राचीन आर्ष गणित के पंचांगों में शक लिखने की प्राथमिकता थी। गणितागत शक कब बदलता है यह आधुनिक पंचांग कर्ताओं को ज्ञात नहीं है वस्तुतः **ब्रह्मपंचांग** आर्ष पंचांग गणना के उपकरण से शक प्रवेशः उस दिन शुद्धि वाली तिथि,अब्दप वाला वार होगा, उसी दिन शक प्रवेश, गण प्रवेश होगा। यह मेषेऽर्क के दो दिन बाद होगा। परन्तु नये शक का लिखना चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को कर दिया जाता है। परन्तु चैत्र शुक्ला 1 को पुराना शक गणितागत रहता है। इस भेद को समझ कर ही ब्रह्मपक्षादि पंचांग में **अयनांश गणना, चैत्र अधिक** का होना सिद्ध होता है। भास्करीय सूत्र- **असंक्रांतिमासोधिमास...... सत्यप्रमाणित होता है।**

(8) विक्रम संवत् प्रवेशः- वीर विक्रमादित्य के सम्मान व कीर्ति की स्थिरता में चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से संवत् प्रारंभ लिखा जाता है। यह गणितागत - नहीं है। दक्षिण भारत में चैत्र शुक्ल पक्ष पहिले फिर चैत्र कृष्ण पक्ष (वैशाख कृष्ण की जगह) सब मास लिखे जाते है। राजस्थान व मध्य उत्तर भारत में यथावत् मास लिखे जाते हैं।

(9) अयन चलन(अयनांश) - आधुनिक दृक्पक्ष की गणना आर्ष पद्धति से मेल नहीं खाती। ब्रह्मपक्षीय गणनाकार **शक पंचाब्धि वेदोनः(445) षष्टि भक्तोऽयनांशकाः** अर्थात् शक में से 445 हीन कर 60 का भाग देनें से अयनांश व कला आयेगी। ब्रह्मपक्षीय चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को ही गणितागत आगामी शकः लिख देने के कारण 445 हीन करते है व ग्रहलांघवीय गणितागत शक मेषेऽर्क के दो दिन बाद प्रवेश होने के पहिले वाले शक में 444 हीन करते हैं यही गूढ़ता है भिन्नता है। इस प्रकार 60 वर्षों से अयन चलन बिंदु एक अंश निरयन अक्षांश सारिणी में बदलता है। **अब अयनांश** 25 है जो गत वर्षो के 6 अंश से आगे खिसक कर निरयन सारिणी में 5 अंश पर आ गया है। पहले की निरयन सारिणी अब हमने बदल दी है परन्तु **अन्य पंचांग अयनांश 24 के अंदर ही लिये** बैठे हैं। वृद्ध आर्ष ज्योतिषी चले गये,अनुभव चला गया! इस अयन चलन से ऋतु परिवर्तन, सूर्योदयास्त में अभी स्वल्पान्तर होगा तो भी अयनांश की सत्यता लग सकती है। तथापि ब्रह्मपक्षाभिमत पंचांग सायन संक्रांतियों को **मेषे भानु वृषे भानु** इत्यादि से लिखते है व ऋतु सूर्यउदयास्त भी **भानु प्रवेश** से ही लिखते हैं ग्रहण साधन भी सायन से करते हैं। जिससे सायन गणना विलुप्त न हो, प्रभाव बना रहे। निरयन विभ्रष्ट न हो। यह पूर्वाचार्यों का अनुसंधान यथार्थ में टिका हुआ है। इस टिकाऊ व्यवस्था को कैसे तोड़ा जाय अंग्रेजी ज्योतिषी प्रयत्नरत है! तड़फड़ा रहे है। मेकाले पैदा हो रहे है!

(10) सायन और निरयन मानों का ग्राह्याग्राह्यत्व- भारतीय ज्योतिष में पं.शंकर बालकृष्ण दीक्षित लिखते हैं कि- (1) **केरोपन्ती पंचांग** में भी मकर,कर्क संक्रांति (निरयन) उत्तर दक्षिण अयन लिखा रहता है पृ.544(2) **बापूदेव** तो अयन लिखते ही नहीं है। पृ.548 पर "सर्वत्र निरयण गणना का प्रचार होने के कारण में भी निरयन पंचांग ही बनाता हूं(बापूदेव) (3) एक ही अड़चन है **"यद्यपि शुद्धं लोक विरुद्धं नाचरणीयं नोकरणीयम्"**(बापूदेव)(4)केरोपन्त और तिलक का मत यह है कि पंचांग की पद्धति निरयन ही रहनी चाहिए,परन्तुउसमें कुछ संशोधन आवश्यक है। पृ.549(5) चैत्रादि मासों के नाम अश्वन्यादि नक्षत्रों (तारों)के ही आधार पर रखे गये हैं पृ.554,(6) पृ. 567-**धर्मशास्त्र परिवर्तन असम्भव**- वर्षारम्भ एक एक मास पहिले लाना और चैत्र के धर्मकृत्यों को फाल्गुन में करना धर्मशास्त्र बदलने के समान ही है। (7) पृ.568 से 571तक **अनिवार्य कठिनाईयां**- कुछ कर्म ऋतु मास तिथि के साथ नक्षत्र से भी सम्बंध है। शरद् ऋतु विजया 10 आश्विन शुक्ला 10+श्रवण योग जो एक मास पहिले भाद्रपद शुक्ला 10 श्रवण नहीं होगा। उस समय दशहरा या दशमी शब्द भी लागु नहीं हो सकेगा। **नया धर्मशास्त्र मान्य कैसे हो**- यह पद्धति धर्मशास्त्र सम्मत प्रचलित नहीं है नवीन धर्मशास्त्र बनाना पड़ेगा। विद्वानों की समिति द्वारा नवीन धर्मशास्त्र ग्रंथ बनवाया जा सकता है पर उसका मान्य होना अत्यन्त कठिन है। शंकराचार्य की सम्मति मिल जाय, इतना ही नहीं उसे कानून का रूप देकर पास करालिया जाय तो भी उसका प्रचार होना कठिन है। हमारे देश में धर्मशास्त्र के सहस्त्रों ग्रन्थ और उनकी लाखों प्रतियां विद्यमान है। उन सब को नष्ट करना होगा। उनका त्याग करने पर भी अन्य विषयों के ग्रन्थ लुप्त नहीं किये जा सकते। उन सहस्त्रों ग्रन्थों में वर्णित तथा करोड़ों मनुष्यों के ह्रदय पर अंकित पद्धति को बदलना असंभव है। **व्यावहारिक दृष्टि से विचार** -इस प्रकार अधिकांश व्यवहार के लिये सायन न होने पर भी कोई बाधा न पड़ेगी। सायन पंचांग को कुछ लोग स्वीकार करले परन्तु सभी स्वीकार कर लेंगे ऐसा नहीं कहा जा सकता। **जातक स्कन्ध की दृष्टि से विचार**- हमारे देश में इस समय सर्वत्र निरयनमान से पत्रिकायें बनातें है। सायनमान से पत्रिका ठीक सिद्ध कर दो तो हम सायनमान स्वीकार कर लेंगे। ऐसे कहने वाले मुझे कई मिले हैं किन्तु मुझे लगता है कि किसी भी मान से वह सर्वांश से साध्य नहीं है।

अन्ततो दीक्षित जी भरतीय ज्योतिष की विशालता से भिज्ञ होते हुये भी। पृ.680 से 681 तक में सुझाव देते है कि (1) **अंग्रेजी नाटिकल आल्मनाक अथवा फ्रेंच काल ज्ञान पंचांग** जिन ग्रंथों के आधार पर बनाते हैं वैसे पंचांग बनाने के लिए कहना व भारतीय ज्योतिष विज्ञान से विमुख करना मानो इनको किसी ने इन यूरोपियनों की झूठन खिलाने के लिए अधिकृत किया हो ? भारतीय विद्वान तो म्लेच्छ देशों में जाने वाले को प्रायश्चित से

शुद्ध करके ही घर में प्रवेश देते थे। वर्ण शंकर किसी का भी नहीं हो सकता,आज भी यूरोपियन परस्पर मारने समूल नष्ट करनें के लिये दो वर्षो से युद्ध लड़ रहे है भारत पर अब भी इनकी कू दृष्टि है भारत को सावधान व जाग्रत होना होगा। जैसे कि-राम राज्यच्युत,वनवास भेज देने के बाद भी वे कहते हैं कि-लक्ष्मण! मे न रोचते स्वर्णमयी लंका,जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी-'' के उद्घोष के ममत्व में मैं भी स्पष्ट कहता हूं **''मे न रोचते यूरोपियन उचिष्ट (झूठन) तदा- ''नवीन गतिस्थिति कल्पक महामतिमान् शास्त्रकारः कृति जयति विष्णु जो गणक चक्र चूड़ामणिः**''- भास्करोक्त ब्रह्मसिद्धान्त गरीयसी श्रैष्ठ है रुचिकर है।

(11) भूपृष्ठीय भेद- विभिन्न देशों में सुदूर नगरों में अक्षांश,रेखांशों के आधार पर तिथियों में मतभेद ज्यादातर आज के दृक्पक्षों के कारण 15घटी तक का फर्क पड़ जाने से होने लगा है। संपूर्ण भारत में तिथि न्यूनतम **डेढ़ घटी व अधिकतम साढ़े तीन घटीतक** होती है। धर्मशास्त्रों से इन तिथ्यादि भूपृष्ठिय अंतर को देख कर धर्मकृत्य की व्यवस्थायें होती रहती है। परन्तु विदेशों में भारतीय पर्व कैसे मनायेंगे ?यह भी यहां रात व विदेशों में दिन आदि अंतर को देखकर पर्व मनाते ही है! उत्तरीय ध्रुव में छमहीनें की रात में पर्व मनाने वाले अपने हिसाब से मनाते ही होंगे! भारत में अगस्त्योदयास्त का विशेष प्रभाव है तो दैवज्ञों ने यहां की व्यवस्था लिखी है। विदेशों में अगस्त्य अस्त ही नहीं होता है परन्तु वहां भी दिन के सूर्योदय में तो नहीं दिखता होगा ? रात्रि में दिखता होगा,तब वहां के लोग इसके प्रभाव को देखते ही होगें। इस प्रकार की उलझनों में भी आज के दृश्यपक्षाभिमानी विमूढ़ है!

(12) साम्प्रदायिक त्यौहारों में भेद-(1) स्मार्त- धर्मशास्त्र वेद पुराणों को मानने वाले साधु ,संत,गृहस्थी होते हैं। (2) वैष्णव- विष्णु पूजन,यती,संत, विष्णु चरण तिलक,तुलसी की कंठी द्वारा (मठ) की कंठी ही गौत्र है। द्वारा (मठ) की कंठी पहनें वाले भुजाओं पर विष्णुपदादि तप्त मुद्राओं के अंकित करने वाले होते हैं। इनमें **गुरुद्वारा वाले मतानुयायी जो पर्व मनाने का निर्णय देते हैं वो मनाते है।** यह मत भिन्नता पंचांग में भी दो पर्व स्मार्त,वैष्णव के नाम से वर्षो से लिख रहे हैं। मठ,मंदिर में दोनों पर्व मनाये जाते है दो-दो पर्व के कारण अच्छी पूजा आ जाती है अतः इन परम्पराओं को तोड़ना भी असंभव है! **''यद्यपि शुद्धं लोक विरुद्धं न करणीय न करणीयं''** के विपरीत जाना दुष्कर है!मुख्यतः हिन्दू पर्वों में विघ्न पैदा करना, धर्मशास्त्र विमुख चलना धर्मानुकूल नहीं है।

(13) ग्रहणम्-भारत की ज्योतिष शास्त्र में चंद्रग्रहण,सूर्यग्रहण की प्रत्यक्ष दृष्य गणना पर ''**चंद्रार्कों यत्र साक्षिणों**'' से विश्व श्रृद्धान्वित नतमस्तक है। मैंने सं.2044 के प्राक्कथन में परिपत्र संयोजक एक.के.चटर्जी को जवाबे लिखा था कि..(2) प्रपत्र के बिन्दु नं.7 में आपने लिखा है कि ''हाँ सूर्यग्रहण तथा चंद्रग्रहण का निर्देश करनें में सभी पंचांगकार समान रूप से आधुनिक ज्योतिष्क सारिणियों का उपयोग करते हैं जिससे स्पष्ट है कि यदि प्राचीन गणित सूत्रों से सूर्यचंद्र के भोगांशों से गणना की जाए तो वह प्रायःअशुद्ध होगी।'' वस्तुतः यह बात कह देना अपरिपक्वता है। तिथि घटी पलों में अष्टमी के आसन्न 15,16 घटी तक का फर्क प्राचीन व आधुनिक गणित के पंचांगो में पड़ता है अगर इन दिनों में ग्रहण होते तो स्पष्ट फर्क किसमें है दिखाई दे सकता था। परन्तु अमा.पूर्णिमा को दोनों की गणित से तिथिमान करीब करीब समान होते हैं व ग्रहणों में कभी कभी स्वल्पान्तर ही रहता है। इनता स्वल्पान्तर तो आधुनिक गणित के पंचांगो में भी देख सकते हैं तब फिर प्राचीन सूर्यचंद्र के भोगांशों की गणना अशुद्ध कैसे ? हम आधुनिक ग्रहण गणित सारणियों को जानते भी नहीं है,पूर्व में भी यें सारणियां नहीं थी फिर भी ग्रहणों की सत्यता पर भारतीय ज्योतिष प्रसिद्धि को प्राप्त किये हुए था, अगर अशुद्ध है तो शुद्ध क्यों था ?जब अमा पूर्णिमा को तिथि में स्वल्पान्तर रहता है तो अष्टमी के आसन्न तिथि में ज्यादा फर्क क्यों ? इनते बड़े तिथ्यादिमान के फेर को अनदेखा क्यों किया जाता है ? क्या यह फर्क मूल झगड़े की जड़ व तालमेल में बाधक नहीं है!

ग्रहण नहीं दिखने के संदर्भ- (1)शा.1615 वैशाख शु.15चंद्रग्रहण ग्रहलाघव गणितज्ञों से नहीं आया परन्तु दिखा था!(2) शकः 1806 ग्रहलाघवीय पंचांग में चैत्र में चन्द्रग्रहण नहीं था। सायन केरोपन्ती निर्यन पंचांगो में ग्रस्तोदित था।(3)शकः 1814 के ग्रहलाघवीय पंचांग में वैशाख में चंद्र ग्रहण सूर्योदय के पूर्व ही मोक्ष हो जाता था सायनादि पंचांगो में ग्रस्तास्त था(भारतीय ज्यो.पृ.542) (4) **द्विचत्वारिंश द्वि सहस्त्रे वैशाखे चंद्र पर्वणि। त्वयोक्तः समयःसत्यो मिथ्योक्तं पर भाषितम्**।।(पं.भवानीशंकर जी कनाना) त्रिकाल ज्योति पंचांग सं.2042 वैशाख चंद्र ग्रहण के समय प्रत्यक्ष देख कर लिखा है। स्पर्श में 43 मिनट व मोक्ष में 24 मिनट का फर्क दृष्य पंचांगों से था।(5) सं.2070 चैत्र शुक्ला 15गुरु खण्डग्रास चंद्रग्रहण निर्णय सागर में नहीं दिखेगा लिखा परन्तु त्रिकाल ज्योति पंचांग के अनुसार दिखा। हनुमान जयंति मनाने वालों ने पट्ट खुले रखे थे। तब मैंने सं.2071 के पंचांग में लिखा था कि- **सर्वेषामेव वर्णानां सूतकं राहु दर्शन**- ग्रहण देखने में सभी वर्ण सूतकी (अस्पृशीय) हो गये। **मुक्तौ यस्तु न कुर्वीत स्नानं ग्रहण सूतके। स सूतकी भवेत्तावद् यावत् स्यापरोग्रहा** (त्रिकाल ज्योति से पृ.85) अर्थात् उन सूतकियों की जब तक दूसरे ग्रहण के सूतक के स्नान से ही उस लगे सूतक की निवृत्ति होती है। अगले वर्ष भी ग्रहण नहीं! सूतक लम्बा इस प्रकार ग्रहणों की क्लीष्ट गणना में गणित की चूक आदि किसी भी प्रकार से हुई हो उसके कारण सारा सिद्धान्त गलत नहीं गणितज्ञ की चूक है ।

दृक् पक्षांगीय पंचांग एक दूसरे की नकल से बहुमत प्राप्त किये है तब वह भूल सबमें एकसी है उससे दूसरे आर्ष पंचांग को गलत कहना भी अपनी भूल को छिपाना है। ग्रहण सूर्य, चंद्र की छाया अर्थात् राहु, केतु से ग्रसित होने पर ग्रहण होता है। वर्तमान आर्ष पंचांगो से दृक्पक्ष का राहु, केतु 17 दिन पीछे चलता है तब ग्रहण में अंतर तो आयेगा ही।

(13) फलित को नहीं मानते- सायन पंचांग मताभिमानयों का भविष्यफल नहीं मिलने के संदर्भ पूछा जाता है तब उनका तुनक मिजाजी जबाब हम भविष्यफल(फल) को नहीं मानते। वस्तुतः फल के बिना वृक्ष भी क्या काम का ? नष्ट कर दिया जाता है अगर फलित की सार्थकता नहीं होती तो भारत का ज्योतिष विज्ञान कभी नष्ट हो गया होता । अंकों व वर्णाक्षणों का साकार ज्ञान ही निराकार की ओर ले जाता है तब अहम् ब्रह्मास्मी हो जाते हैं। यही प्रत्यक्ष फल है। फिर साकार के फल की कृतघ्नता अपने **मातृदेवो भवः, पितृदेवो भवः** को नहीं मानने जैसी कही जा सकती है। भारत की ज्योतिष पंचतत्वों अग्नि, पृथ्वी, वायु जल आकाश के कुपित होने का फल बताता है **ग्रहणों, ग्रहों के उदयास्त** का फल घटित होने पर उस गणना के आंकड़े सत्य प्रमाणित होते हैं **अधिक मास** की गणना प्रकृति मौसम का यथावत् समायोजन बनायें रखने का प्रयोजन है। निरयन पंचांगो के तिथ्यादि मान चंद्रोदय की सार्थकता को प्रमाणित करते हैं। निरयन संक्रांतियों से किसान वर्षा, सर्दी गर्मी देख बीज बोना आदि करते हैं। मारवाड़ में **डक्क भड्डुली** (घाघ भड्डुली) की कहावतें किसान बहुत मानते है। **हस्त चिन्हों** पर जन्म का ज्ञान, जन्माक्षर बनाना , शंख चक्र सीप, हस्त के पर्वतों से ग्रहों का ज्ञान व फल कथन **सामुद्रिक शास्त्र** की विशेष देने है। मुखाकृति व शरीर के नाक कान, ललाट, ललाट की रेखाओं व हाथ पैर अंगुलियों आदि से कुण्डली बनाना व भविष्य कथन से तत्कालीन निरयन गणना की सत्यता प्रमाणित होती है। भृगु संहिताओं के हस्तलिखित ताड़पत्रादिक ग्रंथों के फल को भी झुठाया नहीं जा सकता । **दीक्षित जी** ने लिखा है कि काशीनाथ पटवर्धन द्वारा मुखचर्या देख कर जन्म काल व कुण्डली बना लेते हैं व पिता की मुखाकृति से पुत्र की कुण्डली बनाने का प्रत्यक्ष चमत्कार देखा है **यह भी लिखते हैं** कि गोविन्दचेट्टी (शूद्र है) केवल जन्म काल ही नहीं, किसी भी भाषा का प्रश्न उत्तर बतला देते थे। (भारतीय ज्योतिष पृ. 627,628) **स्वरशास्त्र, स्वरोदय** से भारतीय योगियों ने अंग्रेजों को चमत्कृत कर दिया था। इन सब विद्याओं का लुप्त होना भरतीयों की दासता काल रहा है हमारा बहुत बड़ा ह्रास हुआ है।

(14) वेधशालाओं की सत्यता का निर्णय आँख से!

वेधाशालाओं की सत्याऽसत्य का निर्णय भी आखें ही करती है। दूरबीन भी दूर दृष्टि की प्रतीक है। वैज्ञानिकों की खोज भी सान्तरित बदलती रहती है। आज के वैज्ञानिक रॉकेटयानों से ग्रहों के धरातल पर उतर कर खोज करते हैं। परन्तु भारतीय ऋषियों की खोज तक नहीं पहुंच सके हैं। इन्हें कालान्तरों से भारतीय ब्रह्माण्डीय खोज सत्य प्रमाणित होती है। शताब्दियों पूर्व भारतीय पण्डित शंकु, दूरबीन, नलिकाबन्ध, पीतल आदि यंत्रों से आकाशीय ग्रहों नक्षत्रों का परीक्षण करते रहते हैं। भारतीय ऋषियों ने ताराओं की संख्याओं से नक्षत्रों का ज्ञान, राशियों की आकृतियां का चित्रण किया था जो आज भी यथावत् व परीक्षित है। घड़ियां नहीं थी तब मेरे दादाजी, पिता जी-पुरुष की छाया से पाद गिन कर या शंकु की छाया से इष्टज्ञान, समय(टाईम) का ज्ञान, लग्न पत्रादि बना देते थे। आकाश में कौन सा नक्षत्र तारा ग्रह कहां है बता देते थे। आजकल पंचांगों में तिथियों की भिन्नता का विवाद होता रहता है। कहते हैं कि तिथि आकाश में दिखती नहीं है। परन्तु एक अनपढ़ किसान ने आकाश में चंद्र को देख कहा कि आज तिथि यह है मेरे पंचांग में भी यही तिथ थी दृक्पक्षीय में भिन्न थी। कहा कि दूसरी गलत है यह ज्ञान धीरे धीरे लुप्त होता देख कर वेधशालाओं का निर्माण हुआ। जयपुर के राजा जयसिंह जी ने जयपुर, मथुरा, काशी, उज्जैन आदि में वेधशालायें बनाई । आज ये वेधशालायें पर्यटकों के लिये "**तन्त्र मंत्र वेधशालायें**" कहलाती है। इस प्रपंच में राजा बादशाह सब थक गये। आंखों की दृष्य दृष्टि से अशुद्ध सिद्ध हो गयी। तदर्थ दीक्षित जी लिखते हैं कि "**सर्वव्यापक ईश्वर की शक्ति के ज्ञान में मनुष्य बिल्कुल असमर्थ है**"(भारतीय ज्योतिष पृ.464) निष्कर्षतः भारत का यह गोपनीय ज्ञान भी गुप्त व सुप्त हो गया!

वेद वेदांगों के रक्षक कौन ? अभ्युदय कब ?

भारत देव भूमि है यहां देवता रमण करते हैं इस भूमि की रक्षा भगवान् स्वयं करते हैं। श्री कृष्ण का गीता में उद्घोष है कि **यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत**(4/7) एवं **धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे**(4/8) अर्थात् जब जब धर्म की हानि होती है। तब तब मैं धर्म की संस्थापना के लिये युग युग में प्रकट होता हूं। धर्मशास्त्रों में गृहस्थ धर्म के पितृयों के संदर्भ में लिखा है कि -**पितृयानो अजवीथ्याश्च यदगस्त्यस्य चान्तरम्**- अर्थात् अजवीथी (देवमार्ग) और अगस्त्य तारा के बीच जो पितृयान नामक स्थान है उसी मार्ग से अग्निहोत्री(यज्ञकर्ता) आदि लोग स्वर्ग में जाते हैं। उस पितृयान में **तत्राष्टाशीति साहस्त्रा मुनयो गृहमेधिनाः**- गृहस्थ धर्मवाले 88 हजार मुनि रहते हैं। वे लोग **पुनः पुनः पुनरावर्तिनो बीजभूता धर्मप्रवर्तकाः** ।। बीज बनकर धर्म प्रवर्तक जन्म लेते हैं। एवं च - **सप्तर्षि नाग वीथ्यन्तर्देवलोकं समाश्रिताः। तावन्त एव मुनयः सर्वारम्भ विवर्जिताः** ।। अर्थात् सप्तर्षि मण्डल और नागवीथी (ऐरावत पथ) के बीच में देवलोक में रहने वाले उतने 88 हजार मुनि जो सब आरम्भों से रहित (तत्वज्ञानी) प्रलय तक स्थिर रहते है। उन्हीं से वेद पुराण

संपूर्ण वाङ्गमय शास्त्र प्रचलित होते हैं। **द्रष्टव्य स्त्वथ मन्तव्यःश्रोतव्यश्च द्विजातिभिः।।** सब द्विजातियां(ब्राह्म क्षत्रिय वैश्य) उस आत्मा को जानने, देखने, सुनने का उद्योग करें। **पितृलोकं चन्द्रमासं वायुं वृष्टिं जलं महीम्। क्रमास्ते सम्भवन्तीह पुनरेव व्रजन्ति च।।** अर्थात् पितृलोक, चंद्रलोक से वायु वृष्टि, जल और भूमि को प्राप्त होकर अन्नरूप से वीर्य होकर संसार में आते हैं। गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं कि – **मम योनिर्महद् ब्रह्म तस्मिन्गर्भं ददाम्यम्**(14/3) अर्थात् मेरी ब्रह्मरूप (प्रकृति) योनि में उस बीज को स्थापन करता हूं तब सब श्रृष्टि की उत्पत्ति होती है। **निष्कर्षतः**पापाचारी पाप योनि में व पुण्यात्मायें, देवांश- **क्षेत्रक्षेत्रज्ञ संयोगाद्विद्धि भरतर्षभ।।** (गीता13/26) स्व स्व क्षेत्र योनियों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यादि पूर्व पितृ पुरुष जन्म लेते हैं इस प्रकार विधिवेत्ता विधाता उन जीवों को अपने अपने कर्त्तव्य पूरे करनें, कर्म भोगनें, लेनदेन पूरा करनें को पृथ्वी पर भेजते हैं। राजधर्म को पालने राजा, वीर योद्धा प्रकट होते हैं। ब्राह्मण धर्म में ऋषि मुनि विद्वान शास्त्रवेत्ता, शास्त्र निर्माणक आते है। वैश्य धर्म में अर्थशास्त्री, दानी, कृषि, गोरक्षा, वाणिज्यादि कर्मकर्ता आते है। शूद्रकर्मा धर्मी भी पाप पुण्य भोगकर कर्मानुबंधन भोगते है। ऐतदर्थ स्वपितृयों की तृप्ति से उस कुलके महापुरुष "**पांचवी पीढ़ी में पीर पाके**" की कहावतानुसार प्रकट होते हैं। अपना काम संस्कृति संस्कार विद्या विज्ञान, वंश व स्वर्गादपि गरीयशी मातृ भूमि की रक्षा करने आते हैं। अपने पितृओं के अलावा जो अन्य भूत प्रेत पितर, पिशाचादि को पूजते हैं गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं वो उसी योनि में जन्म लेते हैं। **योग भ्रष्टाभि जायते** का भी लिखा है। **वाराहमिहर** तो लिखते हैं कि करणग्रंथों के उलटे अन्यान्य अर्थकर भ्रमित करता है वह दैवज्ञ **अंधतामिस्र नरक** में पड़ता है। ब्रह्मगुप्त के लिये तभी तो ज्योतिष के उद्भट्ट विद्वान् भास्कराचार्य सिद्धान्तशिरोमणी ग्रंथकर्ता लिखते हैं कि **यदा पुनर्महता कालेन महदन्तरं भविष्यति तदा महामतिमन्तो ब्रह्मगुप्त समान धर्मिण एवोत्पस्यन्ते तदुपलब्ध्यनु सारिणीं गतिमुररीकृत्य शास्त्राणि करिष्यन्ति**" – अर्थात् बड़े कालान्तर में बहुत बड़ा अंतर होगा तब महा बुद्धिमान ब्रह्मगुप्त के समान धर्मि पैदा होंगे तब उपलब्ध सारिणियों को परिष्कृत शास्त्र लिखेंगे। ऐतदर्थ भारतीय वेद वेदांग कभी नष्ट नहीं होगें। उनके अभ्युदय के लिये वेदधर्मी पूर्वपुरुषों को विधाता स्वयं भारत भूमि पर भेजेंगे।

राजा ही युग धर्म है– धर्मशास्त्रों का मंथन है कि "**राजा हि युग मुच्यते**" अर्थात् राजा को युग कहते हैं। अर्थात् राजा ही युगधर्म है। **कलिः प्रसुप्तो भवति स जाग्रद् द्वापरं युगम्। कर्म स्वभ्युद्यत स्त्रेता, विचरंस्तु कृतं युगम् ।।1।।** अर्थात् जो राजा सोता रहता है तब **कलियुग,** जो राजा जागता रहता है तब **द्वापर युग**, जब राजा राज्य कार्य में उद्यत रहता है तब **त्रेता** और जो राजा शास्त्रानुसार कार्य करता है तब सतयुग वर्तता है। निष्कर्षतः हर युग में हर अधिकारी, शासक, राजा के समय में, हर देश ग्राम नगर, जाति घर का मुखिया भी राजधर्म की श्रेणी में सब आता है। इन सबों के कार्यकाल में चार युगों के वर्तावों का ध्यान रखना आवश्यक है। सब पापाचार अनैतिक कार्य ही कलियुग है। वह कलिकाल राजकाज व घर में घुस गया तो नाश निश्चित है। जागते रहे, सावधान हो जाय! **सतयुग**-में विष्णु, मच्छ, वराह, नृसिंहावतार हुये। इस युग में पापी प्रकट हुये, नाश किया। **त्रैतायुग**- वामन, परशुराम, श्रीरामचन्द्र हुये। इस युग में भी पापी प्रकट हुये, नाश किया। **द्वापरयुग**- श्रीकृष्ण बलराम हुये। कृष्ण की कूटनीति, बलराम की हलधर कृषि नीति ने पापियों का नाश किया। अब **कलियुग** चल रहा है बुधावतार हो गया, कल्कि अवतार की प्रतिक्षा है। भारत में ही नहीं संपूर्ण विश्व पाप (कलियुग) की आपाधापी में फंसा है। तृतीय विश्वयुद्ध का ताण्डव अब पाप का ही अंत करेगा? हर मुखिया, अधिकारी, राजा अपने घर में पाप(कलि) को घुसने नहीं दे। अगर घुस गया तो आपको, आपके घर परिवार, क्षैत्र का अंत कर देगा। राजा मोदी जी भारत में ही नहीं विश्व के अन्य देशों को पाप(कलि) को घुसनें से सावधान कर रहे हैं! विदेशी पापाचारियों का रेला भारत में भी उत्पात करते दिख रहा है। आस्तिन के साँप डसनें का प्रयास कर रहे हैं घर के **भेदी लंका ढावे** का प्रयास चल रहा है अतः कृष्ण की कूटनीति, अर्जुन के लक्ष्य भेदन से ही पापी मरेंगे। चल कपट से सोने का मुकुट नहीं पहनें उसमें काल घुसा है स्पष्ट नीति है- **धर्मो रक्षति रक्षितः**। अर्थात् वेद वेदांग धर्म संस्कृति की रक्षा, उत्थान करनें से ही आपकी रक्षा होगी, अभ्युदय होगा!

श्रुतिस्मृतिविहितो धर्मः।

तद्वेदनेत्रं जयतीह लोके– वेद के चक्षु ज्योतिष शास्त्र की इस संसार में जय हो।

ब्रह्मलोके प्रतिष्ठां च लभते दैव चिन्तकः:- दैव चिन्तक (दैवज्ञ) ज्योतिषी ब्रह्मलोक में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

दशदिन कृतपापं हन्ति सिद्धान्तवेत्ता– सिद्धान्त गणितज्ञ के संपर्क से दस दिनों के पाप नष्ट हो जाते हैं।

नक्कालों से सावधान
त्रिकाल ज्योति के नाम में कुछ हेराफेरी जैसे त्रिकाल ज्योतिष आदि करके ज्योतिष के नाम पर ठगी कर रहे हैं सावधान रहें।

दुर्लभं भारते जन्मः-
विद्वद्जन चरण चंचरीक
पंचांगकर्ता-पं.पृथ्वीराज द्विवेदी
त्रिकाल ज्योति, कार्यालय
बालोतरा, जि.बाड़मेर(राज.)

व्रत पर्वोत्सव निर्णय:

नक्षत्र सूचको दिष्ट मुपवासं करोति यः स व्रजत्यन्धाता मिस्त्रं सार्धमृक्ष विडंबिना(वाराह चार्य) अर्थात् नक्षत्र सूचक (अविदित्वैव यःशास्त्रं दैवज्ञत्वं प्रपद्यते) जो पुरुष बिना शास्त्र के जाने दैवज्ञ हो जाय, के उपदेश किये हुए उपवासादि को जो पुरुष करता हैं वह उस नक्षत्र सूचक के साथ अंधतामिस्र नामक नरक में पड़ता है। निष्कर्षतः आर्ष प्रमाणों से व्रतोत्सवों का निर्णय करना हैं तो आर्ष पंचांग सूर्य सिद्धांत, ब्रह्मसिद्धान्तादि गणित से बनने वाले पंचांग "**पंचवृद्धिःरसक्षयः**(65घटी-54घटी)के तिथ्यादिमानों से निर्णय करें। आज के शताब्दी पंचांग या अंग्रेजी पंचांगों की नकल से बने नकलची पंचांगों की तिथि अपने ही सूत्र '**सप्तवृद्धि दशक्षयः**'' का भी अतिक्रमण कर **पंचदशघटी**(15घटी) तक बढ़ जाती है। कृष्ण पक्ष शुक्लपक्ष की अष्टमी के आसन्न इन पंचांगों की तिथियों में बहुत फर्क रहता है जो मुख्य विवाद की जड़ है। ये आर्ष सूत्रों को तोड़मरोड़ कर अपने व्रतपर्वो को सही बताते है जिससे पंचांग पढ़ने वाले भ्रमित हो जाते है। गणित पूर्वाचार्यो की व निर्णय भी पूर्वाचार्यो के सूत्रों से करना शास्त्र सम्मत है। यही वाराहमिहराचार्य का निर्देश है। शास्त्रों में कटु वचनों से सावधान किया है **धर्मेण हीना पशुभि समानाः**- तो कहते हैं कि अच्छे बोल नहीं है जहां अभ्युदय के वचन भी कहे हो तो पालन में विमुख गुठबंधी करते हैं अभ्युदय कैसे? **धर्मो रक्षति रक्षितः** धर्म की रक्षा करोगे तो धर्म आपकी रक्षा करेगा।

-:निर्णयार्थ आर्ष सूत्र:-

(1)**वार - उदयादुदयं वार-** सूर्योदय से सूर्योदय तक वार रहता है।
रात 12 बजे से वार तारीख अंग्रेज बदलते हैं।

(2)**व्रतादि** - दिन व्रत दिन में, रात्रिव्रत रात में। **व्रत**- एक समय भोजन।
उपवास- पूरे दिन भोजन नहीं।

(3)**अहोरात्र**-(दिनरात)६०घटी(24घंटा)एक घटी=0.24मिनट, 1घंटा-2.३०घटी
होरा-दिनरात में 24 होरा 1घंटे में 1 होर। वार से 6ठा वार दूसरी होरा क्रम से वार होरा होगी। सौम्य वार शुभ होरा, क्रूर वार अशुभ होरा।

(4)**प्रहर(याम)**- दिन में 4प्रहर+रात में 4प्रहर कुल 8 प्रहर। एक प्रहर 3 घंटे का।

(5)**दिनमान/2**= (1)पूर्वान्ह - सूर्य से आधा दिन 6 घंटा के आसन्न
(2)अपरान्ह- मध्यान्ह से सायं तक 6घंटे के आसन्न।

(6)**तिथि**- घटी के अनुसार तिथि रहती है। कम घटी या ज्यादा घटी के बाद तिथि बदल जाती है जिस का ज्ञान- **उदयव्यापिनी**- सूर्योदय से सूर्यास्त समय तक। **रात्रि व्यापिनी**- सूर्यास्त के बाद में चंद्रोदय के समय में हो तक। **शुद्धातिथि(पूर्णा)**-सूर्योदय से सूर्यास्त तक। **चंद्रोदय व्यापिनी**-चंद्रोदय के समय में हो। **सिनीवाली**-चतुर्दशी मिश्रित अमा जिसमें चंद्र दर्शन होवे। **कुहू**- चंददर्शन नहीं होवे प्रतिपदा मिश्रित अमावस्या।

(7) अरुणोदय (उषःकाल, संध्याकाल, ब्रह्ममुहूर्त)- सूर्योदय से 1.30 डेढ़ घंटापहिले का समय। **अरुणोदय / संध्याकाल**- सूर्योदय से3 घटी अर्थात् 1घंटा 12 मिनट पूर्व का अरुणोदय व 2 घंटा पूर्व उषाकाल समय। इस समय संध्या में सूर्योदय व्यापिनी अगली तिथि वारादि का संकल्प होता है।

(8)**पंचधाभक्ता**=दिनमान/5=(1)**प्रातःकाल**- सूर्योदय से 48मिनट पूर्व व 3 मुहूर्त (6घटी) तक= सूर्योदय +2घंटा 24 मिनट तक।

(2)**संगवकाल**(प्रातः काल) के बाद 6 मुहूर्त(12 घटी) तक =
सूर्योदय + 4घंटा 48 मिनट तक।

(3) मध्यान्ह काल (मध्यान्ह दिन) - आगे 9 मुहूर्त (18घटी) तक =
सूर्योदय+7घंटा 12 मिनट तक मध्यान्ह संध्या का समय पूर्वा 36 पर 36 मिनट।

(4) **अपरान्ह अभिजित** (विजय) के मुहूर्त- मध्यान्ह 24 मिनट पूर्व व मध्यान्ह +24 बाद का 48 मिनट का समय कुतुपकाल भी कहते हैं अपरांन्ह।

सायान्ह काल- मध्यान्ह के बाद 12 मुहूर्त(24 घटी) तक = सूर्योदय +9घंटा.36मिनट तक यह समय पितृकार्य में ग्राह्य है।

(5) **सायान्ह(प्रदोष) काल**- आगे के बाद 15 मुहूर्त(30 घटी) तक = सूर्योदय + 12 घंटा सूर्यास्त तक। प्रदोष= सूर्यास्त+2.24= बजे तक तारा दिखने से नक्त(रात्री) मानते हैं। 13+शनिवार प्रदोष व्रत महापुण्यदायक है।

(9) **दिनमान/15**=मुहूर्त 8वां भाग कुतुप काल= 1 मुहूर्त(48मिनट) = सूर्योदय+6 घंटा24मिनट तक कुतुपकाल। **कुतुपकाल**= मध्यान्ह-24 मिनट व मध्यान्ह +24 तक यह अभिजित(विजय) भी है। **रात्रिमान/15**= मुहूर्त 8वां भाग **निशीथ**(अर्धरात्रि) काल= 1 मुहूर्त(48 मिनट)= सूर्यास्त +6.24 तक निशीथ काल।

(10) **तिथि वेध**- (1) **पूर्वविद्धा** तिथि- जो तिथि पहिली तिथि से विद्ध(वेध, मिली) हो वो पूर्वविद्धा कहलाती है। अर्थात् पहिली तिथि में 3 मुहूर्त (2घं.24मिनट) तक मिली है। या 12 घटी(4 घं.48मिनट) तक पहिली तिथि से मिली हो तो पूर्वविद्धा, उस पहिले दिन व्रत करें।

(2) **परविद्धा तिथि**- जो तिथि आगे की तिथि में 3 मुहूर्त के बाद मिली हो या 12 मुहूर्त के बाद मिली (विद्ध, वेध) हो तो दूसरे दिन उसी उदय व्यापिनी तिथि में व्रत करें।

तिथिव्रत निर्णय- कर्मणो यस्य यः कालः तत्काल व्यापिनी तिथि- व्रतपर्व का कर्म काल

समय शास्त्र सम्मत तिथि हो उसका व्रत पर्व उसी समय में करें।

(11) **श्राद्ध ज्ञान**- (1) महालय श्राद्ध- भाद्रपद शु.15 से आश्विन कृष्ण पक्ष अमा तक।(2)**पार्वणश्राद्ध** -नाना श्राद्ध आश्विन शुक्ला प्रतिपद पिता आदि तीन का पार्वण। (3)**एकोदिष्ट श्राद्ध**-वार्षिक संवत्सरीश्राद्धः या क्षयाहः संवत्सरी श्राद्धः। सपत्निक पिता आदि तीन का पार्वण।

(12)**नवरात्र(प्रगट दो)**-(1) चैत्र शुक्ला 1 से वासंत नवरात्र (2) आश्विन शुक्ला 1 से शारदीय नवरात्र - इसमें गर्बा आदि उत्सव होते हैं।(2) गुप्त दो-(1) आषाढ़ शुक्ला 1 से (2) माघ शुक्ला 1 से - इन में दसमहाविद्यादि गुप्त विद्याओं का अनुष्ठान। <u>**घटस्थापन**</u>-(1) प्रतिपदा क्षय हो तो अमायुक्ता ग्राह्यः(2) द्वितिया क्षय हो तो मुहूर्त मात्र प्रतिपदा ग्राह्यः।(3) प्रतिपदा वृद्धि हो तो प्रथम प्रतिपदा ग्राह्य (4) अमा वृद्धिः हो तो अमायुक्ता प्रतिपदा में करे। अर्थात् **प्रतिदा में ही घट स्थापन करें, द्वितिया में नहीं**। आश्विन प्रतिपदा में यदि वैधृत और चित्रा का संयोग हो तो वैधृत जन्य दोष नहीं वरना वैधृत त्याग करके करें। अभिजित में वैधृतादि दोष नहीं।

(13) **हरिवासर**- आषाढ़ शु.12 को अनुराधा प्रथम चरण, भाद्रपद शु.12 को श्रवण द्वितिय चर्ण, कार्तिक शु. 12 को रेवती चतुर्थ चर्ण का संयोग, हो तो हरिवासर कहलाता है इन नक्षत्रों के चर्णो को त्याग कर पारणा करें, नहीं तो एकादशी का व्रत भंग हो जाता है।

(14)**एकादशी व्रत**-(1)**स्मार्ता**-(1) यदि दशमी में एकादशी का क्षय हो तो उसी दिन स्मार्ता व्रत करें द्वादशी में पारणा करें।(2) दशमी विद्धा हो या द्वादशी क्षया हो तो भी एकादशी में व्रत करें। एकादशी पूर्ण या वृद्धि हो तो भी पूर्ण एकादशी को व्रत करें। हरिवासर त्याग कर पारणा करें।(2)**वैष्णव**-(1) एकादशी क्षय हो तो द्वादशी को व्रत करें।(2) दशमी 56घटी से एक पल भी अधिक हो तो द्वादशी को व्रत करें।(3) दो दिन 11 हो तो अगले दिन एकादशी करें।(4) **भागवत(निम्बार्क)**-दशमी 45 घटी से एक पल भी अधिक हो तो निम्बार्क द्वादशी को व्रत करते हैं। शेष दिनों में यथात् एकादशी को ही करते हैं।

(15) **महारात्रियाँ** - (1) **मोहरात्रि** (श्रीकृष्ण जन्माष्टमी)-अर्द्धरात्रि व्यापिनी (सूर्यास्त + 6घं.24मि.) या चंद्रोदय व्यापिनी को सप्तमी विद्धा अष्टमी हो तो स्मार्ता व दोनों दिन अर्द्धरात्रि को हो तो अष्टमी को व्रत करें। अगर रोहिणी हो तो श्रैष्ठ नहीं हो तो भी चंद्रोदय व्यापिनी अष्टमी में ही व्रत करते हैं। सप्तमी विद्धा को वैष्णव व्रत नहीं करते हैं। परन्तु रोहिणी युत हो तो विशेष फलदायी है।

(2)**कालरात्री (दीपावली)** -सायं प्रदोष से मध्यरात्रि तक अमा हो उसी दिन दीपोत्सव प्रदोष से वृष, सिंह लग्न तक कालरात्रि को मनावें। अमावस्या पूर्ण हो तो अमावस्या को मनावें, नहीं तो चतुर्दशी युत अमा. को मनावें। अमावस्या को विशेष महत्व है अमा नीशान्त में पितृतृप्ति हेतु दीपकश्राद्ध करने का होता है। ग्रहण हो तो सूतक व ग्रहणकाल को त्यागे

(3) **महारात्रि(महाशिवरात्रि)** - यह व्रत चतुर्दशी तिथि निशीथ व्यापिनी (अर्धरात्रि = सूर्यास्त+6घं.24मि.) में आवे या तृयोदशी न्यूनाधिक हो तो चतुर्दशी विद्धा हो तो उसी दिन की तिथि 14 में मनावे।

(4) **होलिका रात्रि**- दिन में, भद्रा में, प्रतिपदा तिथि में होलिका दहन नहीं करे। पूर्णिमा ब्रह्म मुहूर्त तक हो उस समय तक होलिका दहन करे। भद्रोपरांत पूर्णिमा के होते भद्रापुच्छ (भद्रा के तृतीय चरण अंत तीन घटी 1.12मिनट का समय) में होलिका दहन करते हैं परन्तु असिते सर्पिणी ज्ञेया सिते विष्टिस्तु वृश्चिकी भद्रा का डंक त्याज्य है यथा- सर्पिण्यास्तु मुखं त्याज्यं वृश्चिक्याः पुच्छमेव च।।'' त्याज्य है (मुहू.चिं.पीयूष धारा) तब राष्ट्र, ग्राम, उस स्थान "भद्रायां देशनाशनम्" विनाशक घटनायें घटती है। यह भद्रापुच्छ में तो कृष्ण पक्ष की भद्रा में विशेष परिस्थिति पूर्णिमा अभाव न हो, में करने का निर्देश है। चंद्र ग्रहण काल को त्याग कर दहन करे। रात्रौ भद्रावसाने तु होलिका दीपयते तदा- रात को भद्रा की समाप्ति पर होलिका का दहन करें।

इस वर्ष के विवादास्पद व्रत पर्व का निर्णय-

(1) **दीपावली विवाद**- शताब्दि पंचांग में (1) विक्रम संवत् 2081 को अमावस्या 29 घटी/32पल (सूर्यास्त के बाद मात्र 42 मिनट व निर्णय सागर में 25मिनट) तक है व (2) संवत् 2082 को अमा 28/41 (सूर्यास्त के बाद मात्र 15 मिनट) ही है तो भी शताब्दि पंचांग में इस अत्याल्प अमावस्या को दीपावली पर्व लिख दिया है। इस पंचांग की न्यूनाधिक घटी पल घटा बढ़ा के नकलची पंचांगकर्ताओं ने भी इस अत्याल्पमान के दिन ही दीपावली लिख दी है। जबकि आर्ष पंचांगों के घट्यादिमान इससे कम होने से दीपावली चतुदर्शीयुक्ता अमा को लिखी है इससे दीपोत्सव का विवाद खड़ा हो गया है। भूपृष्ठीय भेद आर्ष प्रमाणों में नहीं है, फिर भी फंस गये हैं। जनता जनार्दन भ्रमित है कि दीपोत्सव कौनसा मनावें। बहुमत नकलचियों का व हो हल्लाभि नकलचियों का ज्यादा होने से पंचांग पढ़कर बताने वाले पण्डित भी भ्रमित हो गये है। वस्तुतः **आर्ष (ऋषि) प्रमाण आर्ष पंचांग पर ही लागु होते है**। परन्तु जोड़तोड़ की उच्छिष्ट गणित वाले पंचांग अपने को आर्ष प्रमाणों से सत्य साबित करना चाहते हैं वो संभव नहीं है। यथा **दीपावली कालरात्रि** है। लक्ष्मी में **महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती** तीनों का समावेश है। अतः इस रात्रि को काली स्वरूप स्याही कलम दवात, लक्ष्मी स्वरूप स्वर्णा भूषण, "**गौ धन गजधन वाजीधनओर रतन धन खान**" आदि धन की पूजा होती है। सरस्वती स्वरूप चौपड़ा पूजन होता है। ऐतदर्थ- **ब्रह्मणोक्तेश्च प्रदोषार्ध रात्र व्यापिनी मुख्या।।1।। अमावस्या प्रदोष और अर्ध रात्रि व्यापिनी मुख्य है। कश्यप संहितायां दीपावलि दर्शं प्रकम्य।।2।।** दीपावली अमावस्या (कार्तिकी) को ही होती है उसी अमा में मनावें।

MANAV ASTRO & VEDIC 8586094945 , 8302680069

अर्धरात्रे भ्रमत्येव लक्ष्मीराश्रयितुं गृहम्।।3।।(ब्रह्मपुराण) आधी रात के समय घरों में आश्रय प्राप्त करने के लिये लक्ष्मी घूमती है। **दर्श पर रात्रे अलक्ष्मी निःसारण मुक्तं।।4।।** दरिद्र (अलक्ष्मी) को घर से निकालने के लिये दिवाली की अमावस्या को पिछली रात(ब्रह्ममुहूर्त) में गृह लक्ष्मीयें सूप थाली बाजा आदि बजाकर बाहर निकालती है। **अमा नीशान्ते दीपक श्राद्धं कुर्यात्।।5।।** दिवंगत आत्मा के निमित्त दीपक श्राद्ध भी इसी अमा को निशान्त में किया जाता है। अर्थात् यह सब अमावस्या को ही होता है प्रतिपदा की रात्रि में नहीं। एवं च- **अमावस्या यदा रात्रौ दिवा भागे चतुर्दशी। पूजनीया तदा लक्ष्मी विज्ञेया सुखरात्रिका।।6।।** अर्थात् दिन को चौदस व रात में अमा की रात्रि में लक्ष्मी पूजन करें। लक्ष्मी के लिये यह सुखरात्रिका है। **शरत्काले च देवेशि! दीपयात्रा दिने तथा। अमावास्यां समासाधन मध्यरात्रौ विचक्षणः।।7।।** बुद्धिमान् लोग शारदीय दीपावली अमावस्या मध्यरात्रि में होती है तब मनाते हैं। **अर्धरात्रे महेशनि! अमावस्या सदा भवेत्। चतुर्दशीयुता ग्राह्य चामुण्डा पूजने सदा।।8।।** अर्थात् चौदस को अमावस्या अर्धरात्रि में हो उस दीवाली के दिन चामुण्डादि अपनी-अपनी कुलदेवियों को सदा पूजें। इन सब प्रमाणों को त्याग कर **दण्डैक रजनी योगे दर्शःस्यात्तु परेऽहनि।।9।।** अर्थात् चौदस,अमा दोनों दिन प्रदोष व्यापिनी एक घटी(24मिनट) भी रात्रि का योग हो तो दूसरे दिन अमा को दीपावली करेने का लिखा है। निर्णय सागर पंचांग ता.1.11.2024 को गणना दीपावली अमा 28.36 घटी को जांच की तब अमा 28.31 घटी ही आती है। सूर्यास्त बाद 23 मिनट ही रहती है अर्थात् एक घटी (24मि.) से भी कम है। इसे इन्होंने तोड़ मरोड़ कर एक घटी से आगे 25 मिनट अर्थात् दो मिनट बढ़ा कर दीपावली घोषित कर दिया। ये गोधूलिक में ही पूजन मानते हैं पंचांग में सिंह लग्न तक पूजन क्यों छापते हैं ? इनकी गणना की बाल की खाल निकालने बैठू तो ये दो घटी से हतोभ्रष्ट हो जायेंगे। गणितज्ञ इनकी गणना को जाँच कर भ्रम का निवारण कर देवे। इसी प्रकार ता.21.10.25 की इनकी दीपावली शताब्दी में मात्र सूर्यास्त के बाद **15 मिनट** ही है। एक घटी(24मि.) भी नहीं हैं फिर भी इस दिन दीपावली लिखकर भ्रमित कर रहे है। इस वर्ष देखते हैं कि नकलची किस प्रकार पिष्टपेषण करते हैं। परन्तु दीपावली ता.20.10.25 को ही आर्ष ग्राह्य है। नकल में भी अकल लगाकर काम करेंगे तो अच्छा होगा। **सुज्ञेषु किं बहुना।।**

होलिका दहन- ता.2.3.26 फाल्गुन शु.14चंद्रवार भद्रा 52.18(रात 3.59बजे तक)अर्थात् ब्रह्ममुहूर्त में 4 बजे से 5 बजे तक होली दहन कर देवे। इसके पूर्व भद्रा त्याज्यःहै। भद्रापुच्छ जो भद्रा के पीछे तृतीयचरण में पूंछ 3 घटी(72मिनट) भद्रा समाप्ति के पूर्व में करने का लिखते हैं वह भी उतावलापन हानिप्रद है यथा- **भद्रायां द्वे न कर्तव्यं श्रावणी फाल्गुनी स्तथा। श्रावणी नृपतिं हन्ति,ग्रामं दहती फाल्गुनी।।1।** अर्थात् रक्षाबंधन भद्रा में यजमान व भाई आदि के लिये घातक है। होलिका ग्राम को घातक है अशुभ है। नहीं करे।

ग्रहण विवरण

खग्रास चंद्र ग्रहण

संवत्२०८२ भाद्रपद शु.१५ सूर्यवार ता.७.६.२०२५ई.।

समय	स्पर्श	सम्मीलन	मध्य	उन्मिलन	मोक्षः	पर्वः
घटी	३८	४१	४२	४४	४७	६
पल	२६	१३	५६	५३	३७	८
घंटा	२१	२२	२३	२४	२५	३
मिन.	४६	५५	३७	२३	२८	३६

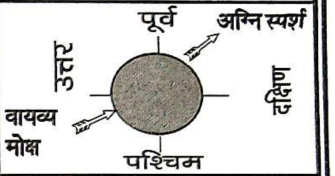

<u>ग्रहण विवरण</u>- इस ग्रहण का स्पर्श सायं 9.49 बजे व मोक्ष रात 1.28 बजे होगा। सूतक दोपहन 12.49 बजे(9 घंटा पूर्व लगेगा)मोक्ष 1.28 बजे के बाद सूतक निवृत्ति होगी। यह ग्रहण पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र कुंभ राशि पर लगेगा। यह खग्रास पिशंगवर्ण (ललाई लिये भूरे रंग) का होगा। राशियों पर प्रभाव- (1) मेष पर शुभ,वृषभ पर शुभ,मिथुन पर मध्यम, कर्क को मृत्युवत् कष्ट, सिंह को मध्यम,कन्या शुभ, तुला मध्यम,वृश्चिक अनिष्ट,धनु शुभ, मकर मध्यम,कुंभ अनिष्ट,मीन पर अनिष्ट प्रभाव रहेगा।

ग्रस्तोदित खग्रास चंद्र ग्रहण

संवत्२०८२ फाल्गुन सुदी १५ मंगलवार ता.३.३.२०२६ई.

समय	स्पर्श	सम्मीलन	मध्य	उन्मिलन	मोक्षः	पर्वः
घटी	२१	२४	२५	२५	२६	८
पल	१०	४८	१२	५४	३२	२२
घंटा	१५	१६	१७	१७	१८	३
मिन.	३१	५८	७	२४	५१	२०

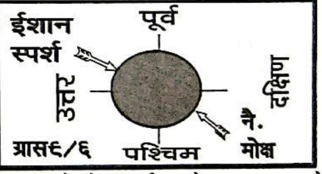

<u>ग्रहण विवरण</u>- इस ग्रहण का स्पर्श दिन को 3.31 बजे मोक्ष सूर्यास्त के बाद 6.51 बजे होगा। सूतक प्रातः 6.31 बजे(9घंटा पूर्व)लगेगा। सूतक निवृत्ति सायं 6.51 बजे मोक्ष के बाद होगी। यह ग्रहण पूर्वा फाल्गुनि नक्षत्र,सिंह राशि पर लगेगा। इस ग्रहण का रंग पिशंग वर्ण ललाई लिये भूरे रंग का होगा। राशियों पर प्रभाव- मेष- मध्यम, वृषभ- अनिष्ट, मिथुन- शुभ, कर्क-मध्यम, सिंह-अनिष्ट, कन्या- अनिष्ट, तुला-शुभ, वृश्चिक-शुभ, धनु-मध्यम, मकर-मृत्युवत् कष्ट, कुंभ-मध्यम एवं मीन पर शुभ रहेगा।

पूज्य गुरुदेव

स्व. पं.भवानीशंकरजी द्विवेदी काणाणा

-: संवत्सरफल :-

ॐ ब्रह्मा मुरारि स्त्रिपुरान्तकारी, भानु शशी भूमि सुतो बुधश्चः।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः, सर्वे ग्रहाः शांतिकरा भवन्तुः ।।

राजा शनि- शनैश्चरे भूमिपतौ सकृज्जलं प्रभूत रोगैःपरिपीड्यते जनः।
युद्धं नृपाणां गद तस्करार्धै र्भ्रमन्ति लोकाःक्षुधिताश्च देशान्।।१।।

उपराजा सूर्य- सूर्ये नृपे स्वल्प फलाश्च मेघाःस्वल्पं पयो गौषु जनेषु पीडा।
स्वल्पं सुधान्यं फलमल्प वृक्षा श्चौराग्नि बाधा निधनं नृपाणाम्।२।

मंत्री सूर्य- नृपभयं गदगोपि हि तस्करात्प्रचुरधान्य धनादि महीतले।
रसचयं हि समर्घतमं तदा रविरमात्यपदं हि समागतः।३।।

सस्येश बुध- जलधराजल राशिमुचो भृशं सुख समृद्धियुतं निरुपद्रवम्।
द्विजगणःश्रुतिपाठ करःसदा प्रथम सस्यपतौ सति बोधने।।४।।

धान्येश मंगलः- भूमिजे ग्रीष्म धान्येशे ग्रीष्म धान्य महर्घकम्।
शालीक्षु घृततैलादि महर्घाणि भवन्ति च।।५।।

मेघेश सूर्य :- जलदपे यदि वासरपे तदा सरसिवैरमते जनता रसम्।
यव चणेक्षु निवार सुशालिभिःसुखचयं सुलभं भुवि वर्तते।।६।।

रसेश शुक्रः- यजन याजनकोत्सव कोत्सुका जनपदा जलतोषित मानसाः।
सुख सुभिक्षसु मोदवती धराधरणिपा हत पापगणप्रियाः।।७।।

नीरसेश बुध- चित्रवस्त्रादिकं चैव शंख चंदनपूर्वकम्।
अर्घ वृद्धिः प्रजायते नीरसेशो बुधोयदि।।८।।

फलेश शनिः- यदि शनिःफलपः फलहाभवे ज्जनित पुष्प गणस्य दमःसदा।
हिम भयं वर तस्कर जन्तुभी र्जनपदो गद राशि महाकुलः।।९।।

धनेश बुधः- द्रविणपो हिमरश्मि सुतो यदा विविध संग्रह वस्तुफलार्थदा।
द्विजवरा जप यज्ञ सुसंयुताःकृषि विशेष विशेषित मानसाः।।१०।।

दुर्गेश सूर्यः- नय विशेषकर स्तरणि स्तदा गतभया नर राजपुरोगमाः।
समधिकोन तदा नृपजोन्यजःस्वपथजं व्रजतां नभयं क्वचित्।।११।।

काल नाम संवत्सरः- वत्सरे कालयुक्ताख्ये सुखिनः सर्वजंतवः।
सन्त्यथापिच सस्यानि प्रचुराणि तथा गदाः।।१२।।

गुरुउदीयमान मार्गशीर्ष वर्षः- मार्गवर्षेत्वल्प वृष्टिःसस्य हानिरनेकधा।
राजानो युद्ध निरता अन्योन्य वध कांक्षिणः।१३।।

मेघ नाम नीलः- सत्पयोदिशति गोकुल पूर्णा वस्त्रता खिल महीपरि पूर्णा।
नीलनाम्नि जलदे जल वृष्टि र्जायते सकल मानव तुष्टिः।१४।।

रोहिणी निवास संधिः- "संधि संस्थं यदा ब्राह्मर्ं जायते।
खंड वृष्टि स्तदा सर्व धान्याप्तयः।।१६।।

नाग नाम वासुकीः- उदेति यत्र वत्सरेस वासुकि र्भुजंगमः।
प्रभूतं धान्यदायकःसुवृष्टिः कारक स्तथा।।१७।।

आद्रा प्रवेश लग्नः-संवत्२०८२ आषाढ़कृष्णा १२ सूर्य ३८/२८ भरणी१६/३३,सुकर्मा१६/३६ परं धृति तैतिल कर्णे,ता.२२.६.२०२५ई.प्रातः सूर्य २/६/२६/५६ग.५६/५६ आद्रायांरवि १३/४६, मेषे चंद्रः

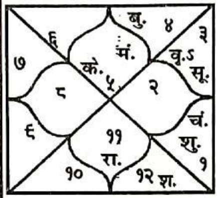

द्वादश्यां शिव नक्षत्रं प्रविष्टश्चे द्दिवाकर। नानाविधं शुभंतर्हिजनः प्राप्नोति निश्चितम्।।१।। अर्थात् द्वादशी को आद्रा प्रवेश से मनुष्यों को नाना प्रकार के शुभ फल मिले। दिनपतिवारे पशुपतिधिष्ण्ये। दिनपति वेशे सति पशुनाशः।।२।। रविवार में आद्रा से पशुओं का नाश हो। **अर्कस्य रौद्र संवेशे भरणी चंद्रभंयदि।तर्हिस्याद्रोग बाहुल्यं शुभं नैवकदाचन।।३।।** अर्थात् भरणी नक्षत्र हो तो रोग बाहुल्य हो और शुभ कुछ नहीं हो। **सुकर्मा नामयोग केयदीशभरं विर्व्रजेत्। तदा समस्त भूसुराःसुकर्माकर्तुमुद्यताः।।४।।** अर्थात् सुकर्मा में हो तो सम्पूर्ण ब्राह्मण लोक अच्छे कामों के करने में उद्यत (तैयार) हों।

जगल्लग्नः मेषेऽर्क प्रवेशः

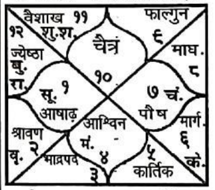

संवत् २०८२वैशाख कृष्णा १ सूर्य ६०/०,चित्रा ३४/५ परं स्वात ,हर्षण ३५/१६परं वज्र,कौलकर्ण। ता.13.4.2025ई.प्रातःसूर्य ११/२६/१०/४२ ग.५८/४६,तुलेचंद्र मेषेऽर्क५०/२१ल.९/१३

चैत्र मास में गर्मी प्रकोप,राजा प्रभावशाली रहे। वैशाख में अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होवे। ज्येष्ठ में व्यापार अच्छा। आषाढ़ में गर्मी ज्यादा परन्तु राजव्यवस्था सुदृढ़। श्रावण में अच्छी वर्षा,खेतियां अच्छी। भाद्रपद में खंड वृष्टि। आश्विन में खड़ी फसलें सूखे। अग्निउपद्रव होवे। कार्तिक मास अच्छा रहे। व्यापार श्रेष्ठ। माघ फागुण में व्यापार अच्छा कहीं पाला पड़े।

वर्ष(संवत्सर)लग्नःविचार

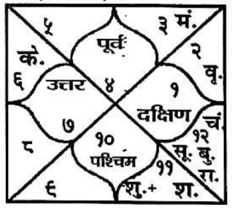

वर्ष लग्नः- अमान्त चैत्र शुक्ला १ प्रवेश विक्रम सं.२०८१ चैत्र कृष्णा ३० शनि २०/५६परं प्रतिपदा,उभा.२८/३०,ब्रह्मा ३६/४ नाग २०/५६ परं किंस्तुघ्न ता.२९.३.२५ई.।प्रातःसूर्य ११/१४/२५/१३ग.५६/२०, मीनेचंद्रः अमा.इष्ट२०/५६ ल.३/२२ **कर्केसुखंतु पूर्वस्या मुत्तरस्यांतु विग्रहः। स्याच्चासन बलंयावद् दुर्भिक्षं पश्चिमे दिषि।।१।।** कर्क लग्न में वर्ष प्रवेश से पूर्व में सुख,उत्तर में दुःख तथा आसन (सत्ता) का बल और पश्चिम में दुर्भिक्ष होवे। ईशान व उत्तर दिशा के बीच प्रदूषण से रोग,पीलिया आदि फैले।

लाभ खर्च (अष्टोत्तरी मतेनः)

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
लाभ	१४	८	११	५	८	११	८	१४	२	५	५	२
खर्च	१४	८	५	५	१४	५	८	१४	८	२	२	८
फल	क्लेश	विजय	विजय	लाभ	अपयश	विजय	विजय	क्लेश	लाभ	मानयश	मानयश	लाभ

MANAV ASTRO & VEDIC 8586094945 , 8302680069

देश विदेश की भविष्यवाणियाँ

(विशेषतः-विश्व परिपेक्ष्य में ये भविष्यवाणियाँ है। छत्रभंग का अभिप्राय- सत्ता, सत्ताधीश व बड़े नेता से संबधित जानें। राजा का अभिप्राय सत्ता पर बैठा नेता, मंत्री, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति व प्रख्यात व्यक्ति से जानें।सत्ता पर क्रूर योगों का फल जल्दी प्रभावी होता है जो इसमें राजनैतिक भविष्य दिया गया है। अच्छे बुरे योगों का फल "मौसम भविष्य" में पढ़ें)

पश्चिमीय देशों में भारी विनाश : मीनावतारवत् बचाव : भारत वंदनीय!!

इस वर्ष में दण्डााधिकारी शनि कुंभ(घड़ा) व मीन(मत्स्य,मत्स्यावतार) इन दो राशियों पर अतिचार,वक्री मार्गी की चाल से वर्षान्त में मीन राशि पर आरूढ़ है। प्रभावतः- **पूभा उभा रेवे शनि,रक्षोभूत हो शनिवार। राक्षस प्रकट हो जगत में,तब युद्ध भूकम्प संहार।। कुंभ छोड़ मीन शनि,प्रभावित राशि दोय। पापी मरे कलि कुंभ में,मीने शनि धर्म रक्षक होय।। म्लेच्छ युद्ध जल विप्लव हुवे, मीन शनि जब आय। स्थान वृद्धि शनि मीन में,भारत वंदनीय होजाय।।१।।** अर्थात् इस वर्ष में पूर्वाभाद्रपद (नीरनाड़ी), उत्तराभाद्रपद (सौम्य नाड़ी) पर शनि गतिशील रहेगा। वस्तुतः पूभा,उभा, रेवती पर शनि होने पर शनिवार के दिन रक्षोभूत(राक्षस भूत) का समय होता है। इस समय में संसार में राक्षस प्रगट होते हैं। तब इस समय में युद्धोपद्रव,भूकम्प आदि से संहारक(विनाशक) घटनायें घटित होती है। इस वर्ष में कुंभ,मीन दो राशियों को प्रभावित कर रहा है। कुंभ शनि के समय के कलिकाल में पापाचारी मरते हैं और मीन का शनि धर्म व धर्मियों की रक्षा मीना अवतार की तरह करता है। मीन शनि में म्लेच्छों में युद्ध,जल विप्लव होता है। स्थान वृद्धि (धनु मीन गुरु राशि पर) शनि होने से भारत की (धनु राशिपति गुरु) मान बढ़ाने वाला है। जो विश्व में भारत की प्रतिष्ठा मान सम्मान बढ़ायेगा।

वर्ष में कुंभे शनि ता.८ जून २०२५ तक आगे ता.६.८.२०२५ से ता.१३.२.२०२६ तक वक्र मार्ग **शनि कुंभ** पर रहेगा। शास्त्रतः जनता धन,अनाज से सम्पन्न सुखी होवे **धर्माधर्मो विधत्ते सुखि निरत जनों मेघपूर्ण धरित्री। -कुंभगे सूर्य पुत्रो।।१।।**(वर्ष प्रबोध) पृथ्वी जल से पूरित होवे। धर्म अधर्म का विधान(कानून) बने। धर्म का प्रचार होवे। म्लेच्छ देशों में युद्ध होवे। वस्तुतः गत डेढ़ वर्षो के शनि कुंभस्थ में जल विप्लव,भूकम्प,तृतिय विश्वयुद्ध स्थिति रही है शेष इस कुंभ के शनि में राक्षसी कृत्य करनें वालें राक्षसों का विनाश होगा।

आगे **मीन का शनि**- ता.८ जून २०२५ से ६.८.२०२५ तक आगे ता.१२.२.२०२६ से अगले वर्ष में मीन पर (मत्स्या अवतार) राशि पर चलेगा। शास्त्रतः- **अर्क पुत्रो यदा मीने दुर्भिक्षं तत्र रौरवम्। सागराः सर्वनद्यश्च विनश्यन्ति चतुष्पदान्।।२।।** (भवि.भास्कर) अर्थात् मीन शनि में दारुण दुर्भिक्ष पड़े समुद्रों सभी नदियों व पशुओं का विनाश होवे।

पृथ्वी वैकम्प मात्रं प्रचलति पवनःकम्पते नागलोकः। सप्तद्विपेषु सिन्धोगिरिवर गहने सर्व वृक्षादि हानिः।। नाशः पृथ्वीपतीनां जनपद विलयो यान्ति मेघाः प्रणाशं। चक्रावर्तैःसमस्तं भ्रमति जगदिदं मीनगे सूर्य पुत्रे।।३।। (वर्ष प्रबोध) अर्थात् इस मीन के शनि में पृथ्वी कम्पित होवे, पवन चले, पाताल (अमेरिका) आदि में भूकम्प हो। सिंधु तथा पर्वतों में उत्पात हों,सब वृक्षादि की हानि हो,राजाओं का नाश हो,मनुष्यों का विनाश हो,मेघों का अभाव हो और प्रचण्ड पवन से सारा जगत घूमे। पूभा.शनि नीर नाड़ी में होने से **पूर्वा भाद्रपदा ऋक्षे यदा सौरिश्च संस्थितः। मेघश्च वर्षते तत्र लोकानांच हितायवै।।४।।** (अर्घप्रकाश) अर्थात् इस पूरे वर्ष में पू.भा.शनि ता.१४.३.२०२६ तक नीरनाड़ी पर चलेगा लोगों को हितकारक मेघ वर्षेगे। यह नक्षत्र भी रक्षोभूत में होने से राक्षस के कारण पश्चिम के सम्पूर्ण देशों में अत्यन्त विग्रह और उत्पात होवे। **तदा भूपा विनश्यंति पृथ्वी शोणित पूरिता।।५।।** (भवि.भा.) अर्थात् राजाओं का नाश पृथ्वी रुधिर से पूरित होवे। **मीन शनीश्चर करता वास। सब देशनिका करता नास। अथवा घन हुइ परलोकाल। सागर कीजल तोरै पाल।। पुर पट्टन दीसै जु जलंत। साधु लोक जग घने क्षयंत।।६।।** (घाघ भड्डली) अर्थात् मीन शनि में देशों का नाश,अति वृष्टि,समुद्रतट,टूटे समुद्र जल का उल्लंघन से जल विप्लव, कई देशों में अग्नि उपद्रव में जलें,साधु लोगों व जगत् का क्षय होवे। प्रचण्ड

पवन,तूफान,भूकम्प,भयंकर महामारियों से जनक्षय होवे। शनि का मीन पर चलना, जलजीवों की रक्षा करना व समुद्र समुद्रीय जीवों को बचाना, विनाशक राक्षसों का क्षय करना,दण्डित करनें का होता है। भगवान् मत्स्यावतार श्रृष्टि के बीजों को बचानें के लिये विकट संकटकाल में हुआ था। ऐसे विकट काल से बचनें के लिये तारणहार नारायण(मत्स्य भगवान) की आराधना अनन्य भक्ति भाव से करें बचाव होगा,नारायण सुनेंगे। गुरु की राशि पर शनि व भारत की धनु राशि पति गुरु **"स्थान वृद्धि करो शनि"** भारत की वृद्धि,प्रगति,मान सम्मान विश्व में बढ़ायेगा।

प्रभावित राशियाँ- कुंभ शनि साढ़े साती पनौती प्रभावित देश मकर,कुंभ, मीन व ढैय्या पनौती धनु,सिंह राशि देश। शनि दृष्टि मेष,वृष,सिंह,कन्या, धनु राशि के देश,ग्राम,मनुष्य प्रभावित होगें। पूर्व वर्णित शनि के प्रभाव से उक्त राशियें विशेष प्रभावित होगी।

गुरु से - दारुण भय : उच्च्व सनातन ज्ञान मत लड़ मरो :

इस वर्ष में गुरु जो भारत की **धनु राशि** का मालिक है वह वृषभ(बैल पर शिवरूप) मिथुन पर (दाम्पत्य जीवन,मैथुनी रूप) तथा कर्क पर (उच्चस्थ केकड़ा रूप) तीनों राशियों पर गतिशील होकर पूरी श्रृष्टि को प्रभावित करेगा। यथा- **भारत पति इस वर्ष में,तीन राशि को सेव। वृषे गुरु दांनवदलन, यवन रक्षक भृगु देव।। मिथुने गुरु मैं व्यभिचारी मरे,करे राक्षस बुद्धि संहार। चेचक विसूचिका शर्करा,महामारी में संसार।। उच्च्व राशि गुरु बैठकर,देवे उच्च्व सनातन ज्ञान। युद्ध समय नहीं मत लड़ मरो,यह भारत प्रधान का आव्हान।।१।।** अर्थात् वर्ष प्रवेश से **वृषे गुरु** ता. ६.५.२०२५ तक शिवरूप में दांनव राक्षसी कार्य करने वालों का विनाश करेंगे व दैत्याचार्य भृगु देव जो उनके सदाचार की बात शिवाज्ञा को मानेंगे वे यवनों के रक्षक होंगे। आगे **मिथुने गुरु** ता.७.१०.२५ तक व ता.२१. १०.२०२६ई. से मैथुनी श्रृष्टि में व्यभिचारी,वर्णशंकर मरेंगे जो राक्षस बुद्धि वालें होंगे उनका संहार होगा। सर्वत्र चेचक विसूचिका (हैजा आदि विषाक्त रोग),शर्करा व महामारी में संसार होगा। आगे कर्कस्थ उच्च्व गुरु ता.२१.१०.२०२६ तक होगा, जो संसार को उच्च्व सनातन संस्कारों का ज्ञान देगा। यह समय युद्ध का नहीं है लड़ लड़ कर मत मरो। यह आव्हान भारतीय प्रधानमंत्री (प्रधान श्री नरेन्द्र मोदी) ने सारे संसार को कर दिया है। शास्त्र वचन- **यदा जीवो वृषे यांति सुभिक्षं सर्व सौख्यम्। गोरसाज्यं महर्घाणि सस्यं च प्रचुरं भवेत्।।२।।** अर्थात् वृषे गुरु में सुभिक्ष,सभी सुख,गोरसादि घी आदि महंगे,फसलें बहुत होवे। आगे इस वर्ष में मिथुने गुरु का प्रभाव ज्यादा रहेगा। अतः **मिथुने च गुरुर्याति तत्राब्दे दारूणं भयम्। नृपाणाम् विग्रह स्तत्र स्वल्पं तोयं भविष्यति।।३।।** अर्थात् मिथुन गुरु में दारूण(भयानक) भय,राजाओं में युद्ध व वर्षा कम होवे। इस ज्येष्ठ वर्ष में बालकों,घोड़ों में पीड़ा,खण्ड वृष्टि होवे। चोरों का उपद्रव,पापियों का नाश होवे। पश्चिम देश(सिंधु देश) वायव्य,उत्तर दिशा के देशों में चित्र विचित्र वर्षा तथा रोग पीड़ा होवे। श्रावण में भैंस,हाथियों को पीड़ा होवे। पूर्व, अग्नि दक्षिण,ईशान देशों में सुभिक्ष होवे। **राजास्वस्थः प्रजावृद्धिः सुभिक्षं मंगलं भुवि।।४।।** राजा लोग स्वस्थ रहें, प्रजा बढ़े,सुभिक्ष हो,पृथ्वी पर मंगल होवे। आगे कर्क गुरु में- **बृहस्पतिर्यदा कर्केस्वल्पं मेघः प्रवर्षति। राजाभिर्विग्रह श्चैव दुर्भिक्षं तत्र जायते।।५।।** अर्थात् कर्क गुरु में वर्षा अल्प,राजाओं में युद्ध व दुर्भिक्ष होता है।

प्रभावित राशियां- इस वर्ष में वृष,मिथुन,कर्क राशियों पर धर्माचरण व शुभकार्यों से शुभ रहेगा। मनोबल मजबूत होगा। गलत कार्य करने से अशांति रहेगी। गुरु की दृष्टि से कन्या,तुला,वृश्चिक व धनु राशि के देशों में शिक्षा चिकित्सा,धार्मिक कार्यों में शुभ। जनसंख्या में संतुलन रहेगा। स्त्रियों का उत्थान होगा। मकर राशि के देशों में अशांति उपद्रव,चरित्र पतन, विनाशक घटनायें घटेगी। प्रदूषण बढ़ेगा।

राहु केतु से- आकाश पाताल ब्रह्माण्ड में विस्फोट : परमाणु प्रदूषण से त्राण

इस वर्ष में मीन (मत्स्यादि जीवों पर) राहु व कन्या (स्त्री) केतु ता.३०.५.

२०२५ई. तक चलेंगे आगे वक्रगामी कुंभे(घड़ा) राहु व सिंहे (सिंहादि व सैनिक) केतु वर्ष पर्यन्त चलेंगे। फलतः- **मीन राहु समुद्र के,मरे मत्स्यादि जीव। आकाश पाताल ब्रह्माण्ड विस्फोट विस्फोट हो अतीव।। कुंभ राहु शनि मिलन सुं, दे पाप कुंभ को फोड़। बांध टूटे बादल फटे,जल विप्लव नहीं तोड़।। कन्या केतु कन्या बिके,सिंह केतु सिंह हांण। रणबंका रण झूंससी,करे परमाणु प्रदूषण त्राण।।१।।** अर्थात् मीने राहु से समुद्रीय मत्स्यादि जीव मरेंगे,आकाश पाताल,ब्रह्माण्ड में अतीव विस्फोट होवे पापाचारी मरेंगे। ब्रह्माण्ड में बहुत विस्फोट होंगे। आगे वर्ष में कुंभे राहु चलेगा व कुंभे शनि+राहु युति ता.६.८.२०२५ से वर्ष पर्यन्त चलेगी, जिससे पाप का घट फूटेगा(पापियों का भण्डाफोड़ होगा) बादल फटेंगे,बांध टूटेंगे,जल विप्लव होगा,बचाव के लिये कोई तोड़ नहीं मिलेगा। कन्या के **केतु में कन्या**(स्त्री जाति) विक्रय होगा। **सिंह केतु** में वन्य जीवी सिंहादि हिंसक जीवों का व सैनिक वीरों की हानी होगी। रणबंका रण में लड़ेंगे,परमांणु प्रदूषण से बचानें का उपाय भी करेंगे। शास्त्रतः- **यस्मिन् संवत्सरे राहुर्मीन राशौ प्रजायते। तस्मिन्मासे भयं विद्युद् दुःख कष्ट समागतः।।२।।** (वर्ष प्रबोध) अर्थात् जिस वर्ष में **मीन का राहु** हो तो उनके आक्रांत मास में बिजली का भय हो और कष्ट का आगमन हो। **पूर्वजाया मंगनाथं नैमिषेशे मुखागतौ-** राहु पू.भा.में अंग देश के राजा का उ.भा.में नैमिष देश के राजा का नाश करता है। **उज्जयिन्यां नृपं हन्या दुत्तरा फाल्गुनीगतः-** केतु उत्तरा फाल्गुनि में उज्जैन देश के स्वामी का,**पूफायां पांड्य नायकम्-** पू.फा. केतु में पाण्ड्य देश का स्वामी व **मघामंगनाथं च-** मघा में अंग देश के पति का नाश होता है। **प्रभावित राशियां-** मीन राहु कन्या केतु से मीन राशि ,कन्या राशि व धनु,सिंह,मेष राशि के देश,ग्राम,मनुष्य आदि के प्रभाव से **''राहु छुड़ावे वास,केतु छुड़ावे खेत''** के अनुसार स्थान परिवर्तन,पलायन व विषाक्त वातावरण,प्रदूषित वायु होवे।

चैत्र शुक्ल पक्ष में- भूकम्प : राजाओं में क्षोभ : जन पलायन

(१) पांच शनि का मास भूकम्प,ईशान देश में भंग, अग्निकाण्ड होवे। (२)चैत्र में पांच शनि,वैशाख में पांच रवि,ज्येष्ठ में पांच मंगल से इस **परचक्र** योग से जन पलायन,जनधन नाश होवे। (३) ता.४.४.२०२५ तक बुध,शुक्र वक्र होने से **यदा द्वो प्रतिपगौ खेटौ नृपंक्षोभयतदा-** राजाओं में क्षोभ, पीड़ित होवे। (४) ता.८ अप्रेल तक कुंभे बु.+शु.+श.तीन ग्रहों की युति **त्रयोघ्ननन्ति नराधिपं-** राजा का मरण होवे। (५) ता.३ अप्रेल से ता. १८ मई तक मंगल पुनः,पुक्ष पर व गुरु मृगसिर पर होने से **अंगारक योग** से भारी गर्मी,अग्नि प्रकोप,अग्निकाण्ड होवे। (६) वर्ष प्रवेश से १३ अप्रेल तक मीने सू.+रा.युति बड़े राष्ट्राध्यक्ष पर घात,परमाणु विस्फोट। (७) ता. ८ से १३ अप्रेल तक मीने सू.+बु.+रा.युति से **ग्रहयुद्धे भवेद् युद्धं** युद्धोपद्रव होवे। राजाओं में क्षोभ होवे। (८) ता.८ से १६ अप्रेल तक कुंभे शु.+श.युति **द्वौ ग्रहौ नृप संक्षोभं** राजाओं में क्षोभ,अशांति होवे। (९) ता. १२ अप्रेल से ता.८ जून तक कर्के भौम,कुंभे शनि से षडाष्टक भूकम्प,भारी गर्मी,ज्वालामुखी फटे,युद्धोपद्रव होवे।

वैशाख में - छत्रभंग : खप्परयोग : कालसर्प से प्रदूषण रोगोपद्रव!

(१) इस मास में पांच रवि **''पांच रवि छत्र टूटि धनणि पड़े।।१।।''** छत्रभंग(बड़े नेता का मरण) होवे। (२) ता.१३.४.२०२५ मेषेऽर्क रविवारी **''रोग घनो रवि पांचते।।२।।''** रोगोपद्रव। ता.२७ अपेल को अमा. रविवारी से **रवि मावस वैशाख,छत्रभंग''** छत्रभंग,सत्ताभंग,बड़े राजपुरुष का मरण होवे। (३) ता.१३ से १६ अप्रेल तक मीने बु.+रा.युति **द्वौ ग्रहो नृप संक्षोभ।।३।।** राजाओं (नेताओं) में क्षोभ। आगे ता.१६ से ३० अप्रेल तक मीने बु.+शु.+रा.युति **त्रयोघ्ननन्ति नराधिपम्।।४।।** राजा पर घात मरण होवे आगे ता.२४ से २६ अप्रेल तक मीने बु.+शु.+चं.+रा.युति **चत्वारो राज्य नाशाय।।५।।** राज्य में विनाशक घटना घटे। **''प्लावयंति महिं सर्वी रुधिरेण''**अर्थात् पृथ्वी रुधिर से पूरित होवे। (४) ता.२७ अप्रेल अमा. रविवारी छत्रभंग व **जिनवारा रवि संक्रमें,तिनै अमावस होय। खप्पर हाथ ले**

जग भ्रमे भीख न घाले कोय।।६।। इस खप्परयोग में जनपलायन, सहायता की भीख मांगे। (५) २६ अप्रेल चंद्रोदय कृत्तिका में **आद्रा भद्रा कृत्तिका, आर्द्रा रेव मघाहिं। चन्द्रोदय ऊगे दूज को,सुख में नरा अघाहिं।।७।।** जनता सुख समृद्धि सम्पन्न होवे। (६) ता.३०अप्रेल ता.८ जून तक कुंभे+रा.युति भय,रोग,मरण,महामारी से अशांति **द्वौ ग्रहो नृप संक्षोभः ।।८।।** राजाओं क्षोभ होवे। ता.३ से १४मई तक मेषे बुधादित्य योग शनि दृष्ट होने परस्पर पिता पुत्रवत् नेताओं में वैर विरोध टकराव बढ़े।(७)ता.६ मई वैशा.शु. ६को **रोहिणो चोचरास्तिस्त्रो मघा वा रेवती भवेत्। नवम्यां मण्डले रादे तदा कष्टं महद् भुवि।।६।।** अर्थात् नवमी मघा होने से भूमण्डल पर बहुत कष्ट,महाभय होवे। (८) ता.३० अप्रेल से ३० जुलाई तक राहु , केतु के मध्य सभी ग्रहों के कारण कालसर्प योग विषभय, प्रदूषण से मरे।

ज्येष्ठ में – बड़े नेता का मरण : विस्फोट : हिन्दु संतापित

(१) पांच मंगल का मास होने से **''मंगले म्रियते राजा।।१।।''** अर्थात् बड़े नेता,राजपुरुष का मरण होवे। (२) ता.१३.५.२०२५ को १ मंगलवारी '' **पंच भौमे भयं महत्''** बहुत भय,छत्रभंग होवे। (३) ता.१६ से २२ मई तक कुंभे चं.+श.+रा.युति से **ग्रहयुद्धे भवेद्युद्धं-** युद्धोपद्रव होवे। ता.२० मई से ता.४ जून तक वृषे सू.+बु.युति से राजाओं में क्षोभ होवे। (४) ता.२६ से २८ मई तक वृषे चं.+सू.+बु.युति **''त्रयोघ्ननंति नराधिपं''** बड़े राजा का मरण होवे। (५) ता.२७ मई अमा.मंगली युद्धोपद्रव,विस्फोट घटनायें घटे। (६) ता.४ से १५ जून तक मिथुने बु.+वृ.युति व ता.११ मई से ३० जुलाई तक सिंहे मं.+के. की युति **द्वौ ग्रहौ नृप संक्षोभम्-** राजाओं को क्षोभ, अशांति कारक है। (७) ता.११ जून से ता.३० जुलाई तक सिंहे भौम व मीन शनि का षडाष्टक योग व सिंहे मं.+के.युति ७वें राहु से संहारक है। (८) ता.११ जून से ता.१२ जुलाई तक **मिथुन गुरु अस्त पश्चिम** में हिन्दु व हिन्दुराष्ट्र के लोग संतापित होवे। बलात्कार बढ़े। पलायन होवे।

आषाढ़ में – पश्चिम में युद्ध :

पृथ्वी रुंडमुंड कपालव्रत धारण करे!

(१) आषाढ़ में पांच गुरु होने से **यत्रमासे पंचवारा जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्ग युद्धंच जायते।।१।।** अर्थात् पश्चिम दिशा में,पश्चिमी देशों में युद्ध होवे। (२) ता.१२ जून २०२५ई. को १ मूल भूकम्पादि से जननाशः। (३) ता.१५ जून **मिथुनेऽर्क रविवारी** राजाओं में युद्धोपद्रव होवे। (४) ता.१५ से २२ जून तक मिथुने सू.+बु.+वृ.युति आगे ता.२२ से २४ जून तक मिथुने सू.+चं.+वृ.युति **त्रयोघ्ननंति नराधिपम्।।२।।** राजाओं,राजपुरुषों का मरण होवे। (५) ता.२४ जून आषाढ़ कृ.१४ मंगल रोहिणी से - **चतुर्दश्यां राजयुद्धं प्रजाशोकाकुला तदा।।३।।** राजाओं में युद्ध,छत्रभंग,प्रजा में शोक से परेशान होवे। (६) ता.५ जुलाई से ता.११ नवम्बर तक शनि वक्री होने से-**''शनि वक्रे च दुर्भिक्षं रुंडमुंडा च मेदिनी।।४।।''** अर्थात् पृथ्वी पर भयानक विनशलीला होवे। **अतिचार गते जीवे वक्री भूते शनैश्चरे। हाहाभूतं जगत्सर्वं रुण्डमाला महीयते।।५।।** ता.५ जुलाई से ७अक्टूम्बर तक हाहाकार संसद में होवे,पृथ्वी मुण्डों से पूरित होवे। (७) ता.७ से १६ जुलाई तक रोहिणी शुक्र चलेगा जो शनि से भी दृष्ट रहेगा अतः **रोहिणी शकटं शुक्रो यदा समभि रोहति। चक्रारूढ़ा प्रजाज्ञेया महद्भयं विनिर्दिशेत्।।६।।** अर्थात् चक्रारूढा प्रजा महान् भयभीत होती है। **प्राजापत्ये शकटे भिन्न कृत्वेव पातकं वसुधा। केशास्थि शकला कपालमिव व्रतं धत्ते।।७।।**(वाराही सं.) अर्थात् शुक्र के शकट भिन्न करने से पृथ्वी कपाल व्रत धारण करती है। अर्थात् अत्यन्त मरी पड़ती है। एवं च **पाण्ड्य,केरल,चोल,चेदी,कर्नाटका,चेरा आदि** देश पीड़ित होते हैं। **वृषभ राशि** के देश व ओ व(ब) वी,वु रोहिणी नक्षत्राक्षर वाले पीड़ित होवे।

श्रावण में – हिन्दुओं का अभ्युदय : छत्रभंग : अंगारकयोग से कष्ट

(१) ता.१२.७.२०२५ ई.को **गुरुउदय** पूर्वे से हिन्दुओं व हिन्दु देशों का अभ्युदय। (२)ता.१६ जुलाई ६ शनिवारी से **श्रावणे नवमीयुक्तः शनि**

जग भ्रमे भीख न घाले कोय।।६।। इस खप्परयोग में जनपलायन, सहायता की भीख मांगे। (५) २६ अप्रेल चंद्रोदय कृत्तिका में **आद्रा भद्रा कृत्तिका, आर्द्रा रेव मघाहिं। चन्द्रोदय ऊगे दूज को,सुख में नरा अघाहिं।।७।।** जनता सुख समृध्दि सम्पन्न होवे। (६) ता.३०अप्रेल ता.८ जून तक कुंभे+रा.युति भय,रोग,मरण,महामारी से अशांति **द्वौ ग्रहो नृप संक्षोभः ।।८।।** राजाओं क्षोभ होवे। ता.३ से १४मई तक मेषे बुधादित्य योग शनि दृष्ट होने परस्पर पिता पुत्रवत् नेताओं में वैर विरोध टकराव बढ़े।(७)ता.६ मई वैशा.शु. ६को **रोहिणो चोत्तरास्तिस्त्रो मघा वा रेवती भवेत्। नवम्यां मण्डले रादे तदा कष्टं महद् भुवि।।९।।** अर्थात् नवमी मघा होने से भूमण्डल पर बहुत कष्ट,महाभय होवे। (८) ता.३० अप्रेल से ३० जुलाई तक राहु , केतु के मध्य सभी ग्रहों के कारण कालसर्प योग विषभय, प्रदूषण से मरे।

ज्येष्ठ में – बड़े नेता का मरण : विस्फोट : हिन्दु संतापित

(१) पांच मंगल का मास होने से **''मंगले म्रियते राजा।।१।।''** अर्थात् बड़े नेता,राजपुरुष का मरण होवे। (२) ता.१३.५.२०२५ को १ मंगलवारी **''पंच भौमे भयं महत्''** वहुत भय,छत्रभंग होवे। (३) ता.१६ से २२ मई तक कुंभे चं.+श.+रा.युति से **ग्रहयुद्धे भवेद्युद्धं**– युद्धोपद्रव होवे। ता.२० मई से ता.४ जून तक वृषे सू.+बु.युति से राजाओं में क्षोभ होवे। (४) ता.२६ से २८ मई तक वृषे चं.+सू.+बु.युति **''त्रयोघ्ननंति नराधिपं''** बड़े राजा का मरण होवे। (५) ता.२७ मई अमा.मंगली युद्धोपद्रव,विस्फोट घटनायें घटे। (६) ता.४ से १५ जून तक मिथुने बु.+वृ.युति व ता.११ मई से ३० जुलाई तक सिंहे मं.+के. की युति **द्वौ ग्रहौ नृप संक्षोभम्**– राजाओं को क्षोभ, अशांति कारक है। (७) ता.११ जून से ता.३० जुलाई तक सिंहे भौम व मीन शनि का षडाष्टक योग व सिंहे मं.+के.युति ७वें राहु से संहारक है। (८) ता.११ जून से ता.१२ जुलाई तक **मिथुन गुरु अस्त पश्चिम** में हिन्दु व हिन्दुराष्ट्र के लोग संतापित होवे। बलात्कार बढ़े। पलायन होवे।

आषाढ़ में – पश्चिम में युद्ध : पृथ्वी रुंडमुंड कपालव्रत धारण करे!

(१) आषाढ़ में पांच गुरु होने से **यत्रमासे पंचवारा जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्ग युद्धंच जायते।।१।।** अर्थात् पश्चिम दिशा में,पश्चिमी देशों में युद्ध होवे। (२) ता.१२ जून २०२५ई. को १ मूल भूकम्पादि से जननाशः। (३) ता.१५ जून **मिथुनेऽर्क रविवारी** राजाओं में युद्धोपद्रव होवे। (४) ता.१५ से २२ जून तक मिथुने सू.+बु.+वृ.युति आगे ता.२२ से २४ जून तक मिथुने सू.+चं.+वृ.युति **त्रयोघ्ननंति नराधिपम्।।२।।** राजाओं,राजपुरुषों का मरण होवे। (५) ता.२४ जून आषाढ़ कृ.१४ मंगल रोहिणी से – **चतुर्दश्यां राजयुद्धं प्रजाशोकाकुला तदा।।३।।** राजाओं में युद्ध,छत्रभंग,प्रजा में शोक से परेशान होवे। (६) ता.५ जुलाई से ता.११ नवम्बर तक शनि वक्री होने से–''**शनि वक्रे च दुर्भिक्षं रुंडमुंडा च मेदिनी।।४।।**'' अर्थात् पृथ्वी पर भयानक विनशलीला होवे। **अतिचार गते जीवे वक्री भूते शनैश्चरे। हाहाभूतं जगत्सर्वं रुण्डमाला महीयते।।५।।** ता.५ जुलाई से ७अक्टूम्बर तक हाहाकार संसद में होवे,पृथ्वी मुण्डों से पूरित होवे। (७) ता.७ से १६ जुलाई तक रोहिणी शुक्र चलेगा जो शनि से भी दृष्ट रहेगा अतः **रोहिणी शकटं शुक्रो यदा समभि रोहति। चक्रारूढ़ा प्रजाज्ञेया महद्भयं विनिर्दिशेत्।।६।।** अर्थात् चक्रारूढा प्रजा महान् भयभीत होती है। **प्राजापत्ये शकटे भिन्न कृत्वेव पातकं वसुधा। केशास्थि शकला कपालमिव व्रतं धत्ते।।७।।**(वाराही सं.) अर्थात् शुक्र के शकट भिन्न करने से पृथ्वी कपाल व्रत धारण करती है। अर्थात् अत्यन्त मरी पड़ती है। एवं च **पाण्ड्य,केरल,चोल,चेदी,कर्नाटका,चेरा आदि** देश पीड़ित होते हैं। **वृषभ राशि** के देश व ओ व(ब) वी,वु रोहिणी नक्षत्राक्षर वाले पीड़ित होवे।

श्रावण में – हिन्दुओं का अभ्युदय : छत्रभंग : अंगारकयोग से कष्ट

(१) ता.१२.७.२०२५ ई.को **गुरुउदय** पूर्वे से हिन्दुओं व हिन्दु देशों का अभ्युदय। (२)ता.१६ जुलाई ६ शनिवारी से **श्रावणे नवमीयुक्तः शनि**

संताप कारकः। छत्रभंग विजानीया दाश्विनान्ते न संशयः।।१।। अर्थात् आश्विन के अंत में राजा(नेता) मरे,जनता संतापित होवे। (३) ता.१८ जुलाई से १ अगस्त तक बुध,शनि दो ग्रह वक्र होने से **द्वो प्रतिपगी खेटौ नृपं क्षोभयस्तदा।।२।।** राजा(नेता) संतापित होवे। (४) ता.२४ जुलाई से १६ अगस्त तक मिथुने वृ.+शु.युति **गुरु शुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्।।३।। यदा बृहस्पतिः शुक्रंभिद्येदथ विशेषतः। पुरोहिता स्तदाऽमात्याः प्राप्नुवन्ति महद्भयम्।।४।।** अर्थात् युद्धोपद्रव,पुरोहितों,अमात्यों(मंत्री) को बहुत भय प्राप्त होवे। (५) ता.२६ जुलाई चंद्रोदय शनिवारी+आश्लेषा नक्षत्र पर होने से ३० दिन में छत्रभंग(बड़े नेता) का मरण होवे। (६) ता.७ जुलाई से १५अगस्त तक मंगल उ.फा.पर गुरु पुनर्वसु पर होने से यह अंगारक योग अग्नि विस्फोट से जनता संतापित होवे। व ३० जुलाई से ६ अगस्त तक मंगल से शनि का समसप्तक योग भी ज्वालामुखी ,भूकम्प, अग्निकाण्ड का प्रतीक है।

भाद्रपद में – छत्रभंग : वर्णसंकरों का उत्पात : खग्रास चंद्रग्रहण नृपतिक्षय

(१) इस मास में पांच रवि – **यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पंच संततम्। दुर्भिक्षं छत्रभंगःस्यात्तदास्ते च महद्भयम्।।१।।** छत्रभंग,बहुत भय होवे। (२) ता. १७.८.२०२५ को **सिंहेऽर्क रविवारी** उग्रवादियों का अंत,विजयोत्सवप्रद है। (३) ता.१६ अगस्त से १३ सितम्बर तक गुरु के आगे शुक्र से **धर्मार्थ काम लुप्यन्ते सम्भ्रमर वर्णसंकरः** वर्ण शंकरों का उत्पात होवे। (४) ता.२३ अगस्त अमा.**शनिवारी भाद्रपद मासे त्वमावस्यां दुर्भिक्षं रौरवघोरं,महादुःखं महद्भयम् ,परांगमुखाःपितुःपुत्राव्यसनं शनिवासरेः।।२।।** अर्थात् बहुत दुःख बहुत भय,पिता पुत्र परस्पर विमुख हो जावे। बड़े नेता परस्पर विमुख हो लड़े भिड़े। (५) ता.१७ अगस्त से १ सितम्बर तक सूर्य के आगे मंगल (शनि से प्रभावित) होने से यह **अंगारक योग** हवाई विस्फोट,अग्निकाण्ड से नेता मरे। (६) ता.७ सितम्बर को **खग्रास चंद्रग्रहण** रविवार को राजयुद्ध प्रद है। शनि से प्रभावित चंद्र,सूर्य होने से **क्रूर संयुक्त सूर्येन्दोर्ग्रहणे नृपतिक्षयः। राष्ट्रभंग इति प्राहुर्महाप्राज्ञा मुनीश्वराः।।३।।** नृपतिक्षय,राष्ट्रभंग होवे। **यदा क्षुभ्यन्ति सामन्ता राजा राष्ट्रं च पीड्येत।।४।।** सामन्त,राजा(नेता) राष्ट्र उपद्रवों से पीड़ित रहे। **पंच संवत्सरं घोरं चन्द्रस्य ग्रहणं परम्।।५।।** चंद्रग्रहण के बाद पांच वर्ष तक संकट रहे।

आश्विन में– राजा राज्य राष्ट्र पर घात : सनातन संस्कृति की उच्च्व मान प्रतिष्ठा

(१) ता.६ सितम्बर से ३ अक्टुम्बर २५ तक श.+रा.युति व ता.१३,१४ सितम्बर कन्या मं.+बु.युति व ता.१७ सितम्बर से १ अक्टूम्बर तक कन्या सू.+बु.युति **द्वौ ग्रहौ नृप संक्षोभं।।१।।** राजाओं में क्षोभ रहे। (२) ता.१३ से १७ सितम्बर तक सिंहे सू.+शु.+के.युति से **त्रयोघ्ननंति नराधिपं।।२।।** राजा (नेता) पर घात होवे। (३) ता.१६ से २१ सितम्बर तक सिंह सू.+चं.+शु.+के.युति **चत्वारो राज्य नाशाय।।३।। राष्ट्रक्षयोऽपिच।।४।।** राज्य का नाश,राष्ट्रक्षय सत्तापलट आदि होवे। (४) ता.२३ सितम्बर **चंद्रोदय** मंगलवारी अग्निकाण्ड,उपद्रव,राजाओं में विग्रह होवे। (५) ता.२१ से २३ सितम्बर तक कन्या सू.+चं.+बु.युति व ता.३ से ४ अक्टू.तक कुंभे श.+रा.+चं.युति **त्रयोघ्ननंति नराधिपम्।।५।। क्रूरग्रह युतश्चन्द्रो गृह्यते दृश्यतेऽपि वा। यदा क्षुभ्यन्ति सामन्ता राजा राष्ट्रं च पीड्यते।।६।।** राजा, सामन्त,राष्ट्र पीड़ित होवे। नेता मरे। (६) ता.१ से १७ अक्टूम्बर तक तुले मं.+बु.युति से राजाओं(नेताओं) में क्षोभ रहे। (७) कर्क (उच्च्व राशिस्थ)गुरु ता.७ अक्टूम्बर से २१ दिसम्बर २०२५ तक होने से – **बृहस्पतिर्यदा कर्के स्वल्पं मेघःप्रवर्षति। राजाभिर्विग्रहश्चैव दुर्भिक्षं तत्र जायते।।६।।** अर्थात् राजाओं में विग्रह होवे। वस्तुतः आकाशीय भ्रमण में अकस्मात् अतिक्रमण कर **कर्क राशि पर गुरु** का आना हिन्दु,हिन्दु संस्कृति ,हिन्दुराष्ट्र व सनातन पर आये कष्ट को बचानें का उच्च्व प्रयास है। सनातन धर्म को विश्व में प्रतिष्ठा करेगा।

कार्तिक में– छत्रभंग : बलात्कार बढ़े :

दीपावली सोमवारी शुभद : वर्णसंकरों में भय

(१) ता.७.१०.२०२५कार्तिक कृष्णा १ मंगली से पांच मंगली मास व क्षया तिथि से कार्तिक रजस्वला मास होने से **यत्रमासे महीसूनोर्जायते पंचवासराः । रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्।।१।।** पृथ्वी रक्त से पूरित, छत्रभंग होवे। रजस्वला से व्यभिचार(बलात्कार) बढ़े। (२) ता.२० अक्टूम्बर दीपावली सोमवारी श्रैष्ठ। जो भ्रम फैलाकर दीपावली मंगलवारी करेंगे तब वे **सर्वलोक भयावहा।।२।।** तब अशांतिप्रद होवे। **भौमे भूमौ महावह्नी।।३।।** भूमी अग्नि उपद्रव से प्रभावित होंगी। (३) ता.१७ से २५ अक्टूम्बर तक तुले सू.+मं.+बु.युति आगे ता.२१ से २३ अक्टूम्बर तक तुले सू.+चं.+मं.युति व आगे, ता.३० अक्टूम्बर से १ नवम्बर तक कुंभे श.+रा.+चं.युति **त्रयोघ्ननंति नराधिपं।।४।।** राजा(नेता) का मरण। (४) ता.२८ अक्टूम्बर से १६ नवम्बर तक वृश्चिके मं.+बु.युति गुरु दृष्ट होने से विजयोत्सव प्रद। (५) ता.१ से १२ नवंम्बर तक बुध,**शनि वक्र द्वौ प्रतिपगो खेटौ नृपं क्षोभयस्तदा।।५।।** नेता पीड़ित होवे। (६) ता.३१ अक्टूम्बर से ता.१नवम्बर तक तुले सू.+शु.युति से दिवि मध्ये यदा दृष्येच्छुक्रः सूर्यपथास्थितः। सर्वभूत भयं कुर्याद् विशेषाद् वर्ण संकरम्।।६।। (भद्रबाहु) समस्त प्राणियों में भय होवे विशेषकर वर्णसंकरों के लिए भयप्रद है।

मार्गशीर्ष में – पश्चिम में युद्ध : छत्रभंग : युद्धोपद्रव से क्रंदन

(१) पांच गुरु का मास **विग्रहःपश्चिमे देशे खड्गयुद्धंच जायते।।१।।** पश्चिम देशों में विग्रह,खड्गयुद्ध होवे। (२) ता.७ नवम्बर को २ शुक्रवारी व ता.८ नवम्बर २०२५ई. को ३ शनिवारी होने से **माघस्य कृष्ण पक्षे तु द्वितिया तृतीया दिने। शुक्र सौरी भवेतांवैःशस्त्रयुद्धं महीतले।।२।।** पृथ्वी पर युद्धोपद्रव होवे। (३) ता.१२ से २१ नवम्बर तक बुध,गुरु,शनि तीन ग्रहवक्री होने से **प्रतिपगास्त्रयःखेटा युद्ध वृष्टिः भयप्रदाः।।३।।** युद्ध व प्रकृति आपदा का भय बढ़े। (४) ता.१५ नवम्बर को ११ शनिवारी से **अथवा दैवयोगेन शनिवारस्य संगमः। जलशोष प्रजानाश छत्रभंग स्तदा भवेत्।।४।।** प्रजा का नाश,छत्रभंग होवे। (५) ता.१६ से २५नवम्बर तक वृश्चिके सू.+मं.+बु.युति **त्रयोघ्ननंति नराधिपम्।।५।।** राजा(नेता) मरे। (६) ता.१८ नवम्बर को १३ वृध्दि से **मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षे तिथि वृध्दिश्च जायते। तदा युद्धाकुला पृथ्वी प्रजा क्रंदंति नित्यशः।।६।।** पृथ्वी पर युद्धोपद्रव से प्रजा में क्रंदन होवे। (७) ता.१६ से २२ नवम्बर तक वृश्चिके सू.+चं.+मं.+बु.युति व ता.२५ नवम्बर से ६ दिसम्बर तक वृश्चिके सू.+मं.+बु.+शु.युति **महारोग भयं राष्ट्रक्षयो वृष्टि क्षयोऽपिच।।७।।** रोगोपद्रव ,राज्य राष्ट्रक्षय होवे। (८) ता.३ दिसम्बर को शु.१४ तिथि क्षय पौष शु.८,माघ शु.१३,फाल्गुन शु.७क्षय होने से **मार्गशीर्षादि मासेषु शुक्ल पक्षे तिथिक्षयः। छत्रभंगं प्रजापीडां दुर्भिक्षं च समादिशेत्।।८।।** अर्थात् मार्गशीर्षादि फाल्गुन शुक्ला तक तिथिक्षय होने से छत्रभंग,प्रजापीड़ित होवे।

पौष में– हिन्दु देशों में विग्रह : समुद्रीय जहाजों विमानों का नाश : नया रुपया चले

(१) इस मास में **पांच भृगु** से स्त्री सत्ता की जीत। (२) ता.६ से १६ दिसम्बर २०२५ तक वृश्चिके सू.+बु.+शु.युति **रवि बुध भृगु इक रासजू ,राजभंग उत्पात। धरनि पावत कष्ट को,व्यास भणै इहुं भांत।।१।।** फल घटित होवे। (३) ता.१५ दिसम्बर को शुक्रास्त पू.ज्येष्ठा राक्षस नक्षत्र पर गतिशील होने से **शुक्रास्ते राक्षस गणे हिंदुदेशेषु विग्रहः।।२।।** (वर्ष प्रबोध) हिन्दु देशों में विग्रह होवे। खर्पर योग से राज्य में युद्ध,**यानपात्र विनाशोऽब्धै फिरंगाणां च विग्रहः।।३।।** समुद्र में जहाज तथा विमानों का नाश हो और फिरंगियों में विग्रह हो। राज परिवर्तन हो,पुराने किले टूट पड़े। **नव्युमुद्रा प्रकाशः।।४।।** नया रुपया चले। (४) ता.१६ दिसम्बर धनेऽर्क मंगलवारी युद्धोपद्रव ,विस्फोट होवे। (५) ता.१६ से १६ दिसम्बर वृश्चिके चं.+बु.+शु.युति राजा को कष्ट। ता.१६ से २१ तक धने सू.+चं.+मं.+शु.युति राज्य का नाश। ता.२० से २७ दिसम्बर धने सू.+मं.+शु.युति व ता.२४ से २६दिसम्बर तक कुंभे चं.+श.+रा.युति राजा(नेता)मरे। ता.२७

दिसम्बर से १४ जन.२०२६ तक धने सू.+मं.+बु.+शु.युति **चत्वारो राज्य नाशाय। राष्ट्रक्षयोऽपिच।।५।।** राज्य,राष्ट्र का क्षय होवे। (६) ता.२७ दिसम्बर ८ शनि शुक्ला क्षय छत्रभंगप्रद है।

माघ में – खर्प्पर व अंगारक योग : छत्रभंग : मालवा में हड़ताल

(१) इस मास में पांच रवि से **दुर्भिक्षं छत्रभंगःस्यात्तदास्ते च महद् भयम्।।१।।** दुर्भिक्ष,छत्रभंग व महाभय होवे। (२) ता.१४ जनवरी २०२६ को **मकरेऽर्क** बुधवार **कर्क मकर दोय बेनड़ी बैठत एक ही वार। कै प्रजा को पति मरे कै पड़े अणचिन्त्यों कार।।१।।** राजा(नेता) मरे। खर्प्परयोग है। (३) ता.१४ से १७ जन.मकरे सू.+बु.+शु.युति **रवि बुध भृगु इक रासजू ,राजभंग उत्पात्। धरनी पावत कष्ट को,व्यास भणे इहुं भात।।२।।** फल घटे। ता.१७ जन.से १ फरव.तक मकरे सू.+मं.+बु.+शु.युति **राष्ट्रक्षयो,चत्वारो राज्य नाशाय।।३।।** राज्य व राष्ट्र में क्षयोपद्रव होवे। (४) ता.१८ जनवरी अमा रवि व ७,१५(सातम,पूनम)रविवारी से देश में उदंगल, शस्त्रोपद्रव होवे। (५) ता.१८ से ३० जन.तक मंगल उ.षा. व गुरु पुनर्वसु पर होने से **अंगारक योग** अग्नि उपद्रव विस्फोट से लोग मरे। (६) ता.१ फरवरी **शुक्रोदय प.**राक्षस गण पर **उत्पातादिषु देशेषु सिंधु देशेति विग्रहः। दिन त्रयम वाणिज्यं विग्रहेमालवादि के ।।४।।** कई देशों में उत्पात, सिंधु देश में विग्रह होवे। मालया में ३दिन तक विग्रहोपद्रव से हड़ताल रहे। **पौष माघ हुइ भंग छत्र जग बहुमरै।।५।।** (मेघमाल) फल घटित होवे।

फाल्गुन में – राष्ट्रक्षय : छत्रभंग : राजा धर्मविमुख

(१) ता.४ से १२ फरवरी व ता.२० से २५ फरवरी २०२६ तक कुंभे श.+बु.+शु.+रा.युति **चत्वारो राज्य नाशाय।।१।।** राज्य व राष्ट्र का क्षय होवे। ता.१२,१३ फरवरी कुंभे सू.+बु.+शु.+श.+रा.युति **पंचघ्ननंति जगत्रयम्।।२।।** पृथ्वी,जल,आकाश तीनों लोंकों का नाश करे। ता.१३ से १७ फर.तक कुंभे सू.+बु.+शु.+रा.युति **राष्ट्रक्षयोऽपिच।।३।।** राष्ट्र व राज्य में क्षय करें। (२) ता.१७ फर.अमा मंगली से **फागुन मावस वार जू क्रूर। लरै बहुत जगमाहैसूर ।। देश उपद्रव अरु दुर्भिक्ष। कहत मेघ साँची सुनिशिक्ष।।४।।** फल घटित होवे। (३) ता.१७ से १९ फरवरी कुंभे सू.+चं.+बु.+शु.+रा.युति से **राशि एक में पंचग्रह,क्रूर सौम्य जू आइ। छत्रभंग राजा मरे,अथवा धन बहु थाइ।।५।।** ता.२५ से २८ फर.तक कुंभे सू.+मं.+बु.+शु.+रा. से फल घटित होवे।(४) ता.३ को १५ मंगलवारी खग्रास चंद्रग्रहण "**भौमे वन्हि भयं भवेत्** " अग्नि उपद्रव होवे। **सिंहे च ग्रहणे पीडा सर्वेषां वन वासिनाम्। नृपाणां नृपतुल्यानां मनुजानां धनक्षयः।।६।।** सिंह राशि पर ग्रहण होने से वनवासियों को पीड़ा हो तथा राजाओं को और राजतुल्य अन्य जनों के धन का क्षय होवे। **सर्वग्रस्तौ चंद्रसूर्यौ दुर्भिक्ष मरणप्रदौ।।७।।** अर्थात् खग्रास चंद्रग्रहण मरणप्रद घटनायें घटित करायेगा। (५) ता.२ मार्च से मीने शनि अस्त होने से राजा धर्म विमुख,पापी पीड़ित होवे। राजाओं में युद्ध होवे।

चैत्र में– प्रजा का नाश : मीनाऽर्क राक्षसी : रुण्डमुण्ड हुई भूमि

(१) इस मास में पांच बुध व ता.४ मार्च २०२६ को १ बुधवारी से **नाशयंति प्रजाः शुक्रा रवि सौम्या विनाशकाः।।१।।** प्रजा का नाश करे। **बुधे च मध्यमे वर्ष – मध्यम वर्ष होवे। प्रतिपत्सर्व मासेषु बुधे दुर्भिक्ष कारिणी।।२।।** प्रत्येक मास बुधवार को बैठे तो शुभ नहीं है दुर्भिक्ष कारक है। (२) ता.१४ मार्च मीनाऽर्क शनिवारी **से मीन संक्रांत शनिवार,कह्यो राक्षसी नाम। रुंड मुंड हुइ भूमहि,महंगा हुवई धान।।३।।** फल घटित होवे। (३) ता.१४ से १८ मार्च तक मीने सू.+शु.+श. युति व ता.१८ से २० मार्च तक मीने चं.+शु.+श.युति **त्रयोघ्ननन्ति नराधिपम्।।४।।** राजा (नेता) का नाश व ता.१६ से १८ मार्च तक कुंभे चं.+मं.+बु.+रा.युति से **चत्वारो राज्य नाशाय राष्ट्रक्षयोऽपिच। प्लावयंति महि सर्वा रुधिरेण जलेन वा।।५।।** अर्थात् राष्ट्र,राज्यक्षय,पृथ्वी रुधिर से पूरित होवे,विनाशक घटनाएं घटे। □□□

MANAV ASTRO & VEDIC 8586094945 , 8302680069

मौसम व वर्षा की भविष्यवाणियाँ

(शुभ व अशुभ योगों का फल इसमें दिया गया है।राजा से अभिप्राय-सत्ताधीश,नेता,शासक,मंत्री,राष्ट्रपति,प्रख्यात जन प्रतिनिधि से जानें)

पूरे वर्ष में:- (1) शनिफल- शनि (काल सुगालकर्ता,दण्डाधिपति व वरुणेश) गत वर्षों से राशि कुंभ(कलश,घड़ा,द्रोण) पर था लिखा कल सत्य घटित हो रहा है। इस पूरे वर्ष में शनि पू.भा.(नीरनाड़ी) नक्षत्र पर कुंभ व मीन दो राशियों को प्रभावित करेगा। अतः **पूर्वा भाद्रपद ऋक्षे यदा सौरिश्च संस्थितः। मेघश्च वर्षते तत्र लोकानां च हिताय वै।।१।।** (अर्घप्रकाश) वर्षा अच्छी होवे। **मकर कुंभ शनि आवै जोइ। अन्न घनो सब जगमाहि होइ।। घर घर होत सकल आनंद। कोइ नहीं दीसै दुखियों मंद।।२।। मीन शनीश्चर करता वास। सब देशनका करता नास।। अथवा घन हुइ परलो काल। सागर की जल तोड़े पाल।।३।।** (मेघमाल) अर्थात् कुंभ शनि में अच्छा जमाना आवे। मीन शनि में विनाशक घटे। कहीं काल, अनावृष्टि व कहीं जल विप्लव होवे।

निष्कर्षतः-कुंभ शनि में पाप का घड़ा फूटेगा,बादल फटेंगे,बिजली गिरेगी, जल विप्लव होगा। ऐसी स्थिति में बीच बचाव में मीन का शनि मीना अवतार का काम करेगें। वर्ष में नीरनाड़ी नक्षत्र पूर्वाभाद्रपद शनि अच्छी वर्षा करेगा।

(2) गुरु फलम्:- इस वर्ष में गुरु वृषभ,मिथुन,कर्क तीनों राशियों को स्पर्श करेगा। यथा-**जीवे वृषे सुभिक्षं स्याद् गोरसस्य महर्घता। स्वल्प वृष्टिः प्रजा पीड़ा सस्यानां बहुधा भवेत्।।१।।** अर्थात् वैशाख तक वृषे गुरु दहन(मृग.) नाडी पर तपन(गर्मी) प्रद अल्पवृष्टिप्रद रहेगा। आगे **मिथुने च गुरुर्याति तत्राब्दे दारूणं भयम्। नृपाणाम् विग्रह स्तत्र स्वल्पं तोयं भविष्यति।।२।।** आगे मिथुन गुरु दारूण भय, विग्रह,अल्प वृष्टिप्रद है। ता.१२ जुलाई २०२५ तक **गुरु अस्त** आषाढ़ तक वर्षा अवरोधक,खण्ड वृष्टिप्रद रहेगा। गर्मी प्रकोप ज्यादा। ता.१२ जुलाई को उदये वृष्टि **बृहस्पते गुरु उदय** से वर्षा प्रारंभ होगी व ता.७.८.२५ से वर्षान्तर तक पुनर्वसु (नीर) नाड़ी नक्षत्र पर गुरु से वर्षा होगी। तथापि मिथुन गुरु निर्जल राशि पर होने से खण्डवृष्टि करेगा। पश्चिम में,सिन्धुदेश में,वायव्य में,और उत्तरदिशा में चित्र विचित्र वर्षा होगी,पूर्व,अग्नि,दक्षिण,ईशान इन देशों में सुभिक्ष होगा। आगे कार्तिक से पूर्णजल **राशि कर्क पर गुरु** ता.२१.१.२६ तक पुनर्वसु नीर नाड़ी पर होने से वर्षा करेगा। कहीं कहीं ग्रीष्म कालीन फसलों को नुक्सान होगा व सर्दियों में वर्षा होगी। **वृहस्पतिर्यदा कर्के स्वल्पं मेघःप्रवर्षति।३।** अर्थात् कर्कगुरु में वर्षा अल्प होती है। निष्कर्षतः-गुरु खण्डवृष्टि का प्रतीक रहेगा।

चैत्र शुक्ल पक्ष में- ता.३०.३.२०२५ को १ रविवारी भारी गर्मी, वायु प्रकोप ज्यादा। चंद्रोदय दक्षिण श्रृंग दुर्भिक्ष। वर्ष प्रवेश से ता.१३ अप्रेल तक मीने सू.+रा.युति भारी गर्मी,प्रदूषण बढ़े। ता.३० मार्च से ५ अप्रेल तक बुध,शुक्र वक्री **वृष्टि भयप्रदाः** वर्षा से भय होवे। कुंभे बु.+शु.+श. ता.३०मार्च से ८ अप्रेल तक तीनों नीर नाड़ी पर से समुद्रीय तूफान से नुक्सान। ता.१ अप्रेल को बुधोदय वायु प्रकोप,गायों में रोग। ता.१ से १० अप्रेल तक तूफान,बादल,वर्षा। ता.३ अप्रेल मृगे १ गुरु भारी गर्मी। ता.१८ मई तक अंगारक योग से भारी गर्मी। ता.५ अप्रेल मार्गी बुध राज विग्रह। मीने सू.+बु.+रा.युति ता.८ से १३ अप्रेल तक भारी गर्मी से फल फूलों का नाश। कुंभे शु.+श. ता.८ से १६ अप्रेल तक तूफान बादल वर्षा। ता.११ अप्रेल से ८ जून तक कर्के भौम से कुंभे शनि का षडाष्टक प्रकृति प्रकोप। ता.१२ अप्रेल से ११ जून तक कर्के भौम समुद्रीय जीवों,जहाजों व तट वासियों को कष्ट। **चमकी भली न चैत की चैत में गाज,बिजली,बादल,वर्षा** हो तो शुभ नहीं। नहीं वर्षे तो चौमासां के चारों मास वर्षा होवे।

वैशाख कृष्ण पक्षः- पांच रवि का महिना भारी गर्मी,गर्मीजन्य रोग बढ़े। पंचार्क योगे वैशाखे वृष्टि गर्भ विनाशिनी।।१।। वर्षा हो तो वर्षा के गर्भों का नाश होवे। ता.१३से १५अप्रेल तक बादल वर्षा। ता.१३अप्रेल अश्वन्यां मेषेऽर्क गर्मी प्रकोप। ता.१५ मार्गी उभा बुध पशु पक्षी सुखी,राजाओं में क्लेश। ता.१६ से ३० अप्रेल तक मीने बु.+शु.+रा.युति तूफान प्रकृति प्रकोप। ता.२० से २६ तक तूफान,बादल,वर्षा। ता.२२ पुक्षे भौम चौर,रोग,शस्त्र अग्नि भय,नये नये उपद्रव होवे। ता.२४ से २६अप्रेल तक मीने चं.+बु.+शु.+श.युति **एक राशौ यदा यांति चत्वार पंच खेचरा। प्लावयंति महिं सर्वा रुधिरेण जलेनवा।।२।।** प्रकृति प्रकोप से जनहानी। ता.२७ अमा.रविवारी से **जिनवारा रवि संक्रमे तिनै अमावस होय। खप्पर हाथ लै जग भ्रमै भीख न घाले कोय।।३।।** फल घटित होवे।

वैशाख शुक्ल पक्षः-ता.२७ से ३० अप्रेल तक मीने बु.+शु.+रा.युति जन आक्रोश। ता.२८ वृषे चंद्रोदय उत्तर श्रृंग सुभिक्ष। रक्तवर्षा युद्ध मरण ,वाहन हाथी गर्मी कृत्तिका में चंद्रोदय आद्रा भद्रा कृत्तिका आर्द्रा रेव मघाहि। चन्द्रा ऊगै दूज को सुख में नरा अघाहि।।४।। जनता सुखी ता.३० अक्षय तृतिया रोहिणी सुभिक्ष। अक्षयाक्ष तृतियां सुभिक्षायें व रोहिणी। ता.३० अप्रेल से ३ मई तक मीने बु.+शु.तूफान पवन, बादल वर्षा। ता.३० अप्रेल से ३० जुलाई तक कालसर्प (राहु केतु मध्य सभी ग्रह) से विष प्रदूषण,रागोपद्रव। ता.३० अप्रेल से ८ जून तक कुंभे श.+रा. युति भय,रोग,मरण ज्यादा। ता.१ से १२ तक तूफान,बादल वर्षा। ता.२ मई को ५ शुक्रवारी कलहोपद्रव। ता.५ बुधास्त पू.बादल वर्षा। ता.३

से १४ मई तक मेषे सू.+बु.युति शनि दृष्टि प्रकृति प्रकोप,भारी गर्मी,वैर विरोध बढ़े। ता.६ मई को ९ मंगली मघा से पृथ्वी पर भारी भयोपद्रव होवे। ता.९ मई **मृग.२मिथुने गुरु** व्याभिचारियों का नाश,जनता में कुशल क्षेम की वृध्दि। ता.१० मई **भरण्यां बुध** हाथियों को पीड़ा। तीव्र रोगों से जनता दुखी,चाण्डालों का नाश,वैर बढ़े। ता.११ कृत्तिका रविवारी से तंत्र मंत्र सिध्दि वाले कुम्हार,नाई,ज्योतिषी,व्याकरणाचोर्यों को कष्ट। **कृत्तिका एक झबूकड़ो ओगण सो गलिया।।५।।** अर्थात् कृत्तिका रवि में बीज, वर्षा हो तो वर्ष के दोष समाप्त हो जावे।

ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः-ता.१३मई २०२५ को १ मंगली **लोकानां व्याधिपीडनम्।।१।।** रोग ज्यादा व उपद्रव होवे। ता.१४ मई वृषेऽर्क बुधवार जनता सुखी। ता.१७ से १९ बादल वर्षा। ता.१८ आश्लेषा भौम टिड्डी भय,विषैले जन्तुओं का प्रकोप, बिमारी प्रकोप। कृत्तिका बुध ज्वर ज्यादा,विग्रह। **रेवत्यां शुक्र** आतंकियों का उपद्रव। ता.२० मई से ४ जून तक वृषे सू.+बु.+युति से पृथ्वी पर कलहोपद्रव। ता.१९ से २२ मई तक कुंभे चं.+श.+रा.पवन प्रकोप। ता.२२ से २७ तक तूफान बादल वर्षा। ता.२५ **रोहिण्यां रवि** साहुकार,कृषक,योगी,यंत्र चालकों को कष्ट। **रोहिण रेली रुपियारी करे अदेली।।२।।** वर्षा हो तो शुभ। **रोहिणी बुध** पवन प्रकोप। **रोहिण तपे मृगसिर वाजे,आद्रा मेह अणचिन्त्यां गाजे।।३।।** रोहिणी में तपन से शुभ,आगे आद्रा में वर्षा की आशा। ता.२६ से २८ मई वृषे सू.+चं.+बु.युति कष्टप्रद। ता.२७ मई को रोहिणी रवि में रोहिणी होने से **रोहिणी माही रोहिणी एक घड़ी जो दीख। हाथ खप्परा मेदिनी,घर घर मांगे भीख।।४।।** फल घटित होवे। **अमा मंगली से रवि शंनि मंगल वारिया,मावस जेठहि जान। चोर अग्नि भय काल दुख,निपजत नहीं जगधान।।५।।** फल घटे।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः- १ मंगल क्षया रजस्वला पक्ष स्त्रियों को कष्ट,दुर्भिक्ष। ता.२८.५.२५ को मिथुने चंद्रोदय त्रिशूल चंद्र व्याधि चोरभय,घोड़ा वाहन,पीतरंग शुभ। ता.२८ मे से ता.८ जून तक तूफान,बादल,वर्षा। ता.३१ अश्वन्यां मेषे शुक्र पवन प्रकोप। ता.५ से १५ जून तक मिथुने बु.+वृ.दहन(गर्मी) ज्यादा। **अग्रत पृष्ठतों वापि ग्रहाः सूर्यावलम्बितः। यदा तदा प्रकुर्वन्ति मही मेकार्णवामिव।।१।।** अर्थात् सूर्य गुरु व शुक्र के बीच होने से तूफानोंपद्रव होवे। **बुध गुरु इक जे राशिमहिं, आवति तऊ विचार। वरषा होवै बहुघनी,अन्न घनो संसार।।२।।** ता.४ से १३ जून तक तूफान,बादल,वर्षा। ता.८ मृगे रवि रविवारी से वायु प्रकोप। पशुओं में रोग। **मृगसिर वायन वाजिया,रोहण तपि न जेठ। गौरी वीर्णें काकरा,खड़ी खेजड़ा हेठ।।३।।** ता.८ से २२ जून तक वायु चलने से **दो मूषा दो कातरा दो तीड़ी दो तोव। दो की दाजी जल हरे,दो विषधर दो वाय।।४।।** पाया जाने। जिस जिन दाजे (गर्मी) हो उस पाया का उपद्रव होवे। **पूभा४मीने शनि** वर्षा। **आद्रायां बुध** वर्षा वर्षा ग्रहपात पवन प्रकोप बुधोदय प.वर्षा,पीड़ा। ता.११ **मघायां सिंहे भौम** वर्षा, चलत्यंगारके वृष्टिः। **गुरु अस्त** ता.११ जून से १२ जुलाई तक हिन्दु संतापित व खण्ड वृष्टि। ता.११ जून से ता.३० जुलाई तक **मीने शनि,सिंहे मंगल** का षडाष्टक भूकम्प,ज्वालामुखी से हानी। सिंहे मं.+के.की युति व राहु सम सप्तक प्रकृति प्रकोप। **जेठी पूनम मूल नहीं अथवा नहीं घन बिंद। तौ सावन सूको गमै,समो बुरो अतिमंद।।५।।** फल घटित होवे।

आषाढ़ कृष्ण पक्षः- आषाढ़ में पांच गुरु पश्चिमीय देशो में उपद्रव। ता.१६ जून को १ मूल भूकम्प से विनाश। १,२ को वर्षा हो तो पूरे मास वर्षा नहीं। ता.१३जून २५ को **भरण्यां शुक्र** प्रचण्ड पवन,यवनों को पीड़ा। ता.१५**मिथुनेऽर्क** रविवारी तपन। **पुनर्वसु बुध** बालकों को पीड़ा। ता.५ से २२ जून तक मिथुने सू.+बु.+वृ.युति तपत ज्यादा। ता.१६ से २५ तक पवन प्रकोप के साथ बादल वर्षा तूफान। ता.२२ **आद्रायां रवि** सं.स्त्री.पु.चं.चं.वाहन कच्छप बाढ़। **आद्रा रवि** में सर्वत्र वर्षा का मानसून प्रभावी हो जाता है आद्रा रविवारी गर्मी,पशुओं में रोग। भरणी नक्षत्र में आद्रा अशांतिप्रद है। कर्के बुध बादल वर्षा। ता.१३ **आद्रा २गुरु गुरु अस्त** होने से खण्ड वृष्टिः। ता.२४ जून से १४ रोहिणी जनता संतापित। ता.२२ से २४ जून मिथुने चं.+वृ.+सू.खण्डवृष्टिः। ता.२४ जून से १६ जुलाई तक खण्डवृष्टिः। ता.२५ **पुक्षेबुध** जनता में चिंता, शासन से भय,बादल वर्षा। **कृत्तिका शुक्र** प्रचण्ड पवन प्रकोप,तूफान वर्षा। **अमा बुधवारी** कहीं मुद्रा में बदलाव,नई मुद्रा चले।

आषाढ़ शुक्ल पक्षः- ता.२६ जून २०२५ चंद्रोदय मिथुने त्रिशूल श्रृंग व्याधि भय, पीतरंग, घोड़ा वाहन,पीतरंग सुभिक्ष। ता.२७ द्वितीया शुक्रवारी व ता.४ जुलाई **९ शुक्रवारी** से वर्षा। मोहर्रम शुक्रवारी से लोगों में राज में वैर विरोध, अग्निकाण्ड, सभी दिशाओं में खूनी जंग,वायु प्रकोप ज्यादा,चौपायों में रोग, भ्रष्टाचार और व्यभिचार बढ़े। नवीन वैज्ञानिक अनुसंधान होवे। ता.३० को ५ सोमवारी अतिवर्षा। ता.२६ जून से ३ जुलाई तक तूफान,वर्षा। ता.२९ जून से १ जुलाई तक सिंहे चं.+मं.+के.युति बिजलीपात,ओला वृष्टि। ता.३ **पूफायां भौम** से खण्ड वृष्टि,प्रजापीड़ा। ता.५ जुलाई से ७ अक्टूम्बर तक प्रकृति प्रकोप से हाहाकार। ता.५ जुलाई से ११ नवम्बर तक शनि वक्री **“राजयुध्द दुर्भिक्ष बहु जग का करत विनाश।।२।।** फलघटित होवे। ता.६ जुलाई **पुनर्वसु रवि** सं.स्त्री.नपु.चं.सू.वाहन अश्व अपवाहन कूकड़ कोरो(सूखा) होवे। ता.५ से ११ तक तूफान,

बादल वर्षा। ता.७ से १९ जुलाई तक रोहिणी शुक्र का शकट भिन्न पवन ज्यादा, जल विप्लव, रोगोपद्रव से विनाशलीला। ता.१५ गुरुवारी सुभिक्ष। पूषा.से **आषाढ्यां पूर्वकोषाढा वर्ष यावच्छु भयंकरा। आवर्षे धान्य निष्पत्तिःप्रजा सौख्यम विग्रहात्।।३।।**

श्रावण कृष्ण पक्षः- ता.११ जुलाई २०२५ई. को १ शुक्रवारी सुभिक्ष। ता.१२ गुरु उदय पू.से वर्षा पृथ्वी इतनी शोभित होवे कि इन्द्रपुरी भी ईर्ष्या करे। ता.१३ **बुधास्त प.** बादल,वर्षा। ता.१६ **कर्केऽर्क** बुधवारी से **कर्क जु भीजै कांकरों,सिंह अभी जो जाय। ऐसा बोलें भड्डरी टीडी फिर फिर खाय।।१।।** वर्षा हो तो जमाना अच्छा। ता.१६ से २६ तक तूफान,बादल वर्षा। ता.१६ जुलाई तक सूर्य से आगे मंगल होगा। **मंगल रथ आगे चले,पीछे चालत भांण। आरंभियाँ उभा रहे,खाली रहे निवाण।।२।। आगे मंगल पीछे भान। वर्षा होवे ओस समान।।३।।** वर्षा नहीं होवे। सूर्य के आगे मं.+के.जलनाड़ी में होने से कहीं बिजलीपात,समुद्रीय जल विप्लव से नुक्सान होवे। ता.१९ **मृगे शुक्र** दहन,पवन। ९ शनिवारी शोक संताप। ता.१८ जुलाई से १ अगस्त बुध,शनि वक्री अतिवृष्टि,कहीं अनावृष्टि से भय। ता. २०**पुक्षेरवि** सं.स्त्री.पु.चं.चं.वाहन चातक, उपवाहन कच्छप बाढ़। ता.२१ से ११+रोहिणी + क्षयातिथि से **रजस्वलायोग** से मध्यम जमाना,बीजनाश,फलों में रोग कहीं अत्यल्प वर्षा,करवरो जमानों। ता.२३ को **वक्री पुक्ष** १ बुध जनता में चिंता, शासन में भय। ता.२४ मिथुन शुक्र दहन(गर्मी) जनता में विग्रह। अमा. गुरुवारी सुभिक्ष। ता.२४ जुलाई से १९ अगस्त तक मिथुने वृ.+शु.**भृगु गुरु इकट्ठा जो दिसे,तो जगमहि उत्पात।।४।।** जग में उत्पात प्रकृति प्रकोप।

श्रावण शुक्ल पक्षः- ता.२५ जुलाई २५ को **उफायां भौम** वृष्टि अवरोधक, पशुओ में पीड़ा। ता.२६ चंद्रोदय सिंहे उत्तर श्रृंग,हाथि वाहन सुभिक्ष,रक्तवर्ण युद्ध मरण। ता.२८ **बुधोदय पू.**जनता में सुख,अतिवृष्टि। **सावन में बुध ऊगियों, भरियो सरसो सोइ।।१।।** सुभिक्ष प्रद। ता.३० जुलाई से ता.७ अगस्त तक आद्रायां शुक्र+गुरु होने से व मिथुने शु.+वृ.युति १९ अगस्त तक होने से **गुरु शुक्र दोऊ मिलै,दस भादौ कर देइ। कैराजा जुझैं घने,के घन बहु वर्षेइ।।२।। गुरु शुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्। अकाले वा भवेत् वृष्टि जगत्यां नात्र संशय।।३।।** अर्थात् कहीं जल विप्लव से कहीं युद्धोपद्रव से विनाश होवे। ता.२९ जुलाई से १२ अगस्त तक तूफान,बादल वर्षा। ता.३ अगस्त आश्लेषायां रवि सं. स्त्री.नपुं.चं.सू.वाहन गज उपवाहन कूकड़ कोरो(सूखा,गर्मी) होवे। ता.६ वक्री **पूषा.३ कुंभे शनि** कहीं अतिवृष्टि से क्षति। दक्षिण में म्लेच्छ युद्ध,धर्म अधर्म पर कानून बने। ता.६ से ९ अगस्त तक कुंभे श.+रा.भय रोग,प्रकृति प्रकोप। ता. १३ पुनर्वसु १ गुरु बादल वर्षा। ता.७ जुलाई से १५ अगस्त तक **अंगारक योग** भारी गर्मी,बिजली पात,प्रकृति प्रकोप। ता.९ को १५ शनिवारी संघर्ष।

भाद्रपद कृष्ण पक्षः- ता.१० अगस्त २५ को १ रविवारी व **पुनर्वसु शुक्र** वर्षा अभाव, जनता में भय। पंचक में वर्षे तो ता.१४ तक वर्षा। ता.११ अगस्त तक कुंभे चं.+श.+रा.कहीं प्रकृति प्रकोप। ता.११ को २ सोमवारी **भाद्रकृष्ण द्वितीयां द्वितीय वार योगतः। धान्य निष्पत्ति रतुला सम्पदःस्युश्चतुष्पदे।।१।।** धान्य अच्छे पैदा होवे,पशु सुखी। ता.१५ **हस्ते भौम** वर्षा अभाव। ता.१७ **मघायां सिंहेरवि** सं. स्त्री.पु.चं.सू.वाहन मेष,उपवाहन कच्छप बाढ़। ता.३० जुलाई से १४ सितम्बर तक मंगल रथ आगे होने से वर्षा अभावः। **आश्लेषा बुध** वर्षा,तुष धान्य अच्छा। ता.१८ से ३१ तक तूफान,बादल वर्षा। ता.१९ से २६ तक कर्के बुध.+शु.युति **सोमपुत्रो भृगुश्चैव चंद्र क्षेत्रे यदा भवेत्। दुर्भिक्षं तत्र कुर्वीत षठमासांते न संशयः।।२।।** अर्थात् कहीं अतिवृष्टि,कहीं अनावृष्टि से दुर्भिक्ष होवे। ता.१८ से २० तक मिथुने वृ.+शु.+चं.युति यदा शुक्रेन्दु जीव नामेक नाड्यां समागतः। तदा भवेन्महावृष्ट्यां सर्वत्रैकार्णवा महीः।।३।। अतिवृष्टि से नुक्सान। ता.२२ पुक्षे शुक्र वर्षा,धार्मिकों को पीड़ा। ता.२३ **पुनर्वसु २ गुरु** बादल,वर्षा। अमा.शनिवारी से वैर विरोध बढ़े।

भाद्रपद शुक्ल पक्षः- ता.२४ अगस्त चंद्रोदय कन्या पर त्रिशूल श्रृंग व्याधि चोर भय, लालरंग युद्ध, मरण,पशुओं का नाश,हानि वाहन गर्मी। ता.२६ **मघायां सिंहे बुध,** कृषि उत्पादन अच्छा। ता.३१ **पूफायां रवि** सं.स्त्री.नपुं.सू.सू.वाहन महिष, उपवाहन हाथी,बहुगर्मी। ता.१ सितम्बर बुधास्त पू.बादल वर्षा। ता.२ सितम्बर आश्लेषा बुध सर्पभय,खंडवृष्टि। ता.३ से ६ बादल वर्षा। **चित्रायां भौम** अतिरोग, हैजा,ज्वर,छूत की बीमारियां। **पूफायां बुध** युद्ध उपद्रव। ता.६ अगस्त्योदय **ऊगा अगस्त फूले बनकासा। अब छोड़ो बरखा की आसा।।१।।** गर्मी पड़े, वर्षा का पलायन "**ऊगा अगस्त मेह मस्त**" हो जाता है। रात्रि में अगस्त्योदय शुभ। **अगस्त्य लंगोटी खोले तो धार न खण्डे।।२।।**" वर्षा हो तो संभव है ता.७ को १५ रविवारी खग्रास चंद्र ग्रहण से अग्निभय,शस्त्रभय,चौर भय होवे। भाद्रपदके सौख्यं सुभिक्षं जने।।३।। भाद्रपद में ग्रहण से सुख तथा सुभिक्ष होवे। ग्रहणान्ते वर्षते मेघ,अरिष्ट भंगस्तदा दिशेत्।।४।। ग्रहण के पीछे वर्षा हो तो सब अरिष्ट दूर हो जाते हैं।

आश्विन कृष्ण पक्षः- पांच सोम का मास सुभिक्ष। ता.११.९.२०२५ को **उफायां बुध** बादल वर्षा। मघायां **सिंहे शुक्र** तूफान,पवन प्रकोप **सिंह शुक्र जब होय भवानी। पवन चले नहीं वर्षे पानी।।१।।** ता.१३,१४ कन्या मं.+बु.दहन,पवन,

बादल। ता.१३ सितम्बर उफायां रवि स्त्री.पु.सू.सू.वाहन जंबुक उपवाहन डेडरों बहुवर्षा। ता.१४ तुले भौम दहन। ता.१४ से १६ तक बादल वर्षा। ता.१७ कन्यायांऽर्क से १७ अक्टूम्बर तक सूर्य से मंगल आगे दहन गर्मी,स्त्रियों को कष्ट। ता.१६ **हस्ते बुध** जनता सुखी। ता.१६ से २१ बादल वर्षा। ता.१६ से २१ तक सिंहे सू.+चं.+शु.+के.युति महारोग,भय।

आश्विन शुक्ल पक्षः- ता.२३ सितम्बर २५ को चंद्रोदय कन्या पर त्रिशूल श्रृंग व्याधि चोर भय, पीतरंग ता.२७ सितम्बर हस्ते रवि नपुं.सू.सू.वाहन चातक, उपवाहन हाथी बहुगर्मी। **चित्रायां बुध** दहन,विद्वान,नर्तकी,शिल्पियों को कष्ट। ता.१ अक्टूम्बर तुले बुध ज्वरादि रोग,पवन प्रकोप,बादल वर्षा। ता.१ से १७ अक्टूम्बर तुले बु.+मं.दहन पवन। ता.३ बुधोदय प.**जे बुध ऊगै आश्विने, थलमह कमल खिलेई। समोहोत चहुँ ओर मह,जग सहु सुख वसेइ।।१।।** वर्षा,जनता सुखी। ता.५ **उफायां शुक्र** कृषि को क्षति। ता.७ पुनर्वसु ४कर्के गुरु ता.२१ दिसम्बर तक रहेगा। कहीं अतिवृष्टि,कहीं अनावृष्टि से दुर्भिक्ष। **कन्यायां शुक्र** वर्षा अभाव,स्त्रियों को कष्ट।

कार्तिक कृष्ण पक्षः- कार्तिक में पांच भौम व प्रतिपदा क्षय रजस्वला मास बलात्कार,गर्मी, भय उपद्रव होवे। ता.११.१०.२५ को **चित्रायां रवि** सं.स्त्री.पु.सू.सू.वाहनगज,उपवाहन डेडरों बहुवर्षा। ता.१२ से १८ तक तूफान,बादल वर्षा। ता.१४ **विषाखा भौम** प्रचण्ड पवन। विषाखा बुध पवन प्रकोप। ता.१५ **हस्ते शुक्र** वर्षा अभाव,जनता को कष्ट,चित्रकारों को पीड़ा। ता.१७ **तुलेऽर्क** शुक्रवारी हाथियों का नाश,स्त्रियों को भय। ता.१७ से २५ अक्टूम्बर तक तुले सू.+बु.+मं. युति गर्मी पवन प्रकोप,झोला वाजे,फसलों को नुक्सान। ता.२० दीपावली सोमवारी सुभिक्ष। ता.२१ अमा.मंगली अग्नि उपद्रव **भौमे भूमौ महावन्ही** होवे।

कार्तिक शुक्ल पक्षः- ता.२२.१०.२०२५ को १बुधवारी सुभिक्ष। ता.२३ चंद्रोदय तुले समान श्रृंग विग्रह,पीतवाहन शुभ,घोड़ा वाहन शुभ। ता.२४ **स्वात्यां रवि** सं.स्त्री.नपुं.सू.सू.वाहन मंडूक, उपवाहन हाथी बहुगर्मी। ता.२८ अक्टूम्बर से १६ नवंबर तक वृश्चिके मं.+बु.युति गुरु,शनि दृष्ट तूफान,बादल वर्षा प्रकृति प्रकोप। ता.२६ **चित्रायां शुक्र** दहन,रोग वृद्धि। चित्रकारों,लेखकों पर घात। ५ रविवारी से दस विश्वा जमानों। ता.२८ **अनुराधा बुध** सुभिक्ष,जनता सुखी॥ वृश्चिके भौम महामारी,ता.२९ **भौमास्त** प.राजभय,सुभिक्ष। ता.१ नवंबर तुले शुक्र सुभिक्ष। ता.१ से १६ नवम्बर तक तुले सू.+शु.युति भयोपद्रव,पश्चिमी देशों में अनिष्ट। **वक्री बुध** अन्न की उपज अच्छी। ता.२ **अनुराधायां भौम** सुभिक्ष,पशु पीड़ा। ता.४ वक्री विषाखा बुध पवन प्रकोप। ता.५ बुधास्त प.बादल वर्षा।

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षः- ता.६.११.२०२५ई.**विशाषा रवि** पूर्व,दक्षिण में उपद्रव १ गुरुवारी पश्चिमीय देशों में युद्धोपद्रव। **स्वात्यां शुक्र** दूत,वणिक्,नाविकों को भय, कष्ट। सौराष्ट्र में हिंसा। ता.७,८ शस्त्रभय। ता.८ से १४ तक तूफान,बादल, वर्षा। ता.१२ **वक्री गुरु** राजविग्रह,दुर्भिक्ष, गुरुवक्रे स्थिरो रोग रोग ज्यादा। ता.१२ से २१ नवम्बर तक गुरु,शनि,बुध तीन ग्रह वक्र प्रचण्ड पवन,तूफान से भय। ता.१५ को ११ शनिवारी जलशोषःप्रजा में भय। ता.१७ **विशाषा शुक्र** स्त्री राज्यों का विनाश। ता.१८ को १३ तिथि वृद्धि प्रजा में क्रंदन। ता.१७ से १९ बादल वर्षा। ता.१९ **अनुराधा रवि** भक्तों को कष्ट। १४ स्वाति से **मार्गे कृष्ण चतुर्दश्यां स्वाति ऋक्षं प्रजायते। तदा वैश्रावणे मासे वृष्टिर्नैव भविष्यति।।१।।** आगे श्रावण में वर्षा नहीं होवे। ता.१९ से २२ नवंबर वृश्चिक सू.+चं.+मं.+बु.युति महारोग,दुर्भिक्ष। ता.२० **ज्येष्ठा भौम** वर्षा का अभाव जनता में रोग।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षः- ता.२१.११.२०२५ को बुधोदय पू.सुभिक्ष बादल वर्षा। मार्गी शनि तूफान,जल विप्लव। चंद्रोदय ज्येष्ठा में राजा को कष्ट। वृश्चिके उत्तर श्रृंग, सुभिक्ष,पीतरंग,घोड़ा वाहन शुभ। ता.२२ को २ शनिवार दक्षिण पवन चले तो कष्ट होवे। ता.२१,२२ बादल वर्षा। ता.२४ **मार्गी बुध** जनता में शांति। ता.२५ वृश्चिक शुक्र सुभिक्ष। ता.२५ नवंबर से ६ दिसंबर तक वृश्चिके सू.+चं.+बु. युति पवन उपद्रव,रोग भय। ता.२७ **अनुराधा शुक्र** भूकम्प,पशुओं में रोग। ता.२७ से ३० तक बादल,वर्षा। ता.१ दिसम्बर मार्गी **अनुराधा बुध** जनता सुखी। ता.३ **ज्येष्ठायां रवि** गर्मी,बादल। १४ क्षया से दुर्भिक्ष,प्रजापीड़ा।

पौष कृष्ण पक्षः- ता.५ दिसम्बर २५ को १+रोहिणी जनता में क्षोभ। ता.५ से ७ बादल,वर्षा। ता.८ **ज्येष्ठायां शुक्र** राज विग्रह,क्षत्रियों व पहाड़ी लोगों को संताप, पीड़ा। ता.९ ५मंगली,नृप व जनहानि मूले धने भौम दहन,दक्षिण में उत्पात, द्विजों व वीर पुरुषों को पीड़ा। ता.९ से १६ दिसंबर तक वृश्चिके सू.+बु.+शु.युति तूफान,बादल,राजभंग,उत्पात होवे। ता.१५ शुक्रास्त पू.बादल,वर्षा परन्तु ता.१ फरवरी २६ तक शुक्रास्त वर्षा में अवरोध हिन्दुओं को कष्ट,राक्षस गण में राक्षसोपद्रव,बहु रोग,मारवाड़ में दुर्भिक्ष। ता.१६ मूले धनेऽर्क मंगलवारी अग्नि उपद्रव। ता.१७ **ज्येष्ठा बुध** पशुओं में रोग। ता.१८ मूले **धने शुक्र** दहन,वैद्यों को पीड़ा॥ ता.१६ से १९ दिसम्बर तक वृश्चिके चं.+बु.+शु.युति बादल,वर्षा। ता.१९से २१ दिसम्बर तक धने सू.+चं.+मं.+शु.युति तूफान, महारोग। ता.१९ को अमा शुक्री से **सोम शुक्र सुरगुरु,पौष अमावस होय। घर घर बाजे बधावणा,दुखी न दीसै कोय।।१।।** अमा जेष्ठा में बलात्कारियों का नाश।

पौष शुक्ल पक्षः- ता.२१ दिसम्बर २०२५ को चंद्रोदय धने उत्तर श्रृंग सुभिक्ष,

सफेद रंग शुभ,घोड़ा वाहन शुभ। १ वृद्धि सुभिक्ष। ता.२० से २७ दिसंबर तक धने सू.+मं.+शु.युति आर्थिक क्रांति,उपद्रव। ता.२४ बुधास्त पू. व्यापारियों, बुद्धिजीवियों को कष्ट। ता.२५ को ५ गुरुवारी सुभिक्ष। ता.२६ **पूषायां भौम** अन्न से पूरित पृथ्वी होवे। ता.२७ मूले धने बुध पशुओं,बालकों में रोग,कष्ट,राजा प्रजा में विरोध। ता.२७ दिसंबर से १४ जनवरी २०२६ तक धने सू.+मं.+बु.+शु. युति तूफान,महारोग। ८ क्षया दुर्भिक्ष। ता.२९ पूषायां रवि सर्दी का प्रभाव बढ़े। **पूषायां शुक्र** जलचरों को पीड़ा। बीमारियां ता.३१ दिसम्बर से ८ फरवरी २०२६ तक सर्दी का चालिसा अच्छी सर्दी पड़े। **धन पन्द्रह ने,मकर पच्चीस। सर्दी पड़े दिन चालीस।।१।।** दिन ४० सर्दी पड़े,फिर नहीं।

माघ कृष्ण पक्षः- ता.४ जनवरी २०२६ को १ रविवारी रोग ज्यादा। पूषायां बुध रोग भय। ता.४ से ८ तक बादल वर्षा। ता.६ **उषायां शुक्र** रोग वृद्धि,पांचाल, मालवा में उत्पात। ६चित्रा सुभिक्ष। ता.११ उषायां रविवारी बादल। **मकरे शुक्र** बादल। ता.१२ उषायां बुध बालकों का रोग से मरण ज्यादा,कृषि उत्पादन अच्छा। ता.१३ **उषायां भौम** बादल वर्षा। ता.१३ से १५ तक बादल वर्षा,शीत प्रकोप, ओला वृष्टि। ता.१४ **मकरेऽर्क** बुधवारी अणचिन्त्यो काल पड़े। ता.१४ से १७ जनवरी तक मकरे सू.+बु.+शु.युति आगे व ता.१ फरवरी तक मकरे सू.+मं. +बु.+शु.युति से प्रकृति प्रकोप,रोग ज्यादा। ता.१७ मकरे भौम फसलों में रोग,मवेशी को कष्ट। ता.१८ अमा.रविवारी **माघ अमावस,रवि शनि मंगल। घनी वात अरु देश उदंगल।।१।।** फल घटित होवे। ता.१८ से ३० जनवरी तक अंगारक योग से फसलों में दाहा पड़े।

माघ शुक्ल पक्षः- ता.१९ जनवरी २०२६ को श्रवणे बुध कृषि को ओला,तुषार, वृष्टि से क्षति। **श्रवणे शुक्र** बंग अंग मगध का विनाश। कर्ण पीड़ा। ता.२४ **श्रवणे रवि** बादल। बुधोदय प.बादल। ता.२५ को ७ रविवारी दुर्भिक्ष,विग्रह भय। ता. २७ **धनेष्ठा बुध** पशुओं में रोग। ता.२८ जनवरी से ४ फरवरी तक तूफान,बादल वर्षा। ता.३० **श्रवणे भौम** जनता में रोग। **धनेष्ठा शुक्र** हाथियों को पीड़ा,धनिकों का धन हरण, पांचाल, सूरसेन, मत्स्य देश का विनाश ता.१ फरवरी **कुंभे बुध** बादल, वर्षा। शुक्रोदय प.बादल वर्षा,ओलावृष्टि।

फाल्गुन कृष्ण पक्षः- पांच सोम का मास व १ सोमवारी सुभिक्ष,फल फूल अच्छे होवे। ता.४ फरवरी २०२६ **कुंभे शुक्र** सुभिक्ष,बादल वर्षा। ता.४ से १२ फरवरी तक कुंभे बु.+शु.+श.+रा.युति गुरुदृष्ट,तूफान,बादल वर्षा। प्रकृति प्रकोप विनाश। ता.५ **शत्तभिषा बुध** वर्षा,सेवकों को कष्ट,शूद्रों में रोग। ता.६ **धनिष्ठा रवि** सुभिक्ष। ता.६शत्तभिषा शुक्र शिलावटों को कष्ट। ता.१२ कुंभेऽर्क गुरुवारी सुभिक्ष। ता.१२,१३फरवरी कुंभे सू.+बु.+शु.+श.+रा.पंचग्रह युति दुर्भिक्ष, जनक्षय,वर्षा के गर्भनाश। आगे १७ फरवरी तक कुंभे सू.+बु.+शु.+रा.युति से महारोग तूफान से विनाश। ता.१३ पूभा.४ **मीने शनि** तूफान,भूकंप,अमेरिका में प्रकृति प्रकोप,पशुओं रोग। ता.९ से १२ तक बादल,वर्षा। ता. १३ **शत्तभिषा बुध** सेवकों को कष्ट,शूद्रों में रोग। ता.१४ से १६वर्षा,बादल। ता.१६ **धनेष्ठा भौम** जनता सुखी,देश की खूब समृद्धि,आर्थिक विकास,ता.१७ अमा मंगली बिजली पात। ता.१७ से १९ फरवरी तक कुंभे सू.+चं.+बु.+शु.+रा.युति वैर विरोध जनक्षय होवे।

फाल्गुन शुक्ल पक्षः- ता.१८ फरवरी २०२६ को चंद्रोदय शत्तभिषा छत्रभंग। कुंभे समान श्रृंग,विग्रह। श्याम रंग,भैंसा वाहन दुर्भिक्ष। ता.१९ **शत्तभिषा रवि** गुरुवारी सुभिक्ष। ता.२० पूभायां शुक्र धूर्त,दूतों,भार वाहकों की हिंसा। ता.२० से २५ फरवरी कुंभे सू.+बु.+शु.+रा.युति तूफान,बादल वर्षा,महारोग,राष्ट्रक्षय। ता.२५ कुंभे भौम धार्मिक वातावरण। ता.२५ से २८ फरवरी तक कुंभे सू.+मं. +बु.+शु.+रा. पंचग्रही युति तूफान बादल वर्षा। ता.२७ फरवरी से ६ मार्च तक बादल वर्षा। ता.२७ फरवरी बुधास्त प. हिमपात,वायु प्रकोप,कृषि वृक्षों को क्षति। ता.२८ मीने शुक्र जनता सभी प्रकार से सुखी। ता.२ मार्च होली सोमवारी सुभिक्ष। ता.३ फरवरी **उभायां शुक्र** चलचरों को घातपात,फल मूल में रोग। शनि अस्त प. बादल वर्षा,जनता में पीड़ा,राजविग्रह,पापियों को पीड़ा। **खग्रास चंद्रग्रहण** मंगलवारी अग्नि भय,अमीर,वनवासी,राजाओं(नेताओं) का धनक्षय। १५ मंगली भूकम्प,अग्नि उपद्रव।

चैत्र कृष्ण पक्षः- ता.४ मार्च २०२६ को १ बुधवारी -**चैत ववी पड़वा जो वार, बुधवारी काल पडंत।।१।।** फल घटे। **पूभायां रवि** प्रकृति प्रकोप। ता.५ **शत्तभिषा भौम** कीट पतंग,टिड्डी,मूषक से फसलों को नुक्सान। ता.१३ **रेवत्यां शुक्र** आतंक बढ़े,नगरों व नागरिकों को भय। ता.११ से १८ तक तूफान बादल वर्षा। ता.१४ मीनाऽर्क शनिवारी फसलों को नुक्सान। ता.१४ से १८ मार्च तक मीने सू.+शु. +श.युति व ता.१६ से १८ तक कुंभे चं.+मं.+बु.+रा.युति प्रकृति प्रकोप,फसलों को नुक्सान। **मार्गी गुरु** सुभिक्ष। उभा१शनि राजपीड़ा,धान्य कम। ता.१५ बुधोदय पूर्वे वायुवेग अधिक वर्षा। ता.१८ **मार्गी बुध** बादल। **उभायां रवि** बादल। ता.१८ से २० तक मीने चं.+शु.+श.युति समुद्रीय देशों में कष्ट। अमा बुधवारी सुभिक्ष।

□□□

MANAV ASTRO & VEDIC 8586094945 , 8302680069

विक्रम संवत् २०८२ शकः १९४७ शुद्धः विवाह लग्न मुहूर्ताः

ध्यानाकर्षणः-

(१) **कात्यायनोक्त चतु नक्षत्र** अश्विनी,चित्रा ,श्रवण,धनेष्टा। सर्वमान्य ज्योतिष ग्रंथों में नहीं होने से इन नक्षत्रों में विवाह स्पष्ट नहीं किये है। ये नक्षत्र वधू प्रवेश,वधू द्विरागमन मुहूर्तों में लिये गये है। वाग्दान(टीका चढ़ाना) मुहूर्त में कृत्तिका,चित्रा,श्रवण, धनेष्ठा तीनों पूर्वा को लिया गया है। **सीतोढा पूर्व फाल्गुन्यां नो लभे शमतो न सत्-** अर्थात् पूर्वाफाल्गुनि में सीताजी ब्याही गई उनको विवाह के बाद सुख नहीं मिला इस कारण पू.फा.को विवाह में शुभ नहीं माना है। इसी प्रकार पुक्ष नक्षत्र में ब्रह्माजी की शादी हुई थी प्रभावतःअति कामाशक्त हो पथ भ्रष्ट हुए थे इस कारण पुक्ष नक्षत्र ब्रह्मा से श्रापित हो गया सभी कार्यों में शुभ होनें पर भी विवाह में त्याज्य किया गया है यथा- **प्राचेतसः प्राह शुभं भगर्क्षे सीता तदूढा न सुखं सिषेवे। पुष्यस्तु पुष्य त्यतिकाम मेव प्रजापते राय स शाप मस्मात्।।१।।**(विवाह वृन्दावन) अर्थात् मुनि प्राचेतस ने विवाह में पूर्वाफाल्गुनि को शुभ माना है किन्तु सीताजी का विवाह इसमें होनें से वनवासादि के कारण सुखी नहीं होनें से विवाह में त्याज्य माना है। इसी प्रकार ब्रह्माजी का पुष्य में विवाह हुआ था और भगवान् शिव के विवाह के समय पार्वती के सौन्दर्य को देखकर ब्रह्मा विचलित हुए अतः पुक्ष ब्रह्मा से श्रापित होनें से विवाह में त्याज्य हो गया। **विवाहांग कार्य तैलादि लेपन** में भी **अश्वनी,चित्रा नक्षत्र** को त्याज्य किया गया है। राजाओं के खड्ग विवाह में भी इन नक्षत्रों को नहीं लिया गया है। **पुनर्भू विवाह** (स्त्रियों के पुनर्विवाह) में भी **श्रवण** नक्षत्र को ग्राह्य नहीं किया है। ऐतदर्थ कात्यायनोक्त नक्षत्र चतुष्टयी विवाह युक्ति संगत नहीं है। जो अपना वैवाहिक जीवन सुखमय **पत्नीच्छन्दानुवर्तिनी-** पत्नी अपने अनुकूल **भार्यावशानुगा-** पत्नी अपने वशीभूत रहे,इस हेतु आचार्यों ने विवाह के लिये ग्यारह नक्षत्रों को अनुकूल माना है। इसी अनुकूल नक्षत्रों में हमने विवाह शुद्ध किये है।

(२) **चातुर्मास विष्णुशयन में विवाह निषेध हैः- उत्सवे वासुदेवस्य मंगलेनान्य मंगलम्-** अर्थात् विष्णुशयन में अन्य मंगल विवाहादि कार्य नहीं करनें चाहिये। अर्थात् कर्क,सिंह,कन्या,तुला संक्रांति में चातुर्मास के कारण विवाह योग्य नहीं माने है। धनु,मीन, संक्रांति व अधिकमास आदि मलमास होनें से विवाह में त्याज्य है। द्रोपदी का स्वयंवर अर्जुन से पौष शुक्ला ११ रोहिणी में हुआ परन्तु पाणिग्रहण माघ कृ.१ पुक्ष में युधिष्ठर से,आश्लेषा में भीम से, मघा में अर्जुन से,पूफा.में नकुल से,उफा. में सहदेव से हुआ था। फलतः प्रत्येक पाण्डव के साथ द्रोपदी को एक वर्ष रहना तय हुआ था जो दुखमय जीवन का प्रतीक रहा। **आषाढ़े धनधान्य भोग रहिता नष्टा प्रजा श्रावणे वेश्या भाद्रपदेश्विने च मरणं रोगार्तिदा कार्तिके। पौषे प्रेतवती वियोग बलहा चैत्रे मदोन्मानिनी,अन्येष्वेव विवाहिता सुतवती नारी समृद्धा भवेत्।।२।।** (राजमार्त्तण्ड) अर्थात् आषाढ़ (कर्क संक्रांति)में विवाह करनें पर धन धान्य भोग का अभाव सावन में संतान नाश,भादों में वेश्या, आश्विन में मरण,कार्तिक(तुला संक्रांति) में रोग पीड़ा,पौष में कन्या प्रेतिनी, वियोगिनी,बल नष्ट करनें वाली,चैत्र में मदोन्मत्त और इनसे बचे हुए मासों में विवाह करनें से कन्या पुत्रों से युक्त धन धान्य सुवर्णादि से युक्त होती है। परन्तु कार्तिकशुक्ला एकादशी से तुलसी विवाहादि दिन होनें से शास्त्रसम्मत शुभ है यथा- **दिवसाः पंच पूर्वहि निर्गमे पंच वासराः। कारयेल्लग्न मेतेषु धन धान्य युतो भवेत्।।३।।** अर्थात् कार्तिक पूर्णिमा से पांच दिन पहिले और पांच दिन बाद तक विवाह करनें से कन्या वर धन धान्य से युक्त होती है। इन दिनों में **"नात्र विष्टि कुलकादि चिंतयेत्-** अर्थात् भद्रा कुलिका का विचार नहीं करना। **कार्तिकी सकल दोष नाशिनी-** कार्तिकी पूर्णिमा के दिन विवाह करने पर समस्त दोषों का नाश होता है। इस दिन ४,८,१२वां चंद्र छोड़कर विवाह ग्राह्य है। इस दिन लग्न की शुद्धि का चिंतन करना आवश्यक नहीं है। **नैव लग्नविधि मत्र चिंतयेत्**। इन दिनों में गोधलिक समय प्रशस्त है **कुर्याद् गोधूलिकं लग्नं कार्तिक्यां दिन पंच च। इसी प्रकार क्षैत्र विशेष में-भृगौ सुकच्छे च तथा विवाहे बलक्षपक्षे नभसौ दशम्याम्-** अर्थात् कच्छ देश में भृगु पर्वत के तालाब के तट पर श्रावण **मास शुक्ल पक्ष की दशमी** के दिन विवाह शुभ होता है। ऐतदर्थ इनमें गोधूलिक लग्न ही ग्राह्य है। लग्न शुद्धि रेखादि की आवश्यकता नहीं है। इन दिनों के सिवाय कुलाचार, देशाचार का शास्त्रों में उल्लेख है कि- **सिंहस्थ गुरु** में गंगा का उत्तर तट व गोदावरी के दक्षिण में विवाह शुभ माना जाता है। **मकरस्थ नीच गुरु** में नर्मदा के पूर्व,शोण से उत्तर दक्षिण और गण्डकी के पश्चिम भाग को दोष रहित माना है। गोचरीय स्थिति में अन्यान्य देशों में अपनी अपनी मान्यतायें भी है। पुनर्विवाह विधवा विवाह,नाता प्रथा वाले लोग किसी बड़े दिन की आड़ में विवाह कर लेते हैं वे रेखादि लग्नशुद्धि नहीं देखते । **संकीर्ण जातेस्तु शुभावहानि-** संकीर्ण जातियों के लिये सब शुभ है। ये लोग**"यद्यपि शुद्धं लोक विरुद्धं न करणीयं न करणीयं"**के सिद्धान्त

को मानते हैं। परन्तु-**तद्देश दोषान्परि वर्जयन्ति मनीषिणो देवविदःप्रयोगात्।** अर्थात् विद्वान ज्योतिषी उनउन देश के दोषों का प्रयोग में त्याग करते हैं। एवं च- **शास्त्र शिष्टे विरुद्धस्तु धर्मत्याज्यो बुधैः सदा**- अर्थात् बुद्धिमान लोग शास्त्र एवं शिष्टाचार के विपरीत कार्यों का त्याग कर देते हैं। अतः- **महाजनो येन गतः स पंथाः**(महाभारत) अर्थात् पूर्वाचार्यों के मार्ग पर ही चलना युक्ति युक्त है। **सयत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते**(गीता) अर्थात् श्रेष्ठ पुरुष जो जो प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। अन्य भी वहीं प्रमाण मानते है। ऐतदर्थ- **चातुर्मास में विवाह शुद्धिकरण शास्त्रानुकूल नहीं है।**

(३) गुरुरेकोपि केन्द्रस्थःशुक्रो वा यदि वा बुधः। हरेःस्मृतिर्यथा हन्ति तद्वद्दोषा न कालजाः।।४।। दोषाणां च शतं हंति बलवान्केंद्रगो बुधः। अपहायद्युनं शुक्रोद्विगुणं लक्षमंगिराः।।५। अर्थात् केन्द्र में बुध सौ दोषों का और सातवें को छोड़ शेष केन्द्रों में बलवान् **शुक्र से दो सौ दोषों** का तथा बलवान् गुरु से लाखदोषों का विनाशक होता है। **ध्वजयोगः**-शुभग्रह लग्न में पापग्रह अष्टम में होनें से स्त्री पति को प्रिय होती है। **श्रीवत्सयोगः**-मंगल सूर्य ११वें, शनि६ठें, चंद्र२रें,९वें अन्यग्रह से यह उत्तम विवाह है। **आनन्दयोग**- कन्या लग्न, ३रें चंद्र,गुरु,५वें शुक्र से आनंद करता है। **अर्द्धचंद्रयोग**- ११वें सूर्य,६ठें मंगल, ३रेंशनि से कन्या पतिव्रता,सौभाग्यवति होती है। **गजाभिधयोग**- गुरु९वें,बुधलग्न में,शनि ११वें से कन्या पतिव्रता,धर्म,अर्थ की देने वाली होती है। **शंखयोग**- **शुभग्रह ४,९,१० वें हो तो सदा शुभ कारक है।**

(४) **अशुभयोग- चक्रयोग**- मेष से कन्या तक पापग्रह,तुला से मीन पर्यन्त अशुभ ग्रह हो तो इस योग में कन्या व्याभिचारिणी होती है। **वापीयोग**- संपूर्ण पापग्रह केंद्र में हो तो यह विवाह में अनिष्टप्रद है। **कोदंडयोग**- शुभग्रह १,१२वें व पापग्रह २रें हो तो अशुभ है।**कुठारयोग**- मंगल १२वें,शुक्र६ठें,शनि ४थे होनें से वंश का नाश करता है। **कर्मयोग**- १२वां सूर्य, २रां शुक्र,६ठें शनि,८वां चंद्र हो तो कन्या भिक्षा मांगती है। **मूसलयोग**- सूर्य लग्न में, शनि १२वें,चंद्र ८वें होनें से कन्या कुल का नाश करनें वाली होती है। **उपग्रहदोष** कुरुक्षेत्र,वाल्हिक देश में, **लत्तादोष**,सौराष्ट्र,मालव देश में,**पातदोष** बंग कलिंग में,**एकार्गल** कश्मीर में और **वेध दोष** संपूर्ण देश में त्याज्य है। **वेधदोष**- लग्न में शुभ ग्रह,लग्नेश लाभेश पर शुभग्रहों की दृष्टि वा शुभ ग्रहयुत वा शुभग्रहों की कालहोरा हो तो वेध दोष नहीं होता है। **क्रूरैरपि त्यजेत्पादं केचिदूचुर्महर्षयः** आदि प्रमाणों से विवाह लग्न शोधन किये हैं। अतः देशाचार कुलाचार का उपरोक्त के सिवाय अन्य प्रपंच मिथ्या है।

वैशाखकृष्णपक्षः
(मेषसूर्य,वृषे गुरुः)

(१) १ सूर्य स्वात्यां लग्न रात्रौ मकर १४ अं.उप.,कुंभ लग्न रेखो ९।।।।।ऽ।।।**ता.13.4.2025ई.।तुले चंद्रः**।रात्रौ मकर २.३० से ३.२६ बजे कुंभ ३.२७ से ४.५५ बजे।

(उषः प्रशस्त केन्द्र त्रिकोणयों शुभ ग्रहाःमास शून्य रवेर्दग्ध नाशयेत्)

(२) १ चंद्र स्वात्यां लग्न प्रातः ल.वृषभ अं.१५ उप.सुबह ल.३,६ रेखा ९।।।।।।ऽ।।। रात्रौ वृश्चि.अं.१५ या. रेखा १०।।।।।।।।।। **ता.14.4.25ई.। तुले चंद्रः**। प्रातः वृषभ ८.५२ से ९.५२ बजे। सुबह मिथुन ९.५३ से १२.६ बजे। दिन को कन्या ४.४१ से ६.५६ बजे। रात्रौ वृश्चिक ९.१६ से १०.१५ बजे। (केन्द्र त्रिकोणेयों शुभ वा बली ग्रहाः मास शून्य,रवेर्दग्धां च नाशयेत्)

(३) ३ बुध अनुराधायां ल.रात्रौ वृश्चिक अं.७ उप. रात्रौ धनु अं.२६ या. रेखा ९।।।।।ऽ।।।। **तारीख 16.4.2025ई.। वृश्चिक चंद्रः**।रात्रौ वृश्चिक ९.४५ से ११.२३ बजे। रात्रौ धनु ११.२४ से १.१५ बजे तक।

(४) ४ गुरु मूले लग्न रात्रौ मीन अं.३ उप. रेखा ८।।।।।ऽ।ऽ।। **ता.17.4.25ई.। धनु चंद्रः**। रात्रौ मीन ४.५४ से ६.६ बजे तक,उषःप्रशस्तः।

(५) ५ शुक्र मूले सुबह ल.१,मिथुन अं.११ या.रेखा ७।।।।।ऽऽऽ।। रात्रौ वृश्चिक अं.२ उप.,धनु ,कुंभ,मीन रेखा ७।।।।।ऽ।ऽ।ऽ **ता.18.4.2025ई.। धनु चंद्रः**। प्रातः मेष६.६ से ७.४० बजे। सुबह मिथुन ९.३८ से १०.१२ बजे। रात वृश्चिक ९.५ से ११.१५ बजे। धनु ११.१६ से १.२२ बजे। कुंभ ३.८ से ४.१५ बजे।

(उषः प्रशस्तः)

(६) ७ सूर्य उषायां लग्न प्रातः मेष अं.१३ उप.,मिथुन,धनुचंद्रः,रात्रौ ल.८,९, ११, १२ रेखा ७ऽ।।ऽ।ऽ।।।। **ता.20.4.25ई.। मकर चंद्रः**। सुबह मेष ६.४५ से ७.३२ बजे। मिथुन ९.३० से ११.४३ बजे। धनु चंद्रः।अग्रे रात्रौ वृश्चिक,धनु ८.५३ से १.१४ बजे। कुंभ मीन ३.० से ५.५७ बजे तक।मकर चंद्रः।उषः प्रशस्तः।

(७) १४ शनि रेवत्यां लग्न रात्रौ ८,९ रेखा ७ऽऽ।ऽ।।।।।। **ता.26.4.25 ई.। मीने चंद्रः**।रात्रौ वृश्चक,धनु ८.२९ से १२.५१ बजे तक।

वैशाखशुक्लपक्षः
(मेषेसूर्य,वृषेगुरुः)

(८) २ मंगल रोहिण्यां लग्न रात्रौ ८,११, १२,१ अं.१५ या रेखा ९।।।।।ऽ।।।।**ता. 29.4.25ई.। वृषेचंद्रः**। मृगे लग्न रात वृश्चिक ८.१७ से १०.३१ बजे। कुंभ,मीन,मेष २.२४ से ६.७ बजे।

(उषःप्रशस्तः)

(९) ३ बुध रोहिण्यां लग्न सुबह १,२,३ रेखा ९।।।।।ऽ।।।। दिने ल.६ रेखा

९।।।।।ऽ।।। रात्रौ ल.८,९,११ अं.२५ या.रेखा ७ऽऽ।।।ऽ।।। **ता.30.4.25ई.। वृषे चंद्रः।** सुबह मेष,वृषभ, मिथुन ६.८से ११.३ बजे। दिने कन्या ३.३८ से ५.५३ बजे। रात वृश्चिक धनु ८.१३ से १२.३४ बजे,कुंभ २.२० से ३.३० बजे।

(अग्रे भद्रा दिवा रात्रौ छवरी काल अमान्यः)

(१०) ४ गुरु मृगे लग्न दिन को कन्या अं.२४ या.रेखा ८ऽ।।।ऽ।।।। **ता.1.5.25ई.। मिथुनेचंद्रः।** दिने कन्या लग्न ३.३५ से ५.१५ बजे तक।

(रवियोगः,दिवा छवरी काल अमान्यः)

(११)८ चंद्रः मघायां लग्न गोधूलि ल.७ व ल.८ रेखा ८ऽ।।।।।।ऽ। **ता.5.5.2025ई.। सिंहे चंद्रः।** सायं गोधूलि ५.३४ से ७.५० बजे। रात्रौ ७.५१ से १०.८ बजे। (रवियोगः,गणितेन क्रान्त्याऽभाव)

(१२) ९ मंगल मघायां लग्न सुबह १,२,३ गोधूलि तुला अं.१३ या. रेखा ८ऽ।।।।।।ऽ। **ता.6.5.25ई.। सिंह चंद्रः।** सुबह मेष,वृषभ,मिथुन ६.० से १०.३६ बजे तक। गोधूलि सायं ५.३० से ६.३० बजे तक।

(रवियोग, गणितेनक्रांत्याऽभावः)

(१३) १० बुध उफायां लग्न रात वृश्चिक अं.७उप. ,धनु रेखा ७।।ऽ।।।ऽ।ऽ। **ता.7.5.25ई.। सिंहे चंद्रः।** रात वृश्चिक धनु ८.११ से १२.४ बजे तक।

(रात्रौ छवरीकाल अमान्यः,अग्रे भद्राः)

(१४) ११ गुरु उफायां रात्रौ ल.८ रेखा ८।।ऽ।।ऽ।।।। हस्ते लग्न रात्रौ ल.१०,१२ रेखा ७ऽऽ।।।ऽ।।।। **ता. 8.5.25ई.। कन्या चंद्रः।** रात्रौ वृश्चिक ७.३९ से ९.५६ बजे। रात मकर १२.१ से १.४८ बजे। मीन ३.२० से ४.४३ बजे। (रे.९ सायं अर्धयाम ऽगोधूलि छवरी काल त्याज्य रात्रौ अमान्यः)

(मेषेसूर्यःमिथुनेगुरु २४/५ उप.)

वक्राति चारे सुरराज मंत्री यत्रागत स्तत्र फलं ददाति।।1।। अर्थात् गुरु जिस राशि पर है उसी का फल देगा।)

(१५) १२ शुक्र हस्ते लग्न सुबह ल.२,३ रेखा ७ऽऽ।।।ऽ।।।। वृषे गुरुः। ऽगोधूलि ल.७,९ रेखा ८ऽऽ।।।।।।।। मिथुनस्थ गुरु **ता.9.5.25ई। कन्या चंद्रः।** सुबह वृष,मिथुन ६.१८ से १०.२४ बजे। वृषे गुरुः। ऽगोधूलि तुला सायं ५.१८ से ७.३४ बजे। रात धनु ९.५३ से ११.५६ बजे। मिथुने गुरु।

ज्येष्ठकृष्णपक्षः

(मेषेसूर्यः,मिथुनेगुरु)

(१६) १ मंगल अनुराधायां लग्न रात्रौ ११,१२ रेखा ७।।।।ऽऽ।।ऽ **ता.13.5.25ई.। वृश्चिक चंद्रः।** रात्रौ कुंभ मीन १.२७ से ४.२४ बजे तक। (उषः प्रशस्तः)

(१७) २ बुध अनुराधायां लग्न प्रातः २ रेखा ८।।।।।ऽ।।।ऽ **ता.14.5.25ई. । वृश्चिक चंद्रः।** प्रातः वृषभ ५.५९ से ७.५४ बजे।

(१८) ५ शनि उषायां लग्न दिने ६,७ गोधूलि वृश्चिक अं.१७ या. धनु चंद्रः रेखा ७।।।ऽ।ऽ।ऽ।। अग्रे मकरे चंद्रः गोधूलि ल.८ अं.१७ उप.,रात्रौ कुंभ अग्रे रात्रौ ल. १२,१ रेखा ७।।।ऽ।। ।ऽऽ। **ता.17.5.25ई.। धनु चंद्रः।** दिने कन्या तुला वृश्चिक २.३२ से ८.१७ बजे तक। मकरे चंद्रः वृश्चिक ८.१७ से ९.२१ बजे। रात कुंभ,मीन,मेष १.११ से ५.४६ बजे तक।

(उषः प्रशस्तः,गणितेन क्रांत्या ऽभावः।)

(१९) ६सूर्य उषायां सुबह ल.२,४ रेखा ७।।।ऽ।।।ऽऽ। **ता.18.5.25ई.। मकरे चंद्रः।** सुबह वृषभ ५.४६ से ७.३८ बजे। दिने कर्क ९.५० से १२.११ बजे तक। (गणितेन क्रांत्याऽभावः)

(२०) १० गुरु उभायां लग्न रात्रौ ९,११,१२,१ रेखा १०।।।।।।।।।। **ता.22.5.25ई.। मीने चंद्रः।** रात धनु ९.३ से ११.६ बजे। कुंभे १२.५२ से २.२५ बजे। मीन २.२६ से ३.४५ बजे। मेष ३.४६ से ५.२३ बजे। उषः प्रशस्तः। (छवरीकाल दिने रात्रौ अमान्यः)

(२१)११ शुक्र उभायां लग्न प्रातः२,३ रेखा १०।।।।।।।।।। रात्रौ लग्न कन्या अं.२३या.रेखा ९।।।।।ऽ।।।। रात्रौ रेवत्यां धनु अं.७उप. ल. ११,१२,१ रेखा ७।।ऽऽ।ऽ।।।। **ता.23.5.25ई.। मीन चंद्रः।** प्रातः वृषभ,मिथुन ५.२४ से ९.२८ बजे। दिने कन्या २.९ से ४.१ बजे। रात धनु ८.५९ से ११.२ बजे। रात कुंभ मीन मेष १२.४८ से ५.१९ बजे तक। उषः प्रशस्तः।

ज्येष्ठशुक्लपक्षः

(सूर्यवृषभ,मिथुनेगुरु)

(२२) २ बुध मृगे लग्न प्रातः २,३ वृषभ चंद्रः रेखा ९ऽ।।।।।।।।। अग्रे दिने ल.६,रात्रौ ल.९,कुंभ अं. १९या.रेखा ८ऽ।।।।ऽ।।।। **मिथुने चंद्रः ता.25.5.25 ई.** । प्रातः वृषभ मिथुन ५.४ से ९.१० बजे **वृषभ चंद्रः।** दिने कन्या १.४९ से ४.३ बजे। रात धनु ८.३९ से १०.४२ बजे। रात कुंभ १२.२८ से १.१५ बजे,मिथुन चंद्रः।

(२३) ६ सूर्य मघायां रात्रौ ल.१ रेखा ७ऽ।।।।ऽऽ।।। **ता.1.6.25ई.। सिंहे चंद्रः।** रात ३.१२ से ४.४६ बजे। उषः प्रशस्तः। (रोग बांण पूर्ण)

(२४) ७ चंद्र मघायां लग्न सुबह ३, रेखा ७ऽ।।। ।ऽऽ।।। ल.७,ऽगोधूलि ८ रेखा ८ऽ।।।।ऽ।।।। रात्रौ ल.९ रेखा ९ऽ।।।।।।।।। **ता.2.6.25ई.। सिंहे चंद्रः।** सुबह मिथुन ६.४० से ८.५३ बजे। दिने ३.४२ से ६.३ बजे। सायं ऽगोधूलि ६.४ से ८.२० बजे। रात धनु ८.२१ से १०.२१ बजे। (अग्रे भद्राः)

(२५) ९ बुध उफायां लग्न रात्रौ मकर अं.२उप.,ल. १२,वृष अं.१५ या.रेखा ९।।।।।ऽ।।।। **ता.4.6.25ई.।**

कन्या चंद्रः । रात मकर १०.३० से १२.२ बजे। मीन १२.३ से १.३३ बजे।वृषभ ४.३५ से ५.४५ बजे।

(उषः प्रशस्त , रवियोग)

(२६) १० गुरु हस्ते लग्न प्रातः २,३ रेखा १० ।।।।।।।।।। **ता.5.6.25ई.। कन्या चंद्रः।** सुबह वृषभ,मिथुन ५.५० से८.४२बजे तक।

(अग्रे व्यतिपात)

(२७) १२ शनि स्वात्यां लग्न सुबह ५रे.९ ।।।।ऽ।।।। रात्रौ ल.६,११ रेखा ८।।।।।ऽऽ।।। रात्रौ ल.१ रेखा ९।।।।।।ऽ।।।**ता.7.6.2025ई.।तुले चंद्रः।** सुबह सिंह १०.५३ से १.८ बजे। रात धनु ८.२ से १०.२ बजे। कुंभ ११.५१ से १.२१ बजे। मेषे २.४९ से ४.२३ बजे तक।

(२८) १२ सूर्य स्वात्यां लग्न सुबह ३,५ रेखा ९ ।।।।।।ऽ।।।**ता.8.6.25ई.।तुले चंद्रः।** सुबह मिथुन ६.१७ से ८.३० बजे। सिंह १०.४९ से १.४ बजे।

(२९) १३ चंद्र अनुराधायां लग्न दिने तुला ४अं.उप. ,रात ११,१२ रेखा ९।।।।।ऽ।।।।, रात्रौ ल.२ रेखा १०।।।।।।।।।। **ता.9.6.25ई.। वृश्चिके चंद्रः।** दिने तुला ३.३० से ५.३६ बजे। रात कुंभ मीन ११.४३ से २.४० बजे।वृषभ ४.१६ से ५.४९ बजे उषःप्रशस्तः

(रवियोग)

(३०) १४ मंगल अनुराधायां लग्न प्रातः २,३ रेखा १०।।।।।।।।।। **ता.10.6. 25ई.। वृश्चिके चंद्रः।** प्रातः वृषभ मिथुन ५.४९से ८.२२बजे। (अग्रेभद्रा)

नोट- गुरु अस्तःज्येष्ठ शुक्ला 15 बुध ता.11.6. 25से 12.7.25 तक।अग्रे चातुर्मास प्रारंभ।

मार्गशीर्षशुक्लपक्षः

वक्रातिचारे सुरराज मंत्री यत्रागत स्तत्र फलं ददाति अर्थात् कर्कस्थ गुरु प्रभावी होगा।

(सूर्यवृश्चिके,कर्कगुरु)

(३१) २ शनि मूले लग्न ऽगोधूलि वृषभ रे.१०।।।।।।।।।। रात्रौ ल.४,५,६,७ रेखा ९।।।।।ऽ।।।।**ता.22. 11.2025 ई.।धनुचंद्रः।** सायं ऽगोधूलि वृषभ ५.२१ से ५.४१ बजे अग्रे कुलिकः।रात्रौ कर्क,सिंह,कन्या ९.३२ से ६.४१ बजे तक उषःप्रशस्तः।

(३२) ३ सूर्य मूले लग्न सुबह वृश्चिक रेखा ९।।।।।ऽ।।।।दिने लग्न १०,११, १ ऽगोधूलि वृषभ अं.१३या. रेखा ८।।।।।ऽऽ।।।**ता.23.11.25ई.।धनु चंद्रः।** सुबह वृश्चिक ६.३८ से ८.५४ बजे।दिने मकर कुंभ ११.० से २.१४ बजे। मेष ३.४२ से ५.१६ बजे। ऽगोधूलि वृषभ ५.१७ से ६.०बजे।

(३३) ४ चंद्र उषायां लग्न सायं मिथुन अं.८ उप.,अं. २७या. रेखा ७।ऽ।।।।ऽऽ।। **ता.24.11.25ई.। धनु चंद्रः।** सायं मिथुन ७.४२ से ९.०० बजे तक।

(रवियोग अग्रे रे.६ ।ऽ।।।ऽऽऽ।।अल्प)

(३४) ५ मंगल उषायां लग्न दिने मकर अं.३ उप. दिने ल.१२ ऽगोधूलि २ रेखा ८।।।।।ऽ।ऽ।। **ता.25.11. 25ई.।मकरे चंद्रः।** दिने मकर ११.५ से १२.३५ बजे, मीन २.७ से ३.३३ बजे।सायं ऽगोधूलि वृषभ ५.९ से ७.५ बजे। (चं. गुरु समसप्तक)

(३५) ९ शनि उभायां लग्न रात्रौ ४,६ अं.१३या.रेखा ७।।।।।ऽऽ।।ऽ रात्रौ कन्या अं.१३ उप.रेखा ८ ।।।।।ऽ।।।ऽ **ता.29.11.25ई.। मीने चंद्रः।** रात्रौ कर्क ९.४ से ११.२१ बजे। कन्या अं.१३ या.१.३८ से २.३८ बजे।अं.१३ उपरांत कन्या २.३९ से ३.५१ बजे। (रात्रौ छवरीकाल अमान्यः)

(३६) १० सूर्य उभायां लग्न सुबह १०, १२ मीन रे. ८।।।।।ऽ।।।ऽ गोधूलि ल.२ रेखा ९।।।।।ऽ।।।। रात्रौ रेवत्यां लग्न ४ रेखा ८ऽ।।।।ऽ।।।।**ता.30.11. 25ई.।मीने चंद्रः।** दिने मकर १०.३२ से १२.१५ बजे। मीन १.४७ से ३.१३ बजे।गोधूलि वृषभ ४.४९ से ६. ४६ बजे।रात्रौ कर्क ९ से ११.१७ बजे।

(गोधूलिके रवियोग,छवरीकाल ग्राह्य रात्रौ व्यतिपातः)

(३७) १५ गुरु रोहिण्यां लग्न सूर्यास्त परं रात्रौ ल. २,४,५,६ रेखा १०।।।।।।।।।।**ता.4.12.25ई.।वृषभ चंद्रः।** रात्रौ वृषभ ५.४२ से ६.३१ बजे। कर्क सिंह कन्या ८.४६ से ३.३४ बजे तक।

(भद्रा,अर्धयाम त्याज्यः)

पौषकृष्णपक्षः

(सूर्यवृश्चिक,गुरुकर्क)

(३८) १ शुक्र रोहिण्यां लग्न ८,१० अं.२५या.रेखा १०।।।।।।।।।।अग्रे मृगे ल.१२ रेखा ९ऽ।।।।।।।।। **ता.5.12. 25ई.। वृषे चंद्रः।** प्रातः वृश्चिक ५.४९ से ८. ५ बजे। दिने मकर १०.१० से ११.३० बजे। मीन १. २५ से २.५२ बजे। (अग्रे मृत्युबांणः)

(३९) ६ बुध मघायां लग्न रात्रौ ल.८ अं.१२उप. रेखा८।।।।।ऽऽ।।।**ता.10.12.25ई.।सिंहे चंद्रः।** रात्रौ वृश्चिक ६.३० से ७.१८ बजे,उषः प्रशस्तः।

(पूर्व वैधृत भद्रा,त्याज्यः)

(४०) ८ शुक्र उफायां दिवा ल.११ रेखा ९।।।।।।।ऽ।। सिंहे चंद्रः। ऽगोधूलि २ रात्रौ ४,५,६,७ रेखा ८।।।।।ऽ।ऽ।।**कन्या चंद्रः ।ता.12.12.25ई.।** दिने कुंभ ११.२७ से १२.५६ बजे। ऽगोधूलि वृषभ ४.३ से ६.० बजे।कर्क सिंह ८.१४ से १२.४७ बजे।कन्या १२.४८ से ३.०२ बजे।तुला ३.३से ५.२०बजे।(उषःप्रशस्तः)

(४१) ९ शनि हस्ते लग्न दिने ल.१० रेखा ८।।।।।ऽ।ऽ।।, अन्य गोधूलि ल.२ अं.२उप.रेखा ९।।।।।।।ऽ।। रात्रौ ल.४,५,७,८ रेखा ८।।।।। ।।ऽ।ऽ **ता.13.12.2025ई.। कन्या चंद्रः।** दिने मकर

९.३८ से ११.२२ बजे। ऽगोधूलि वृषभ ३.५९ से ५.५५ बजे। रात कर्क सिंह ८.१० से १२.४३ बजे। तुला वृश्चिक २.५९ से ७.२० बजे:,उष: प्रशस्त:।

नोट- अग्रे शुक्रास्त पूर्वे -पौष कृष्णा 11 चंद्र ता. 15.12.25 सेता.1.2.26ई. माघशुक्ला 15 सूर्य

फाल्गुनकृष्णपक्ष:

(सूर्यमकर,मिथुनेगुरु)

(४२) २ मंगल मघायां लग्न दिने १,२,३ गोधूलि ४ रेखा ८।।।ऽ।ऽ।।।। **ता.3.2.26ई.। सिंहे चंद्र:।** दिन को मेष,वृष ,मिथुन १०.५८ से ४.४२ बजे तक। गोधूलि कर्क सायं ४.४३ से ७.४ बजे (अग्रे लग्नाऽभाव:)

(४३) ३ बुध उफायां लग्न रात्रौ ल.७ अं.१८ उप. ,९अं.२०या. **सिंह चंद्र:**,अग्रे लग्न ९ अं.२० उप. ,**कन्या चंद्र:** रेखा ९।।।।।।।ऽ।। **ता.4.2.26ई.**। रात्रौ तुला १२.५८ से १.४८ बजे। धनु ४.७ से ५.३१ बजे सिंहे चंद्र: ।अग्रे धनु ५.३१ से ६.१० बजे कन्या चंद्र:।

(रात्रौ छवरीकाल अमान्य:)

(४४) ४ गुरु उफायां लग्न दिने १२,२,३ रात्रौ लग्न ७,९, १० रेखा ८।।।।।ऽ।ऽ।। **ता.5.2.26 ई.। कन्या चंद्र:।** दिने मीन ९.२२ से १०.४९ बजे। वृषभ मिथुन १२.२८ से ४.३४ बजे। रात्रौ तुला ११.२७ से १.४४ बजे। धनु मकर ४.३ से ७.२४ बजे तक। **उष:प्रशस्त:**

(गोधूलिके अर्धयाम,छ्वरी काल त्याज्य:, दिनेरात्रौ छ्वरीकालअमान्य:)

(४५) ५ शुक्र हस्ते लग्न दिने १२,२,३ गोधूलि ४ रात्रौ ५,७अं.२१या. रेखा ९।।।।।।ऽ।।। **ता.6.2.2026ई.। कन्या चंद्र:।** दिने मीन ९.१८ से १०.४५ बजे। वृषभ मिथुन १२.२४ से ४.३० बजे। गोधूलि सायं कर्क ४.३१ से ६.५२ बजे। रात्रौ सिंह ६.५३ से ९.७ बजे। तुला ११.२३ से १२.३० बजे तक।

(४६) ७ सूर्य स्वात्यां लग्न ऽगोधूलि ४, रात्रौ ६,८,९ रेखा ७ऽऽ।ऽ।।।।।। **ता.8.2.2026ई.। तुला चंद्र:।** ऽगोधूलि कर्क ४.२३ से ६.४४ बजे। रात कन्या ९.० से ११.१४ बजे। वृश्चिक धनु १.३३ से ५.५४ बजे। उष: प्रशस्त:। (रवियोग)

(४७) ८ मंगल अनुराधायां लग्न दिने १२,२ ऽगोधूलि ४,रात्रौ ल.७,९ रेखा ८ऽ।।।।।।ऽ।। **ता.10.2.26ई.। वृश्चिके चंद्र:।** दिने मीन ९.२ से १०.२९ बजे। वृषभ १२.८ से २.४ बजे। ऽगोधूलि कर्क ४.१५ से ६.३६ बजे। रात तुला ११.७ से १.२४ बजे। धनु ३.४३ से ५.४६ बजे। उष: प्रशस्त: (अग्रे मृत्युबांण)

फाल्गुनशुक्लपक्ष:

(सूर्यकुंभ,गुरुमिथुने)

(४८) २ गुरु उभायां रात्रौ लग्न ८ रेखा ८।ऽ।।।ऽ।।।। ल.९ अं.१४या. रेखा ८।ऽ।।।ऽ।।।। ल.९ अं.१४ उप. रेखा ९।ऽ।।।।।।।। **ता.19.2.26ई.। मीने चंद्र:।** रात्रौ वृश्चिक १२.४९ से ३.६ बजे। रात्रौ धनु अं.१४ या.३.७ से ४.७ बजे। रात धनुअं.१४ उप.४.८ से ५.१० बजे तक। उष: प्रशस्त:।

(४९) ३ शुक्र उभायां लग्न दिने २,रे.९।ऽ।।।।।।।। ल.३ रात्रौ ल.६अं.२७ या.रेखा ८।ऽ।।।।।।।ऽ रेवत्यां रात्रौ ल.७ रेखा ९।ऽ।।।।।।।। **ता.20.2.26ई.। मीन चंद्र:।** दिने वृष,मिथुन ११.२८ से ३.३४ बजे। रात्रौ कन्या ८.१२ से १०.१२ बजे। तुला १०.२७ से १२.४४ बजे।

(अग्रे भद्रा,दिवा रात्रौ छवरीकाल अमान्य: ।)

(५०) ४ शनि रेवत्यां लग्न दिने २लं.९ उप.,ल.३ रेखा ९।।।।।ऽ।।।। **ता.21.2.26ई.। मीन चंद्र:।** दिने वृषभ मिथुन १२.० से ३.३० बजे तक। (अग्रे लग्नाऽभाव)

अग्रेहोलाष्टक,चंद्रग्रहणदोष: पूर्वापरत्रिदिनंत्यात्य: ।।

चैत्रकृष्णपक्ष:

(सूर्यकुंभे,गुरुमिथुने)

(५१) २ गुरु हस्ते लग्न दिने १२,२,३ गोधूली अस्त परे ल.५,रात्रौ ल.७,८ अं.१५या.रेखा ७।ऽ।ऽ।ऽ।।।। रात्रौ ल.८ अं.१५ उप.,ल.९ रेखा ८।ऽ।ऽ ।।।।। **ता.5.3.26ई.। कन्या चंद्र:।** सुबह मीन ७.३२ से ८.५८ बजे। वृष, मिथुन १०.३८ से २.४५बजे। गोधूलि सिंह ६.३७ से ७.२१बजे। रात तुला, वृश्चिक अं.१५ या. ९.३७ से १.५५ बजे। रात वृश्चिक अं.१५ उप.१.५६ से २.११ बजे। धनु २.१२ से ४.१६ बजे तक। उष: प्रशस्त:। (अग्रे भद्रा:)

(५२) ४ शनि स्वात्यां लग्न रात्रौ ९,१०, ११ रेखा ७।।।ऽ।।।ऽऽ। **ता.7.3.26ई.। तुला चंद्र:।** रात धनु , मकर कुंभ २.४ से ६.५९ बजे तक। उष: प्रशस्त:।

(गणितेन क्रांत्याऽभाव:,पूर्व रेखा ५,६ अल्प:)

(५३) ५ सूर्य स्वात्यां लग्न दिने १,३ अं.९ या.रेखा ७।।।ऽ।।।ऽऽ। **ता.8.3.2026ई.। तुले चंद्र:।** सुबह मेष ८.४७ से १०.२५ बजे तक। दिने मिथुन १२.१९ से १२.४५ बजे। (गणितेन क्रांत्याऽभाव)

(५४) ६ चंद्र अनुराधायां लग्न ऽगोधूलि ५ रात्रौ ६ रेखा ७ऽऽ।।।ऽ।।।। **ता.9.3.26ई.। वृश्चिक चंद्र:।** सायं ऽगोधूलि सिंह ४.४७ से ७.५ बजे। रात कन्या ७.६ से ९.२० बजे। (रवियोग,अग्रे भद्रा:)

(५५) ७ मंगल अनुराधायां दिने लग्न वृष अं.१७उप., ऽगोधूलि ल.५अं.१८ या.रेखा ८ऽऽ।।।।।।।। **ता.10.3.2026ई.। वृश्चिके चंद्र:।** सुबह वृषभ ११.१६ से १२.१० बजे। सायं ऽगोधूलि ४.४३ से ५.४५ बजे।

(५६) ८ बुध मूले लग्न रात्रौ ९,११ रेखा ७।ऽ।ऽ।।

।ऽ।।ता.11.3.26ई.।धनु चंद्रः। रात धनु १.४८ से ३.५२ बजे।कुंभे ५.३८ से ६.५५ बजे।उषः प्रशस्तः। (पूर्व रे.५ऽऽ।ऽ।ऽ।ऽ।।अल्पः)

(५७) ६ गुरु मूले लग्न प्रातः १२ रेखा ७ ।ऽ।ऽ।।।ऽ।। ता.12.3.26ई.। धनु चंद्रः। सुबह मीन ७.४ से ८.३० बजे तक। (अग्रे व्यतिपात)

(५८) ११ शनि उषायां लग्न प्रातः १२,२,ऽगोधूलि ६ रेखा ८।।।।ऽ।ऽ।।ता.14.3.26ई.।मकरे चंद्रः।सुबह मीन अं.२ परं ७.२ से ८.२२ बजे। वृषभ १०.२ से ११.५४ बजे। ऽगोधूलि कन्या सायं ६.४६ से ६.०० बजे। (सूर्यास्त परे कुलिक) नोट- अग्रे मीनाऽर्क

अशुद्धःविवाह मुहूर्ताश्चः

वैशाखकृष्णपक्षः

(१) २ मंगल अनुराधायां व्यतिपात,भ्रदाः।
(२) ८ चंद्रः उषायां १/३१नक्षंत्रांतः
(३) ११ गुरु उभायां,मृत्युबांणः।
(४) १२ शुक्र उभायां वैधृत,भद्राः।

वैशाखशुक्लपक्षः

(५) ११ गुरु उफायां ऽगोधूलि रेखा.६।।ऽ।।।।।।।ल.तुला ७/११ से ७/३८ तक अर्धयाम,छवरीकाल
(६)१३ शनि स्वात्यां व्यतिपातः।
(७) १४ सूर्य स्वात्यां व्यतिपात,भद्राः।

ज्येष्ठकृष्णपक्षः

(७) ३ गुरु मूले भद्राः,मृत्युबांणः।
(८) ४ शुक्र मूले मृत्युबांणः।
(६) १२ शनि रेवत्यां प्रातः ल.२ रे.७।।ऽऽ।ऽ।।।। के. चर्णवेधः आवश्यके

(१०) १४ चंद्र रोहि.मृत्युबांण,कृष्णांग

ज्येष्ठशुक्लपक्षः

(११) ८ मंगल उफायां मृत्युबांणः
नोट-आषाढ़ मासे गुरुअस्तवशात् लग्नाऽभावः

मार्गशीर्षकृष्णपक्षः

(१२) १३ मंगल स्वात्यांमृत्युबांण,भद्रा, अग्रे कृष्णांग

मार्गशीर्षशुक्लपक्षः

(१३) ११ चंद्रःरेवत्यां व्यतिपात भद्राः।

पौषकृष्णपक्षः

(१४) २ शनि मृगे मृत्युबांणः
(१५) १० सूर्य हस्ते भद्रा,मृत्युबांण।
(१६) ११ चंद्र स्वात्यां मृत्युबांणः।
नोट-अग्रे माघमासतक शुक्रास्तः

फाल्गुनकृष्णपक्षः

(१७) १ चंद्र मघायां मृत्युबांण
(१८) ६ शनि स्वात्यां भ्रदाः।
(१६) ६ बुध अनुराधायां मृत्युबांण।
(२०) १० गुरु मूले रे.५ऽऽ।ऽ।ऽ।ऽ।।अल्पः।
(२१) ११ शुक्र मूले रे.६ऽऽ।ऽ।।ऽ।।।अल्पः
(२२) १२ शनि उषायां मृत्युबांण,व्यतिपात
(२३) १३ सूर्य उषायां व्यतिपात

फाल्गुनशुक्लपक्षः

होलोष्टकेलग्नाऽभावः

चंद्र ग्रहणे पूर्वा पर त्रिदिनं त्याज्यः

चैत्रकृष्णपक्षः

(२४) ३ शुक्र हस्ते भ्रदाः
(२५) ४ शनि स्वात दिवा रे.५।।।ऽ।ऽ।ऽऽऽ व रे.६।।।ऽऽ।ऽऽ।।अल्प
(२६) १० शुक्र उषायां मृत्युबांण,भद्राः

अग्रेमीनाऽर्कःमलमासः

यज्ञोपवीत मुहूर्ताः

चैत्रशुक्लपक्षः(वृषेगुरु)

(मीनाऽर्कअतिप्रशस्तः)

(१) १ सूर्य रेवती,अश्वनी ल.२,३,५ अभि.
(२)५ बुध रोहिणी ल.२,३,५अभि.
(३) ६ रवि पुक्ष ल.२,३,५अभि.
(४) १२ बुध पूफा. ल.२,३,५ अभि.ऋग्वेदीय
(५)१३गुरु पूफा.,उफा.ल.२,३,५अ.ऋग्,यजु,साम
(६) १४ शुक्र उफा.ल.२,३,५अभि.ऋग्.,यजु,साम

वैशाखकृष्णपक्षः (वृषेगुरु)

(७) १ चंद्र स्वात ल.१,३,४,५अभि.
(८) ५ शुक्र मूल ल.१,३,५ऋग्वेदीय
(६) ६ शनि पूषा.ल.१,३ऋग्वेदीय
(१०) ७ सूर्य उषा.ल.१,३,४अभि.
(११) ८ चंद्र श्रवण ल.१,२,४अभि.
(१२) ६ मंगल धने.ल.२,४अभि.(एकमेव सामवेदीय)

वैशाखशुक्लपक्षः

(१३) ३ बुध रोहिणी ल.१,२,३,६.अभि.
(१४) ४ गुरु मृग.ल.६ भद्रोपरांतः
(१५) ६ शनि पुन.ल.२,३ अभि.
(१६) १० बुध पूफा.ल.२,३,४ अभि.ऋग्वेदीय
(१७) १२ शुक्र हस्त ल.२,३,६ अभि.
(१८) १३ शनि चित्रा ल.२,३,४,६अभि.

ज्येष्ठकृष्णपक्षः

(१६) ५ शनि पूफा.,उषा.ल.३,५,६,७ अभि.ऋग्, यजुवेदीय, सामवेदीय
(२०) ६ सूर्य उषा.,श्रवण ल.४,६,७अभि.
(२१)७ चंद्र श्रवण, धने. ल.६,७ भद्रोपरांत

(२२) ११ शुक्र उभा.,रेवती ल.२,३,६

ज्येष्ठशुक्लपक्षः

(२२) २ बुध मृग.ल.२,३,५,७अभि.
(२३) ४ शुक्र पुन.ल.२,३,५ अभि. अग्रे भद्रा
(२४) ५ शनि पुक्ष ल.२,३,५,७अभि.।
(२५)१०गुरु हस्त ल.२,३ अग्रेव्यतिपात
(२६)१२शनि चि.,स्वा.ल.३,५,७अभि

नोट-अग्रेगुरुअस्तः,शुक्रोदयउपरांतः

दक्षिणायनेत्याज्यः, उत्तरायणेप्रशस्तः

फाल्गुनकृष्णपक्षः

(२७) ३ बुध पूफा.ल.११अग्रेभद्राःऋग्
(२८) ४ गुरु उफा. ल.१२,१,२,३अभि.
(२९) ५ शुक्र हस्त ल.१२,१,२,३अभि.
(३०) ६ शनि चित्रा ल.१२,१,२,३अभि
(३१) ७ सूर्य स्वात.ल.३ भद्रोपरांत

फाल्गुनशुक्लपक्षः

(३२) २ गुरु पूभा.ल.१,२,३अभि.
(३३) ३ शुक्र उभा.ल.१,२,३अभि.
(३४) ४ शनि रेवती ल.२,३ अभि.
(३५) ५ सूर्य अश्व ल.१,२,३ अभि.

अग्रेहोलाष्टक

चैत्रकृष्णपक्षः

(३६) २ गुरु हस्त ल.२,३,अभि.
(३७) ४ शनि चि.,स्वा.ल.१,२,३अभि.
(३८) ५ सूर्य स्वा.ल.१,२ अभि.
(३९) ६ चंद्र अनु. ल.३,४
(४०) ११ शनि उषा.ल.२,३,४ अभि.
(४१) १२ सूर्य श्रव.२,३,४ अभि.

अग्रेकृष्णांग

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्ताः

विशेष- इस वर्ष में शनि,पूभा.,उभा., नक्षत्र पर चलेगा जिससे शनिवार को रक्षोभूत युत प्रभावहोगा।

उत्तरायणेप्रशस्तः

वैशाखकृष्णपक्षः

(१) ८ चंद्र श्रवण ल.१,२,४अभि.
(२) १० बुध शत्त ल.३,५

वैशाखशुक्लपक्षः

(३) ७ सूर्य पुक्ष ल.१,२ अग्रे भद्राः
(४) १० बुध पूफा.ल.१,२,३ पुत्र सुखद
(५) ११ गुरु उफा.ल.६ पुत्र धनं
(६) १२ शुक्र हस्त ल.२,३,४,६

ज्येष्ठकृष्णपक्षः

(७) १० गुरु पूभा.ल.२ पुत्र धनं
(८) ११ शुक्र उभा.,रेवती ल.२,३,६
(९) १३ सूर्य अश्व.ल.१,२,३अग्रे भद्रा

ज्येष्ठशुक्लपक्षः

(१०) १० गुरु हस्त ल.२,३ पुत्रधनं
(११) १२ सूर्य स्वात ल.३,४,५

अग्रेगुरुअस्तः

(दक्षिणायनेजीर्णगृहप्रवेशः)

श्रावणकृ.पक्षः(शिवउपासकानांग्राह्य)

(१२) ८ शुक्र अश्वनी ल.४,७ अभि.

श्रावणशुक्लपक्षः

(१३) ६ बुध हस्त ल.४,६,९ वास्तुः
(१४) ७ गुरु चित्रा ल.४,६,७,९ अभि.
(१५) ८शुक्र स्वात ल.९,१० धनधान्यद
(१६) ९ सूर्य अनु.ल.४,७,९
(१७) १० चंद्र अनु.ल.३,४
(१८) १३ गुरु उषा.ल.९,१०
(१९) १४ शुक्र उषा.ल.४,६ धनधान्यद

भाद्रपदकृष्णपक्षः

(लोकमतेन भरिया भाद्रवाग्राह्य)

(शिवउपासकानांग्राह्य)

(२०) ९ सू.रो. ल.४,५,६,७,९ अभि
(२१) १२ बुध पुन.ल.४,५,७,१०
(२२)१३गुरु पुक्ष ल.१०(पूर्व व्यतिपात)

भाद्रपदशुक्लपक्षः

(लोकमतेन भरिया भाद्रवाग्राह्य)

(२३)५ गुरु स्वा.ल.७.९
(मृ.पंचक खाली)
(२४) ६ शुक्र स्वात ल.५
(२५) १२ गुरु उषा .ल.४,७,८,९
(२६) १३ शुक्र श्रव.ल.४,७,८,९

अग्रेखण्डग्रासदोषः,श्राद्धपक्षः

आश्विनशुक्लपक्षः

(कुलदेवीउपासकानांग्राह्य)

(२७)७चंद्र मूल ल.६,८वास्तुअग्रे भद्रा
(२८) ९ बुध उषा.ल.६,८,१०पुत्रसुखं
(२९) १० गुरु श्रव.ल.६,८,१०
(३०) ११ शुक्र धने.ल.११,१२
(३१)१३सू.पूभा.ल.७,९,१०चक्रे लक्ष्मी

कार्तिककृष्णपक्षः

(नूतनगेहेदेवदीवालीउत्सवःशुभः)

(३२) ९ बुध पुक्ष ल.६,७,८,१०
(३३) १२ शनि पूफा., उफा. ल.८, १० चक्रेलक्ष्मी धनतेरस
(३४) १३ सूर्य उफा.ल.८,१०अभि.

कार्तिकशुक्लपक्षः

(नूतनगेहेदेवदीवालीउत्सवशुभः)

(३५) ६ चंद्र पूषा.ल.८,९,१०,१२ चक्रे धनं
(३६) ८बुध श्रव.ल.१२,१ भद्रोपरांत
(३७)९गुरु श्र.धने.ल.७,८,१०, १२
(३८) १२ सूर्य पूभा.,उभा.ल.८,९, १०,१२
(३९) १३ चंद्र उभा.रेव.ल.८,९,१० ,१२

मार्गशीर्षकृष्णपक्षः

(४०) १२ सूर्य हस्त ल.८,९,१०,१२
(४१) १३ चंद्र चित्रा ल.८,९,१०

मार्गशीर्षशुक्लपक्षः

(नूतनगेहेमांगलिकउत्सवशुभः)

(४२) ६ बुध श्रव.ल.८,१०,१२
(४३) ८ शुक्र शत्त.ल.८,१०,१२
(४४) १० सूर्य उभा.ल.८,१०,१२

पौषकृष्णपक्षः

(४५) ८ शुक्र उफा.ल.९,११ अभि.

अग्रेशुक्रास्तमाघ.शु.15तकवमलमास

उत्तरायणेप्रशस्तः

फाल्गुनकृष्णपक्षः

(४६) ११ शुक्र मूल ल.११,१,३
अग्रेहोलाष्टक

चैत्रकृष्णपक्षः

(४७) ९ गुरु मूल ल.११ वास्तु
अग्रेव्यतिपात,अग्रेमीनाऽर्कमलमासः

नूतन गृह निमार्ण मुहूर्ता:

वैशाखकृष्णपक्षः

(मेषेसूर्यशुभंभवेत्)

(१) १ चंद्र स्वात्यां ल.१,२,४अभि.

वैशाखशुक्लपक्षः

(मेषेसूर्यशुभदंभवेत्)

(२) १० बुध पूफा.ल.१,२,३,७ पुत्र सुखं
(३) ११ गुरु उफा. ल.६,७ पुत्र धनं
(४) १२ शुक्र हस्त ल.२,३,६,७

ज्येष्ठशुक्लपक्षः

(वृषसूर्ये,धनवृद्धिः)

(५)१०गु.हस्त ल.२,३पुत्रधनं,अग्रेव्यति.
(६) ११ शुक्र चित्रा ल.६,७ धन धान्यदः
(७) १२ सूर्य स्वात ल.३,५,६ अभि.

अग्रे गुरु अस्त,आद्रा सूर्ये भूमि रजस्वला,मिथुनसूर्यमरणंध्रुवं

श्रावणशुक्लपक्षः

(कर्कसूर्येशुभदंप्रोक्तं)

(८) ८ शुक्र स्वात ल.९ धन धान्यदः
(९) ९ सूर्य अनु.ल.७ अभि.
(१०) १३ गुरु उषा. ल.७,९
(११) १४ शुक्र उषा. ल.४,७ अभि. धनधान्यदः

भाद्रपदकृष्णपक्षः

(कर्कसूर्येशुभदंप्रोक्तं)

(१२) १ सूर्य धने,शत्त.ल.७,९अभि.
(१३) २ चंद्र शत्त.,पूभा. ल.७,९ चक्रे लाभ शुभ

भाद्रपदशुक्लपक्षः

(सिंहसूर्ये भृत्यविवर्धनम्)

(१४) १२ गुरु उषा.ल.७,८,९अभि.

नोट- अग्रे खण्डग्रास चंद्र ग्रहण, श्राद्धपक्षः, कन्यासूर्येरोगं।

कार्तिकशुक्लपक्षः

(तुलासूर्येसौख्यदः)

(१५) ८ बुध श्रवण ल.१२
(१६) ९ गुरु श्रव.,धने.ल.७,८,१०, १२ धन धान्यदः
(१७) १२ सूर्य पूभा.,उभा. ल.८,९, १०,१२चक्रे लक्ष्मी प्राप्तिः।
(१८) १३ चंद्र उभा. रेव. ल.८,९,१०, १२
(१९) १५ बुध अश्व.,भर.ल.७,१० चक्रे लाभ शुभ

मार्गशीर्षकृष्णपक्षः

(तुलासूर्येसौख्यदः)

(२०) २ शुक्र रोहिणी ल.११,१२ द्वितीयां १५/१२ घट्यो भूमि रजस्वलोपरांत

मार्गशीर्षशुक्लपक्षः

(वृश्चिकसूर्येधनविवर्धनं)

(२१) ८ शुक्र शत्त.ल.१०,११,१२अभि.
(२२) १० सूर्य उभा.ल.१०,११,१२अभि

पौषकृष्णपक्षः

(वृश्चिकर्केसूर्येधनविवर्धनं)

(२३) १ शुक्र रो.,मृग.ल.१०,११,१२

अग्रेमलमासः,अग्रेशुक्रास्तः

फाल्गुनकृष्णपक्षः

(मकरसूर्येधनागमं)

(२४) ४ गुरु उफा. ल.२,३
(२५) ५ शुक्र हस्त ल.३ धन धान्यदः

अग्रेहोलाष्टक,चंद्रग्रहण

चैत्रकृष्णपक्षः

(कुंभेसूर्येरत्नलाभः)

(२६) २ गुरु हस्त ल.२,३
(२७) ३ शुक्र चित्रा ल.४ भद्रोपरांत
(२८) ५ सूर्य स्वात ल.१,२ अभि.

अग्रेमीनाऽर्कमलमासः

दैवप्रतिष्ठामुहूर्ता:

उत्तरायणेसर्वदेवानां

चैत्रशुक्लपक्षः

(वासंतनवरात्रैदेवीप्रतिष्ठाः)

(१) ५ बुध रोहि.ल.२,५देवी,नाग
(२) ९ रविपुक्ष ल.२,३अभि.श्रीराम
(३) १० चंद्र पुक्ष ल.१ अग्रे ज्वालामुखी
(४) १३ गुरु उफा.ल.३,५अभि.पुत्रधनं
(५) १४ शुक्र उफा. ल.२,३अभि.

वैशाखकृष्णपक्षः

(६) १ चंद्र स्वात ल.१,२,३,४अभि.
(७) ५ शुक्र मूल ल.१,३ देवी

वैशाखशुक्लपक्षः

(८) ३ बुध रोहि.ल.१,२,५ पुत्र सुखद
(९)४ गुरु मृग. ल.६, ७ पुत्रधनं (भद्रोपरांत)
(१०) ७ रविपुक्षःल.१,२अग्रे भद्राः
(११) ११ गुरु उफा.ल.६,७ पुत्रधनं (भद्रोपरांत)

ज्येष्ठशुक्लपक्षः

(१२) २ बुध मृग.ल.२,३,६पुत्रसुखं
(१३) ३ गुरु आद्रा ल.२,३,५ अभि. पुत्रधनं शिव
(१४) १० गुरु हस्त ल.२,३ पुत्रधनं
(१५) ११ शुक्र चित्रा ल.५,६ धनधान्यदः (व्यतिपात उपं.अग्रे भद्रा)
(१६) १२ सूर्य स्वात ल.३,५ अभि.

नोट-अग्रे गुरुअस्तःश्राव.कृ.३ शनि तक

दक्षिणायनेउग्रदेवानां

नोट-शिवशिवांशदेवोंकीप्रतिष्ठाकेलिये श्राव.व भाद्रपदमास श्रैष्ठः।

श्रावणशुक्लपक्षः

(१७) ६ बुध हस्त ल.४,६,९
(१८) ७ गुरु चित्रा ल.४,६,७ अभि.
(१९) ८ शुक्र स्वात ल.९,१० धन धान्यदं
(२०) १३ गुरु उषा.ल.९

भाद्रपदकृष्णपक्षः

(२१) १ सूर्य धने.,शत्त.ल.७,९
(२२) २ चंद्र शत्त.ल.३,७ अभि.

भाद्रपदशुक्लपक्षः

(२३) २ चंद्र उफा. ल.५,७,८ अभि. रामदेव
(२४) ६ शुक्र स्वात ल.५

अग्रेचंद्रग्रहण,श्राद्धपक्षः

आश्विनशुक्लपक्षः

(शारदीयनवरात्रिः,देव्यादिविशेषः)

(२५)१ चंद्र उफा.,हस्तल.६,९अभि
(२६)३बु.चि.,स्वा.ल.६, ८ पुत्रसुखं
(२७) ७ चंद्र मूल ल.६,८ अभि. देवी

(२८) ९बुध उषा.,ल.६,८ पुत्र सुखद
(२९) १० गुरु श्रव.ल.६,८,९अभि.

कार्तिकशुक्लपक्षः

(३०) ८ बुध श्रव. ल.१२,८
(३१) ९ गुरु श्रवण, धने.ल.८, १०, १२ अभि.
(३२) १० शुक्र धनेष्ठा.ल.८, १० धनधान्यं
(३३)१३चंद्र उभा.,रे.ल.९,१० अभि

मार्गशीर्षकृष्णपक्षः

(३४) ६चंद्र पुन.ल.७,९,१०अभि.

मार्गशीर्षशुक्लपक्षः

(३५) ६ बुध श्रव.ल.१०,१२
(३६)८ शुक्र शत्त. ल.१०,११ अभि
(३७) १० सूर्य उभा.ल.१०,११,१२ अभि.

पौषकृष्णपक्षः

(३८) १ शुक्र रो.,मृ.ल.१०, ११, १२ अभि
(३९) ४ चंद्र पुक्ष ल.१०,१२

मलमास,शुक्रास्तमाघशु.15रवितक

फाल्गुनकृष्णपक्षः

(४०) ४ गुरु उफा.ल.१,२
(४१) ५शुक्र हस्त ल.१,२धन धान्यदः

फाल्गुनशुक्लपक्षः

(४२) ३ शुक्र उभा.ल.२,३अभि.
(४३) ५ सूर्य अश्व.ल.१,२,३अभि.

अग्रेहोलाष्टक,चंद्रग्रहणः

चैत्रकृष्णपक्षः

(४४) २ गुरु हस्त.ल.२,३
(४५) ३ शुक्र चित्रा.ल.४ भद्रोपरांत
(४६) ५ सूर्य स्वा.ल.१,२ अभि.

अग्रेमीनाऽर्कमलमासः

त्रिपिण्डी(पितृकर्म)मुहूर्ताः

वैशाखकृ.पक्ष **उत्तरायणे प्रशस्तः**

(१) १परं २चंद्र स्वात
(२) ८ चंद्र श्रवण

वैशाखशुक्लपक्षः

(३) ३ बुध रोहिणी पुत्र सुखद
(४) ४ गुरु मृग पुत्र धनं
(५) ८ चंद्र श्लेषा सर्पशांति
(६) १० बुध पूफा. पुत्र सुखद
(७) ११ गुरु उफा.ल.६,७पुत्रधनं (भद्रोपरांत)

ज्येष्ठशुक्लपक्षः

(८) २ बुध मृग
(९) ३ गुरु आद्रा पुत्रधनं
(१०) ७ चंद्र मघा पितृ स्थापना
(११) १० गुरु हस्त ल.२,३ पुत्रधनं (अग्रे व्यतिपातः)
(१२) १२ सूर्य स्वात

अग्रेगुरुअस्तश्रावणकृ.2शनियावत्

श्रावणकृ.पक्षः(दक्षिणायनेग्राह्य)

(१३) ३० गुरु काल सर्पशांति , पितृशांति

श्रावणशुक्लपक्षः

(१४) ६ बुध हस्त
(१५) ७ गुरु चित्रा
(१६) १४ शुक्र उषा.धन धान्यद

भाद्रपदकृष्णपक्षः

(१७) १० चंद्र मृग
(१८) १३ गुरु पुक्ष व्यतिपात शांति
(१९) ३० शनि राक्षस भूत शांति

भाद्रपदशुक्लपक्षः

(२०) २ चंद्र उफा.
(२१) १२ गुरु उषा.

पूर्णिमा खग्रास चंद्रग्रहण दान पुण्यं शुभद

आश्विनकृष्णपक्षः

नोट- महालय श्राद्ध पक्ष में पितृतिथि कोपितृशांति,श्राद्धकरें।

आश्विनशुक्लपक्षः

(२२) १ चंद्र उफा.हस्त
(२३) ३ बुध चि.,स्वा.पुत्रसुखदं
(२४) ७ चंद्र मूल ल.६,८अग्रे भद्राः
(२५) ९ बुध उषा.पुत्र सुखद
(२६) १० गुरु श्रवण

नोट- पूर्णिमा से पितृशांति हेतु आकाश दीपदानएकमासतक।

कार्तिककृष्णपक्षः

(२७) २ बुध अश्वनी
(२८) ९ बुध पुक्ष
(२९) १२ शनि धनतेरस यमाय दीपदानं
(३०) १४ चंद्र दीपावली,दीपदानं

नोट- तुला, वृश्चिक संक्रांति में पितृशांति ,पितृ प्रसन्नार्थ दीपदान घर में मंदिर जलाशय पर करें।अमावस्या की रात्रि ब्रह्ममुहूर्त में पितृ शांति हेतु दीपक श्राद्धकरें।

कार्तिकशुक्लपक्षः

(३१) १ बुध स्वात
(३२) ५ सूर्य मूल लाभपंचमी दीपदान
(३३)१५ बुध अश्व. देवदीवाली दीपदान(भीष्म)

मार्गशीर्षकृष्णपक्षः

(३४) ६चंद्र पुन.
(३५) ८ बुध श्लेषा सर्पशांति
(३६) ९ गुरु मघा पितृ स्थापना

मार्गशीषशुक्लपक्षः

(३७) ६ बुध श्रवण

पौषकृष्णपक्षः

(३८) ४ चंद्र पुक्ष

नोट- अग्रे मलमासः,शुक्रास्त माघ शु. 15सूर्ययावत्

फाल्गुनकृष्णपक्षः

(३९) १ चंद्र आश्लेषा सर्पशांति
(४०) ४ गुरु उफा.
(४१) १० गुरु मूले ल.३,४
(४२) ११ शुक्र मूल धन धान्यदः
(४३) १४ चंद्र श्रवण

अग्रे होलाष्टक

चैत्रकृष्णपक्षः

(४४) २ गुरु हस्त
(४५) ९ गुरु मूल

अग्रेमीनाऽर्कमलमासः

चूड़ी मुहूर्तः (चूड़ियां, चूड़ा, पड़ला, बंगड़ी, कड़ा, बाजुबंद पहनने का मुहूर्त)

(१) **चूड़ी चक्र**- सूर्यभाद् दिनभं ३ सूर्यनेष्ट,८ मंगल नेष्ट,११शुक्र श्रेष्ठ,१३ राहु नेष्ट,२०बुध श्रेष्ठ,२२ शनि नेष्ट,२३ गुरु श्रैष्ट, २६चंद्र श्रैष्ठ,२७ केतु नेष्ट **नक्षत्र**- अश्व,हस्त,चित्रा,स्वात,विशाषा,अनुराधा,धनेष्ठा,रेवती व विवाह नक्षत्र मघा,मृग,मूल ग्राह्यः। **त्याज्य नक्षत्रः**- रोहिणी,उत्तरा३,पुन.,पुक्ष। चंद्रबल आवश्यक। विशेष- ग्राह्य नक्षत्र,रवियोग,सिध्दि आदि शुभ योगेऽपि। विशेषतः-स्त्री का चंद्रबल देखें। चूड़ी चक्र देखें।

स्वयंसिद्ध मुहूर्तः- चेत सुदी की एक देख,आखातीज वैशाखी लेख। विजया दशमी आसोज की होय,आधी एकम सुदि कार्तिक जोय।।१।।
साढ़ा तीन रे इण मुहूर्त में,स्वयं सिद्ध को लेख। सर्व कार्य को सिद्ध करे,इण में मीन न मेख।।२।।
उषःप्रशस्ते गर्गः,शकुनं च बृहस्पति। मनोत्साहं च अंगिरा,विप्र वाक्य जनार्दनः।।३।।

वैशाखकृष्ण पक्षः
(मेषेऽर्कप्रशस्तः)
(१) १ चंद्र स्वात ल.१,२,४,७ अभि.
(२) ५ शुक्र मूल ल.१,३,८
(३) ८चंद्र श्र.ल.१,२,८ पट्ट धनधान्यद
(४) १० बुध शत्त.ल.१,२,३,८पुत्रधनं
(५) ११ गुरु पूभा.ल.१

वैशाखशुक्लपक्षः
(६) ४ गुरु मृग.ल.६,७पट्ट लक्ष्मीप्राप्ति ,पुत्रधनं
(७) ५ शुक्र आद्रा.ल.१,२,४,६अभि. पट्ट लक्ष्मी प्राप्ति
(८) १० बुध पूफा.ल.१,२,६ पुत्र सुखं

ज्येष्ठकृष्णपक्षः
(९) २ बुध अनु.ल.२
(१०) ७ चंद्र श्रव.ल.६
(११) १३ सूर्य अश्व ल.१,२

ज्येष्ठशुक्लपक्षः
(१२) १० गुरु हस्त ल.२,३ पुत्रधनं
(१३) ११ शुक्र चित्रा ल.७ धन धान्यद
(१४) १२ सूर्य स्वात ल.५ अभि.

अग्रेगुरुअस्तश्राव.कृ.2शनियावत्

श्रावणकृष्णपक्षः
(१५) ३ सूर्य धने.ल.४,६
(१६) ४ चंद्र शत्त.ल.३,९
(१७) १४ बुध आद्रा ल.९

श्रावणशुक्लपक्षः
(१८) ४ चंद्र पूफा.ल.३,४
(१९) ६बुध हस्त ल.३,४,९पट्ट लक्ष्मीप्रा.
(२०) ९ सूर्य अनु.ल.४,७,९

भाद्रपदकृष्णपक्षः
(२१) १ सूर्य धने.,शत्त.ल.३,७,९
(२२) २ चंद्र शत्त ल.३,७अभि.
(२३) ६ गुरु रेव.,अश्व.ल.४,७,९

भाद्रपदशुक्लपक्षः
(२४) ४ बुध चित्रा ल.१० पट्ट
(२५) ६ शुक्र स्वात.ल.४,५ पट्ट
(२६) ९ चंद्र मूल ल.११,१२

अग्रेखग्रासचंद्रग्रहण,श्राद्धपक्षः

आश्विनशुक्लपक्षः
(२७) १० गुरु श्रव.ल.६,८,९
(२८) ११ शुक्र धने.ल.११,१२

कार्तिककृष्णपक्षः
(२९) २ बुध अश्व.ल.८,१०
(३०) ६ सूर्य मृग.ल.६,९ अभि.
(३१) ७ चंद्र आद्रा ल.६,९अभि.
(३२) ११ शुक्र मधा ल.८,११

कार्तिकशुक्लपक्षः
(३३) ३ शुक्र अनु.ल.८,१० अभि.पट्ट
(३४) ५ सूर्य मूल ल.८,१०,१२अभि.पट्ट
(३५)१० शुक्र धने.,शत्त.ल.८,१०,१२ अभि.
(३६) १२ सूर्य पूभा.ल.८,१० अभि.
(३७) १३ चंद्र रे.,अश्व.ल.८,१०अभि. पट्ट
(३८) १५ बुध अश्व.ल.७ पट्ट

मार्गशीर्षकृष्णपक्षः
(३९) ९ गुरु मघा.ल.७,८,१ पट्ट,
(४०) १० शुक्र पूफा.ल.७,८
(४१) १२ सूर्य हस्त ल.१०,१२
(४२) १३ चंद्र चित्रा.ल.८,१०,१२

मार्गशीर्षशुक्लपक्षः
(४३) ६बुध श्रव.ल.८,९,१२ पट्ट

पौषकृष्णपक्षः
(४४) १ शुक्र रो.,मृग. ल.८,१०,१२
(४५) ३ सूर्य आद्रा ल.७

नोट-अग्रेमलमास,शुक्रास्तमाघशु.15 सूर्ययावत्

फाल्गुनकृष्णपक्षः
(४६)३ बुध पूफा.ल.९,११
(४७) ५शुक्र हस्त ल.९,१०,२धनधान्यद
(४८) ११ शुक्र मूल ल.१,३ धनधान्यद
(४९) १४ चंद्र श्रव.ल.१०,१,२अभि.

फाल्गुनशुक्लपक्षः
(५०) ५ सूर्य अश्व.ल.१०,११,१,२,३ अभि. पट्ट।

अग्रेहोलाष्टक

चैत्रकृष्णपक्षः
(५१)२ गुरु हस्त ल.२,३ अभि.
(५२) ३ शुक्र चित्रा ल.४,५,६
(५३) ५ सूर्य स्वा.ल.११,३
(५४) ६ चंद्र अनु. ल.४,५

अग्रेमीनाऽर्क
मलमासः

द्वार शाखा (बारोख(चौखटा)किवाड़,दरवाजा,कपाट,खिड़की) मुहूर्त

सन्मुख त्रैमासिक राहु - (१) फाल्गुन,चैत्र,वैशाख-दक्षिण (२) ज्येष्ठ,आषाढ़,श्रावण -पश्चिम

(३) भाद्रपद आश्विन कार्तिक -उत्तर (४) मार्ग,पौष,माघ- पूर्वदिशा

द्वारशाखा नक्षत्र- अश्व,पुक्ष,हस्त,चित्रा,स्वा,अनु ,रेवती,(नक्षत्र) चक्रागत उत्तम योग नक्षत्र ग्राह्य है। कुयोग त्याज्यः।

वैशाखकृष्णपक्षः
(त्रैमासिकराहुदक्षिणे)
(१)१ चंद्र स्वात ल.१,२,३,५
(२) ४ गुरु ज्येष ल.२,५ पुत्र धनद
(३) ५ शुक्र मूल ल.१,३,५
(४) १० बुध शत्त.ल.३,५
(५) ११ गुरु ल.१ पुत्र धनद
वैशाखशुक्लपक्षः
(६) १ चंद्र भरणी ल.१,२,३,५ धनद
(७) ३ बुध रो.ल.१,२,३,५लक्ष्मीप्राप्ति
(८) ११ गुरु उफा.ल.२,३ पुत्र धनदः
(९) १५ चंद्र विशा.ल.१,३,७
ज्येष्ठकृष्णपक्षः
(त्रैमासिकराहुपश्चिमे)
(१०) २ बुध अनु.ल.२
(११) ३ गुरु ज्येष्ठा ल.२,३ पुत्रधनं
(१२) ६ सूर्य उषा.ल.२,७
(१३) ७ चंद्र श्रव.ल.७
(१४) ११ शुक्र उभा.,रे.ल.२,३
ज्येष्ठशुक्लपक्षः
(१५) २ बुध मृग.ल.२,३ लक्ष्मीप्राप्ति
(१६)३ गुरु आद्रा.ल.२,३ पुत्र धनद
(१७) ४ शुक्र पुन.ल.२,३लक्ष्मीप्राप्ति

(१८)१२ सूर्य विशा.ल.७
(१९) १३ चंद्र विषा.अनु.ल.६,७
अग्रेगुरुअस्त श्रा.कृ.2शनियावत्
श्रावणकृष्णपक्षः
(२०) ४ चंद्र शत्त.ल.६
(२१) ६ बुध उभा.ल.४,६
श्रावणशुक्लपक्षः
(२२) १ शुक्र पुक्ष.ल.४,७लक्ष्मीप्राप्ति
(२३) ३ सूर्य म.,पूफा.ल.४,७लक्ष्मीप्रा.
(२४) १३ गुरु उषा.ल.६
(२५) १४ शुक्र उषा.ल.४,७
भाद्रपदकृष्णपक्षः
(त्रैमासिकराहुउत्तरे)
(२६) १ सूर्य धने.,श.ल.७,९
(२७) २ चंद्र श.,पूभा.ल.७,९
(२८) ६ गुरु रे.,अश्व.ल.४,७,९
(२९) १२ बुध पुन.ल.५,७,९
भाद्रपदशुक्लपक्षः
(३०) १ सूर्य पूभा.ल.५,९ लक्ष्मीप्राप्ति
(३१) २ चंद्र उभा.ल.५,९ लक्ष्मी प्राप्ति
अग्रेग्रहण,श्राद्धपक्षः
आश्विनशुक्लपक्षः
(३२) १ चंद्र उफा.ह.ल.६,९लक्ष्मीप्राप्ति

(३३) ३ बुध चि.स्वा.ल.६,१०पुत्र धनद
(३४) १३ सूर्य पूभा.ल.६,९
(३५) १४ चंद्र उभा.ल.६
कार्तिककृष्णपक्षः
(३६) ३ गुरु भर.ल.६
(३७) ४ शुक्र कृ.ल.६,१०
(३८) ६ सूर्य मृ.ल.६,९
(३९) ७ चंद्र आद्रा ल.६,९
(४०) ११ शुक्र मघा ल.६,१
कार्तिकशुक्लपक्षः
(४१) १ बुध स्वा.ल.७,९ लक्ष्मी प्राप्ति
(४२) २ गुरु विशा.ल.७,१०लक्ष्मीप्राप्ति
(४३) ३ शुक्र अनु.ल.७,१० लक्ष्मी प्राप्ति
(४४) १३ चंद्र रेव.ल.१०,१२
(४५) १५ बुध अश्व.,भ.ल.७,९
मार्गशीर्षकृष्णपक्षः
(त्रैमासिकराहुपूर्वे)
(४६) २ शुक्र रो.ल.१०
(४७) ६ चंद्र पुन.ल.७,११
(४८) १३ चंद्र चित्रा.ल.१०,१२
मार्गशीर्षशुक्लपक्षः
(४९)१शुक्र अनु.ज्ये.ल.८,१०,१२धनद
(५०) ३ सूर्य मूल ल.८,१२लक्ष्मी प्राप्ति

पौषकृष्णपक्षः
(५१) १ शुक्र रोहि.मृ.ल.८,१२
(५२) ४ चंद्र पुन.,पुक्ष.ल.८,१२,
अग्रेमलमास,
शुक्रास्तमाघशु.15सूर्ययावत्
फाल्गुनकृष्णपक्षः
(त्रैमासिकराहुदक्षिणे)
(५३) ४ गुरु उफा.ल.१०,२
(५४) ५शुक्र हस्त.ल.१०,२धनधान्यद
(५५) ७ सूर्य स्वात.ल.३
(५६) ११ शुक्र मूल ल.१,३
फाल्गुनशुक्लपक्षः
(५७) १ बुध शत्त.ल.११,१,३लक्ष्मीप्राप्ति
(५८)२गुरु पूभा.ल.११,१,२,३लक्ष्मीप्रा.
(५९) ३ शुक्र उभा.ल.११,२,३ लक्ष्मीप्रा.
अग्रेहोलाष्टकचंद्रग्रहण
चैत्रकृष्णपक्षः
(त्रैमासिकराहुदक्षिणे)
(६०) २ गुरु हस्त ल.२,३
(६१) ५ सूर्य स्वा.वि.ल.१,३
(६२) ६ चंद्र वि.अनु.ल.११,२
(६३) ८ बुध ज्ये.ल.११,१२
अग्रेमीनाऽर्कमलमासः

चूला(भट्टी,बॉयलर)स्थापना मुहूर्तः-

(१) **चुल्ली चक्र**- सूर्यभाद् दिनभं ६ पीठ सुख,१० मस्तक मृत्यु,१८बाहु बहुत सुख भोग,२३ उदर गर्भनाश,२५भुज योगद,२७ चरण नाशक।

नक्षत्र- रोहिणी,पुक्ष,उत्तरा ३,अश्व,आद्रा,पूर्वा३ नक्षत्र। इनके अलावा चूली चक्रे चंद्रबली नक्षत्र ग्राह्य। अग्निबाँण,मृत्युबांण आदि अशुभ योग त्याज्यः रवियोग,सिद्धियोगादि शुभ योग ग्राह्यः।

वैशाखकृष्णपक्षः

(मेषस्थसूर्य)

(१) १चंद्र स्वात ल.१,३,५
(२) १० बुध शत्त.ल.३,५

वैशाखशुक्लपक्षः

(३) ३ बुध रो.ल.१,२,३पुत्र सुखद
(४) ४ गुरु मृग.,आद्रा.ल.६,७पुत्रधनं
(५) ५ शुक्र आद्रा ल.१,२,३
(६) ७ सूर्य रविपुक्ष ल.१,२,३
(७) ११ गुरु उफा.ल.६,७ पुत्रधनं
(८) १२ शुक्र हस्त ल.३,६

ज्येष्ठकृष्णपक्षः

(९) २ बुध अनु.ल.२
(१०) ११ शुक्र उभा.,रे.ल.२,३,६

ज्येष्ठशुक्लपक्षः

(११) २ बुध मृग.ल.२,३
(१२) ३ गुरु आद्रा.ल.२,३
(१३) ४ शुक्र पुन.ल.२,३
(१४) ११ शुक्र चित्रा ल.६
(१५) १२ सूर्य स्वा. ल.३,६

नोट-अग्रेगुरुअस्त श्रावणकृष्णा २ शनि यावत्

श्रावणकृष्णपक्षः

(१६) ४ चंद्र शत्त.ल.४,९

श्रावणशुक्लपक्षः

(१७) १ शुक्र पुक्ष ल.४,७,९
(१८) ४ चंद्र पूफा.ल.४
(१९) ६ बुध हस्त ल.४,९
(२०) १४ शुक्र उषा. ल.४,७,९

भाद्रपदकृष्णपक्षः

(२१) २ चंद्र शत्त.ल.७,९
(२२) १२ बुध पुन.ल.५,७,९

भाद्रपदशुक्लपक्षः

(२३) २ चंद्र उफा.ल.५,८,९
(२४) ४ बुध चित्रा.ल.१०
(२५) ६ शुक्र स्वात.ल.५,७
(२६) १२ गुरु उषा.ल.७,८,९
(२७) १३ शुक्र श्रवण ल.७,८,९

अग्रेग्रहण,श्राद्धपक्षः

आश्विनशुक्लपक्षः

(२८) १ चंद्र उषा,हस्त ल.६,९
(२९) ३ बुध चित्रा.,स्वा.ल.६,७,१,
(३०) ४ गुरु स्वा.ल.६,९
(३१) ११ शुक्र धने.ल.१२,१
(३२) १३ सूर्य पूभा.ल.९,१
(३३) १४ चंद्र उभा.ल.६

कार्तिककृष्णपक्षः

(३४) ३ गुरु भर.ल.९ अभि.
(३५) ४ शुक्र कृत्ति.ल.६,८,१०

कार्तिकशुक्लपक्षः

(३६) १ बुध स्वात ल.१०,१
(३७) ३ शुक्र अनु. ल.१०,२
(३८) ६ चंद्र मूल,पूषा.ल.१०,१२
(३९) १२ सूर्य पूभा.,उभा.ल.१०,१२
(४०) १३ चंद्र उभा.,रेव.ल.१०,१२
(४१) १५ बुध अश्व.,भ.ल.७,१२

मार्गशीर्षकृष्णपक्षः

(४२) २ शुक्र रोहि.ल.१०,२
(४३) १२ सूर्य हस्त ल.१०,१२,२

मार्गशीर्षशुक्लपक्षः

(४४) १ शुक्र अनु.ल.८,१०
(४५) ३ सूर्य मूल.ल.८,१२
(४६) ६ बुध श्रव.ल.८,१०,२
(४७) १५ गुरु रोहिणी ल.२

पौषकृष्णपक्षः

(४८) १ शुक्र रोहिणी,मृग.ल.८,१०,१२
(४९) ४ चंद्र पुन.,पुक्ष.ल.८,१०,१२

अग्रेमलमास,शुक्रास्तमाघशुक्ला १५ रविवारतक

फाल्गुनकृष्णपक्षः

(५०) ३ बुध पूफा.ल.९,११
(५१) ४ गुरु उफा.ल.९,१२,२
(५२) ५ शुक्र हस्त.ल.३,४
(५३) ११ शुक्र मूल ल.१,३,६

फाल्गुनशुक्लपक्षः

(५४) १ बुध शत्त. ल.११,१,३
(५५) २ गुरु पूभा.ल.११,२,३
(५६) ३ शुक्र उभा.ल.११,२,३
(५७) ५ सूर्य अश्व.ल.१,२,३

अग्रेहोलाष्टक

चैत्रकृष्णपक्षः

(५८) ३ शुक्र चित्रा.ल.४,५,६
(५९) ५ सूर्य स्वात.ल.११,३

अग्रेमीनाऽर्कमलमास □ □

नोट-विस्तृतमुहूर्तज्ञानकेलिए त्रिकालज्ञानपुस्तकपढ़ें।

व्यापार मुहूर्ताः-

(१) **हाटक चक्र-** सूर्यभाद् दिनभं २ आसन सुख,५तक पूर्व विक्रय नाश,६ अग्नि अर्थनाश,१३नैॠत सुख,१६मुख महाश्रेष्ठ,२० वायव्य चोर भय,२४ ईशान सर्वहानि,२८ मध्य शुभप्रद। **नक्षत्र-** अश्व,रोहिणी,मृग.,उत्तरा३,हस्त,चित्रा,अनु.,रेवती। चंद्रबली आवश्यक है।

हाटक चक्र के अलावा विशेषः- रवियोग,सिद्धि आदि शुभयोग,पंचके पंचकार्याणि ग्राह्यः,स्वयं सिद्ध मुहूर्तः। गुरु सूर्ये सर्वकार्य,शुक्रे पूर्ण मनोरथे। स्थिरता रवि पुत्रेण,ऐतेवारा शुभप्रदा।१। पूनम थी पड़वा भली,अम्मास थी बीज। अण पुच्या मोहरत भला के तेरस ने तीज।२ ।चौथ नम ने चवदशो जो शनिवार मिलंत। एक एक काम करंतड़ा कारज सौ सरंत।।३।।

चैत्रशुक्ल पक्षः(वासंतनवरात्री)

(१) १सूर्य रेव.ल.१२,२,३अभि.हाटक
(२) ५ बुध रोहि.ल.२
(३) ६ गुरु रो.,मृ.ल.१२,२ पुत्रधनं
(४) ७ शुक्र मृग.ल.१२,१
(५) ९ रवि पुन.,पुक्ष ल.१,२,३अभि.
(६) १०चंद्र पुक्ष.ल.१२,१विजयादशमी
(७) १२ बुध म.,पूफा.ल.१,२,४हाटक
(८) १३ गुरु पूफा.,उफा.ल.१,२,३,४ हाटक पुत्र धनं
(९) १४ शुक्र उफा.,ह.ल.१२,२,३ अभि.हाटक

वैशाखकृष्णपक्षः

(१०) १सूर्य चि.ल.१,३,४अभि.हाटक
(११) १ चंद्र स्वा.ल.१,३,४अभि.हाटक
(१२) १० बुध शत्त.ल.१,२,३हाटक
(१३) ११ गुरु पूभा.ल.१,२,३हाटक

वैशाखशुक्लपक्ष

(१४) १ चंद्र भरणी ल.१,२,३हाटक
(१५) ३ बुध रोहि.ल.१,२,३ पुत्रसुखद
(१६) ४ गुरु मृग.ल.६,७ पुत्रधनं
(१७) ७ रवि पुक्ष ल.१,२,३
(१८) १०बुध पूफा.ल.१,२,३ पुत्र सुखद हाटक
(१९)११गुरु उफा.ल.६,७ पुत्रधनं हाटक
(२०) १२ शुक्र हस्त ल.२,३,६ हाटक

ज्येष्ठकृष्णपक्षः

(२१) २ बुध अनु.ल.२,३ हाटक
(२२) ११ शुक्र उभा.रे.ल.२,३,६हाटक

ज्येष्ठशुक्लपक्षः

(२३) २ बुध मृग.ल.२,३,६ हाटक
(२४)३बु.आद्रा.ल.२,३,५अभि.पुत्रधनं
(२५) १० गुरु हस्त ल.२,३,५ हाटक
(२६) ११ शुक्र चि. ल.५,७ अभि.हाटक
(२७) १२ सूर्य स्वा.ल.३,५अभि.हाटक

अग्रे गुरु अस्त श्रावण कृ.२शनि यावत्

श्रावणकृष्णपक्षः

(२८)६बुध उभा.ल.४,६ पंचके पंचकार्य
(२९) ७ गुरु रेव.ल.४,६,९ पंचक शुभ
(३०) १४ बुध आद्रा ल.९ हाटक

श्रावणशुक्लपक्षः

(३१) १ शुक्र पुक्ष.ल.४,७,९अभि.हाटक
(३२) १३ गुरु पूषा.,उषा.ल.७,९अभि. हाटक
(३३) १४ शुक्र उषा.ल.४ हाटक

भाद्रपदकृष्णपक्षः

(३४) १सूर्य धने.ल.३,५,७अभि.हाटक
(३५) १२ बुध पुन.ल.७,१० हाटक

भाद्रपदशुक्लपक्षः

(३६) १ सूर्य पूफा.ल.५,७,९हाटक
(३७) ११ बुध पूषा.ल.५,७,९ हाटक
(३८) १२ गुरु उषा.ल.७,९ हाटक
(३९) १३ शुक्र श्रव.ल.७,९ हाटक

अग्रेखग्रासचंद्रग्रहण एवं श्राद्धपक्षः

आश्विनशुक्लपक्षः

(४०)१चंद्र उफा.ह.ल.६,९अभि.हाटक
(४१) ३ बुध चित्रा.ल.६,७ पुत्र सुखदं
(४२) ९ बुध उषा.ल.६,८ पुत्र सुखदं
(४३) १० गुरु श्र.ल.६,९ अभि. हाटक
(४४) ११ शुक्र धने. ल.११ हाटक
(४५) १३सूर्य पूभा.ल.९,११अभि.हाटक
(४६) १४ चंद्र उभा.ल.५,६हाटक

कार्तिककृष्णपक्षः

(४७) ९ बुध पुक्ष ल.६,७,१०
(४८)१३ सूर्य उफा.ल.१० अभि.हाटक

कार्तिकशुक्लपक्षः

(४९) १ बुध स्वात ल.७,१०अभि.हाटक
(५०) ९ गुरु श्र.,धने.ल.७,१०अभि.
(५१)१०शु.शत्त.ल.७,१०पुत्रधनंहाटक
(५२) १२ सूर्य पूभा.,उभा.ल.१०हाटक
(५३) १३ चंद्र उभा.,रे.ल.१० हाटक
(५४) १५ बुध अश्व.ल.७ हाटक

मार्गशीर्षकृष्णपक्षः

(५५) १२ सूर्य हस्त ल.१०हाटक
(५६) १३ चंद्र चित्रा.ल.१० हाटक

मार्गशीर्षशुक्लपक्षः

(५७) १ शुक्र अनु.ल.८,११ हाटक
(५८) १० सूर्य उभा.ल.८,११ हाटक

पौषकृष्णपक्षः

(५९) १ शु.रो.,मृ. ल.८,११हाटक

अग्रेमलमासशुक्रास्तमाघशु.15सूर्य यावत्

फाल्गुनकृष्णपक्षः

(६०) ५ शुक्र ह.ल.१,२अभि.धनधान्यद
(६१) ११ शुक्र मूल ल.१,२,३धनधान्यदः

फाल्गुनशुक्लपक्षः

(६२) १ बुध शत्त.ल.११,१,३हाटक

अग्रे होलाष्टक,चंद्रग्रहण

चैत्र कृष्णपक्षः

(६३) २ गुरु हस्त ल.२,३ हाटक

अग्रेमीनाऽर्कमलमासः

वाहन क्रय(खरीदनें)मुहूर्ताः(चौपगा पशु ,रथ,गाडा,मोटर कार,स्कूटर,यान आदि)

(१) **शकट चक्र**- सूर्यभाद् दिनभं ६नैष्ट,९श्रैष्ठ,१८ नैष्ट,२१श्रैष्ठ,२४नैष्ट,२७श्रैष्ठः। नक्षत्र- अश्व,रो.,मृ.,पुन.,पुक्ष.,ह.,चि.,स्वा.,ज्ये.,अनु.,श्र.,ध.,श.,रेवती। त्याज्य नक्षत्रादि- मघा,पूर्वा३,उत्तरा३ तथा घोड़ा पश्चिममुख बांधने से हानि। रविवार को घोड़ा मंगल को गाय,भैंस,ऊँट,घोड़ा। बुधवार को बैल भैंस,शुक्रवार को बकरी,भेड़,गधा व शनिवार को ऊँट नहीं लावे। मृत्युबांणादि अशुभ योग त्याज्यः।

चैत्रशुक्लपक्षः

(१) ६रवि पुक्षः ल.४ घोड़ा नहीं
(२) १० चंद्र पुक्ष ल.१२,१

वैशाखकृष्णपक्षः

(३) १ चंद्र स्वात ल.१,३,४ अभि.
(४) ८ चंद्र श्रवण.ल.१,२,४अभि.
(५) १० बुध शत्त.ल.१,२ भैंस, घोड़ा, बैल नहीं खरीदें

वैशाखशुक्लपक्षः

(६) ३ बुध रो.ल.१,२ पुत्रसुखद भैंस घोड़ा बैल नहीं खरीदें
(७) ४ गुरु मृग ल.६ पुत्र धनदः
(८) १२ शुक्र हस्त ल.२,३,६ बकरी भैड़,गधा नहीं खरीदें

ज्येष्ठकृष्णपक्षः

(९)७ चंद्र श्रवण ल.७
(१०)११शु.रे.ल.६बकरी,भेड़गधा नहीं
(११)१३सू. अश्व.,भ.ल.१,३घोड़ानहीं

ज्येष्ठशुक्लपक्षः

(१२) २ बुध मृग.ल.२,३भैंस घोड़ा बैल नहीं
(१३) ३ गुरु आद्रा ल.२,३,७ पुत्रधनदः
(१४) ४ शुक्र पुन.ल.२,३,७ बकरी, भेड़ गधा नहीं खरीदें
(१५) १० गुरु हस्त ल.२,३,७
(१६) १२ सूर्य स्वा.ल.१,३,७घोड़ा नहीं

अग्रेगुरुअस्तश्रावणकृष्ण2शनियावत्

श्रावणकृष्णपक्षः

(१७) ३सूर्य धने.ल.४,७अभि.घोड़ा नहीं
(१८) ४ चंद्र शत्त.ल.३,७ अभि.,९
(१९) ७ गुरु रेवती ल.४,६,९

श्रावणशुक्लपक्षः

(२०) १ शुक्र पुक्ष.ल.३,४,७अभि.बकरी भेड़ गधा नहीं
(२१) ६बुध हस्त ल.३,४,९ भैंस घोड़ा बैल नहीं।
(२२) ७ गुरु चित्रा ल.३,४,९
(२३) ८ शुक्र स्वा.ल.९,१०बकरी भेड़ गधा नहीं।

भाद्रपदकृष्णपक्षः

(२४)१सूर्य धने.श.ल.३,७,९घोड़ानहीं
(२५) २ चंद्र शत्त ल.३,७ अभि.
(२६) ६ गुरु रेवती,अश्व.ल.३,४,९
(२७) ९ सूर्य रोहि.ल.४,८,९घोड़ा नहीं
(२८)१२बुध पुन.ल.५,७,९भैंस घोड़ा बैल नहीं।

भाद्रपदशुक्लपक्षः

(२९) ४ बुध चित्रा ल.१०,१२भैंस घोड़ा बैल नहीं।
(३०)६शु.स्वा.ल.५बकरी,भेड़,गधानहीं
(३१) १३शुक्र श्रव.ल.७,८,९बकरा,भेड़ गधा नहीं

अग्रेग्रहण,श्राद्धपक्षः

आश्विनशुक्लपक्षः

(३२) १ चंद्र हस्त ल.९अभि.
(३३) ३बुध चि.,स्वा.ल.६,७,१भैंस घोड़ा बैल नहीं।
(३४) १० गुरु श्रव.ल.६,८,९
(३५) ११ शुक्र धने.ल.१बकरी,भेड़,गधा नहीं

कार्तिककृष्णपक्षः

(३६) २ बुध अश्व. ल.१०,१ भैंस, घोड़ा बैल नहीं
(३७) ६ सूर्य मृग.ल.९,१ घोड़ा नहीं
(३८) ७ चंद्र आद्रा ल.९,१
(३९) ९ बुध पुक्ष.ल.६,८भै.,घो.बैलनहीं

कार्तिकशुक्लपक्षः

(४०) १बुध.स्वा.ल.७,९भै.घो.,बैलनहीं
(४१) ९ गुरु श्रव.,धने. ल.७,१०,१
(४२) १० शुक्र धने.,श.ल.१०,१,२ बकरी भैड़ गधा नहीं।
(४३)१५बु.अश्व.ल.७भैस,बैल,घोड़ान.

मार्गशीर्षकृष्णपक्षः

(४४) २ शुक्र रो.ल.१०,११,२ बकरी, भैड़ गधा नहीं।
(४५) ६ चंद्र पुन.ल.७,९,११,२
(४६) १२ सूर्य हस्त ल.१०,१२घोड़ा नहीं
(४७) १३ चंद्र चित्रा ल.१०,१२

मार्गशीर्षशुक्लपक्षः

(४८) ६ बुध श्रव.ल.८,१०,१२,२भैस, घोड़ा,बैल नहीं
(४९) ८ शुक्र शत्त.ल.८, १०, १२, २ बकरी, भैड़,गधा नहीं।

पौषकृष्णपक्षः

(५०)१ शुक्र रो.मृ.ल.८,१०,१२ बकरी, भेड़ गधा नहीं।
(५१) ४ चंद्र पुन.,पुक्ष ल.८,१०,१२,३

अग्रे मलमास, शुक्रास्त माघ शु.१५सूर्य यावत्

फाल्गुनकृष्णपक्षः

(५२) ५ शुक्र हस्त ल.९,१०,२बकरी, भेड़,गधा नहीं।
(५३) ७ सूर्य स्वात ल.४,६ घोड़ा नहीं
(५४) १४चंद्र श्रव.ल.१०,१,२,६

फाल्गुनशुक्लपक्षः

(५५)१बुध श.ल.११,१,३भै.घो.बै.नहीं
(५६) ५ सू.अश्व.ल.१,२,३घोड़ा नहीं

अग्रेहोलाष्टक,चंद्रग्रहण

चैत्रकृष्णपक्षः

(५७) २गुरु हस्ते.ल.२,३,६
(५८)३शु.चि.ल४,७बक.,भेड,गधा नही
(५९)५ सूर्य स्वात.ल.१,३ घोड़ा नहीं

अग्रेमीनाऽर्कमलमासः

जलाशय निर्माण मुहूर्तः(कुआ,नाड़ी,तालाब,टांका,बोरिंग आदि)—

वैशाख कृष्णपक्षः

(मेषेसूर्यबहुजललक्ष्मीप्राप्ति)

(१)५ शुक्र मूल ल.१,२,३मध्ये पूर्ण जल,प.अमृत
(२) ७ सूर्य उषा.ल.१,२,३म.पूर्ण जल,प.अमृत
(३) ८ चंद्र श्र.ल.१,२ वा.अमृत जल।
(४) १० बुध श. ल.२,३वा.अमृतजल
(५) ११ गुरु पूभा.ल.१वा.अमृतजल उ.जल

वैशाखशुक्लपक्षः

(६) ३ बुध रो.ल.१,२,३अ.बहुजल,शीघ्र जल
(७) ४ गुरु मृ.ल.६अ.बहुजल,रो.म.शीघ्रजल
(८) ७ रविपुक्ष ल.१,२ नैऋत्य शुद्ध जल
(९) ८ चंद्र श्ले.ल.१,२,३नै.शुद्ध जल
(१०) १० बुध पूफा.ल.१,२,३प.स्वादुजल
(११) ११ गुरु उफा.ल.६,७रो.अ.मध्यमजल
(१२) १५ चंद्र विशा.ल.३,७रोहिभा.नै.बहुजल

ज्येष्ठकृष्णपक्षः

(वृषभसंक्रांतिबहुजल,लक्ष्मीप्राप्ति)

(१३) २ बुध अनु.,ज्ये.ल.२,६रोहि.नै.बहुजल
(१४) ३ शुक्र ज्ये.मूल ल.२,६म.पूर्णजल
(१५) ६ सूर्य उषा.श्र.ल.२,६,७,८म.पूर्णजल
(१६) ७ चंद्र श्र.धने.ल.६,७,९म.पूर्ण जल
(१७) १० गुरु पूभा.ल.१,२ वा.अमृत जल
(१८)११ शुक्र उभा.रे.ल.२,३,६वा.अमृतजल
(१९)१३ सूर्य अश्व.,भ.ल.१,३ वा.अमृत जल

ज्येष्ठशुक्लपक्षः

(वृषभसंक्रांति बहुजल,लक्ष्मीप्राप्ति)

(२०) २ बुध मृग.ल.२,३,६,७रो.मध्यम शीघ्रजल
(२१) ३ गुरु आद्रा ल.२,३,६,७अ.बहुजल
(२२) ४ शुक्र पुन.ल.२,३ अ.बहुजल
(२३) ७ चंद्र म.ल.२,३,७नैऋ.शुद्ध जल
(२४) १० गुरु ह.ल.२,३प.स्वादुजल
(२५) १२ सूर्य विशा.ल.७ उ.स्थिरजल
(२६) १३ चंद्र विषा.अनु.ल.१,३,६,७रोहिभा. नै. बहुजल,अनु.उ.स्थिरजल

अग्रेगुरुअस्त श्रा.कृ.शनियावत्

श्रावणकृष्णपक्षः

(मिथुनसूर्यबहुजल,लक्ष्मीप्राप्ति)

(२७) ४ चंद्र शत्त.ल.३,७,९म.पूर्णजल
(२८) ६ बुध उभा.ल.३,४,६,९म.पूर्णजल
(२९) ७ गुरु रेव.ल.३,४,६,९म.पूर्ण जल
(३०) १० सूर्य कृ.ल.३,४,८,९वा.अमृत जलं

श्रावणशुक्लपक्षः

(३१) ३ सूर्य म.ल.३,४,७ अ.बहुजल
(३२) ७ गुरु चि.ल.३,४,७,९नै.शुद्धजलं
(३३) ८ शुक्र स्वा.ल.९,१०नैऋ.शुद्ध जलं
(३४) ९ सूर्य अनु.ल.४,७,९प.स्वादु जलं
(३५) १३ गुरु पूषा.,उषा.ल.३,७ रो.प.अमृतजल
(३६) १४ शुक्र उषा.ल.४,७ उ.स्थिरजल

भाद्रपदकृष्णपक्षः

(३७)२चंद्र पूभा.ल.९ म.पूर्णजलं रो.प.अमृतजल
(३८) ६गुरु रेव.,अश्व.ल.४,७,९ म.पूर्णजलं
(३९) ९ सूर्य रो.ल.४,७,९वा.अमृत जलं
(४०) १० चंद्र मृग.ल.११ वा.अमृतजलं
(४१) १२ बुध पुन.ल.५,९,११वा.अमृतजलं

भाद्रपदशुक्लपक्षः

(४२) २ चंद्र उफा.ल.५,७,८,९अ.बहुजल
(४३) ६ शुक्र विषा.ल.९ नै. शुद्ध जलं
(४४) ११ बुध पूषा.ल.५,९रो.प.अमृतजलं
(४५) १२ गुरु उषा.ल.८,९ रोहिभा.प.अमृतजल
(४६) १३ शुक्र श्र.ल.८,९उ.स्थिर जल

अग्रेग्रहणव श्राद्धपक्षः

आश्विनशुक्लपक्षः

(४७) ३ बुध चि.,स्वा.ल.६,८,१०अ.बहुजल
(४८) ७ चंद्र मूल ल.६,९ नै.शुद्ध जल
(४९) ९ बुध उषा.ल.६,९ उ.स्वादु जलं
(५०)१३ सूर्य पूभा.ल.९ उ.स्थिर जलं
(५१) १४ चंद्र उभा.ल.६ रोहिभा उ.स्थिर जल

कार्तिककृष्णपक्षः

(५२) ३ गुरु भर.ल.९ म.पूर्ण जलं
(५३) ४ शुक्र कृ.ल.६,८,१०म.पूर्ण जलं
(५४) ६ सूर्य मृग.ल.६,९ म. पूर्ण जलं
(५५) ७ चंद्र आद्रा ल.६,९ म. पूर्ण जलं
(५६) ९ बुध पुक्ष ल.६,८,१० वा. अमृत जलं
(५७) ११ शुक्र मघा.ल.९ वा. अमृत जलं

कार्तिकशुक्लपक्षः

(५८) ३ शुक्र अनु.ल.१० अ.बहु जलं
(५९) ५ सूर्य मूल. ल.९,१०रोहिभ.प.अमृत जल
(६०) ९ गुरु श्र.,ध.ल.१०,१२ नै. शुद्ध जलं
(६१) १० शुक्र ध.श.ल.१०,१२ प.स्वादु जलं
(६२) १३ चंद्र उभा.,रे.ल.९,१०,१२ उ.स्थिरजलं
(६३) १४ बुध भर.ल.७,९ ई.मध्यम जलं

मार्गशीर्षकृष्णपक्षः

(६४) २ शुक्र रो.ल.१० म.शीर्घ जल
(६५) ६ चंद्र पुन.ल.७,९,१० म.पूर्ण जलं
(६६) ८ बुध श्ले.ल.७,१० म. पूर्ण जलं
(६७) ९ गुरु म.ल.७,९ वा. अमृत जलं
(६८) १० शुक्र पूफा. ल.९ वा. अमृत जलं
(६९) १२ सूर्य ह.ल.१० वा. अमृत जलं
(७०) १३ चंद्र चि.ल.१०वा. अमृत जलं

मार्गशीर्षशुक्लपक्षः

(७१) ३ सूर्य मूल ल.११ अ. बहुजलं प.अमृतजल
(७२) ८ शुक्र शत्त.ल.८,११ नै. शुद्ध जलं
(७३) १० सूर्य उभा.ल.८,११ प.स्वादुजलं

पौषकृष्णपक्षः

(७४) १ शुक्र रो. ल.८ उ.स्थिर जलं
(७५) ४ चंद्र पुक्ष ल.१०,१२ म. पूर्ण जलं
(७६)७ गुरु पूफा.ल.८,१२ म. पूर्ण जलं
(७७) ८ शुक्र उफा.ल.८,१२ वा. अमृतजलं

अग्रे मलमासःशुक्रास्त मा.शु.१५यावत्

फाल्गुनकृष्णपक्षः

(७८) ४ गुरु उफा.ल.१०,२म.पूर्णजलं
(७९) ५ शुक्र हस्त ल.१०,२ म.पूर्ण जलं

फाल्गुनशुक्लपक्षः

(८०) २ गुरु पूफा.ल.२,३ अ.बहुजलं
(८१) ३ शुक्र उभा.ल.२,३ अ.बहुजलं

अग्रेहोलाष्टक,चंद्रग्रहण

चैत्र कृष्णपक्षः

(८२) ५ सूर्य स्वा.ल.३ म.पूर्ण जलं

अग्रेमीनाऽर्कमलमासः □□

कृषि कार्ये बीज वपनं(बीज बोनें)का मुहूर्तः-

(१) राहु चक्र- राहु भाद्दिनभं ३ कीड़े,३कज्जलता, १२ अधिक अन्न वृद्धिः,४ धान्यऽभावः, ५ ईति भय। (नागकर्ण श्रेष्ठः)

(२) नक्षत्रः- रो.,मृ.,पुन.,पुक्ष.,श्लेषा,पूफा.उत्तरा३,ह.,चि.,स्वा.,अनु.,मूल.,पूषा.,पूफा. श्रेष्ठः। अश्व.,कृ.,मृ.,पुन,ध.,रे.,मध्यम।

(३) तिथि- ३,५,७,८,११,१२,१३,१५ श्रेष्ठः। २,४,६,१० मध्यम। **वार-** चंद्र,बुध,गुरु,शुक्र **कालेबीज-** शनि+श.+मध्यान्ह। **लालबीज-** मृग+लग्नस्थ गुरु। **मूंग आदि चित्रान्न** चित्रा+ गुरु+लग्न चंद्र व ल.६,१२।

(४) श्रेष्ठ लग्नः- वृषभ,मिथुन, कन्या, वृश्चिक, धनु, मीन (ग्रहबली लग्न विशेषतः)

सातम पांचम तृतीया दशमी, एकादशी में जीव।इण तिथियों में जोतियें, तो प्रसन्न हो शिव।।1।।

तेरह कार्तिक तीन आषाढ़। जो चूका तो साख में राड़।।२।। अर्थात् कार्तिक के १३ दिन आषाढ़ के ३ दिन तक बुवाई कर देवे।

रवि बोवे धनवन्तरि होय, सोम बोवे सेवा फल होय।बुध गुरु शुक्र भरै भंडार,मंगल शनि आय द्वार।।2।।

{**बीजवपन मंत्रः-** ॐ वसुधेति च शीतेति पुण्यदेति धरेति च।नमस्ते सुभगे देवि द्रुमोऽयं त्वयि रोपते।।१।।}

चैत्र शुक्ल पक्षः

(१)५ बुध रोहिणी ल.२,६
(२) ६ गुरु रोहि.,मृ.ल.१२,२,६
(३) ७ शुक्र मृ.,आद्रा ल.१२,२,३,६
(४) ९ रवि पुक्ष ल.२,३,६
(५) १२ बुध पूफा.ल.२,३,६
(६) १३ गुरु पूफा.,उफा.ल.२,३,६
(७) १४ शुक्र उफा.ह. ल.२,३,६

वैशाख कृष्ण पक्षः

(८) १ सूर्य चि.ल.१,४

वैशाख शुक्ल पक्षः

(९) ३ बुध रो.ल.१,२,३,६
(१०) ४ गुरु मृग.ल.६,७
(११) ५ शुक्र आद्रा ल.१,२,३,६
(१२) ७ सूर्य पुक्ष ल.१,२,३,६
(१३) ८ चंद्र श्ले.ल.१,२,३,६
(१४) १० बुध पूफा.ल.१,२,३,६
(१५) ११ गुरु उफा.ल.६
(१६) १२ शुक्र चित्रा ल.२,३,६

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः

(१७) २ बुध मृग.ल.२,३,६
(१८) ३ गुरु आद्रा ल.२,३,५,६
(१९) ४ शुक्र पुन.ल.२,३,५
(२०) ५ शनि पुक्ष ल.२,३,६
(२१) ६ सूर्य श्लेषा ल.२,३,६
(२२) १० गुरु हस्त ल.२,३
(२३) ११ शुक्र चित्रा ल.५,६,७

अग्रे गुरु अस्त श्रावण कृ.२शनि तक

आषाढ़ कृष्ण पक्षः

(२४) १३ चंद्र रोहिणी ल.६,७,८

आषाढ़ शुक्ल पक्षः

(२५) २ शुक्र पुन.,पुक्षल.३,४,६,७,८
(२६) ७ बुध उफा. ल.३,४,६
(२७) ८ गुरु ह.चि.ल.३,४,६
(२८) ९ शुक्र चित्रा ल.३,४,६

श्रावण कृष्ण पक्षः

(२९) १४ बुध आद्रा पुन.ल.९

श्रावण शुक्ल पक्षः

(३०) १ शुक्र पुक्ष.ल.४,७,९
(३१) ४ चंद्र पूफा.ल.४,५
(३२) ६बुध हस्त ल.४,५,९
(३३) ७ गुरु चित्रा ल.४,५,७,९
(३४) ८ शुक्र स्वा.ल.९,१०

भाद्रपद कृष्ण पक्षः

(३५) ९ सूर्य रो.ल.३,५,७,१०
(३६) १२ बुध पुन.ल.४,५,७,१०
(३७) १३ गुरु पुक्ष ल.४,५,७

भाद्रपद शुक्ल पक्षः

(३८) १ सूर्य पूफा.ल.५,७,९
(३९) २ चंद्र उफा.ल.५,७,९
(४०) ४ बुध चित्रा ल.५,७,९

अग्रे खग्रास चंद्र ग्रहण, श्राद्ध पक्षः

आश्विन शुक्ल पक्षः

(४१) १ चंद्र उफा.ह.ल.६,९,१०
(४२) ३ बुध चित्रा ल.६,७,८

कार्तिक कृष्ण पक्षः

(४३) ५ शनि रोहि.ल.८,१०
(४४) ६ सूर्य मृग.ल.६,९
(४५) ९ बुध पुक्ष ल.६,८,१०
(४६) ११ शुक्र मघा ल.८,९

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षः

(४७) २ शुक्र रोहि.ल.८,९,१०
(४८) ६ चंद्र पुन.ल.७,९,११
(४९) ८ बुध श्ले.ल.७,८,९
(५०) ९ गुरु मघा ल.७,८,९
(५१) १० शुक्र पूफा.ल.७,८
(५२) १२ सूर्य हस्त ल.८,९,१०
(५३) १३ सूर्य चित्रा ल.८,९,१०

पौष कृष्ण पक्षः

(५४) १ शुक्र रोहि.मृ.ल.८,१०,११
(५५) ४ चंद्र पुक्ष ल.८,१०,१२
(५६) ७ गुरु पूफा.ल.८,११
(५७) ८ शुक्र उफा.ल.८,११
(५८) ९ शनि हस्त ल.९,१०,१२

अग्रे धनेऽर्क मलमास शुक्रास्त

माघ शुक्ल पक्षः

(५९) १० बुध रोहिणी.ल.१०,११,२
(६०) ११ गुरु मृग.ल.१०,११,२
(६१)१४ शनि पुन.ल.९,१२,१,२

MANAV ASTRO & VEDIC 8586094945 , 8302680069

(६२) १५ रवि पुक्ष ल.३,४

शुक्रोदयः

फाल्गुनकृष्णपक्षः

(६३) १ चंद्र श्ले.ल.१०,१,२
(६४) ३ बुध पूफा.ल.६,२,३
(६५) ४ गुरु उफा.ल.१०,१२,२,३
(६६)५ शुक्र हस्त ल.१०,१२,२,३

अग्रेहोलाष्टक

चैत्रकृष्णपक्षः

(६७) २ गुरु हस्त ल.१२,२,३
(६८) ३ शुक्र चित्रा ल.५,६
(६९) ४ शनि चित्रा ल.१०,११

अग्रेमीनाऽर्कमलमासः

इच्छा प्राप्ति यंत्र

वं	वं	वं	वं
पं	पं	पं	पं
दं	दं	दं	दं
लं	लं	लं	लं

इस यंत्र को लाल चंदन से बीलपत्र पर १०८ बार लिखकर श्रावण मास में ३० दिन तक शिवलिंग पर चढ़ावे तो शिवजी प्रसन्न होकर धन सम्पत्ति सहित इच्छित सर्वभोगों का अधिकारी बना देते हैं। मन इच्छित काम पूर्ण होता है।

श्री महालक्ष्मी पूजन मुहूर्तः

॥ ऊँ गं गणपतये नमः॥ ॥ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः॥ ॥ ह्रीं सरस्वत्यैनमः॥

सनातन विधि से बहि लेखनः- प्रथम् स्वस्तिक बनावें, फिर कालीस्वरुप कलम दवात् , लक्ष्मी स्वरूप सिक्के,आभूषण व सरस्वती स्वरूप बहियों की पूजन करें।

बही में लिखेंः- श्री कुबेरजी रो भण्डार भरपूर छैः। बहु लक्ष लाभ , बहु शुभ सुख ,बहु ऋद्धि सिद्धि , श्री महालक्ष्मी रो भण्डार भरपूर छैः।

जैन विधि से बही लेखनः- श्रीगौतम स्वामी री ऋद्धिः,शाल भद्रजी री बुद्धिः,केवल्यनाथ जी रो सौभाग्य, बाहुबल जी रो बल, भरत चक्रवर्ती जी री पदवी, कुबेर जी रो भण्डार भरपूर छैः।श्री महावीर जी रो भण्डार भरपूर छैः॥

बही खाते निर्माण व लानें का मुहूर्तः- (१) आश्विन शुक्ला ९ बुध,दुर्गानवमी,रवियोग ता.१.१०.२५ई. लाभ ६.३५ से ८.३ बजे,अमृत ८.४ से ९.३१ बजे,शुभ ११.१ से १२.००बजे लाभ ४.५५ से ६.२३। (२) आश्विन शुक्ला १० गुरुवार विजयादशमी,रवियोग ता.२.१०.२०२५ई.शुभ ६.३५ से ८.३ बजे,लाभ १२.२९ से १.५५ बजे,अमृत १.५६ से ३.२४ बजे शुभ ४.५३ से ६.२१ बजे तक।(३) आश्विन शुक्ला १३ रविवार रवियोग ता.५.१०.२५ई.। लाभ ९.३२ से १०.५९ बजे अमृत ११.० से १२.२६ बजे शुभ १.५५ से ३.२२ बजे तक। (४) कार्तिक कृ.७ चंद्र,रवियोग ता.१३.१०.२५ई.। अमृत ६.४१ से ८.६ बजे। शुभ ९.३४ से ११.६ बजे। लाभ ३.२३ से ४.४४ बजे अमृत ४.४५ से ६.९ बजे।

धन त्रयोदशी कुबेर पूजनः- कार्तिक कृष्ण पक्षः १२ शनि ता.१८.१०.२५ई.धनतेरस शुभ ८.१० से ९.३३ बजे,लाभ १.५० से ३.१३ बजे,अमृत ३.१४ से ४.३८बजे,सायं लाभ ६.४से ७.३८बजे,शुभ ९.१४ से १०.४८ अमृत१०.४९ से १२.२३ बजे तक।

दीपावलीः-कार्तिक कृष्णा १४ चंद्र ता.२०.१०.२५ई. सुबह अमृत ६.४५ से ८.९ बजे,शुभ ९.३५से १०.५९ बजे,लाभ ३.१४ से ४.३८ बजे अमृत ४.३९ से ६.३ बजे।

रात्रौ श्रीमहालक्ष्मी पूजनः- गोधूलि मेष ५.५४से ७.३१,वृषभ ७.३२ वसे ९.२८बजे,ग्रहबली कर्क ११.४३ से २.१ बज,सिंह २.२ से ४.१६बजे,लाभ १०.५०से १२.२४ बजे,शुभ २.० से ३.३५बजे,अमृत३.३६से५.१०बजे।

श्री रोकड़ मिलान नये कार्यारंभः-(१)कार्तिक शु.१बुध ता.२२.१०.२५ई.लाभ६.४६से८.९बजे,अमृत ८.१० से ९.३३,शुभ १०.५९ से १२.०बजे,लाभ ४.३५से ५.५८बजे।(२) कार्तिक शु.५सूर्य लाभ५,रवियोग, ता.२६.१०.२५ई.लाभ ९.३५ से१०.५८ बजे, अमृत १०.५९ से १२.२१,शुभ १.४६ से ३.८ बजे (३)कार्तिक शु.९ गुरु अक्षय९ ता.३०.१०.२५ई.,शुभ६.५०से८.१२बजे,लाभ१२.२३से१.४४अमृत१.४५से३.७शुभ४.३२से५.५४बजे

♣ आवश्यक मुहूर्ताः– ♣

मुहूर्त	मास–पक्ष–नक्षत्रादि	तिथि	वार	लग्न	विशेष प्रमाण
१.विद्यारंभ	अश्व.,रो ६,पू ३,उ ३,ह ३,मू,अनु,रे	३,५,६,१०, ११,१२	सू.बु.गु. शु.	शुभ	रवियोगः—सूर्याभाद् ४.६.९.१०.१३.२० (अभिजित रहित)
२.वापीकूप तड़ागारंभ	रो.,म.,पुक्ष,म.,ह.,पूषा.,उ ३,अनु.,ध.,शत्त.,रेव.,मेष वृष मिथुन के सूर्य में कुँआ खोदे तो जल बहुत लक्ष्मी प्राप्ति। सिंहस्थ सूर्य व कार्तिक मास में आरंभ करें तो थोड़ा जल निकले बाकी के मासों में थोड़ा जल आवे तो विपत्ति आवे।	शुभ चंद्रमा मकर के उत्तरार्द्ध में मीन या कर्क में शुभ	शुभ	२.४.१० ११.१२. लग्न में बुध या गुरु १० वें शुक्र	**तड़ाग चक्रः**—सुर्यभाद् दिनभं २ पू.जलशोष,४ अ. बहुजल.,६द.जलनाश,८नै.जलशुद्ध, १० प.स्वादुज १२वा.जलशोष १४ उ.स्थिर जल, १६ ई.कुत्सिजल,२१ म.पूर्णजल,२७ वा. अमृतजल। **वापी कूप चक्रेः**— रोहिणीभाद् दिनभं ३म. शीघ्रजल,६पू. नास्ति जल,९ अ.मध्यमजल,१२ द.जलनाश १५ नै बहुजल, १८ प.अमृतजल, २१ वा. क्षारजल,२४ उ. जल, २७ ई. मध्यम जल (नक्षत्र २७ अभिजित रहित) **जलाशये खातः**— सूर्य संक्राति १०.११.१२.अग्नि,७.८.९.नैऋ.,४.५.६.वाय.,१.२.३.ईशानेखातदधात्।
३.दुकान करण	अश्व,रो.,मृ.,पुष्य.,उ.३.,ह.,चि.,अनु.,रे. (मित्र ध्रुव क्षिप्र संज्ञा नक्षत्र में)	शुभ रिक्तामंगल त्याज्य	सू.चं.बु. वृ.शु. श.	शुभ चं.शु.ल. में कुंभ त्याज्य	**हाटक चक्रेः**— सूर्यभाद् दिनभं २आसन सुख, ५ विक्रय नाश, ९ अ.अर्थनाश, १३ नै सुख, १६ मुख महाश्रेष्ठ,२० वाय,चोरभय,२४ई.सर्व–हानि,२८ म.शुभप्रद (नक्षत्र २८ अभिजित सहित) **वारफलः**— गुरु सूर्ये सर्वकार्य,शुक्रे पूर्णे मनोरथेः। स्थिरता रविपुत्रेण,ऐतेवारा शुभप्रदाः।१॥
४.गृहारम्भ	रो.,मृ.,पुक्ष.,हस्त.,चि.,स्वा.,उ. ३. ,अनु.,ध.,श.,रे., (सूर्य मिथुन कन्या धन मीन वर्जित) **आद्रासूर्ये भूमिरजस्वला** शुक्ला सर्वा प्रशस्ता कृष्णा१२ यावत् बली चंद्र १.४.९.१०.,सुप्ता नींव देने में शुभः। **वास्तुस्वरुपेणखननं–** भाद्र,अश्वि.कार्तिक मास में उत्तर में कुक्षि। मार्ग,पौष,माघ में पूर्वे कुक्षि फाल्गुन चैत्र वैशाख में दक्षिणे कुक्षि। ज्येष्ठ आषाढ़ श्रावण में पश्चिममें कुक्षि है। कुक्षि के स्थान पर प्रथम खोदनें से स्त्री पुत्र रत्न और धन धान्य की वृद्धि होती है।	१. २. ३. ५. ६. ७. ८. १०. ११.१२. १३.१५.	चं. बु. वृ. शु. श.	शुभ २. ३. ५. ६. ८. ९. ११. १२.	**अष्टमी शनिंवारंण भौम वारेण पंचमी। द्वितीया भुगुवारेण धरा भवति रजस्वला।१॥** **मृत्युबाणः**–सूर्य अंश २८.१९.१०.१.शनिवारयुत। अग्निबाणः–सूर्य अंश २०.२.११.२९(मंगलवार)त्याज्यः। **गेहारंभेत्स चक्रः**— सूर्यभाद् ३ अग्निदाह,७ शून्यमसत्, ११ स्थिरता, १४ लक्ष्मीप्राप्ति, १८ लाभ शुभ, २१ स्वामिनाश,२५ निर्धनता,२८ पीड़असत् (नक्षत्र २८ अभिजित सहित) **गेहारेभेखातः**—सूर्यसंक्राति ५.६.७.अग्ने,२.३.४.नैऋ.,११.१२.१.वाय.,८.९.१०.,ईशानेखातंदधात। **जमीन सूतीः**—सूर्य दिन ५.७.९.१०.१५.२१.२४. सूर्य गतांश,के चिद् सूर्य भाद् दिनभं,के चिद् हिन्दी तारीखें **पुत्रधन प्राप्तिः**—पुक्ष उ.३रो.मृ.श्रृ.श्ले.पू.षा.नक्षत्र पर गुरु हो ओर गुरुवार हो तो गृहारंभ करने से पुत्रधनं प्राप्ति **धनधान्यदायकः**—विषा.अश्व.चि.धन.शत्त.आद्रा में से किसी पर शुक्र हो ओर शुक्रवार हो तो गृहारंभ से धनधान्यदायक **अग्निभय,पुत्र पीड़ाः**—ह.पुक्ष.रे.म.पू.षा.मूलनक्षत्र में मंगल हो और मंगलवार हो तो गृहारंभे अग्निभय,पुत्रपीड़ा **पुत्र सुखः**—रो.अश्व.उ.फा.चि.ह. पर बुध और बुधवार हो तो पुत्र सुख। **राक्षस भूतयुक्तः**— पू. भ.उ.भा.ज्यै. अनु. रे. स्वा. भरणी पर शनि और शनिवार में घर राक्षस भूत युक्त हो
५.द्वारशाखा	रे.,अनु.,पुक्ष.,ज्ये.,ह.,अश्वि.,चि.,स्वा., **तिथि एकादशीश्रेष्ठाः त्रयोदशी व सिद्धिदाः।** **पंचमी धनदा प्रोक्तारिप्सीनाग शुभप्रदाः।१॥** **प्रतिपश्चन कर्तव्या कृत्वा दुःखमवाप्नुयात्।** **द्वितीया रोगवाग्नेयाः चतुर्थी भंगकारिणी।।२।** **कुलक्षयं तथा षष्ठीः दशमी धन नाशनी।** **विरोधं च अमापूर्णाः द्वारशाषाविरोपणं।।३॥**	नन्दा जया पूर्णा	मंगल शनि वार त्याज्य		**द्वारशाखाचक्रः**—सूर्यभाद्दिनभं ४ शि.श्री प्राप्तिः,१२ उद्वसनं २० शा.सौख्यम्,२३गृहनाशख,२७सौख्यम् **वच्चनिवासः**—सूर्यसंक्राति ६.७.८.पूर्वेच्च,९.१०.११.दक्षिण,१२.१.२.पश्चिम,३.४.५.उत्तरेवच्च सन्मुखवच्चत्याज्यः **त्रिमासिक राहु निवासः**—मार्गशीर्ष पौष माघ में पूर्व,फाल्गुन चैत्र वैशाख में दक्षिण,ज्येष्ठ आषाढ़ श्रावण में पश्चिमे,भाद्रपद आश्विन कार्तिक में उत्तरेराहु,सन्मुखराहु में द्वारशाखात्याज्यः **तिथिभेद से द्वारनिषेधः**–पूर्णिमा से कृष्णा८तिथि तक पूर्वमुख अशुभ,कृष्ण ९से १४ तिथि तक उत्तरमुख अशुभ, आमवस से शुक्ला८तिथि तक पश्चिममुख अशुभ,शुक्ला ९से १४तिथि तक दक्षिणमुख अशुभ **संक्राति से गृहमुखः**— सूर्य संक्राति ४.५.१०.११. पश्चिम धरमुख श्रेष्ठः, १.२.७.८. उत्तरदक्षिण घरमुख श्रेष्ठःशेष सूर्यत्याज्यः

♣ आवश्यक मुहूर्ताः– ♣

मुहूर्त	मास–पक्ष–नक्षात्रादि	तिथि	वार	लग्न	विशेष प्रमाण
६.गृह प्रवेश	रो.मृ.पुक्ष उ.३चि.स्वा.अनु.ध.श.पू.फा.रे. रवित्तरायणश्रेष्ठः। धन मीन रवित्याज्य(पू.भा.उ.भा.ज्ये.अनु.स्वा.भर.शनिवार युक्तः रक्षोभूतयुतगृहम्) **नन्दायां दक्षिण द्वारं भद्रायां पश्चिमामखम्। जयाया मुत्तरं द्वारं पूर्णायां पूर्वतो विशेत्।।**	नंदा जया पूर्णा	चं.बु. वृ.शु. श. (रवि, मंगल त्याज्यः)	शुभ चर लग्न त्याज्य	**सूर्य संक्राति अंशः**–२८,१९.१०.१. (शनिवार) मृत्युबाण त्याज्यः।। **गृह प्रवेशचक्रः**–सूर्यभार्दिदिनभं १अग्निदाह,५उद्वसनं,९धनं,१३ लक्ष्मी,१७ वैरं,२१ नाशः,२४स्थिरता,२७स्थिरता **तिथिः**–१.६.११.में दक्षिणमुद्वार घर में प्रवेश श्रेष्ठः,२.७.१२. में पश्चिममुख घर में प्रवेश श्रेष्ठः। ३.८.१३ में उत्तराभिमुख घर में प्रवेश शुभ,५.१०.१५. में पूर्वाभिमुख घर में प्रवेश शुभः।। **वामरविः**– सूर्य ८.९.१०.११.१२.वें स्थान में हो तो पूर्वाभिमुख द्वार के घर में शुभ,५.६.७.८.९.में हो तो दक्षिणाभिमुख में,२.३.४.५.६.में पश्चिमाभिमुख ११.१२.१.२.३.में उत्तराभिमुख सूर्य में प्रवेश शुभ
७.वास्तु शांति	रो., अश्व., मृ., पुन., पुक्ष., उ ३., ह., चि., स्वा., अनु., मू., अभि., श्र., ध., श., रे.,	नंदा भद्रा जया पूर्णा	चं. बु. वृ. शु. श.	शुभ	**अग्नि वासः**– शुक्ल प्रतिपदात् तिथि+सूर्या दिवार +१÷४= शेष ०, ३ अग्निवास पृथ्वी पर सुख, १ आकाश प्राणहानि २ पाताल धन हानि कारक। **ग्रहमुखे होमाहुतिः**– सूर्यभाद्दिनभं ३ सूर्यमुखे नेष्ट, ६ बुधे श्रेष्ठ, ९ शुक्रे श्रेष्ठ, १२ शनि नेष्ट, १५ चंद्रे श्रेष्ठ, १८ मंगल नेष्ट, २१ गुरु श्रेष्ठ, २४ राहु नेष्ट, २७ केतु नेष्टः।।
८. जलाशय रामतड़ागप्रतिष्ठा	अश्व.,रो.,मृग.,पुन.,पुक्ष.ह.,चि.,स्वा., अनु.,श्र.,ध.,श.,उ.३.,रे उत्तरायणे शुक्ल पक्षः (विष्टव्यतिपात त्याज्यः) अग्रदेवता दक्षिणायने वैशाख, ज्येष्ठ, फाल्गुन चैत्र, माघ में विष्णु के सिवाय अन्य देवताओं की प्रतिष्ठा होती है।	२,३,५,६, ७,८, १०, ११, १२, १३, १५	कुजशनि त्याज्य	शुभ	(१) **सूर्य की प्रतिष्ठा** सिंह लग्न में,**ब्रह्मा** की ११,**विष्णु** ६,**महादेव** ३,देवी की द्विस्भाव लग्न में **क्षुद्र देवताओं** की चरलग्न में और स्थिर लग्न में सब देवताओं की प्रतिष्ठा प्रशस्त है। चंद्रादि आठ ग्रहों को पुष्य में गणेश यक्ष सर्प भूत आदि की रेवती में और जिन (बुधदेव) की श्रवण नक्षत्र में स्थापना शुभ है। (२) **विष्णु की प्रतिष्ठा** चैत्र, आश्विन, श्रावण, माघ, फाल्गुन, वैशाख,ज्येष्ठ,आषाढ़,पौष में होती है। श्रावण और भाद्रपदमें **लिंग की स्थापना** उत्तम है। माघ आश्विन में **देवी प्रतिष्ठा** सब कामनाओं को देने वाली व श्रेष्ठ है। (३) श्रवण कृतिकादिविशाखा तक तिथि १२ में **विष्णु प्रतिष्ठा शुभ,चतुर्थी में गणेश। नवमी,मूल में देवी,शिव आद्रा में,सूर्य हस्त में शुभ** सभी देवताओं की अपने अपने नक्षत्र में प्रतिष्ठा शुभ व मंगलदायक है।
९.संधि	मूल,आद्रा,अभि.,शत यह कुलाकुल संज्ञा है।	२, ६, १०	बुध	शुभ	इसमें युद्ध की इच्छा करने वाले राजाओं में(व्यक्तियों में)परस्पर संधि होवे। पंच पंचायति में नारदा वास देखें
१०.स्थाई की जय	चि.,वि.,ज्ये.,पू.,षा.,श्र.,पू.,भा,अश्वि,कृति, मृग.,पुक्ष.,मघा.,पू.फा.,नक्षत्र कुल संज्ञा है।	४, १८, १२, १४,	मं. शु.	शुभ	इसमें स्थायी की जय होवे। अर्थात् जिस पर दूसरे नें चढ़ाई की है और अपने स्थान पर जो बैठा है उसीकी विजय हावे
११.यायी की जय	भर.,रो.,पुन.,आश्ले,हस्त.,स्वा.,अनु.,धनि., रेव.,उत्तरा ३., यह अकुल संज्ञा है।	१,३,५,७, ९,११,१३, १५,३०	सू. चं. वृ. शं.	शुभ	इनकी अकुल संज्ञा है। इसमें यायी की विजय होवे। अर्थात् आक्रमणकर्ता की विजय होती है। **नारद वासः– शुक्लादि तिथ्यां गतवासराद्या, नवैर्युक्ता रामहृताव शेषः ।।१।। एकै भवेद्देवपुरी निवासं स नारदो भूमि वशेद्वितीये। पाताल लोकेवशे त्रतीये यत्रस्थितो तत्र भवंतियुद्धं ।।२।। (पंच पंचायती में नारदवास देखें)**
१२.यज्ञोपवीत	अश्व., ह.३, मृग., श्रव., धनि., पुन., पुक्ष., रेव., गर्भ सहित ८ वें वर्ष, ११ वें वर्ष, १२ वें वर्ष शुभ। माद्यादि पांच मास, गुरु व चंद्र शुद्धि आवश्यक है।	१६,११,५ १०,१५,३, ८, १३	मं. वृ. शु. बु.	२, ७, ९, १२ शुभ	**ऋग्वेदीयः**– ह.३,आश्ले,आर्द्रा.,श्र.,पू.३,मूल ऋग्वेदीय,धन मीन,लग्न गुरुवार शुभ है। **यजुर्वेदीयः**– रे,पुन.,री.,पुक्ष.,मृ.,अनु.,उ.३,ह.,वृष.,तुला लग्न शुक्रवार शुभ है। मरणन्च भौमे मंगलवार त्याज्य। **सामवेदीयः**– पुक्ष.,उ.३,र.,ध.,ज्ये.,ह.,अश्व.,मेष.,वृश्चिक लग्न मंगलवार शुभ है। **अथर्वेदीयः**– चि.,पुन.,स्वा.,अनु.,मृ.,ध.,ह.,श्र.,अश्व.,मिथुन,कन्या बुधवार शुभ है।
१३.गर्भाधान	मृग.,रो.,उ.३,ह.,स्वा.,श्रव.,धनि.,शत.,अनु, व्यतिपात, वैधृति त्याज्य, माता पिता का श्राद्ध दिन (मृ., रे., स्वा., अश्व., रो., में शीघ्र गर्भधारण होता है)	शुभ	शुभ (रवि मं. शनि त्याज्य)	शुभ	**मघा स्वाती च रेवत्यै उत्तराषाढ़ा मृगसिरे। स्त्री संगम न कर्तव्यं कर्त्तव्यं च कुलक्षय। रेवती च मघामूलं ज्येष्ठाऽश्लेषा तथैव च।अश्वनी ऋतुकालंच नारीणां वर्जयेत्सदा ।।२।।** रजोदर्शन के बाद चौथी रात के निषेके में अल्पायु पुत्र,पांचवी रात में कन्या, ६ में वंशकर्ता पुत्र, ७ वें में वन्ध्या स्त्री, ८ में पुत्र, ९ वीं में सुन्दर कन्या, १० वीं में प्रभावशाली पुत्र, ११ वीं में कुरुप कन्या, १२ वीं में श्रीमान् पुत्र, १३ वीं में पापिनी कन्या, १४ वीं धर्मात्मा पुत्र, १५ वीं में लक्ष्मीवती कन्या, १६ वीं में धर्मात्मा व सर्वज्ञ पुत्र उत्पन्न होते है। स्वरशास्त्र के अनुसार– डावें पछवाड़े(करवट) शयन कर जिमणा स्वर लेवें।

♣ आवश्यक मुहूर्ताः– ♣

मुहूर्त	मास–पक्ष–नक्षात्रादि	तिथि	वार	लग्न	विशेष प्रमाण
२४. जच्चा पूजन	श्रवण १,पुन,पुक्ष मृग.,हस्त.,मूल,अनुराधा दिन २१में शुभ (गुरु शुक्र अस्त चैत्र अधिक मास में पूजा नहीं करनी)	शुभ	शुभ	शुभ	नंदायां पुत्र जननी भद्रायां पुत्र नाशनी। जयापूर्णा च संपत्ति रिक्ता संताप कारणी।।१।। शनि आदीते मंगले जो जुहारे जलमाया। ऋषि दुर्वासा इस भेणेपुत्र विहूणी थाय।।२।। नामकरण मूहुर्तः–जन्माशौच के अनतं में ब्राह्मण ११ वें दिन,क्षत्रिय १३वें दिन,वैश्य १६वें दिन,शूद्र १मास में शुद्ध होवे
२५.नौलखमी झडुला	अश्व.,मृ.,पुन.,पुक्ष.,ह,चि,स्वा.ज्ये.,श्र., ध.,श.,रे.,वर्ष २,३,५ रवि उत्तरायण	शुभ	शुभ	शुभ	कर्णवेध मुहूर्तः–अश्व,म$_८$, पु २,अनु,अभि,श्र,ध,रे,सूर्य चंद्र चंद्रबल। शुद्ध लग्न विषम वर्ष ६,७,८ में हरिशयन वजर्यम् रिक्ता,अमा,तिथि वर्ज्य। शुक्रवार में श्रेष्ठ।
२६.चूड़ा पहनाना	अश्व.,हस्त चित्रा.,स्वाती.,दिशा.,अन., धनि, रे,(रोह,उ.३पुन.,पुक्ष नैष्ट:)चंद्रबल आवश्यक	शुभ	सू. बु. वृ. शु.	शुभ	चुड़ीचक्रः–सूर्यभाद्दिनभं ३ सूर्य नेष्ट, ८ मंगल नेष्ट, ११ शुक्र श्रेष्ठ, १३ राहु नेष्ट, २० बुध श्रेष्ठ, २२ शनि नेष्ट, २३गुरु श्रेष्ठ, २६ चंद्र श्रेष्ठ, २७ केतु नेष्ट।
२७ चूल्हा स्थापन	रो., पुक्ष, उ.३, अश्वि, आद्रा, पूर्वा ३	शुभ	चं.बु.वृ.	शुभ	चुल्ली चक्रः–सूर्यभाद्दिनभं ६पीठ सुख,१० मस्त,मृत्यु १८ बहुसुख भोग,२३ गर्भनाश,२५ भुजभोगद् २७ चरणनाशक।
२८.जैन दीक्षा	मृ.,पुन.,पुक्ष.,अश्व.,अनु.,ह.,श्र.,रे.,रो,श.उ.३,अभि.स्वा, कार्तिक,मार्ग,माघ,फाल्गुन,वैशाख,ज्येष्ठ,आषाढ़मासशुभ	१,२,५,७ ११, १३	सू.चं.बु. वृ.श.	शुभ	सूर्य संक्राति मेष , वृषभ , मिथुन, मकर, कुंभ, शुभ। ज्येष्ठे ज्येष्ठ मासं त्याज्यः, बाल वृद्धः, गुरुं शुक्र ओर अस्त गुरु में दीक्षा नेष्ट। यमघंट,वज्र,मूशलादि योग त्याज्य।
२९. वाहनखरीदना चौपाया,पशु	अश्व, श्र, ध, पुन, पुक्ष, ह, चि, स्वा, श, रे,मृ , रिक्तातिथित्याज्यः। मघा मरे पूर्वाचौरे,उत्तरा खोडो जाण इभ भणे रे जांषिया चौपगो घर मत आण।।	शुभ	शुभ	शुभ	मृत्युबाण संक्रातिः– अंश २८, १९,१०,१शनि, अंश ८,१७,२६रवि रोगबाण। अंश २०,२,११,२९ मंगलवार में अग्निबाण त्याज्य।। गाय मंगल,भैंस। बुध,मंगल,ऊंठ। शनि,मंगल,घोड़ा रवि,मंगल,शनि,बैल बुध,मंगल, बकरी। भेड़। शुक्र। गधा शुक्रवार नेष्ट। उत्तरात् विशाखायां रोहिण्यां च पुनर्वसुः। नवम्यां च चतुर्दश्यामष्टम्यां नानयेत् पशुन्।।१।।

।। यात्रा प्रवास हेतु श्री गोरखनाथ जी कृत गोरखपतड़ा ।।

पो	मा	फा	चै	वै	ज्ये	आ	श्रा	भा	आ	का	मा	फलश्रुति	प्रहर१	प्रहर२	प्रहर३	प्रहर४	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सुख,विवाद का अभाव,यात्रा योग सुखद,सुविधा गति	अर्थसिद्धि	सुख	शोक	सुख	सुख	क्लेश	भय	द्रव्य
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	महाभय, विवाद,मानसिक दुःख,वृथागमन कुयोग कार्य	महाभय	क्लेश	सुख	कुशल	शून्य	नाश	दरिद्र	चिन्ता
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	सिद्धि,अर्थलाभ, विजय,मेल मिलाप सम्पर्क रमसाधना,	अर्थलाभ	राजपद	सूख	विनाश	द्रव्य	दुःख	इष्टप्राप्ति	धनप्राप्ति
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	परन्तु प्रतिफल नेष्ट नहीं,मद्यमकार्य योग वस्तु लाभ,	क्लेश	कल्याण	क्लेश	अहित	क्लेश	अहित	धन	सुख
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	संकट की निवृत्ति, मेल–मिलाप, कार्य सिद्धि चिन्ता,	संकट	क्लेश	भाग्य	सुख	लाभ	धन	धन	सुख
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	विवाद,मानसिक पतन,वियोग,सफलता न्यून कार्य लाभ,	संकट	क्लेश	मित्र	अर्थप्राप्ति	भय	लाभ	मृत्यु	धनलाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	मेल मिलाप सम्पर्क, कार्य साध्ना सिद्ध योग कुयोग,	विलम्ब	अर्थप्राप्ति	सुख	सुख	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कार्य हानि, विवाद, व्यवहार मिलाप की न्यूनता	०	०	०	०	०	सुख	०	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	अर्थ–लाभ,कार्य योग सफलता,यात्रा प्रवास सुखद	अर्थ	बहुभय	मित्र	मित्र	सुख	लाभ	कार्यसिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	यात्रा प्रवास योग,किन्तु श्रम साधना विशेष,कार्ये	शीघ्रलाभ	सम्पूर्ण	मरण	मरण	क्लेश	कष्ट	धन	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	विलम्ब मानसिक कष्ट,विवाद,भय,परन्तु परिणाम नेष्ट	मरण	अर्थ	कुशल	मृत्यु	लाभ	धननाश	०	मित्र
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	नहीं सुख–सुविधा,मेल–मिलाप,सार्थक गति,कार्य सुयोग	मरण	अर्थ	सुख	कुशल	०	सुख	मृत्यु	कष्ट

तीज और तेरस,चौथ और चौदस,पांचम और पूनम,इनका फल एक है। कृष्णा चौदस तथा अमावस का निषेध है।

(1) **यात्रा में वर्ज्य नक्षत्र दिशाः-** हस्त नक्षत्र में उत्तर दिशा में,चित्रा नक्षत्र में दक्षिण दिशा में रोहिणी नक्षत्र में पूर्व दिशा में,श्रवण नक्षत्र में पश्चिम दिशा में यात्रा करने से मृत्युव्रत घातक है।

(२) **यात्रा में वर्ज्य मासानुगत तिथिः–** जेठ की १,आषाढ की २,श्रावण ३,भाद्रपद ४,आश्विन ५,कार्तिक ६,मार्ग ७,पौष ८,माघ ९,फाल्गुन १०,चैत्र ११,वैशाख की १२तिथि गोरखपतड़े से यात्रा में वर्जित है।

(३) **यात्रा समय के शुभ शकुनः–** रवि तांबूल मंयंक दर्पण,धोणा चावौ धरणी नंदन। बुध गुड़ दही गुरुवारै,राई चावौ शुक्रवारे। जो शनिवार वडंगा चावै,सकल काम सिद्ध कर घर आवै।।१।।

।। अथ खात(पाया या शिलान्यास)चक्रम्।।

सूर्य	विवाहे	देवालये	गेहारंभे	जलाशये	दिशा
सूर्य	२ ३ ४	१२ १ २	५ ६ ७	१० ११ १२	अग्नि खात
सूर्य	११ १२ १	९ १० ११	२ ३ ४	७ ८ ९	नैऋत्य खात
सूर्य	८ ९ १०	६ ७ ८	११ १२ १	४ ५ ६	वायव्ये खात
सूर्य	५ ६ ७	३ ४ ५	८ ९ १०	१ २ ३	ईशाने खात

MANAV ASTRO & VEDIC 8586094945 , 8302680069

चैत्र शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत्२०८२ शालिवाहन शकः१९४६ (लघुगण३४९से३६२तक)

लघुगण	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १४	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति
३४९	३०	प्रवर्धमान	१	सू.	१५	९	रे	२४	२८	ऐं	२८	२३	ब	१५	९	३०/४३	६/३३	६/५१	१६	२९	मेष २४/२८	११ १५ २४ ३०	५९ १५
३५०	३१	राक्षसः	२	चं.	९	१३	अ	२०	२२	वै	२०	४०	कौ	९	१३	४७	३२	५०	१७	१	मेष	११ १६ २३ ५६	५९ १६
३५१	१	मूसल	३	मं.	३	२३	भ	१६	२५	वि	१३	३	ग	३	२३	५१	३१	५१	१८	२	वृषभ ३०/३१	११ १७ २२ ५९	५९ १४
०	०	०	४	मं.	५७	४९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०
३५२	२	सिद्धिः	५	बु.	५२	४२	कृ	१२	४८	प्री	५/४२	५६/४५	ब	२५	१५	५५	२९	५१	१९	३	वृषभ	११ १८ २२ १०	५९ १४
३५३	३	उत्पात	६	वृ.	४८	१४	रो	९	४३	सौ	५२	२३	कौ	२०	२८	५९	२८	५२	२०	४	मिथुन ३३/२८	११ १९ २१ २०	५९ १०
३५४	४	मानस	७	शु.	४४	३६	मृ	७	२१	शो	४६	३९	ग	१६	२५	३१/३	२७	५३	२१	५	मिथुन	११ २० २० २९	५९ ६
३५५	५	मुद्गर	८	श.	४१	३४	आ	५	५३	अ	४१	४४	वि	१३	५	७	२७	५३	२२	६	कर्क ५०/३४	११ २१ १९ ३१	५९ ४
३५६	६	ध्वज	९	सू.	३९	५८	पु	५	२८	सु	३७	४३	बा	१०	४६	११	२५	५३	२३	७	कर्क	११ २२ १८ ३१	५९ ३
३५७	७	प्रजापतिः	१०	चं.	३९	३९	पु	९	१४	धृ	३४	४७	तै	९	४८	१५	२४	५४	२४	८	कर्क	११ २३ १७ ३२	५९ ०
३५८	८	आनंद	११	मं.	४०	३५	श्ले	८	१६	शू	३२	५१	व	१०	७	१९	२३	५५	२५	९	सिंह ८/१६	११ २४ १६ ३०	५८ ५७
३५९	९	चर	१२	बु.	४२	५०	म	११	३२	गं	३१	५४	ब	११	४२	२३	२२	५६	२६	१०	सिंह	११ २५ १५ २५	५८ ५५
३६०	१०	गदः	१३	वृ.	४६	१२	पू	१५	५८	वृ	३१	५१	कौ	१४	३१	२७	२२	५६	२७	११	कन्या ३२/१८	११ २६ १४ १७	५८ ५३
३६१	११	शुभः	१४	शु.	५०	३०	उ	२१	२४	ध्रु	३२	३२	ग	१८	२१	३०	२०	५६	२८	१२	कन्या	११ २७ १३ ६	५८ ५०
३६२	१२	मृत्युः	१५	श.	५५	२६	ह	२७	३१	व्या	३३	४६	वि	२२	५८	३४	१९	५७	२९	१३	कन्या	११ २८ ११ ५५	५८ ४८

दिनाँक ३०मार्च से १२ अप्रेल २०२५ई.तक।
वसन्त ऋतु। रविर्देवता उत्तरायनेः,उत्तरगोलेः।
(चैत्र शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

वक्रीकुंभेबुध ३८/४,पंचक २४/२८या **चंद्रोदयमु.३०स्थिरता,वासंतनवरात्रारंभ** A
रेवत्यांरवि १६/२३ **सव्वालमु.१०मीठीईद**.,अरुंधतीव्रत,सौभाग्यशयनव्रत,B
भ.३०/३६उप.५७/४९या.,बुधोदयपूर्वे५६/२१,बैंकवार्षिकलेखाबंदी,**मनोरथ३व्रतं**., C
A **घटस्थापनसंवत्सरारंभ,चेटीचंड झूलेलाल जयं.,कल्पादि.**
कल्पादि,श्रीपंचमी,नाग५,हयव्रत,डोलोत्सव B शिवशक्तिपू.,मत्स्यजयन्ती
मृग१गुरु४४/१७ग १०/१५ **पद्मकयोग,स्कन्दषष्ठीव्र.**
भ.४४/३६ उप.,**अशोककलिकाप्राशनं**, C **गणगौरी३,मन्वादि,**
भ.१३/५ या.,मार्गीबुध १३/२१बु १०/२८।१/४२ग ३२/२ **श्रीदुर्गाष्टमी,भवान्युत्पत्ति,** D
श्रीरामनवमीसर्वे. D **नवपदओलीजैन,स्वामीनारायणजयं.,अशोकाष्टमी**
नवरात्रपारणा,विजया१०,ज्वालामुखी ६/१४उप ३६/३९या.
भ.१०/७ उप.४०/३५या.,मीनेबुध५४/५६ **कामदा११व्रतंसर्वे,लक्ष्मीकान्तदोलोत्सव**
मार्गीशुक्र१६/१३शु १०/२७।२२/१०ग १५/४७ **हरिदमनोत्सव, शक्रआदित्य१२व्रतं**
प्रदोष महावीरजयन्तिजैन.नवपदओलीपूर्णजैन,अनंग१३
भ.५०/३० उप., शिवपूजन,
भ.२२/५८या.,कर्केभौम२३/४० **पूर्णिमाव्रतं,मन्वादि,हनुमानजयं.,संतपीपाजयं,** E
E **चित्रान्नदानं, पूर्णिमापुण्यवैशाखस्नानप्रारंभ**

गोचर ग्रहाः
बुध+शुक्रवक्री,शनिउदय
शुक्रोदयपूर्वे,बुधोदयपूर्वे

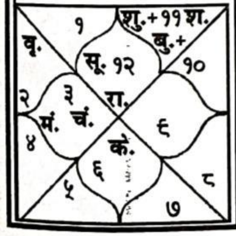

चैत्र शुक्ला ८ शनि
गण ३५५ ,इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२ २७ ३० १२	१० २८ ६ २४	१ २३ ३२ ५६	१० २८ १६ ४६	१० २४ ३६ १५	११ १ २१ ३२	५ १ २१ ३२
२० १४	२१ १० +	१० १५	१२ ४७ +	६ २८	३ ११	३ ११
पुन.३	पूभा.३	मृग.१	पूभा.३	पूभा.२	पूभा.४	उफा.२
नीर	नीर	दहन	नीर	नीर	नीर	नीर

पांच शनि भूकम्प हो,ईशान देश में भंग। अग्निकाण्ड हो जगत में,बहु तेजी बहु जंग।।१।। चैत शनि वैशाख रवि,जेठे मंगल पांच। फिरत चक्र ज्यों देश सब,जनधन होवे नाश।२।। चैत सुदी एकम शनि,राजकाज को अंत। चित्रा पूनम वर्षे यदि,आसोज मेघ वर्षंत।।३।। चैत मास शुक्ल पक्ष में,दश दिन बीज न दीखंत। जो अम्बर गरजे नहीं,तो चारों मास वर्षन्त।।४।। चैत्र चिरपड़ो माघ जी,फूले नहीं वनराय। माँ बिसारेदीकरा,बच्छ बिसोड़े गाय।।५।। पतझड़ फलै पलास,पात वसंता झाड़ियां। निपजे सातों अनाज,कहे हीर सुंण माघजी।।६।। फल पाकै नीचे झड़े,रस सुखे नहीं मास। अन्न नीपजे घणों,हीर कहे सुण माघजी।।७।। पात झड़ै भू पर पड़े,नगन वृक्ष हो जाय। हीर कहे सुण माघजी,खूब जमानो थाय।।८।।

चैत्र शुक्ला १५ शनि
गण ३६२ इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२ २९ ५१ ५१	११ १ ३८ ४९	१ २४ ४४ ४३	१० २८ ५ १६	१० २५ २१ ३७	११ ० ५९ १६	५ ० ५९ १६
२० १४	३२ २ मा	१० १५	१५ ४७ मा	६ २८	३ ११	३ ११
पुन.३	पूभा.४	मृग.१	पूभा.३	पूभा.२	पूभा.४	उफा.२
नीर	नीर	दहन	नीर	नीर	नीर	नीर

गोचर ग्रहाः
शुक्र,बुध मार्गी
बुधोदयपू.,शनि+शुक्रोदय

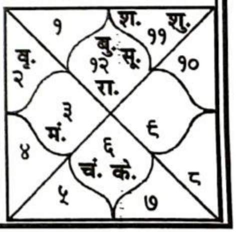

वैशाख कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत्२०८२ शालिवाहन शकः१९४६/४७(लघुगण३६३से१ तक)

दि.१३ अप्रेल से २७ अप्रेल २०२५ ई. तक। वसन्त/ग्रीष्मऋतुः। रविर्देवता उत्तरायनेः, उत्तरगोलेः। (चैत्र कृष्ण पक्षःगुजरात महाराष्ट्रैः)

	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	हिं. बं.	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
३६३	१३	पद्म	१	सु.	६०	०	चि	३४	५	ह	३५	१६	बा	२८	०	३१/३८	६/१८	६/५८	३०	१४	तुला ०/४८	११ २९ १० ४२	५८ ४६	अश्वन्यांमेषेऽर्क ५०/३९,वैशाख स्नान प्रारंभ।
३६४	१४	छत्रः	१	चं.	०	३४	स्वा	४०	३२	व	३६	४५	कौ	०	३४	४२	१८	५८	१	१५	तुला	० ० ९ २६	५८ ४२	डॉ.अम्बेडकरजयंति Aचतुर्थीव्रतं चंद्रोदय ६/२२ बजे
३६५	१५	श्रीवत्स	२	मं.	५	३५	वि	४६	३३	सि	३७	५६	ग	५	३५	४६	१७	५९	२	१६	वृश्चि. ३०/३	० १ ८ ६	५८ ४०	भ.३७/४६ उप.,मार्गीउभाबुध ६/२६ ग ३/१,बिच्छुड़ा ३०/३ उप.
३६६	१६	सौम्य	३	बु.	१०	४	अ	५१	५५	व्य	३८	२१	वि	१०	४	४६	१७	५९	३	१७	वृश्चिक	० २ ६ ४४	५८ ४०	भ.१०/४ या.,शकः१९४७प्रवेशः,गणप्रवेशःशु १/२६।५६/२ ऽब्द ४/३। २/५८,संकट A
१	१७	काल	४	वृ.	१३	४७	ज्ये	५६	८	व	३८	१५	बा	१३	४७	५०	१५	५९	४	१८	धनु ५६/८	० ३ ५ २१	५८ ३९	बिच्छुड़ा ५६/८ या.अनसूयाजं.
२	१८	सुस्थिर	५	शु.	१६	१४	मू	५९	११	प	३७	१३	तै	१६	१४	५४	१४	७/०	५	१९	धनु	० ४ ३ ५५	५८ ३७	वृषेभानुः ५५/३१,ग्रीष्मऋतुप्रारंभ
३	१९	मातंगः	६	श.	१७	२७	पू	६०	०	शि	३५	१२	व	१७	२७	५८	१३	१	६	२०	धनु	० ५ २ २७	५८ ३५	भ.१७/२७ उप.४७/२४ या.,मार्गीमीनेशुक्र १५/४२
४	२०	शुभः	७	सू.	१७	२१	पू	०	५८	सि	३२	१०	ब	१७	२१	३२/१	१३	१	७	२१	मकर १६/९	० ६ ० ५९	५८ ३३	शीतलापू.,बुढ़ाबासोड़ा,
५	२१	मृत्यु	८	चं.	१५	५८	उ	१	३१	सा	२८	१०	कौ	१५	५८	४	११	१	८	२२	मकर	० ६ ५९ २७	५८ ३०	रेवत्यांबुध ४५/४६ ग ६५/५१
६	२२	लुंबकः	९	मं.	१३	२९	श्र	०/५४	५६/१६	शु	२३	१६	ग	१३	२९	७	११	१	९	२३	कुंभ ३०/५	० ७ ५७ ३१	५८ २७	भ.४१/४१ उप.,पुष्भेभौम १७/५ ग ३०/३६,पंचक ३०/५ उप.
७	२३	मानस	१०	बु.	९	५४	श	५६	४५	शु	१७	३३	वि	९	५४	११	१०	२	१०	२४	कुंभ	० ८ ५६ १४	५८ २४	भ.६/५४ या.,मृगेरगुरु १४/२६ ग १२/२२
८	२४	मुद्गर	११	वृ.	५	२९	पू	५३	३४	ब्र	११	१०	बा	५	२९	१४	९	३	११	२५	मीन ३६/२१	० ९ ५४ ३५	५८ २२	पूभा३शनि ५/२६ ग ४/२२ वरूथिनी११व्रतंसर्वे,श्रीवल्लभचार्य जय.
९	२५	ध्वजः	१२	शु.	०	२२	उ	४९	५२	ऐं	४/१४	५६/५७	तै	०	२२	१७	९	३	१२	२६	मीन	० १० ५२ ५३	५८ २०	भ.५४/४५ उप.,प्रदोष,सेनजयंति
०	०	०	१३	शु.	५४	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०	Bअमा रवि अश्वनीयुत व्यतिपातयोग अनन्त पुण्यद।
१०	२६	प्रजापति	१४	श.	४८	५०	रे	४५	५२	वि	४९	२४	वि	२१	४८	२०	७	२	१३	२७	मेष ४५/५२	० ११ ५१ १०	५८ १८	भ.२१/४८ या.,पंचक ४५/५२ या.
११	२७	आनंदः	३०	सू.	४२	४६	अ	४१	४६	प्री	४१	४१	च	१५	४८	२३	६	४	१४	२८	मेष	० १२ ४५ २५	५८ १७	भरण्यांरविः ३१/३० पितृकार्येऽमाः, हालीअमावस,देवकार्येऽमाः, B

गोचर ग्रहाः

बुधोदयपूर्वे,शुक्रोदयपू. शुक्रमार्गी,शनिउदयपूर्वे

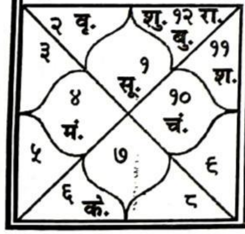

वैशाख कृष्णा ८ सोम गण ५ , इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	११	१	११	१०	११	५
२	१५	२६	०	२६	०	०
५३	७	१७	२७	१६	३०	३०
५६	३७	१	२८	५७	३६	३६
२०	२	१०	१५	६	३	३
१४	१	१५	४७ मा.	२८	११	११
पुन.४	उभा४	मृग.१	पूभा४	पूभा२	पूभा४	उफा२
नीर	सौम्य	दहन	नीर	नीर	नीर	नीर

वैशाख कृष्णा १सूर्य मेषेऽर्क प्रवेशः। वारात् ३ मंदी,नक्षत्रात्३सुभिक्ष। वार नाम घोरा,शूद्र सुखी। नक्षत्र नाम मन्दाकिनी,नृप सुखी। संक्रांति काल अपर रात्री,नरसुखी। संक्रांति पूर्वे मुख,नैऋत दृष्टि, दक्षिणे गमनं। कौलव कर्णे खड़ी तेजी। वाराह वाहन,बैल उपवाहन पीड़ा। हरित वस्त्र,खड्ग आयुध,ताम्र पात्र,शर्करा भोजन,चंदन लेपन ,सर्पजाति,बकुल पुष्प,मोती भूषण,हरित कंचुकी, तरुणी अवस्था, पश्चिक मुख,मृदंग वाद्य,तेजी। ईति अवस्था। संक्रांति हस्ते पीतफल ,लक्ष्मी प्राप्तिः। संक्रांति निवास संधि,वैश्य। संक्रांति मु.१५ तेजी। संक्रांति पुण्यम् पर दिने,प्रथम प्रहरे पुण्य काल। वत्स निवास पश्चिमे। त्रैमासिक राहु दक्षिणे। शुक्रोदय पूर्वे।

वैशाख कृष्णा ३० सूर्य गण ११ , इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	११	१	११	१०	११	५
५	२२	२७	२	२६	०	०
४४	२४	२६	२	५२	११	११
३१	५५	३०	१६	४३	३४	३४
३०	६५	१२	१५	४	३	३
३६	५१	२२	४७ मा.	२२	११	११
पुष्य१	रेव.२	मृग.२	पूभा४	पूभा३	पूभा४	उफा२
जल	दहन	दहन	नीर	नीर	नीर	नीर

गोचर ग्रहाः

बुधोदय पूर्वे,शुक्रोदयपू. शुक्रमार्गी,शनिउदयप.

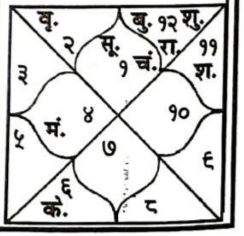

वैशाख शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः१९४७ (लघुगण१२से२६तक)

दि.२८ अप्रेल से १२ मई २०२५ ई.तक।
ग्रीष्म ऋतुः। रविर्देवता उत्तरायनेः, उत्तरगोलेः।
(वैशाख शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	हि.बं.	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति
१२	२८	चर	१	चं.	३६	५२	भ	३७	४६	आ	३४	७	किं	९	४६	३२/२६	६/६	७/४	१५	२९	वृषभ ५१/५०	० १३ ४७ ३६	५८ १५
१३	२९	गद	२	मं.	३१	१०	कृ	३४	३	सौ	२६	४६	बा	४	१	२९	५	५	१६	३०	वृषभ	० १४ ४५ ४८	५८ १३
१४	३०	शुभः	३	बु.	२५	५५	रो	३०	५१	शो	१९	४७	ग	२५	५५	३२	५	५	१७	१	मिथुन ५६/३५	० १५ ४३ ५७	५८ १०
१५	१	मृत्युः	४	बृ.	२१	१८	मृ	२८	१९	अ	१३	१८	वि	२१	१८	३६	४	६	१८	२	मिथुन	० १६ ४२ ३	५८ ८
१६	२	पद्मः	५	शु.	१७	३१	आ	२६	३८	सु	७	३०	बा	१७	३१	३९	३	७	१९	३	कर्क ११/८	० १७ ४० ६	५८ ६
१७	३	छत्रः	६	श.	१४	४४	पु	२५	५९	धृ	२/२७	५८/१८	तै	१४	४४	४२	२	८	२०	४	कर्क	० १८ ३८ १२	५८ ४
१८	४	श्रीवत्सः	७	सू.	१३	५	पु	२६	३०	गं	५५	८	व	१३	५	४५	१	८	२१	५	कर्क	० १९ ३६ १४	५८ २
१९	५	सौम्यः	८	चं.	१२	४०	श्ले	२८	१५	वृ	५२	५८	ब	१२	४०	४८	०	८	२२	६	सिंह २८/१५	० २० ३४ १२	५७ ५९
२०	६	कालः	९	मं.	१३	३३	म	३१	१६	ध्रु	५१	४७	कौ	१३	३३	५१	०	८	२३	७	सिंह	० २१ ३२ ९	५७ ५७
२१	७	सुस्थिरः	१०	बु.	१५	४३	पू	३५	२७	व्या	५१	३३	ग	१५	४३	५४	५/५६	९	२४	८	कन्या ५१/४५	० २२ ३० ३	५७ ५६
२२	८	मातंग	११	बृ.	१९	१	उ	४०	४१	ह	५२	५	वि	१९	१	५८	५८	१०	२५	९	कन्या	० २३ २७ ५७	५७ ५४
२३	९	अमृतः	१२	शु.	२३	१५	ह	४६	४१	व	५३	१२	बा	२३	१५	३३/१	५८	१०	२६	१०	कन्या	० २४ २५ ४७	५७ ५१
२४	१०	काणः	१३	श.	२८	८	चि	५३	७	सि	५४	४१	तै	२८	८	४	५७	११	२७	११	तुला १६/५४	० २५ २३ ३५	५७ ५०
२५	११	लुंबक	१४	सू.	३३	१३	स्वा	५९	३५	व्य	५६	१८	ग	०	४०	७	५७	११	२८	१२	तुला	० २६ २१ २३	५७ ४८
२६	१२	मैत्रः	१५	चं.	३८	११	वि	६०	०	व	५७	३९	वि	५	४२	१०	५६	१२	२९	१३	वृश्चिक ४६/११	० २७ १९ ८	५७ ४६

चंद्रोदयमु.३०स्थिरता,शिवाजीजयंति **परशुरामजयंसायं तृतीयायां**
भ.५३/३६ उप.,कुंमेपूभा३राहुसिंहेउभा१केतु **जिल्कादमु.११,** A
भ.२१/१८ या.,मार्गीउभायांशुक्र४६/१० ग.४६/११ A कल्पादि,अक्षयतृतीया
आद्यशंकराचार्य जयं.
अश्वन्यांमेषेबुध४६/१६ग.११५/२८ श्रीरामानुजजयं.,
भ.१३/५ उप.४३/३३या., गंगोत्पत्तिसप्तमी मध्यान्यापिनी
बुधास्तपू.४६/४५ बगलामुखीजयं.,बुधाष्टमी सीतानवमी
भ.४७/२२ उप.,
भ.१६/१ या.,मोहिनी११व्रतंसर्वे
मृग३मिथुनेगुरु२४/? ग.१२/४६ प्रदोष
भरण्यांबुध५०/१६ग.१०७/२
भ.३३/१३ उप.,कृत्तिकायांरवि२६/२० नृसिंह१४जयंति प्रदोष व्यापिनी
भ.४६/५ या.,बिच्छुडा४६/११उप. कूर्मोत्पत्ति,पूर्णिमाव्रतंपुण्यं,वैशाखस्नानपूर्ण,
बुद्धजयं.,यमायजलान्न,कुंमदानम्

गोचर ग्रहाः

रात्रौ बुधास्त पूर्वे
शुक्रोदयपूर्वे

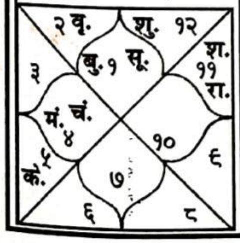

वैशाख शुक्ला ८ चंद्र गण १९, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	१	११	१०	१०	४
९	२	२९	५	२७	२९	२९
४९	५	५	५१	२७	४९	४९
४४	५३	३०	३१	४५	८	८
३०	११५	१२	४९	४	३	३
३९	२८	२२	११	२२	११	११
पुक्ष.२	अश्व१	मृग.२	उभा१	पूभा३	पूभा३	उफा१
जल	पवन	दहन	सौम्य	नीर	नीर	नीर

पांच रवि गर्मी घणी,महाभय बहु रोग। फोंडा फुंसी दुर्भिक्ष हो, छत्रभंग को भोग।।१।। रवि शनि मंगल वार दिन,संक्रांत पलटे जोय। दुख दुर्भिक्ष तेजी घणी,उसी मास में होय।।२।। मेषाऽर्क रविवार,अमा भी रवि में आन। खर्प्परयोग जग भ्रमे,निश्चय जग में ठान।।३। आखतीज को रोहिणी,सुभिक्ष करंति देख। सुद नौमी मघा पड़ो,रुण्ड मुण्ड को लेख।।४।। हैजा रोग छत्रभंग अमा रवि शनि मंगल देख। शुक्रवारी पंचमी,कलह विग्रह को लेख।।५।। कैर बैर पीलू पकै,नींब आंब पकजाय। दूध दही रसकस घणां कार्तिक साख सवाय।।६।। बिना रितु फल फूल लगे,बिन रितु वर्षे मेह। समय चूक ब्यावे पशु,धरा उड़ावेखेह।।७।। ऊँट कंटालौ रीगंणी, शंखा वल्ली हो फूल। मां बिछोड़े दीकरा,गाय बाछड़ा भूल।।८।।

वैशाख शुक्ला१५ चंद्र गण २९ ,इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	२	११	१०	१०	४
१३	१५	०	११	२७	२९	२९
२४	२३	३३	३५	५८	२३	२३
१८	२३	१२	५१	२४	५२	५२
३०	१०७	१२	४९	४	३	३
३९	२	४९	११	२२	११	११
पुक्ष४	भर.१	मृग३	उभा३	पूभा३	पूभा३	उफा१
जल	प्रचंड	दहन	सौम्य	नीर	नीर	नीर

गोचर ग्रहाः

बुधास्त पूर्वे,मिथुने गुरु
शुक्रोदय पूर्वे

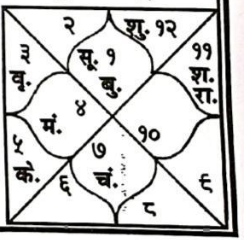

ज्येष्ठ कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत्२०८२ शालिवाहन शकः१९४७ (लघुगण २७से४१तक)

दि.१३ मई से २७ मई २०२५ई.तक।
ग्रीष्म ऋतुः। रविर्देवता उत्तरायनेः, उत्तरगोलेः।
(वैशाख कृष्ण पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

गण	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
२७	१३	श्रीवत्सः	१	मं.	४२	३८	वि	५	४४	प	५८	३०	बा	१०	२४	३३/३३	५५/५५	७/१३	३०	१४	वृश्चिक	० २८ १६ ५२	५७ ४४	जिनवरव्रतारंभ
२८	१४	सौम्यः	२	बु.	४६	११	अ	११	१०	शि	५८	३६	तै	१४	२४	१६	५५	१३	३१	१५	वृश्चिक	० २९ १४ ३४	५७ ४२	वृषेऽर्कः४७/१७ श्रीनारदजयं.वीणावादनं
२९	१५	काल	३	बृ.	४८	३९	ज्ये	१५	३८	सि	५७	५१	व	१७	३०	१६	५५	१३	१	१६	धनु १५/३८	१ ० १२ १३	५७ ४०	भ.१७/३०उप.४६/३६या.,बिच्छुड़ा१५/३८या
३०	१६	सुस्थिर	४	शु.	४९	४५	मू	१८	५७	सा	५६	८	ब	१९	१३	१६	५४	१४	२	१७	धनु	१ १ ९ ५२	५७ ३५	चतुर्थीव्रतंचंद्रोदय१५/६बजे, Aकृत्तिकायांबुध४६/४१ग११७/२१,रेवत्यांशुक्र१०/५७ग५६/५१
३१	१७	मातंग	५	श.	४९	३७	पू	२१	१	शु	५३	२३	कौ	१९	३७	२३	५३	१५	३	१८	मकर३६/१३	१ २ ७ २५	५७ ३७	भुवनेश्वरी पाटोत्सव(गोंडल)
३२	१८	अमृतः	६	सू.	४८	१३	उ	२१	४६	शु	४९	३६	ग	१८	५५	२६	५३	१५	४	१९	मकर	१ ३ ५ ३	५७ ३६	भ.४६/१३उप.,अगस्तास्तः४०/१३,आश्लेषायांभौम२३/३ग३२/३८, A
३३	१९	सिद्धिः	७	चं.	४५	४०	श्र	२१	२७	ब्र	४५	०	वि	१९	५७	२९	५२	१६	५	२०	कुंभ५०/४४	१ ४ २ ३५	५७ ३५	भ.१६/५७या.,मिथुनेभानुः५७/३६,पंचक५०/४४उप.
३४	२०	उत्पात	८	मं.	४२	३	ध	२०	१	ऐं	३९	३८	बा	१३	५१	३२	५२	१६	६	२१	कुंभ	१ ५ ० ८	५७ ३३	वृषेबुध०/५६ कालाष्टमी,
३५	२१	मानस	९	बु.	३७	३३	श	१७	४१	वै	३३	१६	तै	९	४८	३३	५१	१७	७	२२	कुंभ	१ ५ ५७ ३७	५७ ३२	श्रीदादूदयालपुण्यं
३६	२२	मुद्गर	१०	बृ.	३२	२७	पू	१४	३७	वि	२६	३१	व	५	०	३५	५१	१७	८	२३	मीन ०/२३	१ ६ ५५ ५	५७ ३१	भ. ५/० उप.३२/३७या.,
३७	२३	ध्वजः	११	शु.	२६	४७	उ	११	०	प्री	१९	२०	बा	२६	४७	३६	५१	१७	९	२४	मीन	१ ७ ५२ ३१	५७ २९	अपरा११व्रतं सर्वे, Bवटसावित्रीव्रतप्रा.मरु
३८	२४	प्रजापति	१२	श.	२०	४७	रे	७	२	आ	११	५२	तै	२०	४७	३७	५१	१७	१०	२५	मेष ७/२	१ ८ ४९ ५६	५७ २६	पंचक७/२था.शनि प्रदोष महापुण्यदायी,त्रिविक्रमपूजा गोमेधफल,
३९	२५	आनंदः	१३	सू.	१४	३८	अ	२/५६	५६/५३	सौ	४/१६	५६/४४	व	१४	३८	३९	५१	१८	११	२६	मेष	१ ९ ४७ २०	५७ २५	भ.१४/३८उप.४१/३६या.,रोहिण्यांरवि१३/१५,रोहिण्यांबुध७/४१ग११३/३४,मृग४गुरु३/३ग१३/२६ B
४०	२६	सुस्थिरः	१४	चं.	८	३४	कृ	५५	४	अ	४९	२२	श	८	३४	४०	५१	१९	१२	२७	वृषभ१२/५५	१ १० ४४ ४३	५७ २३	वटसावित्रीव्रतपूर्ण उत्तरभारतीय,
४१	२७	मातंग	३०	मं.	२	४६	रो	५१	४२	सु	४२	२०	ना	२	४६	४१	५१	१९	१३	२८	वृषभ	१ ११ ४२ २	५७ २१	दैवपितृकार्येऽमा,भावुकाअमा.,शनिजयं,वटसावित्रीव्रत C

C पारणाउत्तरभारतीय,करिदिन,गंगादशहराव्रत प्रां.

गोचर ग्रहाः

बुधास्तपूर्वे,शुक्रोदयपूर्वे
अगस्तास्त रात्रौ

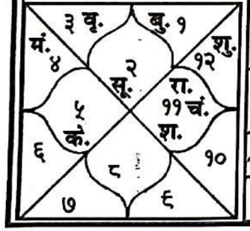

ज्येष्ठ कृष्णा ८ मंगल
गण ३४, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	२	११	१०	१०	४
१७	२९	२	१८	२८	२८	२८
३२	५८	१५	२६	३३	५८	५८
४३	१०	२७	५७	२५	२६	२६
३२	११७	१२	५८	४	३	३
३८	२१	४६	५१	२२	११	११
श्ले.१	कृत्ति.१	मृग.३	रेव.१	पूभा.३	पूभा.३	उफा.१
अमृत	प्रचंड	दहन	दहन	नीर	नीर	नीर

ज्येष्ठ कृष्णा २ बुध,वृषेऽर्क प्रवेशः। वारात् ४ तेजी दुर्भिक्ष। नक्षत्रात् ४दुर्भिक्ष। नक्षत्रात् ४ दुर्भिक्ष तेजी। वार नाम मन्दाकिनी,नृपसुखी। नक्षत्र नाम राक्षषी,चांडाल सुखी। संक्रांति काल अर्धरात्री,राक्षस सुखी। संक्रांति दक्षिणे मुख,ईशान दृष्टि,पश्चिमे गमनं। गर कर्णे बैठी, सम। हस्ती वाहन,गर्दभ उपवाहन,श्री प्राप्ति। रक्त वस्त्र,धनुष आयुध,लोहपात्र,पयभोजन,गौरोचन लेपन,मृगजाति,बिल्व पुष्प,मुकुट भूषण, श्वेतकंचुकी,प्रोढ़ा अवस्था,वायव्यमुख,पद्मवाद्य,दुर्मुखी अवस्था। संक्रांति हस्ते रक्तफल,प्रजादुखी। संक्रांति निवास समुद्रे,मालाकार गृहे,सुभिक्ष मंदी। मु.१५तेजी,दुर्भिक्ष। संक्रांति पुण्यम् पर दिने प्रथम प्रहरे पुण्य काल। वत्स निवास पश्चिमे। त्रैमासिक राहु पश्चिमे। शुक्रोदय पूर्वे।

ज्येष्ठ कृष्णा३० मंगलवार
गण ४१, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१	२	११	१०	१०	४
२१	१३	३	२५	२९	२८	२८
२१	३२	४६	१८	४	३६	३६
१४	३५	१२	५६	४	१०	१०
३२	११३	१३	५८	४	३	३
३८	३४	२६	५१	२२	११	११
श्ले.२	रोहि.२	मृग.४	रेव.३	पूभा.३	पूभा.३	उफा.१
अमृत	पवन	दहन	दहन	नीर	नीर	नीर

गोचर ग्रहाः

बुधास्तपूर्वे, शुक्रोदयपूर्वे
अगस्तास्त

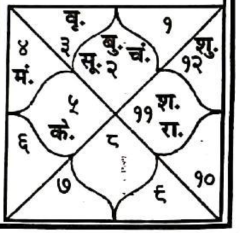

ज्येष्ठ शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत्२०८२ शालिवाहन शकः१९४७ (लघुगण४२से ५६तक)

दि.२८ मई से ११ जून २०२५ई.तक। ग्रीष्मऋतु। रविर्देवता उत्तरायनेः,उत्तरगोलेः। 卐 (ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः) 卐

	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	हि. बं.	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति
०	०	०	१	मं.	५७	२५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०
४२	२८	अमृत	२	बु.	५२	४२	मृ	४८	५७	धृ	३५	४४	बा	२५	३	३३/४४	५/५०	७/२०	१४	२९	मिथुन२०/१६	१ १२ ३६ २०	५७ २०
४३	२९	काणः	३	वृ.	४८	५०	आ	४७	५	शू	२९	४६	तै	२०	४६	४४	५०	२०	१५	१	मिथुन	१ १३ ३६ ४०	५७ १९
४४	३०	लुंबक	४	शु.	४५	५५	पु	४६	६	गं	२४	३६	व	१७	२२	४५	५०	२०	१६	२	कर्क३१/२३	१ १४ ३३ ५८	५७ १७
४५	३१	मैत्रः	५	श.	४४	७	पु	४६	२२	वृ	२०	२१	ब	१५	१	४७	५०	२०	१७	३	कर्क	१ १५ ३१ १४	५७ १६
४६	१	वज्रः	६	सू.	४३	३३	श्ले	४७	४८	ध्रु	१७	१	कौ	१३	५०	४८	४९	२१	१८	४	सिंह४७/४८	१ १६ २८ ३०	५७ १५
४७	२	ध्वांक्षः	७	चं.	४४	१८	म	५०	३०	व्या	१४	४०	ग	१३	५५	४८	४९	२१	१९	५	सिंह	१ १७ २५ ४४	५७ १३
४८	३	धूम्राः	८	मं.	४६	१९	पू	५४	२५	ह	१३	११	वि	१५	१९	४९	४९	२१	२०	६	सिंह	१ १८ २२ ५७	५७ १२
४९	४	प्रवर्धमान	९	बु.	४९	२८	उ	५९	२४	व	१२	५७	बा	१७	५३	५१	५०	२२	२१	७	कन्या१०/३६	१ १९ २० ८	५७ ११
५०	५	राक्षसः	१०	वृ.	५३	३०	ह	६०	०	सि	१३	२७	तै	२१	२९	५२	५०	२२	२२	८	कन्या	१ २० १७ १९	५७ १०
५१	६	अमृतः	११	शु.	५८	१६	ह	५	१५	व्य	१४	१३	व	२५	५३	५३	४९	२३	२३	९	तुला३५/१६	१ २१ १४ ३०	५७ ९
५२	७	काणः	१२	श.	६०	०	चि	११	२३	व	१५	३६	ब	३०	४८	५५	४९	२३	२४	१०	तुला	१ २२ ११ ३८	५७ ८
५३	८	लुंबकः	१२	सू.	३	२१	स्वा	१८	४	प	१७	१७	बा	३	२१	५६	४९	२३	२५	११	तुला	१ २३ ८ ३४	५७ ७
५४	९	मैत्रः	१३	चं.	८	१५	वि	२४	१९	शि	१८	४४	तै	८	१५	५७	४९	२४	२६	१२	वृश्चि७/४५	१ २४ ५ ५१	५७ ६
५५	१०	वज्रः	१४	मं.	१२	३४	अ	२९	५५	सि	१९	४१	व	१२	३४	५९	४९	२५	२७	१३	वृश्चिक	१ २५ २ ५५	५७ ५
५६	११	ध्वांक्षः	१५	बु.	१६	७	ज्ये	३४	३७	सा	१९	५८	ब	१६	७	३४/०	४९	२५	२८	१४	धनु३४/३७	१ २६ ० ०	५७ ४

A आद्रायांबुध ३/५९ग १०८/३७,बुधोदयप.४३/४५प्रदोष,वरुणआदित्य१२व्रतं चंद्रोदयमु.३०स्थिरता,

जिल्हेजमु.१२महाराणाप्रतापजयंति४८५वीं,रंभाव्रतं,अशून्यशयनव्रतप्रां.

भ.१७/२२उप.४५/५६या.,

अश्वन्यांमेषेशुक्र ४६/३०ग.६२/३१

मृगेबुध १०/१९ग.१०६/६ अरण्यषष्ठी,

भ.४४/१८ उप.,

भ.१५/१९या., दुर्गाष्टमी धूमावतीजयंति,

मिथुनेबुध ५०/१८

गंगादशहराव्रतंपूर्ण,पर्यावरणदिवस सुवृक्षाः

भ.२५/५३उप.१६/५६या.,निर्जला११व्रतंसर्वे,भीम११,हज्ज त्यौहार

बकराईद हजे अकबर,निर्जला११व्रतंनिम्बार्क

मृगेरविः११/५१,पूभा४मीनेशनि४६/१ग ४/१३,आद्रा१गुरु५५/२६ग १३/४३,A

बिच्छुडा७/४५उप. वटसावित्रीव्रतारंभःदाक्षियगुर्जरे,

भ.१२/३४उप.४४/२१या., Bकबीरजयं.,मन्वादि,पूर्णिमाव्रतं,दानव्रतपुण्यं

मघायांसिंहेभौम५६/२६ग ३६/३०,गुरुअस्तप.६/५६,बिच्छुड़ा३४/३७या,ज्वालामुखी३४/३७उप.B

गोचर ग्रहाः

बुधास्त पूर्वे,शुक्रोदयपूर्वे अगस्तास्तः

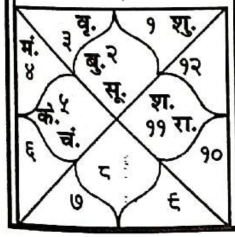

ज्येष्ठ शुक्ला८ मंगलवार गण ४८, इष्टः ०/०

	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
	३	१	२	०	१०	१०	४
	२५	२६	५	२	२६	२८	२८
	६	३६	२०	१६	३४	१३	१३
	४५	२६	२०	७	४३	५४	५४
	३२	१०६	१३	६२	४	३	३
	३८	६	२६	३१	२२	११	११
	श्ले.३	मृग.२	मृग.४	अश्व३	पूभा३	पूभा३	उफा१
	अमृत	दहन	दहन	पवन	नीर	नीर	नीर

पांचभौम धरती फटे,अग्निकाण्ड उत्पात। छत्रभंग दंगल बढ़े,वैर विरोध आघात।।१।। जेठ वदी पड़वा अमा,मंगलवारी थाय। चोर अग्नि भय बहु ,घर घर हांण कराय।।२।। जेठी पूनम मूल नहीं,अथवा नहीं घन बिंद। तो सावन सूखो पड़े,समो बुरो अतिमंद।३।।रोहिण माहे रोहिणी, अमा मंगली देख। धन हरण धनिकन को, रोग शोक को लेख।।४।। सावण में सुरयो भलौ,भादरवे पुरवाई। आसोजे पश्चिम पवन,कार्तिक साख सवाई।।५।। भादवे चारों दिशा,बाजै आठो कून। आया मेघ उड़ाय दे,हीर कहे सुण माघ जी।।६।। कृतिका तो कोरी गई,आद्रा मेहन बूंद। तो यों जानों भड्डरी काल मचावे द्वंद।।७।। मृगसिर वाय न वाजिया,रोहिण तपै न जेठ। गोरी बीणें कांकरा खड़ी खेजडा हेठ।८।।

ज्येष्ठ शुक्ला १५ बुध गण ५६, इष्टः ०/०

	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
	३	२	२	०	११	१०	४
	२६	११	७	१०	०	२७	२७
	३०	११	८	३६	६	४८	४८
	५६	६	२६	२१	२४	२८	२८
	३२	१०८	१३	६२	४	३	३
	३८	३७	४३	३१	१३	११	११
	श्ले.४	आद्रा२	आद्रा१	अश्व४	पूभा४	पूभा३	उफा१
	अमृत	सौम्य	सौम्य	पवन	नीर	नीर	नीर

गोचर ग्रहाः

अगस्तास्तः,गुरुअस्तप. बुधोदय प.,शुक्रोदयपूर्वे

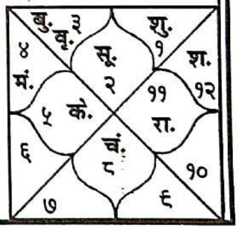

आषाढ़ कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः१९४७ (लघुगण५७ से७०)

दिनांक १२ जून से २५ जून २०२५ई. तक।
ग्रीष्म/वर्षाऋतुः। रविर्देवता उत्तरा/दक्षिणायने,उत्तरगोलेः।
(ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १४	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	मिति	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति
५७	१२	धूम्राः	१	वृ.	१८	३६	मू	३८	१२	शु	१९	२५	कौ	१८	३६	३४/१	५/४६	७/२५	२६	१५	धनु	१ २६ ५७ ३	५७ ३
५८	१३	प्रवर्धमान	२	शु.	१६	४६	पू	४०	३३	शु	१७	५५	ग	१६	४६	३	४६	२६	३०	१६	मकर ५५/४६	१ २७ ५४ ७	५७ २
५९	१४	राक्षसः	३	श.	१६	४५	उ	४१	३८	ब्र	१५	२४	वि	१६	४५	४	४६	२७	३१	१७	मकर	१ २८ ५१ ६	५७ १
६०	१५	गदः	४	सू.	१८	१५	श्र	४१	३१	ऐं	११	५०	बा	१८	१५	५	४६	२७	३२	१८	मकर	१ २९ ४८ ६	५७ ०
६१	१६	शुभः	५	चं.	१५	४२	ध	४०	१८	वै	७	२१	तै	१५	४२	७	४६	२७	१	१९	कुंभ १०/५४	२ ० ४५ ६	५६ ५९
६२	१७	मृत्युः	६	मं.	१२	७	श	३८	१०	वि	३/२	५५/५६	व	१२	७	८	४८	२८	२	२०	कुंभ	२ १ ४२ ८	५६ ५८
६३	१८	पद्मः	७	बु.	७	३८	पू	३५	१२	आ	४९	१७	ब	७	३८	६	४८	२८	३	२१	मीन २०/५६	२ २ ३९ ७	५६ ५८
६४	१९	छत्रः	८	वृ.	२	२६	उ	३१	४१	सौ	४२	६	कौ	२	२६	६	४८	२८	४	२२	मीन	२ ३ ३६ ६	५६ ५८
०	०	०	९	वृ.	५६	५०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०
६५	२०	श्रीवत्सः	१०	शु.	५०	४७	रे	२७	४६	शो	३४	४५	व	२३	४८	१०	४८	२८	५	२३	मेष २७/४६	२ ४ ३३ ३	५६ ५७
६६	२१	सौम्यः	११	श.	४४	३६	अ	२३	४०	अ	२७	११	ब	१७	४१	१२	४६	२६	६	२४	मेष	२ ५ ३० ०	५६ ५६
६७	२२	काल	१२	सू.	३८	२८	भ	१९	३३	सु	१९	३६	कौ	११	३२	१०	४६	२६	७	२५	वृषभ ३३/३४	२ ६ २६ ५६	५६ ५६
६८	२३	सुस्थिरः	१३	चं.	३२	३६	कृ	१५	३६	धृ	१२	११	ग	५	३२	६	४६	२६	८	२६	वृषभ	२ ७ २३ ५२	५६ ५६
६९	२४	मातंगः	१४	मं.	२७	६	रो	१२	६	शू	४/१	५५/३३	श	२७	६	८	४६	२६	९	२७	मिथुन ४०/४२	२ ८ २० ४५	५६ ५५
७०	२५	अमृतः	३०	बु.	२२	२४	मृ	६	१५	वृ	५२	१६	ना	२२	२४	७	५१	२६	१०	२८	मिथुन	२ ९ १७ ४४	५६ ५५

ज्वालामुखी १६/३६ या.,वटसावित्रीव्रतपारणा,
भ.४६/४७ उप.,भरण्यांशुक्र ३४/६ ग ६६/२
भ.१६/४५ या.,चतुर्थीव्रतं चंद्रोदय ६/२८ बजे
मिथुनेऽर्कः १२/२८,पुनर्वसुबुध ४२/७ ग ६/५
पंचक १०/५४ उप
भ.१२/७ उप.३६/५३ या.,

कालाष्टमी,श्रीरामदासपुण्य,मेलाखेडापारामधाम,

भ.२३/४८ उप.५०/४७ या.,कर्केभानुः २६/६,बड़ादिन,रविदक्षिणायनेवर्षाऋतुप्रा.,A
योगिनी११व्रतंस्मार्ता,गोपपद्मव्रतोत्सव, A पंचक २७/४६ या.
आद्रायांरवि १३/४६,स्त्री.पु.चं.चं.वाहनमूषक,उपवाहनकच्छप बाढ़, B
भ.३२/३६ उप.५६/५३ या.,आद्रा२गुरु २६/१६ ग १३/४४ प्रदोष,
B कर्केबुध ४०/१५,योगिनी११व्रतंनिम्बार्का
पुक्षेबुध ६/३७ ग ४५/४६,कृत्तिकायांशुक्र ४०/५८ ग ६७/४६ सावित्रीव्रत पश्चिमदेशीय C
C दैवपितृकार्येऽमास्नानदाने,वट

गोचर ग्रहाः

अगस्तास्तः,गुरुअस्तप.
बुधोदयप.,शुक्रोदयपूर्वे

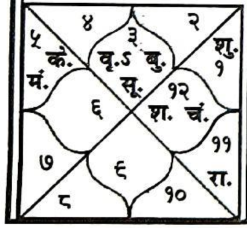

आषाढ़ कृष्णा८+९ गुरु
गण ६४, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ ४ १९ २६	२ २४ २९ ३५	२ ८ ५८ २१	० १९ १८ ३६	११ ० ४३ ८	१० २७ २३ १	४ २७ २३ १
३६/३०	८६/५	१३/४३	६६/२	४/१३	३/११	३/११
मघा२	पुन.३	आद्रा१	भर.२	पूभा४	पूभा३	उफा१
अमृत	नीर	सौम्य	प्रचंड	नीर	नीर	नीर

आषाढ़ कृष्ण पक्ष ४सूर्य मिथुनेऽर्क प्रवेशः। वारात् ५ तेजी,दुर्भिक्ष। नक्षत्रात् ५ तेजी दुर्भिक्ष। वार नाम घोरा,शूद्र सुखी। नक्षत्र नाम महोदरी,चौर सुखी। संक्रांति काल पूर्वान्हे,विप्र राजा सुखी। संक्रांति मुख पूर्वे,नैऋत दृष्टि,दक्षिणे गमनं। बालव कर्णे बैठी,सम। व्याघ्र वाहन,अश्व उपवाहन,भय। पीत वस्त्र गदा आयुध,चांदी पात्र,खीर भोजन,कुंकुम लेपन,वणिक् जाति,जूही पुष्प,कंकण भूषण,पर्णकंचुकी, कुमारी अवस्था,दक्षिण मुख,भेरी वाद्य,भोगाऽवस्था। संक्रांति हस्ते कृष्ण फल संक्रांतिनिवास तटे,रजक(धोबी) गृहे सुभिक्ष मंदी। मु.३० स्थिरता। संक्रांति पुण्यम् स्वदिने प्रथम प्रहरे पुण्यकालः। वत्स निवास उत्तरे। त्रैमासिक राहु पश्चिमे,शुक्रोदय पूर्वे।

आषाढ. कृष्णा ३० बुध
गण ७०, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ ७ ५८ २९	३ ३ ६ १३	२ १० २० ४६	० २५ ५४ ५५	११ १ ८ २९	१० २७ ३ ५६	४ २७ ३ ५६
३६/३०	८६/५	१३/४३	६६/२	४/१३	३/११	३/११
मघा३	पुन.४	आद्रा२	भर.४	पूभा४	पूभा३	उफा१
अमृत	नीर	सौम्य	प्रचंड	नीर	नीर	नीर

गोचर ग्रहाः

अगस्तास्तः,गुरुअस्तप.
बुधोदयप.,शुक्रोदयपूर्वे

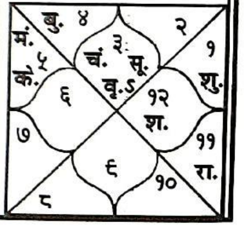

आषाढ़ शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः१९४७(लघुगण ७१से ८५)

दिनांक २६ जून से १० जुलाई २०२५ई.तक।
वर्षाऋतुः। रविर्देवता दक्षिणायनेः,उत्तरगोलेः।
(आषाढ़ शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
७१	२६	काणः	१	वृ.	१८	२२	आ	७	८	ध्रु	४७	०	ब	१८	२२	३४/५	५/५१	७/२६	११	२९	कर्क ५१/१४	[illegible]	[illegible]	चंद्रोदयमु.४५मंदी,गुप्तनवरात्रारंभः
७२	२७	लुंबकः	२	शु.	१५	१६	पु	५	५६	व्या	४२	३१	कौ	१५	१६	४	५१	२६	१२	१	कर्क	[illegible]	[illegible]	श्रीजगदीशरथयात्रा ,मोर्हरममास सन् १४४७
७३	२८	मैत्रः	३	श.	१३	२५	पु	५	५२	ह	३८	५६	ग	१३	२५	३	५१	२६	१३	२	कर्क	[illegible]	[illegible]	भ.४३/३ उप.,वृषेशुक्र ३७/५५
७४	२९	वज्रः	४	सू.	१२	४२	श्ले	६	५६	व	३६	२६	वि	१२	४२	१	५२	२८	१४	३	सिंह ६/५६	[illegible]	[illegible]	भ.१२/४२ या., स्कंद पंचमी,द्वारकाधीश पाटोत्सव
७५	३०	ध्वांक्षः	५	चं.	१३	१८	म	६	२३	सि	३४	५३	बा	१३	१८	०	५२	२८	१५	४	सिंह	[illegible]	[illegible]	स्कन्दषष्ठीव्रत,मध्यान्हव्यापिनी,कुमारषष्ठी
७६	१	धूम्राः	६	मं.	१५	७	पू	१३	०	व्य	३४	२३	तै	१५	७	३३/५६	५३	२६	१६	५	कन्या २६/११	[illegible]	[illegible]	कुंभेपूभा२राहुसिंहेपूफा४केतु ३१/४३ विवस्वत्सप्तमी,
७७	२	प्रवर्धमान	७	बु.	१८	६	उ	१७	४५	व	३४	४१	व	१८	६	५७	५४	२६	१७	६	कन्या	[illegible]	[illegible]	भ.१८/६ उप.५०/६ या.,
७८	३	राक्षसः	८	वृ.	२२	६	ह	२३	२३	प	३५	३६	ब	२२	६	५६	५५	२६	१८	७	तुला ५६/३५	[illegible]	[illegible]	पूफायांभौम ४८/२८ ग ३६/३२
७९	४	मूसलः	९	शु.	२६	४६	चि	२६	२८	शि	३७	४	कौ	२६	४६	५५	५५	२६	१९	८	तुला	[illegible]	[illegible]	भड्डलीनवमी(सूनम),गिरिजापूजा C परीक्षण,शिवशयनोत्सव,
८०	५	सिद्धिः	१०	श.	३१	४६	स्वा	३६	६	सि	३८	४०	ग	३१	४६	५३	५५	२६	२०	९	तुला	[illegible]	[illegible]	वक्रीशनि४०/७ श ११/१ ।४०/१ ग ३/२४ आशा१०व्रतं,मन्वादि,गुप्तनवरात्रपूर्ण पारणा
८१	६	उत्पात	११	सू.	३६	२६	वि	४२	२५	सा	४०	१३	व	४	७	५२	५६	२८	२१	१०	वृश्चि २५/५०	[illegible]	[illegible]	भ.४/७ उप.३६/२६ या.,पुनर्वसुरवि १७/७,सं.स्त्री.नपुं.चं.सू.वाहनअश्व A
८२	७	मानस	१२	चं.	४१	३	अ	४८	६	शु	४१	१८	ब	८	४६	५१	५६	२८	२२	११	वृश्चिक	[illegible]	[illegible]	रोहिण्यांशुक्र २६/४५ ग ६६/५६ भगआदित्य१२व्रतं,गोपद्मव्रतं,हरिवासराऽभाव
८३	८	मुद्गर	१३	मं.	४४	३७	ज्ये	५३	१	शु	४१	४४	कौ	१२	५०	४६	५६	२८	२३	१२	धनु ५३/१	[illegible]	[illegible]	पुक्ष४बुध १५/५ ग २५/६,आद्रा३गुरु २/२४ ग १३/३०,बिच्छुड़ा ५३/१ या.प्रदोष
८४	९	ध्वजः	१४	बु.	४७	६	मू	५६	५१	ब्र	४१	२०	ग	१५	५१	४८	५६	२८	२४	१३	धनु	[illegible]	[illegible]	भ.४७/६ उप.,कोकिलाव्रतं,जैनचातुर्मासप्रा. B प्रारंभ,ताजीया
८५	१०	प्रजापति	१५	वृ.	४८	२२	पू	५६	२८	ऐं	४०	०	वि	१७	४४	४७	५७	२८	२५	१४	धनु	[illegible]	[illegible]	भ.१७/४४ या.,वक्रीबुध १३/४५ बु.३/१५ ।५०/२० ग २५/६ गुरुपूर्णिमा,व्यासपूजा,सायंपवन C

A उपवाहन कूकड़ कोरो,बिच्छुड़ा २५/५० उप.,देवशयनी१९व्रतंसर्वे,चातुर्मास B

गोचर ग्रहाः

अगस्तास्तः,गुरुअस्त प.
बुधोदय प.,शुक्रोदयपूर्वे

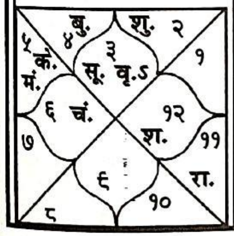

आषाढ़ शुक्ला ८ गुरु
गण ७८, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ १२ ५० ३१	३ ९ १९ १८	२ १२ १० ४३	१ ४ ५६ १३	११ १ ४२ १०	१० २६ ३८ ३०	४ २६ ३८ ३०
३६ ३०	४५ ४६	१३ ४४	६७ ४९	४ १३	३ ११	३ ११
मघा४	पुष्य२	आद्रा३	कृत्ति३	पूभा४	पूभा३	पूफा४
अमृत	जल	सौम्य	प्रचंड	नीर	नीर	जल

पश्चिम में विग्रह हो,पांचगुरु में देख। शस्त्र विद्या बल बढ़े,चाणक्य नीति को पेख।।१।। पड़वा मूल आषाढ़ वद,भूकम्पन को योग। रोहिणी चौदस शोक चहुं,छत्रभंग को भोग।।२।। सुदी आषाढ़ी पंचमी,अथवा पूनम देख। धन धान्य सुख संपदा,शुभवारी को लेख।।३।। आषाढ़ वदी एकम बीज जो मेघा वर्षन्त। एक मास वर्षे नहीं,फिर वर्षा होवन्त।।४।। चौदश रोहिणी आषाढ़ वद,राज युद्ध अरु शोक। आषाढ़ी पूषा पूर्णिमा,खण्ड वृष्टि चहुं लोक।।५।। मिथुनेऽर्क रविवार में,आद्रा भी रविवार। फसल जले गर्मी पड़े,खण्ड वृष्टि जलधार।।६।। उत्तरादि कांठल दिखे,पूरब उत्तर वाय। घड़ी पलक में माघजी,बरस्या बिना न जाय।।७।। उत्तरादि काली घटा,दक्षिण आंधी वाय। पण ऊफणता नीर ज्यूं,आई घटा उड़ाय।।८।।

आषाढ शुक्ला १५ गुरु
गण ८५ , इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ १७ ५ १२	३ १५ ३२ ५५	२ १३ ४६ २८	१ १२ ५३ ५३	११ १ ३३ ४३	१० २६ १९ १४	४ २६ १९ १४
३६ २२	७६ ०	१३ ३०	६८ ५९	३ २४ +	३ ११	३ ११
पूफा२	पुष्य४	आद्रा३	रोहि१	पूभा४	पूभा२	पूफा४
जल	जल	सौम्य	पवन	नीर	नीर	जल

गोचर ग्रहाः

शनिवक्र,गुरुअस्तप.,
शुक्रोदयपूर्वे,बुधउदयप.

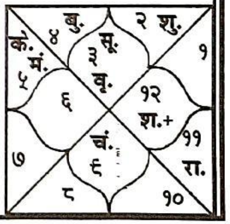

श्रावण कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः १९४७ (लघुगण ८६ से ९९)

दिनांक ११ जुलाई से २४ जुलाई २०२५ई.तक। वर्षाऋतुः। रविर्देवता दक्षिणायनेः, उत्तरगोलेः। (आषाढ़ कृष्ण पक्षः गुजरात महाराष्ट्रेः)

लघुगण	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १४	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	स्टेण्डर्ड जोधपुर अ.	[illegible]	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
८६	११	आनंदः	१	शु.	४८	१६	उ	६०	०	वै	३७	४०	बा	१८	२०	३३/४५	५/५८	७/२८	२६	१५	मकर १४/४८	[illegible]	[illegible]	हिंडोलाप्रा., अशून्यशयनव्रत२प्रा.चंद्रोदयव्यापिनी
८७	१२	राक्षसः	२	श.	४७	३	उ	०	५०	वि	३४	२०	तै	१७	४१	४४	५८	२८	२७	१६	मकर	[illegible]	[illegible]	गुरुउदयपू. २४/५६
८८	१३	गदः	३	सू.	५०	३४	श्र	०/५८	५६/५६	प्री	३०	१	व	१८	४८	४३	५८	२८	२८	१७	कुंभ ३०/२८	[illegible]	[illegible]	भ. १८/४८ उप. ५०/३४ या., बुधास्तप ३६/४५, पंचक ३०/२८ उप.
८९	१४	अमृतः	४	चं.	४०	५७	श	५८	१	आ	२४	५०	ब	१५	४५	४३	५८	२८	२९	१८	कुंभ	[illegible]	[illegible]	चतुर्थीव्रतं चंद्रोदय ६/३१ बजे।
९०	१५	काणः	५	मं.	३६	३२	पू	५५	१४	सौ	१८	५४	कौ	८	४४	४१	५९	२७	३०	१९	मीन ४०/५५	[illegible]	[illegible]	नागपंचमी(मरु.),
९१	१६	लुंबकः	६	बु.	३१	२४	उ	५१	४६	शो	१२	२१	ग	३	५८	४०	५९	२७	३१	२०	मीन	[illegible]	[illegible]	भ. ३१/२४ उप. ५६/३४ या., कर्केऽर्कः ४६/३१, वक्रीपुक्ष२बुध १३/० ग. ६६/१३
९२	१७	मैत्रः	७	वृ.	२५	४४	रे	४७	५८	अ	५/१९	५७/५७	ब	२५	४४	३९	५९	२७	१	२१	मेष ४७/५८	[illegible]	[illegible]	पंचक ४७/५८ या.
९३	१८	वज्रः	८	शु	१९	४३	अ	४३	५२	धृ	५०	१९	कौ	२९	४३	३७	६/१	२७	२	२२	मेष	[illegible]	[illegible]	
९४	१९	ध्वांक्षः	९	श.	१३	४७	भ	३९	४३	शू	४२	४४	ग	१३	४७	३६	१	२७	३	२३	वृषभ ५३/४३	[illegible]	[illegible]	भ. ४०/३७ उप., वक्रीपुक्ष२बुध ६/२१ ग. ४६/४६, मृगेशुक्र ४/३२ ग ६६/५०
९५	२०	धूम्राः	१०	सू.	७	२८	कृ	३५	४४	गं	३५	१७	वि	७	२८	३५	१	२७	४	२४	वृषभ	[illegible]	[illegible]	भ. ७/२८ या., पुक्षेरवि २०/६, सं.स्त्री.पु.चं.चं.वाहनचातक,उपवाहन A
९६	२१	प्रवर्धमान	११	चं.	१	३४	रो	३२	५	वृ	२८	६	बा	१	३४	३३	१	२७	५	२५	वृषभ	[illegible]	[illegible]	कामिका११व्रतंसर्वे, Aकच्छप बाढ़। दशामाता व्रतं,
०	०	०	१२	चं.	५६	५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०	
९७	२२	राक्षसः	१३	मं.	५१	१३	मृ	२९	४	ध्रु	२१	२१	ग	२३	३९	३२	२	२६	६	२६	मिथुन ०/३४	[illegible]	[illegible]	भ. ५१/१३ उप., सिंहेभानुः ३/३, आद्रा४गुरु ४०/३५ ग १२/५८ प्रदोष,
९८	२३	मूसलः	१४	बु.	४७	५	आ	२६	४१	व्या	१५	१०	वि	१९	९	२९	२	२६	७	२७	मिथुन	[illegible]	[illegible]	भ. १६/६ या., वक्रीपुक्ष१बुध ७/१३ ग ११/३६, तिलकजयंति,आजाद जयंति
९९	२४	सिद्धिः	३०	वृ.	४४	२	पु	२५	१५	ह	९	४१	च	१५	३३	२६	३	२५	८	२८	कर्क १०/३६	[illegible]	[illegible]	मिथुनेशुक्र ४६/११ दैवकार्येऽमा., हरियालीअमावस,

गोचर ग्रहाः

बुधास्तप.,गुरुउदयपूर्वे शुक्रोदयपू.,बुधवक्री

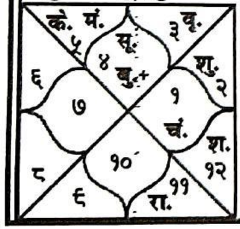

श्रावण कृष्णा ८ शुक्र गण ९३, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ २१ ५६ १०	३ ११ १६ ३३	२ १५ ३४ ३५	१ २२ ५ ४७	११ १ ६ ३०	१० २५ ५० ४८	४ २५ ५० ४८
३६ २२	९९ १३ +	१३ ३०	६८ ५६	३ २४ +	३ ११	३ ११
पूफा३	पुष्य३	आद्रा३	रोहि४	पूभा४	पूभा१	पूफा४
जल	जल	सौम्य	दहन	नीर	नीर	जल

श्रावण कृष्णा ६ बुध कर्केऽर्क प्रवेशः। वारात् ४तेजी,दुर्भिक्ष। नक्षत्रात् ५ दुर्भिक्ष,तेजी। वार नाम मंदाकिनी,नृपसुखी। नक्षत्र नाम मंदा द्विज सुखी। संक्रांति काल अपर रात्री,नर सुखी। संक्रांति मुख दक्षिणे मुख ,ईशान दृष्टि,पश्चिमे गमनं। विष्टि कर्णे बैठी,तेजी। अश्व वाहन,सिंह उपवाहन,स्थैर्य। धूम्र वस्त्र,कुन्ता आयुध,ताम्र पात्र,चित्रान्न भोजन, हलिद्रा लेपन,क्षत्रिय जाति,कमल पुष्प,गुंजा भूषण,नील कंचुकी,वृद्धा अवस्था,ईशान मुख,रसना वाद्य,भक्तियुता अवस्था। संक्रांति हस्ते पीत फल,लक्ष्मी प्राप्ति। संक्रांति निवास संधि,वैश्य गृहे तेजी,खंड वृष्टि। मु.४५ मंदी। संक्रांति पुण्यम् पर दिने प्रथम प्रहरे पुण्यकाल। वत्स निवास उत्तरे। त्रैमासिक राहु पश्चिमे। शुक्रोदय पूर्वे।

श्रावण कृष्णा ३० गुरु गण ९९, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ २५ ३४ २३	३ ६ २९ ४५	२ १६ ५५ २	१ २९ ३ ५५	११ ० ४६ ५	१० २५ ३१ ४३	४ २५ ३१ ४३
३६ २२	११ ३९ +	१२ ५८	६६ ५०	३ २४ +	३ ११	३ ११
पूफा४	पुष्य१	आद्रा४	मृग२	पूभा४	पूभा२	पूफा४
जल	जल	सौम्य	दहन	नीर	नीर	जल

गोचर ग्रहाः

अगस्तास्तः,बुधास्तप. गुरु,शुक्र उदयपूर्वे

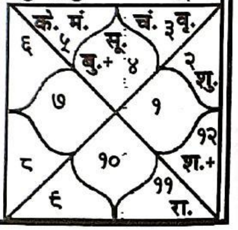

श्रावण शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः१९४७ (लघुगण १०० से ११५)

दिनांक २५ जुलाई से ९ अगस्त २०२५ ई.तक। वर्षा ऋतुः। रविर्देवता दक्षिणायनेः,उत्तरगोलेः। (श्रावण शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १६	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
१००	२५	उत्पात	१.	शु.	४२	१	पु	२४	५४	व्र	५	२	किं	१३	१	३३/३३	६/३	७/२५	६	२६	कर्क	३ ७ ४५ ५६	५७ २	उफायांभौम ४५/१३ग.३६/१८ ,नक्तव्रतारंभः A तृतीयागुर्जर,स्वर्णगौरीव्रतं,
१०१	२६	मानस	२.	श.	४१	१३	श्ले	२५	४३	सि	१/१८	५६/१८	बा	११	३७	१६	४	२४	१०	३०	सिंह ३५/४३	३ ८ ४३ ०	५७ ३	चंद्रोदयमु.३०सम, B हस्तउपाकर्म,
१०२	२७	मुद्गर	३.	सू.	४१	४२	म	२७	४८	व	५६	३३	तै	११	२७	१६	५	२३	११	१	सिंह	३ ९ ४० ४	५७ ४	,करपात्रीजीजयं.सफरमा.२मुस.,सुकृत३व्रत,श्रावणीतीज,मधुश्रवा A
१०३	२८	ध्वजः	४.	चं.	४३	३९	पू	३१	८	प	५५	४७	व	१२	४०	१३	५	२३	१२	२	कन्या ४७/१५	३ १० ३७ ९	५७ ५	भ.१२/४०उप.४३/३९या.,बुधोदयपूर्वे ४६/५ वरदचतुर्थी,दुर्वागणपतिव्रतं,मंचावासाव्रतप्रा.,
१०४	२९	प्रजापति	५.	मं.	४६	२७	उ	३५	३६	शि	५५	५३	बा	१५	२७	१०	६	२२	१३	३	कन्या	३ ११ ३४ १५	५७ ६	नाग५,नागदंष्ट्व्रतं,रोटकव्रत,मंगलागौरीव्रतं
१०५	३०	आनंदः	६.	बु.	५०	२३	ह	४१	२	सि	५६	४७	कौ	१८	२५	७	७	२१	१४	४	कन्या	३ १२ ३१ २१	५७ ७	आद्रायांशुक्र ३१/४८ग ७०/१०,कन्यायांभौम ५३/३३ श्रीकल्किजयंति,वर्ण६,ऋग्वेदीय B
१०६	३१	चर	७.	वृ.	५५	१	चि	४७	१०	सा	५८	६	ग	२२	४२	४	७	२१	१५	५	तुला १४/६	३ १३ २८ ३३	५७ ८	भ.५५/१ उप.,शीतलासप्तमी पूजनं,गोस्वामी तुलसीदासजयं.,
१०७	१	गदः	८.	शु.	५९	५७	स्वा	५३	३५	शु	५६	३६	वि	२७	२६	४	७	२१	१६	६	तुला	३ १४ २५ ४१	५७ ९	भ.२७/२६या.,मार्गीबुध १३/४५बु.३/४ ।५३/४४ग १०/१७ दुर्गाष्टमी,
१०८	२	शुभः	९.	श.	६०	०	वि	५९	५८	शु	६०	०	बा	३२	२४	१	८	२०	१७	७	वृश्चि ४३/२३	३ १५ २२ ५१	५७ १०	बिच्छुड़ा ४३/२३उप. C कोरो। कल्कि जयं.१०सायंकाले,वीरपुली
१०९	३	मृत्युः	९.	सू.	४	५२	अ	६०	०	शु	१	६	कौ	४	५२	३२/५८	८	२०	१८	८	वृश्चिक	३ १६ २० ३	५७ ११	आश्लेषायांरवि २०/५७,सं.स्त्री.नपुं.चं.सू.वाहनगज,उपवाहनकूकड़ C
११०	४	मानसः	१०	चं.	६	१८	अ	५	५४	ब्र	२	१७	ग	६	१८	५४	६	१६	१६	६	वृश्चिक	३ १७ १७ १९	५७ १२	भ.४१/५ उप., D दधिव्रतंप्रा.(दधिभक्षणत्यागःभाद्र.शु.१२तक)
१११	५	मृद्गर	११	मं.	१२	५१	ज्ये	११	३	ऐं	२	५०	वि	१२	५१	५१	१०	१८	२०	१०	धनु ११/३	३ १८ १४ २९	५७ १३	भ.१२/५१या.,बिच्छुड़ा ११/३ या.पवित्रा११व्रतं स्मार्तापवित्रा११व्रतं वैष्णवा,
११२	६	ध्वजः	१२	बु.	१५	२७	मू	१५	६	वै	२	३५	बा	१५	२७	४८	१०	१८	२१	११	धनु	३ १९ ११ ४४	५७ १५	वक्रीपूभा३कुंभेशनि ३२/२६ग ३/४७ त्वष्टाआदित्य१२व्रतं,प्रदोष,पवित्रारोपणं, D
११३	७	प्रजापति	१३	वृ.	१६	४९	पू	१८	१	वि	१/२५	५६/१६	तै	१६	४९	४५	११	१७	२२	१२	मकर ३३/२६	३ २० ८ ५९	५७ १६	पुनर्वसु१गुरु ३१/५६ग १२/२ E वेदारंभश्रावणीउपाकर्म यजु,ऋग्,अथर्व.,रक्षाबंधन
११४	८	आनंदः	१४	शु.	१६	५३	उ	१९	४३	आ	५७	५	व	१६	५३	४२	१२	१६	२३	१३	मकर	३ २१ ६ १९	५७ १७	भ.१६/५३उप.४६/१९या.,वीरदुर्गादासराठौड़३८५वींचतुर्दशीजन्मः।
११५	९	सुस्थिरः	१५	श.	१५	४२	श्र	२०	७	शो	५१	५५	ब	१५	४२	३९	१२	१६	२४	१४	कुंभ ४६/४५	३ २२ ३ ३५	५७ १८	पंचक ४६/४५उप.पूर्णिमाव्रतं, हयग्रीवजयं.तैत्तरीय,अमरनाथयात्रा,नारियल१५, E

गोचर ग्रहाः

गुरु,शुक्र,बुध उदय पूर्वे
बुध+शनि वक्री

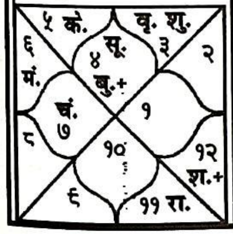

श्रावण शुक्ला ८ शुक्र
गण १०७, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५ ० ४३ ३१	३ ४ ५६ २४	२ १८ ३८ ४८	२ ८ २३ ६	११ ० १८ ५१	१० २५ ६ १७	४ २५ ६ १७
३६ १८	११ ३६ +	१२ ५८	७० १०	३ २४ +	३ ११	३ ११
उफा२	पुष्य.१	आर्द्रा४	आर्द्रा१	पूभा४	पूभा२	पूफा४
नीर	जल	सौम्य	सौम्य	नीर	नीर	जल

पांच भृगु इण मास में,बहु प्रज्ञा सुभिक्ष। भोग विलास बलात्कार बढ़े ,क्षोभ रोग दुर्भिक्ष।।१। श्रावणवदी एकादशी,रोहिणी करे सुगाल। क्षया द्वादशी रजस्वला,मिले रोग दुकाल।।२।। कर्क मकर दोय बेनड़ी,बैठत एकही वार। कै प्रजा को धणी मरे,के पड़े अणचिंत्यो काल।।३।। रोहिणी श्रावण वर्षे नहीं,नहीं पंचक जलधार। पाराशर ऋषि तो इम कहें,होसी हाहाकार।।४।। अश्वनी कृत्तिका चित्रिका,स्वात विशाखा मेघ। औगुण सारा गालसी,घण वर्षा फाटत मेघ।५। बादल पीत शीत जलदूरो,सुरंग जलद जल वर्षे। बादल हरियो चूवै छपरियों,श्याम घटा मन हरषै।।६।। आम्हां साम्हां बादला,पूरब पश्चिम धाय। घर्षण गाज बिजली पड़े,दस दिन झड़ी लगाय।।७।। दक्षिण से उत्तर बादला ,उत्तर दक्षिण जाय। खंड वृष्टि तो करवरो,मंडे तो झड़ी लगाय।।८।।

श्रावण शु.१५ शनिवार
गण ११५, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५ ५ ५७ ५६	३ ६ १३ ४५	२ २० २० ५६	२ १७ ३३ ३७	१० २९ ५० ४१	१० २४ ४० ५०	४ २४ ४० ५०
३६ १८	१० १७ मा	१२ २	७० १०	३ ४७ +	३ ११	३ ११
उफा३	पुष्य१	पुन.१	आर्द्रा४	पूभा३	पूभा२	पूफा४
नीर	जल	नीर	सौम्य	नीर	नीर	जल

गोचर ग्रहाः

बुधोदयपूर्वे मार्गी,
गुरु,शुक्रउदयपू.

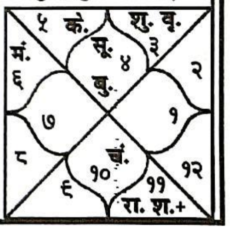

भाद्रपद कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः १६४७(लघुगण ११६से१२६)

दिनांक १० अगस्त से २३ अगस्त २०२५ई.तक। वर्षा/शरदऋतुः। रविर्देवता दक्षिणायनेः, उत्तरगोलेः। (श्रावण कृष्ण पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १४	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	हि. बं.	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति
११६	१०	मातंगः	१	सू.	१३	१७	ष	१६	२४	शो	४६	५२	कौ	१३	१७	३२/३६	६/१२	७/१४	२५	१५	कुंभ	३ २३ ० ५६	५७ २०
११७	११	अमृतः	२	चं.	६	५२	श	१७	३८	अ	४१	२	ग	६	५२	३२	१३	१३	२६	१६	कुंभ	३ २३ ५८ १७	५७ २१
११८	१२	काणः	३	मं.	५	३१	पू	१५	२	सु	३४	३४	वि	५	३१	२६	१३	१३	२७	१७	मीन ०/४१	३ २४ ५५ ४०	५७ २३
११९	१३	लुंबकः	४	बु.	०	२४	उ	११	४५	धृ	२८	३४	बा	०	२४	२६	१४	१२	२८	१८	मीन	३ २५ ५३ ४	५७ २५
०	०	०	५	बु.	५४	४६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०
१२०	१४	मैत्रः	६	वृ.	४८	५८	रे	७	५८	शू	२१	१०	ग	२१	५३	२३	१४	१२	२९	१९	मेष ७/५८	३ २६ ५० ३०	५७ २६
१२१	१५	वज्रः	७	शु.	४२	५१	अ	३/५५	५६/४६	गं	१३	३६	वि	१५	५५	२०	१४	१०	३०	२०	मेष	३ २७ ४७ ५६	५७ २७
१२२	१६	ध्वजः	८	श.	३६	४६	कृ	५५	४३	वृ	५/५८	५७/२७	बा	६	४८	१७	१५	६	३१	२१	वृषभ १३/४५	३ २८ ४५ २५	५७ २९
१२३	१७	प्रजापति	९	सू.	३१	०	रो	५१	५६	व्या	५०	१०	तै	३	५३	१४	१५	६	३२	२२	वृषभ	३ २९ ४२ ५६	५७ ३१
१२४	१८	आनंदः	१०	चं.	२५	१९	मृ	४८	४६	ह	४३	१७	वि	२५	१९	११	१६	८	१	२३	मिथुन २०/२२	४ ० ४० २९	५७ ३२
१२५	१९	चरः	११	मं.	२०	३६	आ	४६	१५	व	३६	५७	बा	२०	३६	७	१७	७	२	२४	मिथुन	४ १ ३८ २	५७ ३३
१२६	२०	गदः	१२	बु.	१६	३२	पु	४४	३५	सि	३१	१७	तै	१६	३२	४	१७	७	३	२५	कर्क ३०/०	४ २ ३५ ३८	५७ ३५
१२७	२१	शुभः	१३	वृ.	१३	२५	पु	४३	५७	व्य	२६	२०	व	१३	२५	०	१७	५	४	२६	कर्क	४ ३ ३३ १५	५७ ३७
१२८	२२	मृत्युः	१४	शु.	११	२३	श्ले	४४	३०	व	२२	२०	श	११	२३	३१/५८	१७	५	५	२७	सिंह ४४/३०	४ ४ ३० ५२	५७ ३८
१२९	२३	पद्मः	३०	श.	१०	३६	म	४६	१६	प	१९	२१	ना	१०	३६	५४	१८	४	६	२८	सिंह	४ ५ २८ ३०	५७ ४०

पुनर्वसुशुक्र ४४/४४ग ७१/२०

भ.३७/४१ उप.,मार्गीपुक्ष२बुध ३३/२८ग १०८/५६ A चतुर्थीयुक्ता

भ.५/३१ या.,बहुलाचौथचंद्रोदय ६/२२बजे,संकटचतुर्थीव्रतं ,कज्जलीतीज A

नागपंचमी, B ,हलधर६,शिक्षकदिवस

E आश्लेषायांबुध ३/४७ग ६५/३३,ज्वालामुखी ३१/० या सिंहस्थसूर्ये,गोगा९

भ.४८/५८ उप.,पंचक ७/५८या. चंद्रषष्ठी(ऊबछठ)चंद्रोदय १०/५४बजे B

भ.१५/५५ या.,हस्तेभौम ६/३२ ग ३६/१४,ज्वालामुखी ५/४६उप.,स्वतंत्रतादिवस७९वां C

ज्वालामुखी ३६/४६या.४५/४३उप.,श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रतवैष्णवा(सप्तमीविद्धानकार्या) D

भ.५८/६उप.मघायांसिंहेऽर्क १७/४८,सं.स्त्री.पु.चं.सू.वाहनमेष,उपवाहनकच्छप बाढ E

भ.२५/१९या., C श्रीकृष्णजयंतिव्रतंस्मार्ता(अर्द्धरात्रिव्यापिनीअष्टमी)चंद्रोदय १२/१६ बजे,

कर्केशुक्र २०/१७ अजा११ व्रतंस्मार्ता वैष्णवा, D चंद्रोदय १२/३बजे,मन्वादि

वछबारस,वत्सपूजन,निम्बार्क११व्रतं,प्रदोष,पर्युषणपर्व प्रा.जैनचतुर्थीपक्षे

भ.१३/२५उप.४२/२४या.,जैनपर्यूषणपर्वप्रा.पंचमीपक्षे H अमा १०/३६ या.,

कन्यायांभानु २७/५४,शरदऋतुःप्रारंभ,पुक्षेशुक्र ६/३२ग ७१/५८ G

पुनर्वसु२गुरु ५२/१०ग.१०/१७दैवकार्येऽमा,श्रीशक्तिपूजा,मातृ३०,कुशाग्रहणी H

G कुशाग्रहणीअमा.११/२३उप.पिठोरी३०सायं, अन्वाधान,पितृकार्येऽमा.,

गोचर ग्रहाः

अगस्तास्त,बुधोदयपूर्वे गुरु व शुक्र उदय पू.

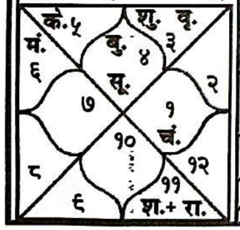

भाद्रपद कृ.८ शनिवार गण १२२, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५ १० ३३ ०	३ १४ ४४ ७	२ २१ ४५ १३	२ २६ १ ५१	१० २६ २४ ११	१० २४ १८ ३४	४ २४ १८ ३४
३६ १४	१०८ ५६	१२ २	७१ २०	३ ४७ +	३ ११	३ ११
हस्त१	पुष्य१	पुन.१	पुन.२	पूभा३	पूभा२	पूफा४
सौम्य	जल	नीर	नीर	नीर	नीर	जल

भाद्रपद कृष्ण पक्ष ६ सूर्य सिंहेऽर्क प्रवेशः। वारात् ५दुर्भिक्ष, तेजी। नक्षत्रात् ६खर्प्परयोग,उपद्रवः। वार नाम घोरा,शूद्रसुखी। नक्षत्र नाम मंदा,द्विज सुखी। पूर्वे मुख,नैऋत दृष्टि,दक्षिणे गमनं। गर कर्णे बैठी,सम। हस्तीवाहन,गर्दभ उपवाहन,श्री प्राप्ति। रक्त वस्त्र,धनुषआयुध,लोह पात्र,पय भोजन,गौरोचन लेपन,मृग जाति, बिल्व पुष्प,मुकुट भूषण,श्वेत कंचुकी,प्रौढ़ा अवस्था,वायव्य मुख, पद्य वाद्य,दुर्मुखी अवस्था। संक्रांति हस्ते श्वेत फल,सुखी। संक्रांति निवास समुद्रे,माली गृहे सुभिक्ष,मंदी। मु.४५मंदी। संक्रांति पुण्यम् स्वदिने प्रथम प्रहरे पुण्यकाल। वत्स निवास उत्तरे। त्रैमासिक राहु उत्तरे। शुक्रोदय पूर्वे।

भाद्रपद कृष्णा३० शनि गण १२६, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५ १५ ७ ४३	३ २५ ७ ५६	२ २३ ६ ३२	३ ४ २१ ४४	१० २८ ५७ ४०	१० २३ ५६ १६	४ २३ ५६ १६
३६ १४	८५ ३३	१२ २	७१ ५८	३ ४७ +	३ ११	३ ११
हस्त२	श्ले.३	पुन.१	पुक्ष.१	पूभा३	पूभा२	पूफा४
सौम्य	अमृत	नीर	जल	नीर	नीर	जल

गोचर ग्रहाः

अगस्तास्त बुध,गुरु,शुक्र उदयपूर्वे

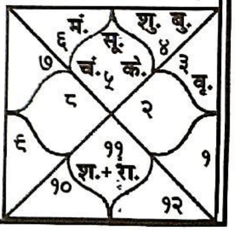

भाद्रपद शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः१९४७(लघुगण १३०से१४४)

दिनांक २४ अगस्त से ७ सितम्बर २०२५ई.तक।
शरद्‌ऋतुः। रविर्देवता दक्षिणायने:,उत्तर गोले:।
(भाद्रपद शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

लघुगण	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति
१३०	२४	छत्रः	१.	सू.	११	४	पू	४९	१९	शि	१७	२२	ब	११	४	३१/५४	६/१८	७/४	७	२९	कन्या ५/२२	४ ६ [illegible]	[illegible]
१३१	२५	श्रीवत्सः	२.	चं.	१२	५०	उ	५३	३२	सि	१६	२२	कौ	१२	५०	५०	१८	२	८	१	कन्या	४ ७ [illegible]	[illegible]
१३२	२६	सौम्यः	३.	मं.	१५	४६	ह	५९	४६	सा	१६	१६	ग	१५	४६	४६	१९	१	९	२	कन्या	४ ८ [illegible]	[illegible]
१३३	२७	काल	४.	बु.	१९	४३	चि	६०	०	शु	१६	५६	वि	१९	४३	४२	२०	०	१०	३	तुला ३२/१६	४ ९ [illegible]	[illegible]
१३४	२८	चर	५.	बृ.	२४	२३	चि	४	४६	शु	१८	८	बा	२४	२३	३८	२०	०	११	४	तुला	४ १० [illegible]	[illegible]
१३५	२९	गदः	६.	शु.	२९	२३	स्वा	११	१०	ब्र	१९	३८	तै	२९	२३	३४	२१	६/५९	१२	५	तुला	४ ११ [illegible]	[illegible]
१३६	३०	शुभः	७.	श.	३४	२२	वि	१७	४१	ऐं	२१	८	ग	१	५२	३०	२१	५८	१३	६	वृश्चि १/३	४ १२ [illegible]	[illegible]
१३७	३१	मृत्युः	८.	सू.	३८	५५	अ	२३	४२	वै	२२	२०	वि	६	३६	२७	२२	५६	१४	७	वृश्चिक	४ १३ [illegible]	[illegible]
१३८	१	पद्मः	९.	चं.	४२	४०	ज्ये	२९	३	वि	२२	५९	बा	१०	४७	२३	२१	५५	१५	८	धनु २९/३	४ १४ [illegible]	[illegible]
१३९	२	छत्रः	१०	मं.	४५	२४	मू	३३	२४	प्री	२२	५४	तै	१४	२	१९	२२	५४	१६	९	धनु	४ १५ [illegible]	[illegible]
१४०	३	श्रीवत्सः	११	बु.	४६	५३	पू	३६	३४	आ	२१	५६	व	१६	८	१५	२३	५३	१७	१०	मकर ५२/३	४ १६ [illegible]	[illegible]
१४१	४	सौम्य	१२	बृ.	४७	५	उ	३८	३०	सौ	१९	५६	ब	१६	५९	११	२४	५२	१८	११	मकर	४ १७ [illegible]	[illegible]
१४२	५	धूम्राः	१३	शु.	४६	२	श्र	३९	११	शो	१९	५५	कौ	१६	३	७	२४	५२	१९	१२	मकर	४ १८ [illegible]	[illegible]
१४३	६	प्रवर्धमान	१४	श.	४३	४५	ध	३८	४२	अ	१२	५६	ग	१४	५३	३	२४	५०	२०	१३	कुंभ ५/६	४ १८ [illegible]	[illegible]
१४४	७	राक्षसः	१५	सू.	४०	२४	श	३७	८	सु	८	२	वि	१२	५	३०/५९	२६	४९	२१	१४	कुंभ	४ १९ [illegible]	[illegible]

चंद्रोदयमु.३०स्थिरता Aमन्वादि,हरितालिकाव्र.हस्तिगौरीव्र., E गोत्रिरात्रव्र.,देवझूलनी
श्रीरामदेवबाबारी२,रविलावलमा.३मुस.,वराहजयं.,नक्तव्रतोद्यपन
भ.४७/४४ उप.,मघायांसिंहेबुध ३४/४८ ग ६६/१९ हस्तरक्षाबंधन सामवेदीउपाकर्म, A
भ.१९/४३ या., सिद्धिविनायकव्रतचंद्रदर्शननिषेध,जैनसंवत्सरी पर्व,
ऋषिपंचमी,अंगीराजंय.,गर्गजयं.,दिगंबरपर्युषणपर्व प्रारंभ
सूर्यषष्ठी,ललिता६व्रतं,स्कन्ददर्शनं, बलदेवव्रतं,संवत्सरीपूर्ण(जैन),पंचमीपक्षे
भ.३४/३२ उप.,बिच्छुड़ा १/३ उप.भागवतसप्ताहप्रा.
भ.६/३९ या.,पूफायांरवि ६/२४,सं.स्त्री.नपुं.सू.सू.वाहनमहिष,उपवाहन हाथी C
बुधास्तपूर्वे ४/५९,बिच्छुड़ा २९/३ या.नवमीव्रतं, Dमहालक्ष्मीव्रत मूलभेपूर्ण।
आश्लेषायांशुक्र १५/२३ ग ७२/३५ दशावतारव्रतं,तेजादशम,खेजड़लीब.दि.२९५वां, D
भ. १९/८ उप. ४६/५३या.,कुंभेपूभा१राहुसिंहेपूफा३केतु २५/८ पद्मा११व्रतंसर्वे,भागवता E
चित्रायांभौम ३२/३४ ग ४०/१,पूफायांबुध १९/३३ ग १०७/५२ निम्बार्क१२व्रतं,वामनजयं मौनव्रत्ता F
प्रदोष,शिक्षक दिवस, बारहवफात G कुमारीणांसंध्यापू.,महालयश्राद्धारंभः
भ.४३/४५ उप.,अगस्त्योदय ३६/१२,पंचक ५/६ उप. अनन्त१४व्रतं Fरंभः,श्रवण१२व्र.
भ. १२/५ या.,खग्रासचंद्रग्रहण १२/४६ बजेप्रा.,पूर्णिमाश्राद्धः,प्रोष्ठपदी१५,फूलडोलचार G
C बहुगर्मी,महालक्ष्मीव्रतं.अनुभेप्रा,राधा८,दूर्वाष्टमी,गौरीगणपतिपू.,

गोचर ग्रहाः

अगस्तास्तः
बुध,गुरु,शुक्र उदयपूर्वे

भाद्रपद शुक्ला८ सूर्य गण १३७ , इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५ २० २१ ४२	४ ६ ४५ ८	२ २४ ३३ २४	३ १३ ५७ ३४	१० २८ २७ २२	१० २३ ३० ५२	४ २३ ३० ५२
३९ १४	८८ १९	१० १७	७१ ५८	३ ४७ +	३ ११	३ ११
हस्त४	मघा३	पुन.	पुष्य४	पूभा३	पूभा१	पूफा४
सौम्य	अमृत	नीर	जल	नीर	नीर	जल

दुर्भिक्ष छत्रभंग भय,रविवार हो पांच। भ्रष्टाचार आतंक बढ़े,बाहुबली घर जांच।।१।। भादों वदी शनि अमा,रौरव योग लेख। पिता पुत्र में द्वेष हो,घाटा तोटा देख।।२।। भादों में जल नाड़ी ग्रह,अति वृष्टि कहीं काल। कहीं सुभिक्ष कहीं जलदाह जनता हाल बेहाल।।३।। ग्रहण समय हो बादला,अथवा झबूके बीज। अवगुण सारा गल गया, सखिया खेलो तीज।।४।। अर्धबिम्ब आकश में,इन्द्र धनुष हो जाय। हीर कहे सुन माघजी,अन्न न मोले कोय।।५।। इन्द्रधनुष पूरव उत्तर ,प्रात समय में देख। अचानक वर्षा होय,हीर कहे सुण माघजी।।६।। सांझ समय पश्चिम धनुष,दिन तीसरे मेह। दक्षिण जल हाण,वर्षे तो झड़ी लागे माघजी।।७।। तीतर पंखी बादली,विधवा काजल रेख। वा वर्षे वा घर करे,इण में मीन न मेख।।८।।।

भाद्रपद शुक्ला १५ सूर्य गण १४४, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५ २४ ५८ २१	४ १७ ५२ ५३	२ २५ ४५ २७	३ २२ २४ १९	१० २८ ० ५२	१० २३ ८ ३७	४ २३ ८ ३७
४० १	१०७ ५२	१० १७	७२ ३५	३ ४७ +	३ ११	३ ११
चित्रा१	पूफा२	पुन.३	आश्ले.२	पूभा३	पूभा१	पूफा३
दहन	जल	नीर	अमृत	नीर	नीर	जल

गोचर ग्रहाः

बुधास्तपू.,अगस्त्योदय
गुरु,शुक्रउदयपू.,चंद्रग्रहण

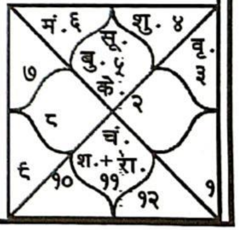

MANAV ASTRO & VEDIC 8586094945 , 8302680069

आश्विन कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः१९४७(लघुगण १४५ से १५८)

दिनांक ८ सितम्बर से २१ सितम्बर २०२५ ई.तक। शरद्‌ऋतुः। रविर्देवता दक्षिणायने:,उत्तरगोले:। (भाद्रपद कृष्ण पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १४	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	[illegible]	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
१४५	८	मूसलः	१	चं.	३६	११	पू	३४	४१	धृ	२ २०	५५ ५६	बा	८	१७	३० ५५	६ २५	६ ४७	२२	१५	मीन ३० १७	[illegible]	[illegible]	प्रतिपदाश्राद्ध B डेडरोंबहुवर्षा,मघायांसिंहेशुक्र १६ ३८ ग ७३ १३,कन्यायांबुध ४७ १८ C
१४६	९	सिद्धिः	२	मं.	३१	१२	उ	३१	३२	गं	४९	३	तै	३	४१	५१	२६	४६	२३	१६	मीन	[illegible]	[illegible]	भ.५६ ३१ उप., द्वितीयाश्राद्ध C दशरथललिताव्रतं,सप्तमीश्राद्ध ७ २३ उप.
१४७	१०	उत्पात	३	बु.	२५	३६	रे	२७	५२	वृ	४१	४४	वि	२५	३६	४७	२७	४५	२४	१७	मेष २७ ५२	[illegible]	[illegible]	भ.२५ ३६ या.,पंचक २७ ५२ या. तृतीयाश्राद्ध ,चतुर्थीव्रतं चंद्रोदय ३ बजे,
१४८	११	मानसः	४	गु.	१९	२५	अ	२३	५०	ध्रु	३४	१०	बा	१९	२५	४३	२६	४४	२५	१८	मेष	[illegible]	[illegible]	उफायांबुध ५३ ६ ग १०५ ७,ज्वालामुखी २३ ५० उप.चतुर्थीश्राद्ध A चंद्रषष्ठी
१४९	१२	मुद्गर	५	शु.	१३	२३	भ	१९	४१	व्या	३६	३१	तै	१३	२३	३९	२७	४३	२६	१९	वृषभ ३३ ४२	[illegible]	[illegible]	पुनर्वसु३गुरु १७ ४१ ग ७ ५०, ज्वालामुखी १३ २३ या,पंचमीश्राद्ध १३ २३ या.,षष्ठीश्राद्ध, A
१५०	१३	ध्वजः	६	श.	७	२३	कृ	१५	३६	ह	१८	५५	व	७	२३	३५	२८	४२	२७	२०	वृषभ	[illegible]	[illegible]	भ.७ २३ उप. ३४ ० या.,उफायांरवि ५४ ३७,सं.स्त्री.पु.सू.सू.वाहनजंबुक,उपवाहन B
१५१	१४	प्रजापति	७	सू.	०	३६	रो	११	४८	व	११	२८	ब	०	३६	३१	२८	४०	२८	२१	मिथुन ३६ ३७	[illegible]	[illegible]	तुलेभौम ३२ ९ महालक्ष्मीव्रतं चंद्रोदय १२ ७ बजेपूर्ण, अष्टमीश्राद्धः ० ३६ उप. D
०	०	०	८	सू.	५६	८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०	D अशोकाष्टमी, सूर्यसप्तमी,राष्ट्रभाषा दिवस
१५२	१५	आनंदः	९	चं.	५१	२५	मृ	७	२७	सि	४ २७	५७ ३४	तै	२३	४६	२८	२८	४०	२९	२२	मिथुन	[illegible]	[illegible]	मातुनवमीश्राद्ध,सौभाग्यमातृनवमी
१५३	१६	चर	१०	मं.	४७	२४	आ	५	४५	व	५१	३९	व	१९	२४	२४	२९	३९	३०	२३	कर्क ४९ २१	[illegible]	[illegible]	भ.१९ २४ उप. ४७ २४ या.दशमीश्राद्ध
१५४	१७	गदः	११	बु.	४४	२१	पु	३	५३	प	४६	२८	ब	१५	५२	२०	२९	३७	३१	२४	कर्क	[illegible]	[illegible]	कन्यायांऽर्कः १९ ५४ एकादशीश्राद्ध,इन्दिरा११व्रतंसर्वे.,
१५५	१८	शुभः	१२	गु.	४२	२२	पु	३	२	शि	४२	१२	कौ	१३	२१	१६	३०	३६	१	२५	कर्क	[illegible]	[illegible]	सन्यासिनांमहालय,द्वादशीश्राद्ध,निम्बार्क१२व्रतं
१५६	१९	मृत्युः	१३	शु.	४१	४७	श्ले	३	१९	सि	३८	५४	ग	१२	४	१२	३१	३५	२	२६	सिंह ३ १९	[illegible]	[illegible]	भ.४१ ४७ उप.,हस्तेबुध ३९ ४५ ग १०२ २४ प्रदोष, कलियुगादि१३ गोदानफलत्रयोदशीश्राद्ध,
१५७	२०	पद्मः	१४	श.	४२	६	म	४	४९	सा	३६	३६	वि	११	५८	८	३१	३४	३	२७	सिंह	[illegible]	[illegible]	भ.११ ५८ या., शस्त्रादिक अपमृत्यु,१४श्राद्धं
१५८	२१	छत्रः	३०	सू.	४३	५८	पू	७	३५	शु	३५	१७	च	१३	३	४	३१	३३	४	२८	कन्या ३३ ३४	[illegible]	[illegible]	देवपितृकार्येऽमा,सर्वपितृश्राद्धंअज्ञाततिथिश्राद्धः, संध्यापूजनपूर्ण,

गोचर ग्रहाः

बुधास्त पूर्वे,अगस्त्योदय गुरु,शुक्र उदय पूर्वे

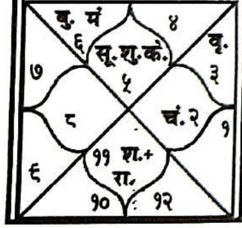

आश्विन कृ.७+८ सूर्य गण १५१, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५ २९ ३८ ३५	५ ० २२ १४	२ २६ ५३ २१	४ ० ५२ ५४	१० २७ ३४ २१	१० २२ ४६ २१	४ २२ ४६ २१
४० १	१०५ ७	७ ५०	७३ १२	३ ४७ +	३ ११	३ ११
चित्रा	उफा	पुन.३	मघा.१	पूभा३	पूभा	पूफा३
दहन	नीर	नीर	अमृत	नीर	नीर	जल

आश्विन कृष्णा ११ बुध कन्याऽर्क प्रवेशः। वारात् ४ तेजी,दुर्भिक्ष। नक्षत्रात् ५ दुर्भिक्ष तेजी। वार नाम मन्दाकिनी,नृपसुखी। नक्षत्र नाम ध्वांक्षी,वैश्य सुखी। संक्रांति काल मध्यान्हे,वैश्य सुखी। दक्षिणे मुख, ईशान दृष्टि,पश्चिमे गमनं। बालव कर्णे बैठी,सम। व्याघ्र वाहन अश्व उपवाहन ,भय। पीत वस्त्र गदा आयुध,चांदी पात्र,खीरभोजन ,कुंकुम लेपन,वणिक् जाति,जूही पुष्प,कंकण भूषण,पर्ण कंचुकी, कुमारी अवस्था,दक्षिण मुख,भेरी वाद्य,भोगा अवस्था। हस्ते श्वेत फल,प्रजा सुखी। संक्रांति निवास संधि,वैश्य गृहे खण्ड वृष्टि,तेजी। मु.३०स्थिरता। संक्रांति पुण्यम् स्वदिने द्वितीय यामे पुण्यकालः। वत्स निवास पूर्वे। त्रैमासिक राहु उत्तरे। शुक्रोदय पूर्वे।

आश्विन कृष्णा३० सूर्य गण १५८ , इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ ४ १८ ४८	५ १२ ३४ १	२ २७ ४८ १४	४ ९ २५ २१	१० २७ ७ ५१	१० २२ २४ ५	४ २२ २४ ५
४० १	१०२ २४	७ ५०	७३ १२	३ ४७ +	३ ११	३ ११
चित्रा४	हस्त१	पुन.३	मघा१	पूभा३	पूभा१	पूफा३
दहन	सौम्य	नीर	अमृत	नीर	नीर	जल

गोचर ग्रहाः

बुधास्त पूर्वे गुरु व शुक्र उदय पूर्वे

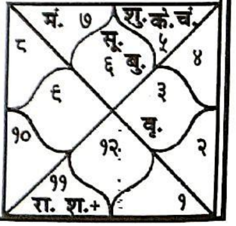

आश्विन शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः१९४७(लघुगण१५९ से १७४)

दिनांक २२ सितम्बर से ७ अक्टूम्बर २०२५ ई.तक।
शरद् ऋतुः। रविर्देवता दक्षिणायनेः,उत्तर/दक्षिणगोलेः।
(आश्विन शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रेः)

	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १६	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	[illegible]	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति
१५९	२२	श्रीवत्सः	१.	चं.	४६	५९	उ	११	३४	शु	३४	५५	किं	१५	२८	३०/०	६/३२	६/३२	५	२९	कन्या	५ ४ [illegible]	५९ [illegible]
१६०	२३	सौम्य	२.	मं.	५१	०	ह	१६	३६	ब्र	३५	२३	बा	१९	०	२९/५६	३२	३०	६	३०	तुला ४६/३१	५ ५ [illegible]	५९ [illegible]
१६१	२४	काल	३.	बु.	५५	४५	चि	२२	२७	ऐं	३६	२६	तै	२२	५२	५२	३३	२९	७	१	तुला	५ ६ [illegible]	५९ [illegible]
१६२	२५	सुस्थिर	४.	वृ.	६०	०	स्वा	२८	४८	वै	३७	४९	व	२७	५९	४८	३३	२८	८	२	तुला	५ ७ [illegible]	५९ [illegible]
१६३	२६	मातंगः	४.	शु.	०	४९	वि	३५	१५	वि	३६	१६	वि	०	४९	४४	३३	२७	९	३	वृश्चि १८/३८	५ ८ [illegible]	५९ [illegible]
१६४	२७	अमृतः	५.	श.	५	५१	अ	४१	३१	प्री	४०	३०	बा	५	५१	४०	३४	२६	१०	४	वृश्चिक	५ ९ [illegible]	५९ [illegible]
१६५	२८	काणः	६.	सू.	१०	३२	ज्ये	४७	२	आ	४१	१५	तै	१०	३२	४२	३४	२६	११	५	धनु ४७/२	५ १० [illegible]	५९ [illegible]
१६६	२९	लुंबकः	७.	चं.	१४	२३	मू	५१	३८	सौ	४१	१६	व	१४	२३	३६	३५	२५	१२	६	धनु	५ ११ [illegible]	५९ [illegible]
१६७	३०	मैत्रः	८.	मं.	१७	१२	पू	५५	६	शो	४०	२६	ब	१७	१२	३२	३५	२३	१३	७	धनु	५ १२ [illegible]	५९ ०
१६८	१	वज्रः	९.	बु.	१८	४८	उ	५७	१९	अ	३८	३७	कौ	१८	४८	२९	३५	२३	१४	८	मकर १०/३९	५ १३ [illegible]	५९ [illegible]
१६९	२	ध्वजः	१०.	वृ.	१९	७	श्र	५८	१८	सु	३५	४८	ग	१९	७	२५	३५	२१	१५	९	मकर	५ १४ [illegible]	५९ [illegible]
१७०	३	प्रजापति	११.	शु.	१८	०	ध	५८	३	धृ	३१	५८	वि	१८	०	२१	३६	२०	१६	१०	कुंभ २८/१०	५ १५ [illegible]	५९ [illegible]
१७१	४	आनंदः	१२.	श.	१५	५९	श	५५	४५	शू	२७	१४	बा	१५	५९	१७	३७	१९	१७	११	कुंभ	५ १६ [illegible]	५९ [illegible]
१७२	५	चरः	१३.	सू.	१२	४४	पू	५४	२९	गं	२१	३९	तै	१२	४४	१३	३६	१८	१८	१२	मीन ३९/४८	५ १७ [illegible]	५९ [illegible]
१७३	६	गदः	१४.	चं.	८	३३	उ	५१	२९	वृ	१५	२२	व	८	३३	९	३७	१७	१९	१३	मीन	५ १८ [illegible]	५९ [illegible]
१७४	७	शुभः	१५.	मं.	३	३०	रे	४७	५५	ध्रु	८	३०	ब	३	३०	५	३८	१६	२०	१४	मेष ४७/५५	५ १९ [illegible]	५९ [illegible]

तुलेभानु:२४/३७,रविदक्षिणगोले,दिनरातसमान शारदीयनवरात्राप्रारंभ,घटस्थापन A
चंद्रोदयमु.३०स्थिरता, B अश्वनिराजनप्रा. C चित्रायांबुध२७/३९ग१०४/१५
पूफायांशुक्र१२/२८ग७३/१५,स्वात्यांभौम३१/३९ग४०/४६रविलाखरमा.४मुस.
भ.२७/५९उप.,A श्रीअग्रसेनजयं.५१४६वी,मातामह(नाना) पार्वणश्राद्ध, B
भ.०/४९या.,विच्छुड़ा१८/३८ उप. उपांगललिता५व्रतंमध्यान्हे।
हस्तेरवि२३/५४,सं.स्त्री.नपुं.सू.सू.वाहनचातक,उपवाहनहाथीबहुगर्मी। C
वक्रीपूभा२शनि२/५ग१/४४,विच्छुड़ा४७/२या.,पद्मकयोगतीर्थस्नानेपुण्यदः।
भ.१४/२३उप.४९/२५या., सरस्वतीअव्हानमूलमे E शस्त्रास्त्रपू.,गांधीजयं.,शास्त्रीजयं.,
सरस्वतीपूजनपूषामे,होमाष्टमी,भद्रकालीअवतार,बैंकअर्धलेखाबंदी
तुलेबुध५/४० दुर्गा९,उत्तामेबलीदा,अश्वनिराजनपूर्ण,मन्वादि F आकाशदीप१मास
भ.४९/३४उप.,विजया१०,शमीपूजा,सीमोलंघनं,मन्वादि,सरस्वतीश्रवणप्र.च.विसर्जन D
भ.१८/०या.,बुधोदयप३३/४९,पंचक२८/१०उप. पापांकुशा११व्रतंसर्वे
स्वात्यांबुध४३/२९ग८४/४८ निम्बार्क११व्रतं शनिप्रदोषमहापुण्यदः। G भवणं,अश्वयुजीकर्म
उफायांशुक्र७/३१ग७४/१ D बौद्धावतार१०सायं,नवरात्रपारणा,राजपट्टाभिषेक, E
भ.३३/३३उप.३९/२९या.,कोजागिरी१५.चंद्रोदयव्यापिनी,शरद१५व्रतं,तिलतेल F
पुनर्वसु४कर्केगुरु४९/११ग४१/१,पंचक४७/५५या.कन्यायांशुक्र४६/३६,कार्तिकस्नानप्रा,नवान्न G

गोचर ग्रहाः
बुधास्त पूर्वे
गुरु,शुक्र उदय पूर्वे

आश्विन शुक्ला८मंगल
गण १६७ , इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ १० २३ २८	५ २८ ० ४१	२ २८ ५८ ४८	४ २० २४ ३१	१० २६ ३७ ८	१० २१ ५५ २८	४ २१ ५५ २८
४० ४६	१०४ १५	७ ५०	७३ १५	१ ४४ +	३ ११	३ ११
स्वा.२	चित्रा	पुन.३	पूफा.३	पूभा२	पूभा१	पूफा३
पवन	दहन	नीर	जल	नीर	नीर	जल

पांच सोम इण मास में,जनता में संतोष। धन धान्य हो मोकलां,बढ़े राज को कोष।।१। आसोज वदी एकादशी,बुध सोम में आय। गाय भैस अरु चौपगा,महंगा मोल बिकाय।।२।। बुध उदय आसोज में,थल महँ कमल उगंत। समो होत चहुँ दिशी,अब क्यूं चिंता करंत।।३।। पवन थम्यो ध्वज थिर,अंग पसीनों आय। माखी चटकै माघजी,सांज्यों मेह वरसाय। ।४।। अमल पिघल्यो,गुड़ की हो गई गार। टर्र टर्र कूकें डेडरों,आसी मेह अबार।।५। गौ बाछड़ा फुदके घणा,तीतरगूंगा थाय। मछली ऊछलें नीर में,इन्द्र महोत्सव आय।।६।। सांडां बिल मुख ढांकियां,टीटोड़ी टहकाय। नयना निद्रा आलसै,इन्द्र महोत्सव थाय।।७।। झींगरिया बोले घर्णी,नाड़ी तत्यैया नीर। मेघ घुमड़ै माघजी,पूरब बहै समीर।।८।।

आश्विन शु.१५+१मंगल
गण १७४ , इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ १५ ६ १७	६ ६ ३१ १३	२ २६ ५३ ४३	४ २८ ५८ ४५	१० २६ २४ ५५	१० २१ ३३ १३	४ २१ ३३ १३
४० ४६	८४ ४८	७ ५०	७४ १	१ ४४ +	३ ११	३ ११
स्वा.३	स्वा.१	पुन.३	उफा१	पूभा२	पूभा१	पूफा३
पवन	पवन	नीर	नीर	नीर	नीर	जल

गोचर ग्रहाः
बुधोदय पश्चिमे
गुरु,शुक्र उदय पूर्वे

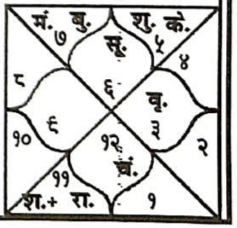

कार्तिक कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः१९४७ (लघुगण १७५से१८८)

दिनांक ८ अक्टू. से २१ अक्टूम्बर २०२५ ई.तक। शरद्ऋतुः। रविर्देवता दक्षिणायनेः,दक्षिणगोलेः। (आश्विन कृष्णपक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

लघुगण	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १४	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	[illegible]	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति
०	०	०	१.	मं.	५८	११	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०
१७५	८	मृत्युः	२.	बु.	५२	२१	अ	४३	५७	व्या	१/१३	४३/४८	तै	२५	१६	२६/१	६/३६	६/१७	२१	१५	मेष	५ २० १७ ५५	५९ १९
१७६	९	पद्मः	३.	वृ.	४६	१९	भ	३९	४६	व	४५	५५	व	१९	२०	२६/५७	३९	१३	२२	१६	वृषभ ४३/४७	५ २१ १७ १६	५९ २१
१७७	१०	छत्रः	४.	शु.	४०	६	कृ	३५	४२	सि	३८	१३	ब	१३	१२	५३	३९	१३	२३	१७	वृषभ	५ २२ १६ ३६	५९ २३
१७८	११	श्रीवत्सः	५.	श.	३४	२४	रो	३१	४६	व्य	३०	३३	कौ	७	१५	४६	४०	१२	२४	१८	वृषभ	५ २३ १६ ६	५९ २६
१७९	१२	सौम्यः	६.	सू.	२६	६	मृ	२८	२०	व	२३	१७	ग	१	४५	४५	४०	१०	२५	१९	मिथुन ०/४	५ २४ १५ ३३	५९ २८
१८०	१३	कालः	७.	चं.	२४	२३	आ	२५	२६	प	१६	३०	ब	२४	२३	४१	४१	६	२६	२०	मिथुन	५ २५ १५ २	५९ ३०
१८१	१४	सस्थिरः	८.	मं.	२०	२७	पु	२३	२४	शि	१०	१८	कौ	२०	२७	३७	४१	६	२७	२१	कर्क ६/५५	५ २६ १४ ३४	५९ ३४
१८२	१५	मातंगः	९.	बु.	१७	२६	पु	२२	१८	सि	४	५३	ग	१७	२६	३३	४१	७	२८	२२	कर्क	५ २७ १४ ४	५९ ३६
१८३	१६	अमृतः	१०.	वृ.	१५	३५	श्ले	२२	१८	सा	०/१८	५६/४१	वि	१५	३५	३०	४२	६	२९	२३	सिंह २२/१८	५ २८ १३ ३६	५९ ३७
१८४	१७	काणः	११.	शु.	१४	५५	म	२३	३०	शु	५४	३	बा	१४	५५	२६	४३	५	३०	२४	सिंह	५ २९ १३ २५	५९ ३९
१८५	१८	तुंबकः	१२.	श.	१५	३२	पू	२६	०	ब्र	५२	२४	तै	१५	३२	२२	४४	४	१	२५	कन्या ४१/५५	६ ० १३ ८	५९ ४१
१८६	१९	मैत्रः	१३.	सू.	१७	२६	उ	२९	४२	ऐं	५१	४४	व	१७	२६	१८	४४	४	२	२६	कन्या	६ १ १२ ५१	५९ ४३
१८७	२०	वज्रः	१४.	चं.	२०	३२	ह	३४	३१	वै	५१	५३	श	२०	३२	१४	४५	३	३	२७	कन्या	६ २ १२ ३६	५९ ४६
१८८	२१	ध्वांक्षः	३०.	मं.	२४	३८	चि	४०	१५	वि	५२	४२	ना	२४	३८	१०	४६	२	४	२८	तुला ७/२३	६ ३ १२ २४	५९ ४५

वायुसेनादिवस
भ.१६/२०उप.४६/१९ या., दशरथललिताव्रतं,
करवाचौथ चंद्रोदय ५/३६ बजे,
चित्रायांरवि ३/५७,सं.स्त्री.पु.सू.सू.वाहनगज,उपवाहनडेडरों बहुवर्षा।
भ. २६/६ उप. ५६/४५या., स्कन्दषष्ठी,सायंपद्मकयोग,तीर्थस्नानेपुण्यद
अहाई८,रात्रौकालाष्टमी,
विषायांभौम ७/११ ग ४१/३१,विषायांबुध २४/५० ग ५५/५६
भ.४६/३२ उप.,हस्तेशुक्र ५५/५६ ग ७४/२५,ज्वालामुखी २२/१८उप.
भ.१५/३५ या.,ज्वालामुखी १५/३५ या.
तुलेऽर्कः४६/४८ रमा११व्रतसर्वे,गोवत्स१२प्रदोषे व्यापिनी,
रमा११व्रतं,शनिप्रदोषमहापुण्य, धनतेरस,यमायदीपदानं,धनवन्तरीजयं., A
भ.१७/२६उप.४६/५६या.,रूप१४,नरक१४ A गोत्रिरात्रव्रत दीपावलीतक।
दीपावली,कुबेरपूजा, कमलाज,महालक्ष्मीपूजनं कालरात्रि
देवपितृकार्येऽमा, महावीरस्वा.निर्वाण,बलीपूजासायंव्यापपिनी,दामोदरपूजा,

गोचर ग्रहाः

बुधोदयपश्चिमे,शनिवक्र गुरु,शुक्र उदय पूर्वे

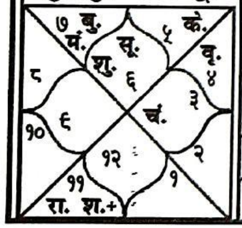

कार्तिक कृष्णा८ मंगल गण १८१, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ १९ ५५ ७	६ १९ २४ ५४	३ ० १७ ५३	५ ७ ३६ ५३	१० २६ १२ ४२	१० २१ १० ५७	४ २१ १० ५७
४० ४६	८४ ४८	२ ५३	७४ १	१ ४४ +	३ ११	३ ११
स्वा.४	स्वा.४	पुन.४	उफा.४	पूभा.२	पूभा.१	पूफा.३
प्रचंड	प्रचंड	नीर	नीर	नीर	नीर	जल

कार्तिककृष्णा ११शुक्र तुलेऽर्क प्रवेशः। वारात् ३मंदी,सुभिक्ष। नक्षत्रात् ४ तेजी दुर्भिक्षः। वार नाम मिश्रा,पशुसुखी। नक्षत्र नाम घोरा,शूद्रसुखी । संक्रांति काल अर्धरात्री, राक्षस सुखी। पूर्वे मुख,नैऋत दृष्टि,दक्षिणे गमनं। तैतिल कर्णे सूती,मंदी। गर्दभ वाहन,मीढा उपवाहन,सुभिक्ष। पाण्डुर वस्त्र,दण्ड आयुध,कांस्य पात्र,पक्वान्न भोजन,माटी लेपन,पक्षी जाति,केतकी पुष्प,मूंगा भूषण,भूर्जपत्र कंचुकी,युवा अवस्था,उत्तर मुख, डमरु वाद्य,हस्या अवस्था। हस्ते कृष्णफल,मृत्युदाई। संक्रांति निवास समुद्रे,मालाकार गृहे,सुभिक्ष,मंदी। मु.३० स्थिरता। संक्रांति पुण्यम् पर दिने प्रथम प्रहरे पुण्यकाल। वत्स निवास पूर्वे। त्रैमासिक राहु उत्तरे। शुक्रोदय पूर्वे।

कार्तिक कृष्णा३० मंगल गण १८८, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ २४ ४५ ४३	६ २६ ८ २५	३ ० ३८ ६	५ १६ १७ ३	१० २६ ० २८	१० २० ४८ ४१	४ २० ४८ ४१
४१ ३१	५५ ५६	२ ५३	७४ २५	१ ४४ +	३ ११	३ ११
विशा.२	विशा.२	पुन.४	हस्त.२	पूभा.२	पूभा.१	पूफा.३
प्रचंड	प्रचंड	नीर	सौम्य	नीर	नीर	जल

गोचर ग्रहाः

बुधोदय पश्चिमे,शनिवक्र गुरु,शुक्र उदय पूर्वे

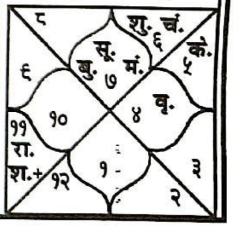

कार्तिक शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः १९४७(लघुगण १८९से२०३)

	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	अं. दि.	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति
१८९	२२	धूम्राः	१.	बु.	२९	३३	स्वा	४६	२७	प्री	५३	५७	ब	२९	३३	२८/६	६/४६	५/५८	५	२९	तुला	[illegible]	[illegible]
१९०	२३	प्रवर्धमान	२.	वृ.	३४	४३	वि	५२	५४	आ	५५	२१	बा	२	८	२	४७	५९	६	३०	वृश्चि ३६/१७	[illegible]	[illegible]
१९१	२४	राक्षसः	३.	शु.	३९	५२	अ	५९	१४	सौ	५६	३६	तै	७	१७	२७/५९	४७	५९	७	१	वृश्चिक	[illegible]	[illegible]
१९२	२५	मूसलः	४.	श.	४४	३५	ज्ये	६०	०	शो	५७	२३	व	१२	१३	५६	४७	५७	८	२	वृश्चिक	[illegible]	[illegible]
१९३	२६	काणः	५.	सू.	४८	३०	ज्ये	४	५५	अ	५७	३७	ब	१६	३२	५३	४७	५७	९	३	धनु ४/५५	[illegible]	[illegible]
१९४	२७	लुंबक	६.	चं.	५१	१४	मू	९	४४	सु	५६	५९	कौ	१९	५२	४९	४८	५६	१०	४	धनु	[illegible]	[illegible]
१९५	२८	मैत्रः	७.	मं.	५३	३	पू	१३	२८	धृ	५५	२३	ग	२२	९	४६	४९	५५	११	५	मकर २६/५	[illegible]	[illegible]
१९६	२९	वज्रः	८.	बु.	५३	२६	उ	१५	५८	शू	५२	४५	वि	२३	१५	४३	४९	५५	१२	६	मकर	[illegible]	[illegible]
१९७	३०	ध्वजः	९.	वृ.	५२	३१	श्र	१७	१३	गं	४९	११	बा	२२	५८	४०	५०	५४	१३	७	कुंभ ४७/१३	[illegible]	[illegible]
१९८	३१	प्रजापति	१०	शु.	५०	२३	ध	१७	१४	वृ	३४	३८	तै	२१	२७	३७	५१	५३	१४	८	कुंभ	[illegible]	[illegible]
१९९	१	आनंदः	११	श.	४७	११	श	१९	८	ध्रु	३९	११	व	१८	४७	३४	५१	५३	१५	९	मीन ५६/३५	[illegible]	[illegible]
२००	२	चरः	१२	सू.	४३	४	पू	१४	४	व्या	३३	१	ब	१५	७	३१	५२	५२	१६	१०	मीन	[illegible]	[illegible]
२०१	३	गदः	१३	चं.	३८	१४	उ	११	१३	ह	२६	१५	कौ	१०	३९	२८	५२	५२	१७	११	मीन	[illegible]	[illegible]
२०२	४	शुभः	१४	मं.	३२	४९	रे	७	४४	व	१८	५९	ग	५	३१	२४	५३	५१	१८	१२	मेष ७/४४	[illegible]	[illegible]
२०३	५	मृत्युः	१५	बु.	२७	४	अ	३/५०	५६/४२	सि	११	२९	ब	२७	४	२१	५४	५०	१९	१३	मेष	[illegible]	[illegible]

दिनांक २२ अक्टूम्बर से ५ नवम्बर २०२५ ई.तक।
शरद/हेमन्तऋतुः। रविर्देवता दक्षिणायनेः,दक्षिणगोलेः।
(कार्तिक शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

वृश्चिकेभानु ४५/१६,हेमंतऋतुप्रा. **कार्तिकनववर्षव्यापारी सं.२०८२** **A**
बिच्छुड़ा ३६/१७ उप. **चंद्रोदयमु.४५मंदी, यम२, भाई२,यमुनास्नान,चित्रगुप्तपू.**
स्वात्यांरवि २७/५७,सं.स्त्री.नपुं.सू.सू.वाहनमंडूक,उपवाहनहाथी,बहुगर्मी। **B**
भ.१२/१३ उप.४४/३५ या.,वृश्चिकेबुध ५/३३ **चतुर्थीव्रतं दुर्वागणपतिव्रतं,मन्वावासाव्रतपूर्ण**
चित्रायांशुक्र ४०/५६ ग ७४/३७ बिच्छुड़ा ४/५५ या.**लाभपंचमी,सौभाग्यपंचमी,पाण्डव** **C**
सूर्यषष्ठी डालाछठ A प्रा.,गोवर्धनपूजा,अन्नकूट C पंचमी,ज्ञानपंचमीजैन,
भ.५३/३ उप.,अनुराधायांबुध ४३/५३ ग ६२/१,वृश्चिकेभौम ३४/४,**कल्पादि,सहस्त्रार्जुनजयंति**
भ.२३/१५ या.,भौमास्तप.५४/२६ **गोपाष्टमीसायंव्यापिनी,चौमासीअष्टाप्रा.जैन**
पंचक ४७/१३ उप.अक्षय९,कुष्मांड ९त्रेतायुगादि, रंगनाथजयं.,आंवलानम्
B जमादिलावलमा.५मुस.,संयुक्तराष्ट्रदि.E वैकुण्ठ१४मध्यरात्रौव्यापिनी,जैनचौमासी
भ.१८/४७ उप.४७/११ या.,तुलेशुक्र २/३४,वक्रीबुध ४५/४५ बु.७/७ ।४४/३० ग १२५/३२ **देवप्रबोधिनी११** **D**
अनुराधायांभौम २३/१ ग ४३/८,मन्वादि,निम्बार्क११व्रतं
प्रदोष, **D व्रतंसर्वे.,तुलसीविवाह,चातुर्मासपूर्ण,भीष्मपंचकव्रतप्रारंभ,कालिदासजयं.**
भ.३२/४६ उप.५६/५७ या.,वक्रीविषायांबुध ५/१३ ग ६/२६ पंचक ७/४४ या. **हरिवासररेवतीच.चर्णे,** **E**
बुधास्तप.१३/४५,शत्तभिषा४कुंभेराहुपूभा२सिंहेकेतु १५/३२ **देववदीवाली,तुलसीविवाहपूर्ण** **F**
F दीपदानं भीष्मपंचकव्रतपू.,कार्तिकस्नानपू.,नानकजं.पुष्करस्नानमेला,मन्वादि,पूर्णिमाव्रत

गोचर ग्रहाः

बुधोदयपश्चिमे,शुक्रोदयपू.
रात्रौ भौमास्त पश्चिमे

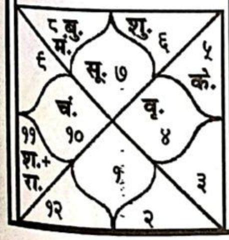

कार्तिक शुक्ला ८ बुध
गण १९६ , इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ ० १७ ५६	७ ३ ३७ ४१	३ १ १ १२	५ २६ १२ ५४	१० २५ ४६ ३१	१० २० २३ १५	४ २० २३ १५
४१ ३१	६२ १	२ ५३	७४ ३७	१ ४४ +	३ ११	३ ११
विशा४	अनु१	पुन.४	चित्रा१	पूभा२	पूभा१	पूफा३
प्रचंड	प्रचंड	नीर	दहन	नीर	नीर	जल

पांच मंगल उदंगल घणों उग्र प्रदर्शन देख। भय उपजे जन व्यापार में,लिखे विधाता लेख।।१।। कार्तिक वदी प्रतिपदा,टूटी बेसत मास। व्यापारी टूटे घणा,रजस्वला दोश विनाश।।२।। देव दीवाली भरणी में,दुर्भिक्ष दुःख बहु रोग। चतुग्रह मिगसिर मिले,राष्ट्रक्षय संयोग।।३।। सातम भौम काति सुदी,पूनम भरणी देख। महंगाई दुःख द्वंद जन,दुर्भिक्ष रोग को लेख।।४।। ओस जमे शिर घास,मोतीसा झलमल करें। शीतल पवन सुवास,वृद्ध हुआ मेह माघजी।।५।। कुरज उड़ी कुरलाय,मकड़ी जाल जू रोपिया। बूंद द्रवै नहिं आय,वृद्ध हुआ मेघ माघजी।।६।। बादल रंग सुनहरा,अरुण झलक जो होय। श्याम घटा घन घोर तो,मेघा बरसे तोय।।७।। सूर शशि के कुण्डल हो, श्वेत शुभ्र पचरंग। मेघ धडूके माघजी,घर घर चालै गंग।।८।।

कार्तिक शुक्ला१५ बुध
गण २०३, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ ५ १२ ५१	७ ३ ११ २१	३ १ २१ २५	६ ४ ५५ १९	१० २५ ३४ १७	१० २० ० ५९	४ २० ० ५९
४३ ८	९ २९ +	२ ५३	७४ ३७	१ ४४ +	३ ११	३ ११
अनु.१	विशा४	पुन.४	चित्रा४	पूभा२	पूभा१	पूफा३
जल	पवन	दहन	दहन	जल	नीर	जल

गोचर ग्रहाः

शनि+बुधवक्री,शुक्रोदयपूर्वे
भौमास्त प.,बुधास्त प.

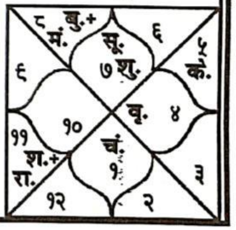

मार्गशीर्ष कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः१९४७(लघुगण २०४से२१८)

दिनांक ६ नवम्बर से २०नवम्बर २०२५ ई.तक।
हेमन्त ऋतुः। रविर्देवता दक्षिणायने:, दक्षिणगोले:।
(कार्तिक कृष्ण पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

लघुगण	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टैण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	इ.	मध्यलग्न	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति
२०४	६	लुंबकः	१.	वृ.	२१	७	कृ	५५	३३	व्य	३/२६	५५/३५	कौ	२१	७	२७/१८	६/५५	५/४६	२०	१४	वृषभ १३/३६	६ १९ १४ ११	६० २२
२०५	७	मैत्रः	२.	शु.	१५	१२	रो	५१	३४	प	४७	५२	ग	१५	१२	१५	५५	४६	२१	१५	वृषभ	६ २० १४ ३४	६० २४
२०६	८	वज्रः	३.	श.	६	३६	मृ	४७	५८	शि	४०	२८	वि	६	३६	१२	५६	४८	२२	१६	मिथुन १६/४६	६ २१ १५ १	६० २६
२०७	९	ध्वांक्षः	४.	सू.	३	५४	आ	४४	५६	सि	३३	२५	बा	३	५४	६	५६	४८	२३	१७	मिथुन	६ २२ १५ २५	६० २८
०	०	०	५.	सू.	५९	२४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०
२०८	१०	धूम्राः	६.	चं.	५५	३३	पु	४२	३८	सा	२६	५९	ग	२७	२८	६	५७	४७	२४	१८	कर्क ३८/१२	६ २३ १५ ५५	६० ३०
२०९	११	प्रवर्धमान	७.	मं.	५२	४०	पु	४१	१७	शु	२१	१४	वि	२४	७	२	५८	४६	२५	१९	कर्क	६ २४ १६ २५	६० ३१
२१०	१२	राक्षसः	८.	बु.	५०	५१	श्ले	४०	५९	शु	१६	२१	बा	२१	४५	२६/५९	५८	४६	२६	२०	सिंह ४०/५६	६ २५ १७ २	६० ३२
२११	१३	मूसलः	९.	वृ.	५०	१९	म	४१	५४	ब्र	१२	२१	तै	२०	३५	५६	५८	४६	२७	२१	सिंह	६ २६ १७ ३७	६० ३४
२१२	१४	सिद्धिः	१०.	शु.	५१	३	पू	४४	३	ऐं	६	२०	व	२०	४१	५३	५९	४५	२८	२२	कन्या ५६/५४	६ २७ १८ १५	६० ३६
२१३	१५	उत्पात	११.	श.	५३	५	उ	४७	२९	वै	७	१९	ब	२२	४	५०	७/०	४४	२९	२३	कन्या	६ २८ १८ ५५	६० ३८
२१४	१६	मानस	१२.	सू.	५६	१८	ह	५२	२	वि	६	१९	कौ	२४	४१	४७	१	४३	३०	२४	कन्या	६ २९ १८ ३६	६० ३९
२१५	१७	मुद्गरः	१३.	चं.	६०	०	चि	५७	३१	प्री	६	१०	ग	२८	२३	४४	२	४४	१	२५	तुला ३४/४६	७ ० २० १५	६० ४२
२१६	१८	ध्वजः	१३.	मं	०	२९	स्वा	६०	०	आ	६	४५	व	०	२९	४१	३	४३	२	२६	तुला	७ १ २१ २	६० ४३
२१७	१९	धूम्राः	१४.	बु.	५	२३	स्वा	३	३९	सौ	७	४९	श	५	२३	३७	४	४२	३	२७	वृश्चि ५३/२८	७ २ २१ ४५	६० ४५
२१८	२०	प्रवर्धमान	३०.	वृ.	१०	४३	वि	१०	५	शो	६	६	ना	१०	४३	३४	५	४३	४	२८	वृश्चिक	७ ३ २२ ३४	६० ४६

विषायांरवि ४५/३२, स्वात्यांशुक्र २४/६ ग ७४/४१ पद्मकयोगे ४५/३२ उप. ५५/३३ या., पुष्करस्नान **A**
भ. ४३/२४ उप., अशून्यशून्यव्रतपूर्ण, **A** दान महत्पुण्य
भ. ६/३६ या., सौभाग्यसुन्दरी३ व्रतं, चतुर्थीव्रतं २३ बजे।
भ. ५५/३३ उप.,
भ. २४/७ या.,
वक्रीगुरु ३६/५६ वृ. ३/१ । ४३/३५ ग २/४१ श्रीकालभैरवाष्टमी
भ. ३०/४१ उप. ५१/३ या., नेहरुजयं., बालदिवस
उत्पत्ति११व्रतंस्मार्ता, वैतरणीव्रतं,
वृश्चिकेऽर्कः ३६/५७ व्रत११निम्बार्क
विषायांशुक्र ६/४६ ग ७५/१२ प्रदोष,
भ. ०/२९ उप. ३२/५६ या., **B** तपोव्रतं, पुंसवनव्रतंउद्यापन
अनुराधायांरवि ५७/२६, बिच्छुड़ा ५३/२८ उप. पितृकार्येऽमा वस्या, गौरी **B**
ज्येष्ठायांभौम ५५/४१ ग ४३/५५ देवकार्येऽमा

गोचर ग्रहाः

बुध, भौम अस्त प.
बुध, शनि, गुरुवक्र,

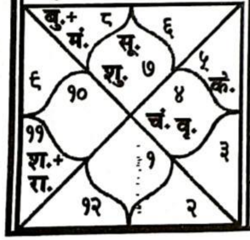

मार्गशीर्ष कृष्णा ८ बुध
गण २१०, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ १० १४ ५०	७ २ ४ ५५	३ १ ४१ ४०	६ १३ ३८ ५	१० २५ २२ ४	१० १९ ३८ ४३	४ १९ ३८ ४३
४३ ८	६ २९ +	२ ५३	७४ ४१	१ ४४ +	३ ११	३ ११
अनु.३	विशा.४	पू.षा.४	स्वा.३	पू.भा.२	शत.४	पू.फा.२
प्रचंड	प्रचंड	नीर	पवन	नीर	जल	जल

मार्गशीर्ष कृष्णा १२सूर्य वृश्चिकेऽर्कः प्रवेशः। वारात् ३ मंदी, सुभिक्ष। नक्षत्रात् ३ सुभिक्ष, मंदी। वार नाम घोरा, शूद्र सुखी। नक्षत्र नाम ध्वांक्षी, वैश्य सुखी। संक्रांति काल रात्रौ, राक्षस सुखी। पूर्वे मुख, नैऋत्त दृष्टि, दक्षिणे गमनं। तैतिल कर्णे सूती मंदी। गर्दभ वाहन, मेढ़ा उपवाहन, सुभिक्ष। पाण्डुर वस्त्र, दण्ड आयुध, कांस्य पात्र, पक्वान्न भोजन, माटी लेपन, पक्षी जाति, केतकी पुष्प, मूंगा भूषण भूर्जपत्र कंचुकी, युवा अवस्था, उत्तर मुख, डमरु वाद्य, हास्य अवस्था। हस्ते श्वेत फल, सुखी। संक्रांति निवास संधि, वैश्य गृहे तेजी, खण्ड वृष्टिः। मु.३० स्थिरता। संक्रांति पुण्यं स्व दिने तृतीय यामे पुण्य काल वत्स निवास पूर्वे। त्रैमासिक राहु पूर्वे। शुक्रोदय पूर्वे।

मार्गशीर्ष कृष्णा३० गुरु
गण २१८, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ १५ ५९ ५८	७ ० ४९ ०	३ १ २६ ५३	६ २३ ३७ ७	१० २५ ८ ६	१० १९ १३ १७	४ १९ १३ १७
४३ ८	६ २९ +	२ ४१ +	७५ १२	१ ४४ +	३ ११	३ ११
अनु.४	विशा.४	पू.षा.४	विशा.२	पू.भा.२	शत.४	पू.फा.२
प्रचंड	प्रचंड	नीर	प्रचंड	नीर	जल	जल

गोचर ग्रहाः

गुरु+शनि+बुधवक्री
भौमास्तप., शुक्रोदयपू.

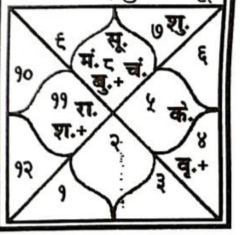

मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः१९४७ (लघुगण २१९से२३२)

दिनांक २१ नवम्बर से ४ दिसम्बर २०२५ई.तक। हेमन्त ऋतुः। रविर्देवता दक्षिणायने,दक्षिणगोलेः (मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	हि.बं.	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति
२१९	२१	राक्षसः	१.	शु.	१५	५४	अ	१६	४३	अ	१०	२४	ब	१५	५४	२६/३१	७/६	५/४२	५	२९	वृश्चिक	७ ४ २३ २४	६० ४७
२२०	२२	मूसलः	२.	श.	२०	४०	ज्ये	२२	३४	सु	११	१५	कौ	२०	४०	२८	८	४२	६	१	धनु ३३/३४	७ ५ २४ १४	६० ४९
२२१	२३	सिद्धिः	३.	सु.	२४	४०	मू	२७	३७	धृ	११	३६	ग	२४	४०	२७	७	४१	७	२	धनु	७ ६ २५ ६	६० ५०
२२२	२४	उत्पात	४.	चं.	२७	३१	पू	३१	३७	शू	११	१०	वि	२७	३१	२५	७	४१	८	३	मकर ४७/१८	७ ७ २५ ५९	६० ५१
२२३	२५	मानस	५.	मं.	२९	१०	उ	३४	२४	गं	९	४९	बा	२९	१०	२४	७	४१	९	४	मकर	७ ८ २६ ५४	६० ५३
२२४	२६	छत्रः	६.	बु.	२९	३०	श्र	३५	५६	वृ	७	२८	तै	२९	३०	२३	८	४२	१०	५	मकर	७ ९ २७ ५३	६० ५५
२२५	२७	श्रीवत्सः	७.	वृ.	२९	२४	ध	३६	१३	ध्रु	४/६	५६/४७	व	२९	२४	२१	९	४१	११	६	कुंभ ६/४	७ १० २८ ५२	६० ५६
२२६	२८	सौम्यः	८.	शु.	२९	२६	श	३५	२३	ह	५४	३३	ब	२९	२६	२०	१०	४२	१२	७	कुंभ	७ ११ २९ ५१	६० ५७
२२७	२९	कालः	९.	श.	२३	२५	पू	३३	३२	व	४८	३२	कौ	२३	२५	१९	१०	४२	१३	८	मीन १८/५६	७ १२ ३० ५२	६० ५९
२२८	३०	सुस्थिरः	१०	सु.	१९	५	उ	३०	५१	सि	४१	५५	ग	१९	५	१७	११	४१	१४	९	मीन	७ १३ ३१ ५४	६१ ०
२२९	१	मातंग	११	चं.	१४	१५	रे	२७	३०	व्य	३४	३६	वि	१४	१५	१५	१२	४२	१५	१०	मेष २७/३०	७ १४ ३२ ५६	६१ १
२३०	२	अमृत	१२	मं.	८	५३	अ	२३	४१	व	२७	१	बा	८	५३	१३	१२	४२	१६	११	मेष	७ १५ ३४ १	६१ ३
२३१	३	काणः	१३	बु.	३	१०	भ	१९	३६	प	१९	१२	तै	३	१०	१२	१४	४२	१७	१२	वृषभ ३३/३३	७ १६ ३५ ७	६१ ४
०	०	०	१४	बु.	५७	२६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०
२३२	४	लुंबकः	१५	वृ.	५१	२४	कृ	१५	२४	शि	११	१९	वि	२४	२५	११	१४	४२	१८	१३	वृषभ	७ १७ ३६ १३	६१ ५

धनेभानुः३३/३४,बुधोदयपूर्वे२५/२६,मार्गीशनि३७/३०श२०/२१।५/६०ग१/५७ चंद्रोदयमु.१५ A
बिच्छुडा३२/३४ या. जमादिलाखरमा.६मु., A तेजी,पुंसवनव्रतप्रा.वर्षपर्यन्त
भ.५६/५५ उप.,
भ.३७/३१ या.,मार्गीबुध४०/२९बु.७/०।४/३७ग३६/३२
वृश्चिकेशुक्र५/२७,श्रीपंचमीव्रत श्रीरामविवाहोत्सव,नागपंचमी दक्षिण
नरसीमेहताजयं.,स्कंदषष्ठी चंपाषष्ठी,
भ.२९/२४उप.५७/५५या.,अनुराधायांशुक्र४५/०ग७५/२४,पंचक६/४ उप.

कल्पादि
भ.४६/४० उप., B मोक्षदा११स्सर्वे, गीताजयंती,
भ.१४/१५ या.,मार्गीअनुराधायांबुध१६/४० ग.४६/४३ ,पंचक३७/३०या. B
अयोध्याश्रीरामजन्मभूमि मुक्तिदिवस३३वां प्रदोष,अनंगनबदेश्वर१३, C
भ.५७/२६ उप.,ज्येष्ठायांरवि४/४६ पिशाचमोचन१४श्राद्धः,शिव१४व्रतंप्रा.
Cश्रीत्रिपुरभैरवजयं.,सौम्यवारी१३यमायव्रतदानं
भ.२४/२५ या., पूर्णिमाव्रतंपुण्यंच बहुचराजीनोमेलो गुज.,नौजलसेनादिव. D
D दत्तजयंति१५प्रदोष व्यापिनी.

गोचर ग्रहाः

बुधोदयपूर्वे,भौमास्तप.
शुक्रोदयपूर्वे,शनि+बुधमार्गी

मार्गशीर्ष शु.८ शुक्रवार
गण २२६ , इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ २१ ५० ३८	७ १ ४२ १६	३ १ २ २३	७ ३ ३८ ५१	१० २५ १८ ५६	१० १८ ४७ ५१	४ १८ ४७ ५१
४३ ५५	२९ २२ मा	२ ४१ +	७५ २४	१ ५७ मा.	३ ११	३ ११
ज्ये.२	विशा४	पुन.४	अनु.१	पूभा२	शत्त४	पूफा२
पवन	प्रचंड	नीर	प्रचंड	नीर	जल	जल

महिमा बढ़े गुरुदेव की,पांच गुरु के वार। कहीं चाणक्य कहीं द्रोण हैं,कहीं कृष्ण गुरु साकार।१। मिगसिर सुदी सुं क्षय तिथि,लगते पांचों मास। जनरक्षक जगदीश है,छत्रभंग को जाँच।२। चौदस अंधारी मिगसरों,स्वाति नक्षत्र को देख। तब श्रावण वर्षे नहीं,इण में मीन न मेख।।३।। मिगसर वदी एकादशी,शनिवार संयोग। छत्रभंग जल शोष हो,प्रजानाश को भोग।४। चंद्रोदय जेष्ठा होवे, मिगसर केरे मास। छत्रभंग एकमास में,होवे राज विनाश।५। द्वैद्वै कुण्डल सूर शशि,एक समीप एक दूर। मेघा झड़ी लगावसी,नदियां चलसी पूर।।६।। शशि के कुण्डल एक व्है,रवि के कुण्डल दोय। दिवस तीसरे माघजी,निश्चय वर्षा होय।।७। धूम्र कुंड रजनीश के,एक समीप एक दूर। माघ कहे वर्षे नहीं,धरा उड़ावे धूर।।८।।

मार्गशीर्ष शुक्ला १५गुरु
गण २३२ , इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ २९ १४ १२	७ ५ ३२ ५२	३ ० ४९ १५	७ ११ ११ २०	१० २५ ३० ४५	१० १८ २८ ४९	४ १८ २८ ४९
४३ ५५	४९ ४३	२ ४१ +	७५ २४	१ ५७ मा	३ ११	३ ११
ज्ये.३	अनु.१	पुन.४	अनु३	पूभा२	शत्त४	पूफा२
पवन	प्रचंड	नीर	प्रचंड	नीर	जल	जल

गोचर ग्रहाः

भौमास्तप.,बुधोदयपू.
बुध,शनिमार्गी,शुक्रोदयपू.

MANAV ASTRO & VEDIC 8586094945 , 8302680069

पौष कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः१९४७ (लघुगण २३३से२४७)

दि.५ दिसम्बर से १९ दिसम्बर २०२५ ई.तक।
हेमंतऋतुः।रविर्देवता दक्षिणायनें,दक्षिणगोलेः।
卐 (मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

लघुगण	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	हि. बं.	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
२३३	५	मैत्रः	१.	शु.	४५	४३	रो	११	२३	सि	३/३०	५५/५६	बा	१८	३३	२६/६	७/१४	५/४२	१९	१४	मिथुन ३६/३२	७ १८ ३७ २०	६१ ६	
२३४	६	वज्रः	२.	श.	४०	३२	मृ	७	४१	शु	४८	४४	तै	१३	७	८	१५	४३	२०	१५	मिथुन	७ १९ ३८ २८	६१ ७	
२३५	७	ध्वांक्षः	३.	सू.	३५	५८	आ	४	२६	शु	४२	६	व	८	१५	७	१६	४३	२१	१६	कर्क ४७/३७	७ २० ३९ ३६	६१ ८	भ.६/१५ उप.३५/५८या.,
२३६	८	धूम्राः	४.	चं.	३२	१२	पु	२	०	ब्र	३६	५	ब	४	५	५	१७	४३	२२	१७	कर्क	७ २१ ४० ५१	६१ ९	ज्येष्ठायांशुक्र२१/२९ग७५/४० चतुर्थीव्रतं चंद्रोदय२२बजे
२३७	९	प्रवर्धमान	५.	मं.	२९	२६	पु	०/२५	५६/५२	ऐं	३०	५१	कौ	०	४६	४	१७	४३	२३	१८	सिंह ५६/५२	७ २२ ४२ २	६१ १०	मूलेधनेभौम२४ग४५/१४
२३८	१०	चरः	६.	बु.	२७	४६	म	६०	०	वै	२६	३२	व	२७	४६	३	१८	४४	२४	१९	सिंह	७ २३ ४३ १६	६१ ११	भ.२७/४६उप.५७/३४या.,
२३९	११	मूसलः	७.	वृ.	२७	२१	म	०	२६	वि	२३	१०	बा	२७	२१	१	२०	४४	२५	२०	सिंह	७ २४ ४४ २८	६१ १२	
२४०	१२	सिद्धिः	८.	शु.	२८	१३	पू	२	२२	प्री	२०	४८	कौ	२८	१३	०	२०	४४	२६	२१	कन्या १८/८	७ २५ ४५ ४२	६१ १३	कालाष्टमी,अष्टकाश्राद्ध,रुक्मणीअष्टमी,
२४१	१३	उत्पात	९.	श.	३०	२५	उ	५	२६	आ	१९	२५	ग	३०	२५	३५/५६	२०	४४	२७	२२	कन्या	७ २६ ४६ ५८	६१ १४	
२४२	१४	मानसः	१०	सू.	३३	४७	ह	९	४७	सौ	१८	५७	व	२	६	५७	२२	४४	२८	२३	तुला ४२/२५	७ २७ ४८ १५	६१ १५	भ.२/६ उप.३३/४७या.,पौष१०नाकोड़ामेला श्रीपार्श्वनाथजयं.,
२४३	१५	मुद्गर	११.	चं	३८	६	चि	१५	४	शो	१९	१७	ब	५	५६	५६	२२	४४	२९	२४	तुला	७ २८ ४९ ३१	६१ १६	शुक्रास्तपू.४३/२५ ,सफला११व्रतंसर्वे
२४४	१६	ध्वजः	१२	मं.	४३	५	स्वा	२१	६	अ	२०	१०	कौ	१०	३५	५५	२३	४५	३०	२५	तुला	७ २९ ५० ५०	६१ १७	मूलेधनेऽर्कः५८/८ सुरूपद्वादशी,मलमास प्रारंभ
२४५	१७	प्रजापति	१३.	बु.	४८	२८	वि	२७	२९	सु	२१	२५	ग	१५	४६	५३	२३	४५	१	२६	वृश्चि.१०/५३	८ ० ५२ ९	६१ १८	भ.४८/२८उप.,ज्येष्ठायांबुध२४/५७ग७६/३,बिच्छुड़ा१०/५३ उप प्रदोष
२४६	१८	आनंदः	१४	वृ.	५३	४१	अ	३३	५६	धृ	२२	४२	वि	२१	५	५२	२५	४५	२	२७	वृश्चिक	८ १ ५३ २८	६१ १८	भ.२१/५या.,मूलेधनेशुक्र४५/६ग७५/४०
२४७	१९	चरः	३०	शु.	५८	२५	ज्ये	३९	५६	शू	२३	४३	च	२६	३	५१	२५	४५	३	२८	धनु ३६/५६	८ २ ५४ ४६	६१ १८	बिच्छुड़ा३६/५६या. ज्वालामुखी ३६/५६उप.,दैवपितृकार्येऽमा ,पावागढ़यात्रागुजरात

गोचर ग्रहाः

भौमास्तप.,बुधोदयपूर्वे
शुक्रोदय पूर्वे

पौष कृष्णा ८ शुक्र
गण २४०, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८ २ ६ २३	७ १२ १० ४०	३ ० २४ ४५	७ २१ १५ ३६	१० २५ ४६ २७	१० १८ ३ १९	४ १८ ३ १९
४५ १४	४६ ४३	२ ४१ +	७५ ४०	१ ५७ मा	३ ११	३ ११
मूल१	अनु३	पुन.४	ज्ये.२	पूभा२	शत४	पूफा२
दहन	प्रचंड	नीर	पवन	नीर	जल	जल

पौष कृष्णा १२ मंगल धनेऽर्क प्रवेशः। वारात् ३ मंदी सुभिक्षः। नक्षत्रात् ३ मंदी,सुभिक्षः। वार नाम महोदरी,चौर सुखी। नक्षत्र नाम महोदरी,चौर सुखी। संक्रांति काल पूर्वान्हे,विप्रराज सुखी। दक्षिणे मुख,वायव्ये दृष्टि पश्चिमे गमनं। कौलव कर्णे खड़ी,तेजी। वाराह वाहन,बैल उपवाहन,पीड़ा। हरित वस्त्र,खड्ग आयुध,ताम्रपात्र शर्करा भोजन,चंदन लेपन,सर्पजाति बकुल पुष्प,मोती भूषण,हरित कंचुकी, तरुणी अवस्था,पश्चिम मुख,मृदंग वाद्य,ईति अवस्था। हस्ते पीतफल, लक्ष्मी प्राप्ति। संक्रांति निवास संधि,वैश्य गृहे तेजी,खण्डवृष्टिः। मु. १५तेजी। संक्रांति पुण्यम् स्व दिने प्रथम् प्रहरे पुण्यकालः। वत्स निवास दक्षिणे। त्रैमासिक राहु पूर्वे। शुक्रोदय पूर्वे। शुक्रास्त पूर्वे।

पौष कृष्णा ३० शुक्र
गण २४७, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८ ७ २६ ६	७ १८ ४५ १३	३ ० ५ ५६	८ ० ५ २१	१० २६ ० १०	१० १७ ४१ ४	४ १७ ४१ ४
४५ १४	७६ ३	२ ४१ +	७५ ४०	१ ५७ मा	३ ११	३ ११
मूल३	ज्ये.१	पुन.४	मूल१	पूभा२	शत४	पूफा२
दहन	पवन	नीर	दहन	नीर	जल	जल

गोचर ग्रहाः

भौमास्तप.,बुधोदयपूर्वे
शुक्रास्तपूर्वे

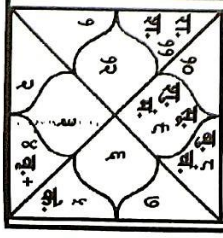

पौष शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः१९४७ (लघुगण२४८ से २६२)

दिनांक २० दिसम्बर से ३ जनवरी २०२६ ई.तक। हेमंत/शिशिरऋतुः। रविर्देवता दक्षिण/उत्तरायनें:,दक्षिणगोलेः। (पौष शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	पं. तिं.	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
२४८	२०	गदः	१.	श.	६०	०	मू	४५	११	गं	२४	१२	किं	३०	२२	३५/४६	७/२६	५/४६	४	२९	धनु	८ ३ ५६ ८	६१ १९	मकरेभानुः५६/३३,छोटादिन रविउत्तरायणे शिशिरऋतुप्रा.,ज्वालामुखी४५/११या.
२४९	२१	शुभः	१.	सू.	२	१९	पू	४६	२८	वृ	२३	५९	ब	२	१९	४८	२६	४६	५	३०	धनु	८ ४ ५७ ३०	६१ २०	वक्रीपुन३मिथुनेगुरु१२/२६ग ७/१ चंद्रोदयमु.३०स्थिरता स्नानआरोग्यव्रत२,
२५०	२२	मृत्युः	२.	चं.	५	११	उ	५२	३२	ध्रु	२२	५६	कौ	५	११	४९	२७	४७	६	१	मकर ५/१४	८ ५ ५८ ५२	६१ २०	रज्जवमा.७मुस.,
२५१	२३	लुंबकः	३.	मं.	६	४५	श्र	५४	२१	व्या	२०	५३	ग	६	४५	५१	२७	४७	७	२	मकर	८ ७ ० १४	६१ २०	भ.३६/५३उप.,किसान दिवस
२५२	२४	मैत्रः	४.	बु.	७	२	ध	५४	५६	ह	१७	४९	वि	७	२	५२	२८	४८	८	३	कुंभ २४/३८	८ ८ १ ३६	६१ २१	भ. ७/२ या.,बुधास्तपूर्वे२५/२६,पंचक३४/३८उप.
२५३	२५	वज्रः	५.	वृ.	६	३	श	५४	२०	व	१३	४६	बा	६	३	५३	२८	५०	९	४	कुंभ	८ ९ २ ५८	६१ २१	ईसाजन्म क्रिसमसडे। A राजेन्द्रसुरीश्वरजी जन्म एवं निर्वाण दिन.
२५४	२६	ध्वांक्षः	६.	शु.	३	५२	पू	५२	४३	सि	८	४८	तै	३	५२	५५	२८	५०	१०	५	मीन ३८/७	८ १० ४ १९	६१ २१	पूषायांभौम४६/१७ग४५/५२ जैन,गुरुगोविन्दसिंहजयंति
२५५	२७	धूम्राः	७.	श.	०	३६	उ	५०	१२	व्य	२/४७	५६/१८	व	०	३६	५६	२९	५१	११	६	मीन	८ ११ ५ ४३	६१ २२	भ.०/३६उप.३५/३२या.,मूलेधनेबुध३२/६ग१०५/३१ शाकंभरीनवरात्रारंभः A
०	०	०	८.	श.	५६	२७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०	
२५६	२८	प्रवर्षमान	९.	सू.	५१	३७	रे	४७	०	प	४९	१४	बा	२४	२	५७	२९	५१	१२	७	मेष ४७/०	८ १२ ७ ६	६१ २२	पंचक४७/०या.
२५७	२९	राक्षसः	१०.	चं.	४६	१६	अ	४३	१६	शि	४१	४६	तै	१८	५६	५९	२९	५३	१३	८	मेष	८ १३ ८ २९	६१ २२	पूषायांरवि११/१६,पूषायांशुक्र३०/३ग७५/५६
२५८	३०	मूसलः	११.	मं.	४०	३३	भ	३९	१३	सि	३४	०	व	१३	२४	२६/०	२९	५३	१४	९	वृषभ ५३/१०	८ १४ ९ ५२	६१ २२	भ.१३/२४उप.४०/३३या., पुत्रदा११व्रतंस्मार्ता,मन्वादि
२५९	३१	सिद्धिः	१२.	बु.	३४	४२	कृ	३५	३	सा	२६	७	ब	७	३७	१	३०	५४	१५	१०	वृषभ	८ १५ ११ १५	६१ २३	ईस्वी नववर्ष२०२६ प्रवेश मध्यरात्री पुत्रदा११व्रतंनिम्बार्का,मन्वादि,
२६०	१	उत्पात	१३.	वृ.	२८	४९	रो	३०	५८	शु	१८	२०	कौ	१	४५	३	२९	५५	१६	११	मिथुन ५६/४	८ १६ १२ ४०	६१ २३	प्रदोष
२६१	२	मानस	१४.	शु.	२३	१७	मृ	२७	१०	शु	१०	४०	व	२३	१७	४	२९	५५	१७	१२	मिथुन	८ १७ १४ ३	६१ २३	भ.२३/१७उप.५०/४५या.,
२६२	३	मुद्गर	१५.	श.	१८	११	आ	२३	५०	ब्र	३/१६	५६/२७	ब	१८	११	५	३०	५६	१८	१३	मिथुन	८ १८ १५ २७	६१ २३	माघस्नान प्रा.,शाकंभरीनवरात्रपूर्ण,पौषीपूर्णिमासर्वे.

गोचर ग्रहाः

बुधास्तपूर्वे,भौमास्तप.
शुक्रास्त पूर्वे

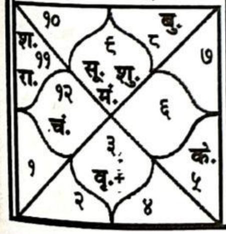

पौष शुक्ला७+८ शनि गण २५५ , इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८ १३ २८ ११	७ २९ १७ ४३	२ २९ १६ २१	८ १० १० ४४	१० २६ १५ ५२	१० १७ १५ ३७	४ १७ १५ ३७
४५ ५२	७६ ३	७ १ +	७५ ४०	१ ५७ मा	३ ११	३ ११
पूषा१	ज्ये.४	पुन.३	मूल४	पूभा२	शत४	पूफा२
सौम्य	दहन	नीर	दहन	नीर	जल	जल

पांच भृगु इणमास में,बहु प्रजा सुभिक्ष। विवाह मंगलाचार चहुं, कहीं कहीं होय दुर्भिक्ष।।१।। धन सूरज मंगल दिनां,दुख दुर्भिक्ष जग जांण। मालव कर्णाटक देवगिरी,होसी जन धन हांण।।२।। पड़वा पौष वद रोहिणी,छत्रभंग को जान। वदी पांचम भौम में,नृप मरण जन हान।।३।। ठंड पड़े पालो जमे,पौष माघ में जोय। रात्यूं कूके लोमड़ी,सही जमानो होय।।४।। रातो बोले कागला,दिन में बोले स्याल। छत्रभंग अन्न संग्रहो,पड़े अणचिंत्यों काल।।५।। बोले मोर डरावणां,कुत्ते रोवे बेढंग। अनहोनी घटना घटे,होवे रंग में भंग।।६। कटकारो करड़ो वचन,प्रात समय कह कोय। बाँणी बासी मुंह की, कबहुक सांची होय।।७।। जलते कालजे श्राप दे,ठंडे मन आशीष। वचन फलै सत्त पुरुष का,माघे विश्वा बीस।।८।।

पौष शुक्ला १५ शनि गण २६२, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८ १८ ४९ १८	८ ११ २२ १३	२ २८ ३० १४	८ १९ १ ३६	१० २६ २९ ३६	१० १६ ५३ २१	४ १६ ५३ २१
४५ ५२	१०५ ३१	७ १ +	७५ ५६	१ ५७ मा	३ ११	३ ११
पूषा२	मूल४	पुन.४	पूषा२	पूभा३	शत४	पूफा२
सौम्य	दहन	नीर	सौम्य	नीर	जल	जल

गोचर ग्रहाः

भौमास्तप.,बुधोदयपूर्वे
शुक्रास्त पूर्वे

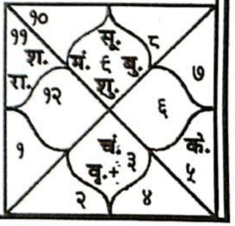

माघ कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः१९४७ (लघुगण २६३से२७७)

दिनांक ४ जनवरी से १८ जनवरी २०२६ ई. तक।

शिशिर ऋतुः। रविर्देवता उत्तरायनेः, दक्षिणगोलेः।
(पौष कृष्ण पक्षः गुजरात महाराष्ट्रेः)

	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	हि. बं.	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
२६३	४	ध्वजः	१.	सू.	१३	४२	पु	२१	१०	वै	५०	२१	कौ	१३	४२	२६/७	७/३०	५/५७	१९	१४	कर्क ६/५०	८ १९ १६ ५१	६१ २३	पूषायांबुध ६/५८ ग १००/५३
२६४	५	प्रजापति	२.	चं.	१०	३	पु	१९	२४	वि	४४	४१	ग	१०	३	८	३०	५८	२०	१५	कर्क	८ २० १८ १४	६१ २३	भ.३५/४२ उप.,
२६५	६	आनंद	३.	मं.	७	२१	श्ले	१८	३३	प्री	४०	३	वि	७	२१	९	३०	५८	२१	१६	सिंह १५/३३	८ २१ १९ ३८	६१ २३	भ.७/२१ या.,सौभाग्यसुन्दरीव्रतं, चतुर्थीव्रतं चंद्रोदय३७बजे तिलकुटी४,गौरी४
२६६	७	चरः	४.	बु.	५	४२	म	१८	५३	आ	३६	२१	बा	५	४२	११	३०	५६	२२	१७	सिंह	८ २२ २१ १	६१ २३	शत्त३कुंभेराहुपूफा१सिंहेकेतु ११/५६
२६७	८	गदः	५.	बृ.	५	२४	पू	२०	२८	सौ	३३	३८	तै	५	२४	१२	३१	५६	२३	१८	कन्या ३६/१०	८ २३ २२ २५	६१ २२	मार्गीपूभा३शनि १७/४४ ग ५/३४ श्रीरामनन्द जयंति,
२६८	९	शुभः	६.	शु.	६	२४	उ	२३	१८	शो	३१	५५	व	६	२४	१३	३१	६	२४	१९	कन्या	८ २४ २३ ४८	६१ २२	भ.६/२४ उप.३७/३३ या.,उषायांशुक्र २/८ ग ७५/४६
२६९	१०	मृत्युः	७.	श.	८	४१	ह	२७	२१	अ	३१	११	ब	८	४१	१५	३१	१	२५	२०	तुला ५६/५३	८ २५ २५ ११	६१ २१	स्वामीविवेकानंदजयं
२७०	११	पद्मः	८.	सू.	१२	७	चि	३२	२५	सु	३१	१६	कौ	१२	७	१६	३१	१	२६	२१	तुला	८ २६ २६ ३२	६१ २१	उषायांरवि १३/११,मकरेशुक्र ४०/३१
२७१	१२	छत्रः	९.	चं.	१६	३०	स्वा	३८	१८	धृ	३२	०	ग	१६	३०	१७	३२	२	२७	२२	तुला	८ २७ २७ ५४	६१ २१	भ.४६/४ उप.,उषायांबुध ५/४१ ग १०३/४४ Aलोहड़ी पंजाब
२७२	१३	श्रीवत्सः	१०	मं.	२१	३६	वि	४४	३६	शू	३३	१०	वि	२१	३६	१९	३२	३	२८	२३	वृश्चि. २८/३	८ २८ २९ १५	६१ २०	भ.२१/३६ या.,उषायांभौम १५/३६ ग ५७/४६,मकरेबुध ४५/३६,बिच्छुड़ा २५/३ उप. A
२७३	१४	सौम्यः	११.	बु.	२६	५५	अ	५१	३०	गं	३४	२३	बा	२६	५५	२०	३२	४	२९	२४	वृश्चिक	८ २९ ३० ३६	६१ २०	मकरेऽर्कः ३५/४४ मकरसंक्रांतिपुण्य,मलमासपूर्ण,षट्तिला११व्रतंसर्वे.
२७४	१५	कालः	१२.	बृ.	३२	६	ज्ये	५७	३६	वृ	३५	३२	तै	३२	६	२१	३२	४	१	२५	धनु ५७/३६	९ ० ३१ ५५	६१ २०	बिच्छुड़ा ५७/३६ या.थलसेना दिवस, तिलद्वादशी, माघवपूजा
२७५	१६	सुस्थिरः	१३.	शु.	३६	५२	मू	६०	०	ध्रु	३६	१५	ग	४	२६	२३	३२	५	२	२६	धनु	९ १ ३३ १८	६१ १९	भ.३६/५२ उप., प्रदोष,मेरु१३जैन
२७६	१७	गद	१४.	श.	४०	४०	मू	३	७	व्या	३६	१६	वि	८	४६	२४	३२	६	३	२७	धनु	९ २ ३४ ३८	६१ १८	भ.६/४६ या.,मकरेभौम ३६
२७७	१८	शुभः	३०	सू.	४३	२३	पू	७	३६	ह	३५	३४	च	१२	१	२५	३२	६	४	२८	मकर २३/२६	९ ३ ३५ ५६	६१ १८	वक्रीपुनर्वसु२गुरु ४२/३७ ग ५५/५६ मौनीअमावस्या,दैवपितृकार्येऽमा.,द्वापरयुगादि, B

B अमा.रविअर्धोदययोग स्नानदाने पुण्यदः।

गोचर ग्रहाः

भौमास्त प.,बुधोदयपूर्वे
शुक्रास्त पूर्वे

माघ कृष्णा ८ सूर्यवार
गण २७०, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	२	८	१०	१०	४
२४	२४	२७	२६	२६	१६	१६
५६	५४	३४	८	५५	२७	२७
१८	२६	६	५०	४	५५	५५
४५	१००	७	७५	५	३	३
५२	५३	१	४६	३४	११	११
		+				
पूषा४	पूषा४	पुन.३	उषा१	पूभा३	शत्त३	पूफा१
सौम्य	सौम्य	नीर	नीर	नीर	जल	जल

माघ कृष्ण पक्षः११ बुध मकरेऽर्क प्रवेशः। वारात् ७ मंदी,सुभिक्ष। नक्षत्रात् ३ सुभिक्ष मंदी। वारनाम मन्दाकिनी,नृपसुखी। नक्षत्र नाम मंदाकिनी,नृप सुखी। संक्रांति काल प्रदोषे,पिशाच सुखी। दक्षिणे मुख,ईशान दृष्टि,पश्चिमे गमनं। कौलव कर्णे खड़ी,तेजी। वाराह वाहन,बैल उपवाहन,पीड़ा। हरित वस्त्र,खड्ग आयुध,ताम्र पात्र, शर्करा भोजन,चंदन लेपन,सर्प जाति। बकुल पुष्प,मोती भूषण, हरित कंचुकी,तरुणी अवस्था,पश्चिम मुख,मृदंग वाद्य,ईति अवस्था। हस्ते रक्तफल,प्रजा दुखी। संक्रांति निवास समुद्रे,मालाकार गृहे, सुभिक्ष मंदी। मु.३० स्थिरता। वत्स निवास दक्षिणे। त्रैमासिक राहु पूर्वे। शुक्रोदय पूर्वे।

माघ कृष्णा ३० सूर्य
गण २७७, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	२	९	१०	१०	४
०	६	२६	७	२७	१६	१६
१७	५७	४४	५६	३४	५	५
४६	३८	५७	१३	७	३६	३६
४५	१०३	७	७५	५	३	३
५७	४४	१	४६	३४	११	११
		+				
उषा२	उषा४	पुन.३	उषा४	पूभा३	शत्त३	पूफा१
नीर	नीर	नीर	नीर	नीर	जल	जल

गोचर ग्रहाः

भौमास्तप.,बुधोदयपूर्वे
शुक्रास्त पूर्वे

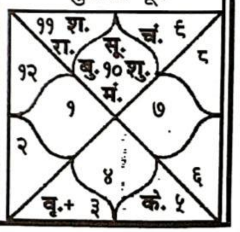

माघ शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः१९४७ (लघुगण २७८से२९१)

	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १४	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	[illegible]	मासक्रम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति
२७८	१९	मृत्युः	१	चं.	४४	५४	उ	११	२	व	३३	५०	कि.	१४	८	२६/२८	७/३२	६/८	५	२९	मकर	[illegible]	[illegible]
२७९	२०	लुंबकः	२	मं.	४५	१	श्र	१३	६	सि	३१	६	बा	१४	५७	२८	३२	८	६	३०	कुंभ ४३/३५	[illegible]	[illegible]
२८०	२१	मैत्रः	३	बु.	४३	५४	ध	१४	२	व्य	२७	१४	तै	१४	४७	३१	३२	८	७	१	कुंभ	[illegible]	[illegible]
२८१	२२	वज्रः	४	वृ.	४१	३८	श	१३	४४	व	२२	३७	व	१२	४६	३४	३१	९	८	२	मीन ५७/४१	[illegible]	[illegible]
२८२	२३	ध्वांक्षः	५	शु.	३८	१८	पू	१२	२१	प	१७	६	ब	९	५८	३७	३१	९	९	३	मीन	[illegible]	[illegible]
२८३	२४	धूम्राः	६	श.	३४	५	उ	१०	३	शि	१०	५२	कौ	६	११	४१	३०	१०	१०	४	मीन	[illegible]	[illegible]
२८४	२५	प्रवर्धमान	७	सू.	२९	१२	रे	७	०	सि	४/२	५६/४७	ग	१	३८	४४	३०	१२	११	५	मेष ७/०	[illegible]	[illegible]
२८५	२६	राक्षसः	८	चं.	२३	४८	अ	३/२४	५६/३७	शु	४६	८	ब	२३	४८	४७	३०	१२	१२	६	मेष	[illegible]	[illegible]
२८६	२७	गदः	९	मं.	१८	१०	कृ	५५	१९	शु	४१	१८	कौ	१८	१०	५०	२९	१३	१३	७	वृषभ १३/२५	[illegible]	[illegible]
२८७	२८	शुभः	१०	बु.	१२	८	रो	५१	१४	ब्र	३३	१७	ग	१२	८	५३	२८	१४	१४	८	वृषभ	[illegible]	[illegible]
२८८	२९	मृत्युः	११	वृ.	६	२२	मृ	४७	२३	ऐं	२५	४४	वि	६	२२	५६	२८	१६	१५	९	मिथुन १९/१८	[illegible]	[illegible]
२८९	३०	पद्मः	१२	शु.	०	५१	आ	४३	५८	वै	१८	१८	बा	०	५१	५९	२८	१६	१६	१०	मिथुन	[illegible]	[illegible]
०	०	०	१३	शु	५५	४८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०
२९०	३१	छत्रः	१४	श.	५१	०	पु	४१	११	वि	११	१७	ग	२३	२४	२७/२	२८	१६	१७	११	कर्क २६/५२	[illegible]	[illegible]
२९१	१	श्रीवत्सः	१५	सू.	४७	४६	पु	३९	११	प्री	४/५१	५६/८	वि	१९	२३	६	२७	१७	१८	१२	कर्क	[illegible]	[illegible]

दिनांक १९ जनवरी से १ फरवरी २०२६ई.तक।
शिशिरऋतुः। रविर्देवता उत्तरायनेः,दक्षिणगोलेः।
卐 (माघ शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

कुंभेभानुः ३६/३३, श्रवणेबुध ४५/२८ग ५०१/१३, श्रवणेशुक्र ३६/२८ग ११५/३३ गुप्तनवरात्रारंभ, A
पंचक ४३/३५ उप. चंद्रोदयमु.३०स्थिरता A श्रीवल्लभजयंति
सावानमा.८मुस., गौरीतृतीयाव्रतं.
भ. १३/४६ उप. ४१/३८ या., तिलचतुर्थी प्रदोष व्यापिनी B नेताजीसुभाषजयंति
अभिजितरविप्रवेश ४/१३ वसंत पंचमी, श्रीसरस्वतीमहोत्सव, श्रीपंचमी, B
श्रवणेरवि १६/४, बुधोदयप. ३६/३५ C मर्यादामहोत्सवजैन, अचलाज्पुत्र७व्रतं,
भ. ३६/१२ उप. ५६/४० या., अभिजितरविनिर्गतो ३, पंचक ७/० या. रथ७, मन्वादि, C
भीष्माष्टमी गणतंत्रदिवस७७वां.
धनेष्ठायांबुध ३६/२८ग ६०/... कृतयुगादी
भ. ३६/१५ उप.,
भ. ६/२५ या., जया११व्रतंसर्वेः, भिष्मद्वादशी,
श्रवणेभौम ४०/२ग ४६/५७, धनेष्ठायांशुक्र ११/२ग ७५/३४ अर्यमाआदित्य१२व्रतं प्रदोष D
D विश्वकर्माजयंति, गुरुगोरखनाथ जयं., कल्पादि,
भ. ५१/० उप., माघजयं., मेलाबाणेश्वर बांसवाड़ा,
भ. २६/२३ या., कुंभेबुध ६/१२, शुक्रोदयप. ४३/२५ होलिका(रोपणी)रोपणम्, E
E रामस्नेहिजयं. प्रयागराज माघस्नानपूर्ण, रविदासजयं., ललिताजयं.

गोचर ग्रहाः

बुधोदय प.,भौमास्त प.
शुक्रास्तपूर्वे

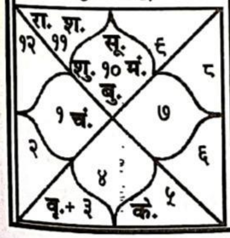

माघ शुक्ला ८ चंद्र
गण २८५, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ ६ २५ २८	६ २० ३१ ५७	२ २५ ५६ २०	६ १८ ३ ५५	१० २८ १८ ४५	१० १५ ४० १३	४ १५ ४० १३
४५ ५७	१०१ १३	५ ५६ +	७५ ३२	५ ३४	३ ११	३ ११
उषा.४	श्रव.४	पुन.२	श्रव.२	पूभा.२	शत.३	पूफा.१
नीर	अमृत	नीर	अमृत	नीर	जल	जल

दुर्भिक्ष छत्रभंग भय,रविवार हो पांच। भ्रष्टाचार आतंक बढ़े, बाहुबली घर जांच।।१।। माघ अमावस पूर्णिमा,रवि शनि मंगलवार। शस्त्र युद्धराजा लड़े,रोग शोक अपार।।२।। रविवारी सप्तमी,माघ सुदी की देख। महाघोर दुर्भिक्ष भय,इण में मीन न मेख।।३।। कर्क मकर संक्रांत जब,एक वार पडंत। माघ सुदी तिथि क्षय हुवे,छत्रभंग करंत।।४।। माघ अमावस बादला,भांत भांत देखाय। भादरवा की पूनमे,चार प्रहर वरसाय ।।५।। वाय बीजली फाटै धरणी। दिवस दिखावे तारो तरणी। कहे माघजी काल स्वभाव। वर्षे धूल चाले वाव।।६।। होत चांदनी रात में,रक्त रंग आसमान। देश विग्रह छत्रभंग हो, माघ कहे जन हान।।७।।

माघ शुक्ला १५ सूर्य
गण २९१, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ ११ २ ३२	६ २६ ५० ४१	२ २५ २० २५	६ २५ ३७ १४	१० २८ ५२ १४	१० १५ २१ ८	४ १५ २१ ८
४६ ५७	६० २	५ ५६ +	७५ ३४	५ ३४	३ ११	३ ११
श्रव.१	धनि.२	पुन.२	धनि.१	पूभा.२	शत.३	पूफा.१
अमृत	अमृत	नीर	अमृत	नीर	जल	जल

गोचर ग्रहाः

भौमास्तप.,बुधोदयप.
शुक्रोदयप.रात्रौ

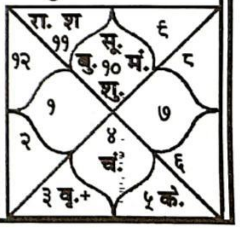

फाल्गुन कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः१९४७ (लघुगण २९२ से३०७)

दिनांक २ फरवरी से १७ फरवरी २०२६ई.तक।
शिशिर/वसंतऋतुः। रविर्देवता उत्तरायनेः,दक्षिणगोलेः।
(माघ कृष्ण पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

लघुगण	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १६	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	लं.	मि.	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
२९२	२	सौम्यः	१.	चं.	४५	१२	श्ले	३८	१२	सौ	५४	१३	बा	१६	१९	२७/६	७/२६	६/१८	१९	१३	सिंह ३५/१२	[illegible]	[illegible]	
२९३	३	कालः	२.	मं.	४३	४५	म	३८	१८	शो	५०	१३	तै	१४	२८	१२	२६	१८	२०	१४	सिंह	[illegible]	[illegible]	शब्बेबरात मु.,
२९४	४	सुस्थिरः	३.	बु.	४३	३५	पू	३९	३९	अ	४७	१२	व	१३	४०	१७	२४	२०	२१	१५	कन्या ५५/१८	[illegible]	[illegible]	भ.१३/४०उप.४३/३५या.,कुंभेशुक्र२६/३६
२९५	५	मातंगः	४.	वृ.	४४	५३	उ	४२	१५	सु	४५	११	ब	१४	१४	२१	२४	२०	२२	१६	कन्या	[illegible]	[illegible]	शत्तभिषायांबुध३२/४६ग५६/१६ चतुर्थीव्रतं चंद्रोदय ५/३ बजे,
२९६	६	अमृतः	५.	शु.	४७	१६	ह	४६	४	धृ	४४	११	कौ	१६	४	२४	२४	२२	२३	१७	कन्या	[illegible]	[illegible]	धनेष्ठायांरवि २१/३०
२९७	७	काणः	६.	श.	५०	४६	चि	५०	५९	शू	४४	२	ग	१९	१	२८	२३	२३	२४	१८	तुला १५/३१	[illegible]	[illegible]	भ.५०/४६ उप., श्रीनाथजीपाटोत्सव(नाथद्वारा)
२९८	८	लुंबक	७.	सू.	५५	१२	स्वा	५६	४४	गं	४४	३२	वि	२२	५९	३१	२३	२३	२५	१९	तुला	[illegible]	[illegible]	भ.२३/५६या.,
२९९	९	मैत्रः	८.	चं.	६०	०	वि	६०	०	वृ	४५	३५	बा	२७	४७	३४	२२	२४	२६	२०	वृश्चि.४६/२८	[illegible]	[illegible]	शत्तभिषायांशुक्र४६/८ग७५/३,बिच्छुड़ा४६/२८उप.श्रीसीताष्टमी
३००	१०	श्रीवत्सः	८.	मं.	०	२२	वि	३	३	ध्रु	४६	५६	कौ	०	२२	३७	२२	२४	२७	२१	वृश्चिक	[illegible]	[illegible]	A व्यापिनी रुद्राभिशेषरात्रिजागरणम्,श्रीदयानन्दबोधोत्सवः
३०१	११	सौम्यः	९.	बु.	५	३८	अ	९	२७	व्या	४८	१२	ग	५	३८	४०	२३	२५	२८	२२	वृश्चिक	[illegible]	[illegible]	भ.३५/१२ उप., श्रीसमर्थरामदास९,
३०२	१२	कालः	१०	वृ.	१०	४७	ज्ये	१५	४४	ह	४९	७	वि	१०	४७	४३	१९	२५	२९	२३	धनु १५/४४	[illegible]	[illegible]	भ.१०/४७या.,कुंभेऽर्कः५४/४१ बिच्छुड़ा१५/४४या.
३०३	१३	सुस्थिरः	११.	शु.	१५	२३	मू	२१	२४	व	४९	२८	बा	१५	२३	४६	१९	२५	१	२४	धनु	[illegible]	[illegible]	पूभा४मीनेशनि३२/५२ग४६/५ विजया११सर्वे
३०४	१४	मातंगः	१२.	श.	१९	९	पू	२६	११	सि	४९	२	तै	१९	९	४९	१८	२६	२	२५	मकर ४२/६	[illegible]	[illegible]	शनिप्रदोष महापुण्यद,गोविन्दपूजा,अतिरात्रयज्ञफल
३०५	१५	अमृतः	१३.	सू.	२१	४५	उ	२९	५२	व्य	४७	३९	व	२१	४५	५३	१७	२७	३	२६	मकर	[illegible]	[illegible]	भ.२१/४५उप.५२/२६या.,शत्तभिषा४बुध५०/२८ग.१४/१० महाशिवरात्रिव्रतं.मध्यरात्रि A
३०६	१६	सिद्धिः	१४.	चं.	२३	६	श्र	३२	१९	व	४५	२२	श	२३	६	५६	१७	२७	४	२७	मकर	[illegible]	[illegible]	धनेष्ठायांभौम४२/२३ग.४६/१७
३०७	१७	उत्पातः	३०	मं.	२३	८	ध	३३	२९	प	४२	५	ना	२३	८	५८	१६	२८	५	२८	कुंभ ३/५४	[illegible]	[illegible]	मीनेभानु४५/०वसंतऋतुप्रा.,पंचक३/५४उप. दैवपितृकार्येऽमा, शिवखप्परपूजा

गोचर ग्रहाः

शुक्रोदयप.,भौमास्तप.
बुधोदय पश्चिमे

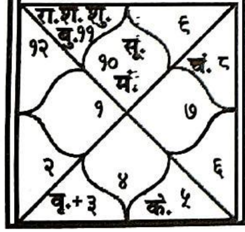

फाल्गुन कृष्णा ८ मंगल
गण ३०० इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९ १८ ५ ६	१० १० ५९ ३४	२ २४ २६ ३३	१० ६ ५७ २०	१० २९ ४२ २७	१० १४ ५२ ३१	४ १४ ५२ ३१
४६ ५७	५८ १६	५ ५९ +	७५ ३	५ ३४	३ ११	३ ११
श्रव.३	शत.२	पुन.२	शत.१	पूभा.३	शत.३	पूफा.१
अमृत	जल	नीर	जल	नीर	जल	जल

फाल्गुन कृष्णा १० गुरु कुंभेऽर्क प्रवेशः। वारात् २ सुभिक्ष,मंदी। नक्षत्रात् ३ सुभिक्ष मंदी। वार नाम मन्दा,द्विजसुखी। नक्षत्र नाम राक्षसी,चांडाल सुखी। संक्रांति काल प्रत्यूषे,पशु पालक सुखी। उत्तरे मुख,अग्निकोणे दृष्टि,पूर्वे गमनं। बालव कर्णे बैठी,सम। व्याघ्र वाहन,अश्व उपवाहन,भय। पीत वस्त्र,गदा आयुध,चांदी पात्र, खीर भोजन,कुंकुम लेपन,वणिक् जाति,जूही पुष्प,कंकण भूषण,पर्ण कंचुकी,कुमारी अवस्था,दक्षिणमुख,भेरी वाद्य,भोग अवस्था,हस्ते पीत फल,लक्ष्मी प्राप्ति। संक्रांति निवास तटे,रजक(धोबी) गृहे,सुभिक्ष,मंदी। मु.३० स्थिरता। संक्रांति पुण्यं पर दिने प्रथम प्रहरे पुण्यकालः। वत्स निवास दक्षिणे। त्रैमासिक राहु दक्षिणे। शुक्रोदय पश्चिमे।

फाल्गुन कृष्णा३० मंगल
गण ३०७, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९ २३ ३३ ३५	१० १९ ५९ २५	२ २३ ४४ ३९	१० १५ ४२ ४७	११ ० २९ ५	१० १४ ३० १५	४ १४ ३० १५
४६ १७	१४ १०	५ ५९ +	७५ ३	६ ४५	३ ११	३ ११
धनि.१	शत.४	पुन.२	शत.३	पूभा.४	शत.३	पूफा.१
अमृत	जल	नीर	जल	नीर	जल	जल

गोचर ग्रहाः

भौमास्तप.,बुधोदयप.
शुक्रोदयप.

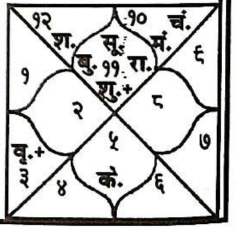

फाल्गुन शुक्लपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः१९४७ (लघुगण३०८से३२१)

	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १४	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	'ग' प्रतिपदा	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति
३०८	१८	मानसः	१.	बु.	२१	५६	श	३३	२६	शि	३७	५१	ब	२१	५६	२९/२	७/१६	६/२८	६	२९	कुंभ	१० ५ ८ १५	६० ४३
३०९	१९	मृद्गरः	२.	वृ.	१९	३३	पू	३२	२१	सि	३२	४२	कौ	१९	३३	६	१५	२९	७	१	मीन १७/३८	१० ६ ८ ५५	६० ४१
३१०	२०	ध्वजः	३.	शु.	१६	८	उ	३०	१५	सा	२६	४६	ग	१६	८	१०	१४	३०	८	२	मीन	१० ७ ९ ३४	६० ३९
३११	२१	प्रजापति	४.	श.	११	४८	रे	२७	२३	शु	२०	१०	वि	११	४८	१४	१३	३१	९	३	मेष २७/२३	१० ८ १० १०	६० ३८
३१२	२२	आनंदः	५.	सू.	६	४९	अ	२३	५५	शु	१३	३	बा	६	४९	१८	१२	३२	१०	४	मेष	१० ९ १० ४६	६० ३६
३१३	२३	चरः	६.	चं.	१	२४	भ	२०	२	ब्र	५/३४	५७/५१	तै	१	२४	२२	१२	३२	११	५	वृषभ ३४/०	१० १० ११ १५	६० ३४
०	०	०	७.	चं.	५५	३९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०
३१४	२४	गदः	८.	मं.	४९	४६	कृ	१५	५७	वै	५०	४	वि	२२	४३	२६	१०	३२	१२	६	वृषभ	१० ११ ११ ५१	६० ३२
३१५	२५	शुभः	९.	बु.	४३	५९	रो	११	५१	वि	४२	२१	बा	१९	५२	३०	९	३३	१३	७	मिथुन ३५/५४	१० १२ १२ २०	६० ३०
३१६	२६	मृत्युः	१०.	वृ.	३८	२९	मृ	७	५७	प्री	३४	५६	तै	११	१४	३३	८	३४	१४	८	मिथुन	१० १३ १२ ४७	६० २८
३१७	२७	पद्मः	११.	शु.	३३	२३	आ	४	२६	आ	२७	५०	व	५	५६	३७	६	३४	१५	९	कर्क ४७/१४	१० १४ १३ १३	६० २६
३१८	२८	छत्रः	१२.	श.	२९	१	पु	१/३०	५६/२०	सौ	२१	१५	ब	१	१२	४१	५	३५	१६	१०	कर्क	१० १५ १३ ३७	६० २५
३१९	१	वज्रः	१३.	सू.	२५	३०	श्ले	५८	६	शो	१५	२०	तै	२५	३०	४५	४	३६	१७	११	सिंह ५८/६	१० १६ १३ ५८	६० २२
३२०	२	ध्वांक्षः	१४.	चं.	२२	५९	म	५७	५८	अ	१०	१२	व	२२	५९	४९	३	३६	१८	१२	सिंह	१० १७ १४ १८	६० २०
३२१	३	धूम्राः	१५.	मं.	२१	३६	पू	५९	२	सु	५	५९	ब	२१	३६	५३	३	३७	१९	१३	सिंह	१० १८ १४ ३७	६० १५

दिनांक १८ फरवरी से ३ मार्च २०२६ ई. तक।
वसंतऋतुः। रविर्देवता उत्तरायनेः,दक्षिणगोलेः।
(फाल्गुन शुक्ल पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

चंद्रोदयमु.४५मंदी, Aफूलेरा दूज,रमजानमा.९मुस.,रोजात्यौहारमु.,
शत्तभिषायांरवि३०/४५पयोव्रतप्रारंभ(भारत)श्रीरामकृष्णपरमहंस जयंती, A
भ.४३/५८ उप.,पूभायांशुक्र२५/३५ग७४/४६
भ.११/४८या.,वक्रीपुनभ्गुरु ७/४ ग४/५५,पंचक२७/२३या.
रंगपंचमी याज्ञवल्क्यजयं., B ज्वालामुखी५५/३९उप.
भ.५५/३९उप.,वक्रीबुध४५/४५बु.१०/१८।३५/२०ग१०/२४होलाष्टक५५/३९उप.प्रारंभ B

भ.२२/४३या., ज्वालामुखी१५/५७या.४९/४६उप.
कुंभेभौम२०/५३ ज्वालामुखी११/५१या.
Cमेवाड,मेलाखाटूश्यामजीप्रा.
भ.५/५६उप.३३/२३या.,बुधास्तप.१३/४५ आमलकी११व्रतंसर्वेफूलडोलशाहपुरा C
मीनेशुक्र३६/४३राष्ट्रीयविज्ञान दिवस आदित्य१२व्रतं,
प्रदोष पयोव्रत पूर्ण,
भ.२२/५९उप.५२/१८या., होलिकादहनंभद्रोपरांतः५२/१८उप.,ब्रह्ममुहूर्ते
उभायांशुक्र ७/४ ग७४/३७,शनिअस्तप.२/३०पूर्णिमाव्रतं,मन्वादि,गणगौरीव्रतारंभ D
Dढुंढोत्सव,ग्रस्तोदित खग्रासचंद्रग्रहण,वसंतोत्सव,फागछारड़ी,जमड़ा,

गोचर ग्रहाः

बुध+गुरुवक्री,भौमास्त-प.,बुध,शुक्रउदय प.

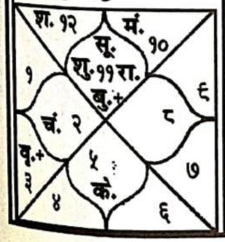

फाल्गुन शुक्ला ८मंगल
गण ३१४ , इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९ २८ ५७ ३६	१० १८ ३५ ७	२ २३ ७ ७	१० २४ २७ २३	११ १ १३ २६	१० १४ ७ ५९	४ १४ ७ ५९
४६ १७	१० २४ +	४ २७ +	७४ ४९	६ ४५	३ ११	३ ११
धनि.२	शत.४	पुन.१	पूभा.२	पूभा.४	शत.३	पूफा१
अमृत	जल	नीर	नीर	नीर	जल	जल

पांच सोम इण मास में,जनता में संतोष। धनधान्य हो मोकलां,बढ़े राज को कोष।।१।। क्रूरवारी अमावसी,फागुनमास की देख। कटाकटी हो द्वंद चहुं ,दुर्भिक्ष उपद्रव लेख।२। फागुणसुदी पड़वा तिथि,शत्तभिष सुगाल को लेख। आठम कृत्तिका सुभिक्ष हो,आद्रा वर्षन्तो देख।।३।। चंद्रग्रहण मंगलवार में,अमंगल करंतो देख। जगह जगह उदंगल करें, अग्नि विस्फोट को लेख।।४।। होली मंगले सोम की,हर्षित नर ओर नार। घर घर होय बधावणा, घर घर मंगलाचार।।५।। ग्रहण समय में बादला,अथवा बिजली गाज। अवगुण सारा गल गया,बजाओं मंगल साज।।६।। गज घोड़ा नाहर मुखा,नर वानर मुख होय। उष्ट्र अज शूकर श्वान मुख,राक्षस कहिये सोय।।७।। मांस भखै मदपान करे, धूम्रपान विषखाय। हीर कहे सुण माघजी,ये राक्षस लक्षय बताय।।८।।

फाल्गुन शुक्ला१५ मंगल
गण ३२१, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१० ४ २१ ३८	१० १७ २२ १७	२ २२ ३५ ५१	११ ३ ११ १२	११ २ ० ४९	१० १३ ४५ ४४	४ १३ ४५ ४४
४६ १७	१० २४ +	४ २७ +	७४ ४९	६ ४५	३ ११	३ ११
धनि.४	शत.४	पुन.१	पूभा.४	पूभा.४	शत.३	पूफा.१
अमृत	जल	नीर	नीर	नीर	जल	जल

गोचर ग्रहाः

बुध,शनि,मंगलअस्तप.
शुक्रोदय पश्चिमे

चैत्र कृष्णपक्षः श्रीविक्रम संवत् २०८२ शालिवाहन शकः १९४७(लघुगण ३२२से३३६तक)

दिनांक ४ मार्च से १८ मार्च २०२६ई.तक। वसंतऋतुः। रविर्देवता उत्तरायनेः,दक्षिणगोलेः। (फाल्गुन कृष्ण पक्षः गुजरात महाराष्ट्रैः)

लघुगण	तारीख	वार+नक्षत्र योगाः	तिथि १५	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	दिनमान	स्टेण्डर्ड जोधपुर उ.	अ.	हि. बं.	मुस्लिम	चन्द्र प्रवेश	प्रातः सूर्य रा.अं.क.वि.	गति	
३२२	४	प्रवर्षमान	१.	बु.	२१	३०	उ	६०	०	धृ	२	४३	कौ	२१	३०	२६/५७	७/२	६/३७	२०	१४	कन्या १४/३६	१० १९ १४ ५४	६० १७	पूभायांरवि४४/५४
३२३	५	मातंगः	२.	वृ.	२२	४०	उ	१	२१	शू	०/२७	५६/१२	ग	२२	४०	२६/१	३	३७	२१	१५	कन्या	१० २० १५ ८	६० १४	भ.५३/३३ उप.,शत्तभिषायांभौम५६/२० ग४६/३४ संत तुकाराम जयंति
३२४	६	अमृतः	३.	शु.	२५	७	ह	४	५४	वृ	५८	५२	वि	२५	७	५	०	३८	२२	१६	तुला ३७/१५	१० २१ १५ २०	६० १२	भ.२५/७ या., चतुर्थीव्रतं चंद्रोदय६/३ बजे कल्पादि
३२५	७	काणः	४.	श.	२८	४८	चि	६	३६	ध्रु	५६	१८	बा	२८	४८	६	६/५६	३६	२३	१७	तुला	१० २२ १५ २९	६० १०	वक्रीशत्तभिषा३बुध३/५६ ग२७/४७
३२६	८	तुंबकः	५.	सू.	३३	१३	स्वा	१५	१२	व्या	६०	०	कौ	१	१	१३	५७	३६	२४	१८	तुला	१० २३ १५ ३६	६० ८	श्रीरंगपंचमी, A केसरियाजीमेला मेवाड़,ऋषभदेवजंयति,
३२७	९	मैत्रः	६.	चं.	३८	१६	वि	२१	२६	व्या	०	१८	ग	५	४४	१७	५७	३६	२५	१९	वृश्चि. ४/५२	१० २४ १५ ४२	६० ६	भ.३८/१६ उप.,बिच्छुड़ा४/५२ उप. एकनाथषष्ठी,
३२८	१०	वज्रः	७.	मं.	४३	३५	अ	२८	४	ह	१	३४	वि	१०	५६	२१	५६	४०	२६	२०	वृश्चिक	१० २५ १५ ४६	६० ३	भ.१०/५६ या., शीतला७पूजनबासोड़ा
३२९	११	ध्वांक्षः	८.	बु.	४८	४०	ज्ये	३४	२२	व	२	५७	बा	१६	७	२५	५५	४१	२७	२१	धनु ३४/२२	१० २६ १५ ४६	६० १	शत्तभिषा२कुंभेराहुमघा४सिंहेकेतु५/२०,बिच्छुड़ा३४/२२ या.शीतलाष्टमी, A
३३०	१२	धूम्रा	९.	वृ.	५३	१०	मू	४०	१६	सि	४	४	तै	२०	५५	२९	५४	४२	२८	२२	धनु	१० २७ १५ ४६	५९ ५९	नक्षत्र पुरुषव्रतंमूलभे,इबादरात
३३१	१३	प्रवर्षमान	१०.	शु.	५६	४६	पू	४५	१७	व्य	४	३२	व	२४	५८	३२	५३	४१	२९	२३	धनु	१० २८ १५ ४३	५९ ५८	भ.२४/५८ उप.४६/४६ या.,रेवत्यांशुक्र५०/१८ ग७४/३४ दशामाताव्रत
३३२	१४	राक्षसः	११.	श.	५९	१४	उ	४६	१५	व	४	२६	ब	२८	०	३६	५२	४२	३०	२४	मकर १/१६	१० २९ १५ ३७	५९ ५४	मीनेऽर्कः४४/३१,मार्गीगुरु२४/५६ वृ.२/३१।४४/५२ ग४/५५,वक्रीशत्त२बुध१५/४६ ग१५/५७ B
३३३	१५	गदः	१२.	सू.	६०	०	श्र	५२	१	प	३	३५	कौ	२९	५१	४०	५१	४३	१	२५	मकर	११ ० १५ २८	५९ ५२	बुधोदयपूर्वे३८/४५,वैष्णव निम्बार्क११व्रतं
३३४	१६	शुभः	१२.	चं.	०	२८	ध	५३	३०	शि	१/४१	५६/४६	तै	०	२८	४४	४६	४३	२	२६	कुंभ ३२/४५	११ १ १५ १९	५९ ५१	पंचक३२/४५ उप.प्रदोष,वारुणीयोग,सब ए कद्र,
३३५	१७	मृत्युः	१३.	मं.	०	२४	श	५३	४६	सा	५४	५३	व	०	२४	४८	४८	४४	३	२७	कुंभ	११ २ १५ १०	५९ ४९	भ.०/२४ उप.३६/४५ या., विष्णुपूजा पौण्डरीक यज्ञ फल
०	०	०	१४.	मं.	५९	५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	० ०	B उभा१शनि४२/४१ ग७/५ पापमोचनी११व्रतं स्मार्ता
३३६	१८	पद्मः	३०.	बु.	५९	३६	पू	५२	५४	शु	५०	४	च	२७	५०	५२	४८	४४	४	२८	मीन ३८/७	११ ३ १५ ६	५९ ४६	उभायांरवि४/५३,मार्गीबुध४३/४५ बु.१०/११।११/१७ ग१५/५७ देवपितृकार्येऽमा,मन्वादि

गोचर ग्रहाः

शनिअस्तप.,शुक्रोदयप. भौमास्तप.,बुधास्तप.

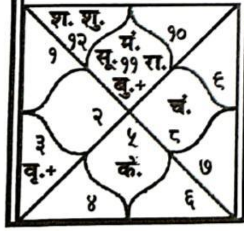

चैत्र कृष्णा ८ बुध
गण ३२९, इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१० १० ३३ २२	१० १४ ५० ४२	२ २२ ० ७	११ १३ ८ ११	११ २ ५४ ५३	१० १३ २० १७	४ १३ २० १७
४६ ३४	२७ ४७ +	४ २७ +	७४ ३७	६ ४५	३ ११	३ ११
शत्त२	शत्त३	पुन.१	उभा३	पूभा४	शत्त३	पूफा१
जल	जल	नीर	सौम्य	नीर	जल	जल

चैत्र कृष्ण पक्ष ११ शनिवार मीनेऽर्क प्रवेशः। वारात् ३ सुभिक्ष मंदी। नक्षत्रात् ३ सुभिक्ष मंदी। वार नाम राक्षसी,चांडाल सुखी। नक्षत्र नाम मंदा,द्विज सुखी। संक्रांति काल अर्धरात्री,राक्षस सुखी। पश्चिमे मुख, ईशान दृष्टि उत्तरे गमनं। बालव कर्णे बैठी,सम। व्याघ्र वाहन,अश्व उपवाहन,भय। पीतवस्त्र,गदा आयुध,चांदी पात्र,खीर भोजन,कुंकुम लेपन,वणिक् जाति,जूही पुष्प कंकण भूषण,पर्ण कंचुकी,कुमार अवस्था ,दक्षिणे मुख,भेरी वाद्य,भोग अवस्था। हस्ते कृष्णफल,मृत्युदाई। संक्रांति निवास पर्वते,कुंभकार गृहे,तेजी,अल्पवृष्टि। मु.४५ मंदी। संक्रांति पुण्यं पर दिने प्रथम प्रहरे पुण्यकालः। वत्स निवास पश्चिमे। त्रैमासिक राहु दक्षिणे। शुक्रोदय पश्चिमे।

चैत्र कृष्णा ३० बुध
गण ३३६ , इष्टः ०/०

मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१० १५ ५६ २१	१० ११ ३२ १८	२ २२ २ ३०	११ २१ ५० १६	११ ३ ४३ १८	१० १२ ५८ २	४ १२ ५८ २
४६ ३४	२८ ४६ +	४ ५५ मा	७४ ३४	७ ५	३ ११	३ ११
शत्त३	शत्त२	पुन.१	रेव.२	उभा१	शत्त२	मघा४
जल	जल	नीर	दहन	सौम्य	जल	अमृत

गोचर ग्रहाः

गुरुमार्गी,बुधोदयपूर्वे मंगल,शनिअस्तप.,

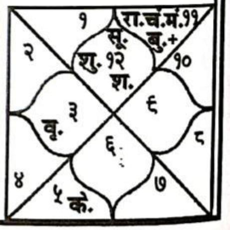

MANAV ASTRO & VEDIC 8586094945 , 8302680069

तेजी मंदी

(सर्वधातु,अनाज,रसकस,तिलहन,शेयर,किराना के विशेष चांस)

(1) शनि की वस्तुयें- काली वस्तुयें लोहा,तेल तिलहन,ऐरण्डी,कोयला,काली मीर्च,शेयर,सीमेन्ट, खनीज आदि। शनि कुंभ राशि पर ता.८ जून २०२५ तक व ता.६ अगस्त से १३ फरवरी २०२६ तक। **कुंभ राशि की वस्तुयें**-सूत कपड़ा, मशीनरी, नशीली वस्तुयें, नमक, पोस्त चर्म, रंगीन वस्तुयें,लकड़ी का सामान, लोहे की वस्तुयें,लोहे की वस्तुयें,नीलम,आयरन शेयर,कस्तुरी,लोहे के बर्तन, बिजली का सामान। **मीन राशि की वस्तुयें**- सोना चांदी जवाहरात, खनीज, पत्थर, चना, घी मक्खन, जलज वस्तुयें, सीप, मोती, मत्स्य, इन्तर, सुगंधित वस्तुयें, पीली वस्तुयें, हवाई जहाज, टीन,रबड़, प्लास्टिक की वस्तुयें, तारगोटा आदि। मीन पर शनि ता.८ जून से ६अगस्त २०२५ तक आगे ता.१३ फरवरी २०२६ से अगले वर्ष में भी। इस वर्ष शनि कुंभ,मीन दो राशियों पर चलेगा। क्रूर ग्रहों के संयोग से भारी तेजी व सौम्य ग्रहों के संयोग से मंदी रहेगी। **गुरु की वस्तुयें**- पीली वस्तुयें,सोना चांदी,ग्वार,अलसी,घी,मक्खन,बैंक बीमा शेयर्स, ऐयर सर्विस, किराणा, बारदाना, रसकस हल्दी, स्टेशनरी, कागज, ग्वार अलसी, रबड़ आदि **वृष राशि वस्तुयें**- गुरु ता.९ मई २०२५तक रहेगा। कंगन, चीन,कांच,सौन्दर्यवस्तुयें,शेयर,मेवें,सफेदवस्त्र,पुष्प,सरसों,गेहूं,बैल,गायें,महिष, रुई,जूट,शक्कर,कपूर,इलायची,काजू ,बिनौला,चांदी,कांसी,वाद्ययन्त्र,जड़ी बूटियां आदि। **मिथुन राशि की वस्तुयें**- गुरु ता.९ मई से ता.७ अक्टूम्बर २०२५ तक व ता.२१ जनवरी से अगले वर्ष भी गुरु रहेगा जिससे सूत, कपड़ा,सूतली, बारदाना, ग्वार, रुई, बाजरा, ज्वार, मक्का,सौंफ,जीरा,कामाशक्ति वस्तुयें, घी, जायफल, अजवायन,दालें,जस्ता,कांगनी,अखबार आदि वस्तुयें। कर्क राशि की वस्तुयें- ता.७ अक्टूम्बर२५ से ता.२१ जनवरी २०२६ तक गुरु कर्क पर रहेगा जो - तंबाकुं , चांदी, मशालें, कांच, पानी, पेयपदार्थ, जलोत्पन्न वस्तुयें, सौन्दर्य वस्तुयें, सफेद वस्त्र आदि प्रभावित होगी। **चंद्र की वस्तुयें**- चंद्रमा करीब ढाई दिन से बदलता रहता है जो क्रूर ग्रहों से तेजी, सौम्य ग्रहों से मंदी करता है अतः सफेद वस्तुयें ऑयल शेयर्स,सफेद कपड़ा, पेट्रोलियम शेयर्स,चांदी,कांच,शराब, चीनी गुड़,सूत,रेशमीवस्त्र,पानी,वर्फ,सौन्दर्यवस्तुयें आदि वस्तुयें प्रभावित होती है।

बुध की वस्तुयें- हरी वस्तुयें,रुई चांदी,सिल्क टेक्सटाईल शेयर, दालें, अनाज, कठोल, ग्वार, मटर,जूट,वनस्पति घी,कागज ,अखबार, सौंफ, जीरा, बारदाना, धनियां, राई सरसों,पिस्ता,बाजरा,कामाशक्ति,पन्ना जवाहरात।

चैत्र शुक्ल पक्षः- पांच शनि का मास तेजीप्रद। १४ दिन का पक्ष चांदी अनाज,घी तेज। ता.३०.३.२०२५को १ रविवारी फल फूल धान्य तेज। चंद्रोदय मु.३० (स्थिरता)चंद्रोदय मेष पर जौ गेहूँ तेज। सूर्य रेवती रुई अच्छी तेज। कुंभे बुध रसकस मंदे। वर्ष प्रवेश से ता.५ मार्च तक बुध,शुक्र वक्री,शनि युत,मंगल दृष्ट होने से सफेद,हरी वस्तुयें,रुई चांदी,शक्कर,सिल्क टेक्सटाईल शेयर,दालें,अनाज, ग्वार,मटर,जूट,सौन्दर्य वस्तुयें,सफेद कपड़ा,स्टील ऐरण्डी में अच्छी तेजी। ता.३१ रेवत्यां रवि सफेद पीली वस्तुयें,रुई चावल चांदी,लवण,सरसों,अलसी,लाख,गेहूं, चणा तेज। २ सोमवारी मूंग घी तेज। ता.१ बुधोदय पू.मंदी का झटका। १ से ३ तक वृक्षे चं.+वृ.युति चंद्र,गुरु की वस्तुयें मंदी। ता.४,५मिथुने चं.+मं.वस्तुयें तेज। लाल वस्तुयें मंदी। वर्ष प्रवेश से ता.२५ तक मीने सू.+रा.युति सोना चांदी, जवाहरात,दवाईयां,पत्थर,सीमेण्ट,प्याज,लसण,लोहा सीसा तेज। ४ क्षया मूंग,घी तेज। ता.३ अप्रेल से १८ मई तक अंगारक योग बाजार भड़केगा(भारी तेजी) संभलकर धंधा करें। ता.३ ६गुरुवारी सब वस्तु १ मास तेजी। वर्ष प्रवेश से वृषे गुरु ता.९ मई तक होने से गुरु की वस्तुयें मंदी में रहेगी। वर्ष प्रवेश से ता.१२ अप्रेल तक मिथुने मंगल से सफेद व हरी वस्तुयें,सूत कपड़ा,सूतली बारदाना आदि तेजी में रहेगी। ता.५ अप्रेल मार्गी बुध बाजार में घटाबढ़ी। ता.८ से १३ अप्रेल तक मीने बु.+सू.+रा.से हरी वस्तुयें,रुई चांदी,शक्कर,सिल्क,टेक्सटाईल शेयर,दालें,अनाज,ग्वार आदि तेज। ता.९ मार्गी शुक्र मंदी का झटका,गाय बैल आदि पशु मंदे। ता.१२ से १५ शनिवारी रुई १ मास मंदी। ता.८ जून तक कर्क मंगल से शनि का षडाष्टक काली लाल वस्तुयें,शेयरों में भारी तेजी आयेगी। शनि की वस्तुयें विशेष प्रभावित होगी।

वैशाख कृष्ण पक्षः- पांच रवि का मास तेजी में रहेगा। ता.१३ अप्रेल २०२५ को १ रविवारी लाल वस्तुयें तेज। ता.१४ अप्रेल से ता.१४ मई तक मेष(उच्च) सूर्य पर शनि की दृष्टि से लाल वस्तुयें,जवाहरात मुद्रा,दवाईयां,सोना, चमड़ा, पत्थर, शेयर,कठोल,मशीनरी,बिजली का सामान में अच्छी तेजी रहेगी। ता.१३ से १९ अप्रेल तक मीने बु.+रा.से रुई चांदी,शक्कर,सिल्क, टेक्सटाईल, शेयर, दालें, ग्वार, जूट,कागज तेज,लसण प्याज लोहा सीसा में मंदी। ता.१५ मार्गी बुध मंदी का झटका। ता.१९ मार्गी मीने शुक्र मंदीका झटका। ता.१९ से ३० अप्रेल

तक मीने बु.+शु.+रा.युति से सफेद हरी वस्तुयें,सौन्दर्य वस्तुयें,स्त्रियोचित वस्तुयें सोना, चांदी जवाहरात खनीज वस्तुयें,सीमेण्ट,घी मक्खन,प्याज लसण सीसा,लोहा,स्टील में मंदी। ता.२१ रेवत्यां बुध रसकस,तेल तिलहन मंदे। ता.२२ पुष्ये भौम सोना तेज। पंचक मंगलवारी तेजी का झटका। ता.२२ से २८ तक चंद्र पापाक्रांत से चंद्रमा की वस्तुयें तेज। ता.२५ योगक्षय घी तेज। १३ क्षय घी ,रुई तेज। अफीम मंदा। ता.२७ अमा.रविवारी भारी तेजी,अनाज संग्रह से लाभ,रुई तेज। भरण्यां रवि रसकस तेज।

वैशाख शुक्ल पक्षः- ता.२८ अप्रेल २५ को १ सोम १३ शनिवारी गेहूँ तेज। ता. २८ चंद्रोदय मु.३० स्थिरता। ता.२९,३० वृषे चं.+वृ.से मंदी का झटका,चंद्रे,गुरु वस्तुयें मंदी। आगे ता.१ मई तक चंद्र की लिखी वस्तुयें मंदी। ता.३० अप्रेल को कुंभे राहु सिंहे केतु ता.८ जून तक श.+रा.युति से शनि की सब वस्तुयें तेज व लसण प्याज सीसा,हरी चर्बी में भी भारी तेजी। ता.१ मई ४ गुरुवारी रुई अवश्य तेज। मार्गी शुक्र रसकस सोना,चांदी,जवाहरात,जलज वस्तुयें,खनीज पत्थर,शेयर, सौन्दर्य वस्तुयें मंदे। ता.४ से ७ तक चंद्र पापाक्रांत चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.३ मेषे बुध+सू. युति ता.१४ मई तक शनि दृष्ट हरी वस्तुयें,रुई,चांदी,शक्कर,सिल्क टेक्सटाईल शेयर,दालें,अनाज,ग्वार,मटर,जूट,कागज,सरसों,कठोल,रसकस तेज। ता.५ बुधास्त पू.तेजी। ता.६ को ६ मंगल मघा से तेजी का झटका। ता.८ से १० तक चंद्र की सम वस्तुयें मंदी। ता.६ मई से ११ जून तक मिथुने गुरु से गुरु की सब वस्तुओं में मंदी का झटका। बुध की हरी वस्तुयें,किराण में मंदी। ता.१० भरण्यां बुध धान्य मंदे। १३ शनिवारी तेजी का मास। ता.१० से १५ तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.११ कृत्तिका रवि कठोल,मिट्टी बर्तन तेज। रवि+व्यतिपात से रुई अवश्य मंदी।

ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः- पांच मंगल तेजी का मास। ता.१३ मई २०२५ को १ मंगली लाल वस्तुयें तेज। ता.१४ वृषेऽर्क बुधवारी चांदी में घटबढ़। रुई,कपास,सूत कपड़ा,सोना तेज। २बुध ६ शनि १० गुरुवारी से घी अवश्य तेज। ता.१५ से १७ तक चंद्र,गुरु की वस्तुओं में मंदी का झटका। ता.१८ से २१ तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.१८ को ६रविवारी अनाज घी,रुई तेज। अफीम में घटाबढ़ी। आश्लेषा भौम रुई मंदी,अनाज तेज। कृत्तिका बुध रुई,चांदी मंदी। रेवत्यां शुक्र रसकस रुई,कपास,चांदी मंदे। ता.१९ पंचक सोमवारी मंदी। ता.२० मई से ४ जून तक वृषे सू.+बु.युति सर्वधातु ,हरी वस्तुयें,रुई चांदी,दालें,ग्वार,जूट मटर,सिल्क टेक्सटाईल शेयर,कागज में घटबढ़ से तेजी। लल वस्तुयें,सोना,जवाहरात,पत्थर, मुद्रा,मंदे। ता.२२ से ३० तक चंद्र की व बुध,शुक्र,गुरु की सब वस्तुओं में मंदी का झटका। ता.२२ को १० गुरुवारी घी तेज। ता.२४ पंचक शनिवारी शेयर तेज। बाजार में तेजी। ता.२५ को रोहिण्यां रवि कठोल,रसकस,तेल तिलहन,सूत सन,बाजरा तेज। चांदी मंदी। योगक्षय घी तेज। रोहिण्यां बुध सोना चांदी रसकस तेल तिलहन,वस्त्र तेज। ता.२६ को १४ सोमवारी रुई मंदी। ता.२७ अमा.मंगली व रोहिणी में रोहिणी तेजी का झटका। अनाज संग्रह से लाभ। ता.२५ से २८ तक लालवस्तुयें मंदी,चंद्र की वस्तुओं में तेजी का झटका।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः- १ मंगल क्षया तिथि रजस्वला पक्ष तेजी का पक्ष। मूंग घी,धान्य तेज। ता.२८ चंद्रोदय मु.३० स्थिरता। मिथुने चंद्रोदय कपास सूत धान्य तेज। २ बुध ६ रवि १० गुरुवारी घी अवश्य तेज। ता.३० मई से ४ जून तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.३१ मेषे शुक्र सोना चांदी,गेहूँ,जौ,चणा आदि अन्न,घी तेज। ता.१ जून मृगेबुध रुई तेज,तिल सरसों उड़द मंदे। ६ रविवारी घी,अनाज,चावल, रुई कपास सूत तेज। ता.४ से १५ जून तक मिथुने बु.+वृ.से गुरु बुध की सब वस्तुयें मंदी,मंदी का अच्छा झटका। ता.४ से ता.६ तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। मंदी का झटका। ता.५ को १० गुरुवारी घी तेज। ता.८ को १२ तिथि वृद्धि रुई मंदी,घी भाव उल्टे। मृगे रवि सोना चांदी में घटबढ़ से मंदी। आद्रा बुध कठोल,तेल तिलहन मंदे। बुधोदय प.रुई मंदी। ता.११ जून गुरु अस्त प.से ता. १२ जुलाई तक रहेगा गुरु की सभी वस्तुयें तेज। तेजी के झटके से सावधानी रखें। कुछ वस्तुओं का बाजार एक तरफा तेजी में रहेगा। ता.६ से ११ तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.११ से ३० जुलाई तक सिंहे मं.+के.की युति से लाल वस्तुयें, खनीज वस्तुयें,रेल्वे शेयर,सोना चावल तेल तिलहन मशीनरी कॉफी चाय, किराणा, अलसी,अरण्ड,मूंगफली,धातु ,प्याज,लसण,हड्डी चर्बी,रसकस, मुद्रा ,पीतल, केशर,तेज।

आषाढ़ कृष्ण पक्षः- पांच गुरु शस्त्रास्त्र तेज। १४ दिन का पक्ष चांदी तेज,रुई अनाज मंदे। ता.१२ जून २०२५ को १ मूल तेजी। ता.१२ से १६ तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.१३ जून भरण्यां शुक्र सोना,चांदी मंदी,रुई,तुष,धान्य तेज। २ शुक्रवारी मंदी। ता.१५ मिथुनेऽर्क रविवारी लालवस्तुयें,सोना चांदी,तेल तिलहन, कठोल, धान्य,सूत तेज। पुनर्वसु बुध रुई ,कपास,सन,चांदी मंदी। ता.१५ से २२ जूनतक मिथुने सू.+बु.+वृ.युति सूत कपड़ा,सूतली,बारदाना,ग्वार,रुई, बाजरा, ज्वार मक्का सौंफ,जीरा,कामाशक्ति वस्तुयें,सिल्क शेयर,दालें तेज। ता.१६पंचक सोमवारी मंदी। ता.१६ से २० तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.१६ को क्षया घी

तेज। ता.२० से २४ तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.२२ आद्रा रवि रसकस,मणी मोती रत्न,अलसी,सरसों,तिलहन तेज। कर्के बुध रसकस तेल तिलहन,सोना तेज। चांदी रुई में घटाबढ़ी। ता.२३ आद्रा २ गुरु रुई में मंदी,सोना,चांदी में घटाबढ़ी। ता.२२ से २६ तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.२४ को १४ मंगल रोहिणी तेजी। ता.२४ जून से १६ जुलाई तक मिथुने सू.+वृ.युति गुरु की वस्तुयें तेज। ता.२५ पुक्षे बुध मंगल हरी वस्तुयें चांदी मंदी। कृत्तिका शुक्र सरसों में मंदी। अमाबुधवारी चांदी रुई अनाज मंदे।

आषाढ़ शुक्ल पक्षः- ता.२६ जून २०२५ को चंद्रोदय मु.४५ मंदी। मिथुने चंद्रोदय कपास, सूत,धान्य तेज। १ गुरुवारी चांदी मंदी। ता.२७ मोहर्रम शुक्रवारी गेहूँ सस्ते बाकी अन्न महंगे होवे। २ शुक्री व ६ शुक्रवारी अन्न सस्ता,रुई तेज। ता.२७,२८ चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.२९ जून से ३ जुलाई तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.१ जुलाई ६ मंगली गुड़ गेहूँ लाल वस्तुयें तेज। ता.३ पूषायां भौम रसकस, नमक,तेल,तिलहन तेज। ता.४ से १३ तक चंद्र की वस्तुयें घटाबढ़ी से मंदी में रहेगा। ता.५ जुलाई से ता.६ अगस्त तक मीने शनि वक्र से मीन राशि की सभी वस्तुयें तेज। एक तरफा तेजी। ता.६ पुनर्वसु रवि सोना,चांदी,कठोल, तिलहन,केसर,सुगंधित वस्तुयें,लाल वस्तुयें तेज। ता.७ से १६ जुलाई तक रोहिणी शुक्र वाहन,स्त्रियोचित सौन्दय वस्तुयें,सफेद वस्तु , सफेद वस्त्र,स्टील, शेयर तेज। ता.८ आद्रा ३ गुरु रुई मंदी। ता.१० वक्री बुध रसकस,धान्य,रुई धातुओं में तेजी। १५ पूषा.से गेहूं,मूंगफली मंदी। ता.१ अगस्त तक बुध,शनिवक्र तेजी,मूंगफली तेज।

श्रावण कृष्ण पक्षः- शुक्र पांच सुभिक्ष। १४ दिन का पक्ष चांदी तेज,रुई,अनाज मंदे। ता.१२ जुलाई २०२५को गुरु उदय पू.से गुरु व मिथुन की वस्तुयें मंदी। ता. १३ बुधास्त प.रुई,हरी वस्तुयें,शक्कर,सिल्क टेक्सटाईल शेयर,दालें तेज। पंचक रविवारी+धनेष्ठा से अचानक तेजी। बाजार तेजी का। ता.१३ से १७ तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.१६ कर्केऽर्क बुधवारी चांदी तेज,धान्य मंदे। ता.१६ जुलाई से १७ अगस्त तक कर्के सू.+बु.से सफेद हरी वस्तुयें मशाले,चांदी सफेद वस्त्र,कांच जलोत्पन्न वस्तुयें,सौन्दर्य वस्तुयें,सिल्क टेक्सटाईल शेयर तेज। ता.१९ मृगे शुक्र रसकस धान्य तेज। कठोल मंदे। ता.१८ से २४ तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.२० पुक्षे रवि तेल तिलहन घी,रसकस,ज्वार,सुपारी,नारियल,मशालें तेज। १० रविवारी घी गेहूं तेज। ता.२१ को १२ क्षय रुई घी तेज। ता.२२ आद्रा ४ गुरु सोना चांदी मोती मूंगा जवाहरात मंदे। ता.२३ वक्री पुक्ष १ बुध सोना चांदी रुई मंदी। ता.२४ मिथुने शुक्र ता.१९ तक मिथुने वृ.+शु.युति से सोना चांदी व गुरु की वस्तु में भारी उठा पटक मंदी से तेजी। अमा.गुरुवारी रुई चांदी अनाज मंदे।

श्रावण शुक्ल पक्षः- ता.२५.७.२०२५ को उफायां भौम रसकस तेज। १ शुक्रवारी रुई तेज। ता.२६ चंद्रोदय मु.३० सम.शनिवारी धान्य तेज। सिंह चंद्रे रसकस धान्य तेज। २ शनिवारी रुई तेज। ता.२४ से ३१ तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.२८ बुधोदय पूर्वे हरी वस्तुयें,रुई चांदी,शक्कर,सिल्क टेक्सटाईल शेयर, दालें,अनाज,ग्वार,मटर,जूट मंदे। ता.२९ को ५ मंगली चांदी लालवस्तुयें तेज। ता.३० आद्रायां शुक्र अन्नों में अचानक मंदी। कन्यायां भौम लालवस्तुयें,मशाले, पाट बारदाना,सोना चांदी,चंदन,रुई,सूत तेज। ता.११ अगस्त मार्गी बुध चांदी, कपड़ा,चावल,रुई पाट शेयर मंदे। जलज वस्तुयें तेज। ता.१ से ९ अगस्त तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.३ आश्लेषा रवि रसकस तेल तिलहन कठोल,सोना चांदी तेज। ता.६ वक्री पूभा.३ कुंभे शनि धान्य तिलहन तेल कठोल तेज। ता.७ पुनर्वसु १ गुरु अनाजों में तेजी,रुई में अचानक मंदी। ता.७ जुलाई से १५ अगस्त तक अंगारक योग बाजार भड़के,चाल देखकर चले। ता.९ पंचक शनिवारी तेजी। १५ शनिवारी रुई १ मास मंदी। श्रवण नक्षत्र से रसकस तेज।

भाद्रपद कृष्ण पक्षः- पांच रवि गर्मी १४ दिन का पक्ष चांदी तेज,रुई,अनाज मंदा, प्रजा बढ़े। ता.१० अगस्त २०२५ को पुनर्वसु शुक्र बालकों में पीड़ा, रुई, कपास, सूत सन चांदी मंदी। अनाज तेज। पंचक रवि धनेष्ठा से रुई अचानक तेज। ता.१० से १६ तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.११ मार्गी पुक्ष २ बुध हरी वस्तुयें सोना चांदी,बुध की वस्तुओं में घटाबढ़ी से मंदी। ता.११ को २ सोमवारी भाद्रपद कृष्णा द्वितीया द्वितीय वार योगतः। धान्य निष्पत्तिद रतुला सम्पदा स्युश्च चतुष्पदे।।१।। धानय उत्पत्ति श्रेष्ठ,पशु सुखी। ता.१३ को ५क्षया घी तेज,अन्यों में मंदी। ता.१५ हस्ते भौम हस्त निर्मित वस्तुयें,रसकस,नमक घी तेज। ता.१६ को ८ शनिवारी गुड़ ३ मास बाद तेज। ता.१६ से २० तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.१७ सिंहेऽर्क रविवारी व ता.२२ तक सू.+के.युति से व १४ सितम्बर तक अंगारक योग से लाल वस्तुयें,रसकस,तेल तिलहन,रत्न शेयर,मशाले तेज। अनाज मंदे। आश्लेषा बुध तुष धान्य अच्छा। रसकस मंदे। ता.१९ से २६ तक कर्के बु.+शु.युति से सफेद हरी,जलज वस्तुयें,कठोल,सौन्दर्य वस्तुयें,रसकस,बुध की वस्तुओं में मंदी का झटका। ता.२२ से शरद् ऋतु प्रारंभ। पुक्षे शुक्र रसकस,सफेद वस्तुयें,जलज वस्तुयें,लाख,चमड़ा मंदे। सूत,सन,ऊन तेज। ता. २३ को अमा.शनिवारी अनाज संग्रह से लाभ,तिल तेल,शनि वस्तुयें तेज।

पुनर्वसु २ गुरु रुई अचानक मंदी। ता.२३ से २७ तक चंद्र की वस्तुयें तेज।

भाद्रपद शुक्ल पक्षः- ता.२४ अगस्त २०२५ को चंद्रोदय मु.३० स्थिरता, पूफायां कन्या चंद्रोदय किराणा,तेज,धान्य सस्ता। रुई में घटाबढ़ी। ता.२५ को २ सोमवारी तेजी। ता.२६ सिंहे बुध हरी वस्तुयें,बुध की वस्तुयें तेज। ता.२८ अगस्त से ५ सितम्बर तक चंद्र की वस्तुओं में मंदी का झटका। ता.३१ पूफायां रवि में लाल वस्तुयें,दवाईयां,घी,ऊनी वस्त्र,जवाहरात,मुद्रा,चावल,चमड़ा, पत्थर तेज। रवि+वैधृत से रुई अवश्य मंदी। ता.१ सितम्बर बुधास्त पू.बुध की वस्तुयें तेज। ता.२ से ७ तक आश्लेषा शुक्र कठोल,तुष धान्य,रुई मंदी। सफेद वस्तुयें, सौन्दर्य वस्तुयें व चंद्र की वस्तुओं में मंदी का झटका। ता.४ चित्रायां भौम चित्रान्न (तुष धान्य) स्त्रियोचित वस्तुयें,धातु व बुध की वस्तुयें तेज। पूफायां बुध अनाज,रसकस मंदे। ता.६ पंचक शनिवारी रुई,अनाज तेज। बाजार तेजी में। ता.७ को खग्रास चंद्र ग्रहण कुंभ पर शनि वस्तुयें तेज व चांदी की वस्तुयें भी तेज। रविवारी ग्रहण अच्छी तेजी। १५ रविवारी सरसू तेज,रुई घटबढ़,अलसी मंदी। धान्य संग्रह से लाभ।

आश्विन कृष्ण पक्षः- पांच सोम मंदी का मास,जनता में शांति। १४ दिन का पक्ष चांदी तेज,रुई,अनाज मंदे। ता.८ सितम्बर२०२५ को योगक्षय घी मंदा। ता. ८ से १२ तक चंद्र वस्तुओं में घटाबढ़ी व ता.१३ से १८ तक चंद्र वस्तुयें मंदी। ता.११ उफायां बुध हरी वस्तुयें बुध की वस्तुयें तेज। चांदी मंदी, रुई में घटाबढ़ी। ता.१३ उफायां रवि लाल वस्तुयें,मेवे,तेल तिलहन तेज। ता.१३,१४कन्या बु.+मं. से बुध की वस्तुयें तेज। ता.१४ से ३० तक तुले मंगल से बाजार तेज। तेल तिलहन, ऐरण्डी, मेवे,रंगीन वस्त्र तेज। ता.१४ को अष्टमी क्षय मंदी। ता.१५ को योगक्षय घी मंदा। ता.१७ कन्यायांऽर्क बुधवारी मेवे लाल वस्तुयें,तेल तिलहन मंदे। ता.१७ सितम्बर से १ अक्टूम्बर तक कन्या सू.+बु.युति से बुध की वस्तुयें तेज। ता.१९ हस्ते बुध हाथ निर्मित (हेण्डीक्राफ्ट) वस्तुयें अनाज मंदे। ता.१९ से २६ तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.२१ अमा.रविवारी अनाज संग्रह से लाभ।

आश्विन शुक्ल पक्षः- १६ दिन का पक्ष चांदी मंदी,प्रजा बढ़े। ता.२३.९. २०२५ को चंद्रोदय मु.३० स्थिरता मंगलवारी से तेजी। कन्या चंद्रे पशुओं का नाश, ब्राह्मणों को पीड़ा,बुध की वस्तुयें तेज। ता.२४ पूफायां शुक्र गेहूँ ,कठोल,बाजरा मंदे। सौन्दर्य वस्तुयें तेज। स्वात्यां भौम चांदी में घटबढ़,सोना में थोड़ी मंदी। सफेद वस्तुयें तेज, लाल वस्तुयें मंदी। ता.२६ हस्ते रवि शनिवारी हेण्डीक्राफ्ट वस्तुयें, किराणा, दालें, बुध की वस्तुयें, सोना, मुद्रा, जवाहरात तेज। चित्रायां बुध चित्रान्न(कठोल) तेज। रुई चांदी में घटबढ़। ता.२७ से ता.३ अक्टूम्बर तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.२८ को ६रवि ज्येष्ठा से सब धान्य से लाभ। रुई,घी,अनाज, चावल,रुई सूत तेज। ता.२९ को ७ सोमवारी तेजी। ता.१ अक्टूम्बर से ता.१७ तक तुले मं.+बु.युति गुरु से दृष्ट से मंगल,बुध की वस्तुयें लाल हरी वस्तुयें,मेवे मशालें, रेल्वे शेयर,सोना तेल तिलहन, किराणा, हल्दी, कॉफी, चाय में तेजी से मंदी। ता.२ को १० गुरुवारी घी तेज। ता.३ को बुधोदय प. से बुध की वस्तुयें मंदी। भूकम्प। पंचक मंदी। ता.४ से ७ तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.४ स्वात्यां बुध रुई में मंदी। ता.५ उफायां शुक्र धान्य तेज,चादी में घटाबढ़ी। ता.६ अक्टूम्बर से पुनर्वसु कर्के गुरु ता.२१ दिसम्बर तक उच्च का गुरु होने से गुरु व चंद्र की वस्तुयें मंदी में रहे परन्तु उच्च का गुरु सोना आदि में ऊँचे भाव भी संभव है। लाईन देख कर चलें। कन्यायां शुक्र ता.१७ तक कन्या सू.+शु.युति में स्त्रियोंचित वस्तुयें,आभूषण आदि तेजी में रहे।

कार्तिक कृष्ण पक्षः- पांच मंगली मास १ क्षया तिथि रजस्वला मास में उठापटक व तेजी रहेगी। १४ दिन का पक्ष चांदी तेज,रुई अनाज मंदे। ता.७.१०. २०२५ को १क्षय घी तेज। ता.८ से २बुध,६रवि,१०गुरुवारी घी अवश्य तेज। योगक्षय घी तेज। ता.११ को चित्रायां रवि को शनिवारी से चित्रान्न(कठोल),लाल वस्तुयें, रसकस,सोना चांदी,जवाहरात,मुद्रा,दवाईयां,चमड़ा,पत्थर तेज। ता.७ से १७ तक कन्या सू.+शु.की युति शुक्र नीचस्थ स्त्रियोंचित वस्तयें,सौन्दर्य वस्तुयें, मशाले, मेवों में अच्छी मंदी संभव है। सूर्य युति तेजीप्रद है बाजार,देखकर चलें। ता.१२ को ६रविवारी अनाज,घी,रुई तेज,अफीम में घटाबढ़ी। ता.८,९ चंद्र की वस्तुयें तेज आगे ता.१० से ता.१६ तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.१४ विशाषा भौम लाल वस्तुयें,कपास रुई,गेहूं ,रंगीन कपड़ा तेज। विशाषा बुध ता.२८ तक तुले मं.+बु.(विशाषा) पर होने से तेल तिलहन,ऐरण्डी,मेवे,रंगीन वस्त्र तेजी से मंदी व बुध वस्तुयें मंदी से तेज रहेगी। ता.१५ हस्ते शुक्र हस्त उद्योग (हेण्डीक्राफ्ट) तेजी से मंदी में रहेगा। ता.१६ से २३ तक चंद्र की वस्तुयें तेज ता. १७ तुलेऽर्क शुक्रवारी मंदी परन्तु ता.२५ तक तुले सू.+मं.+बु.युति से बुध की वस्तुयें तेज होगी। ता.२० दीपावली सोमवारी मंदी व शांतिप्रद। ता.२१ अमा. मंगलवारी अनाज संग्रह से लाभ। तेजी।

कार्तिक शुक्ल पक्षः- ता.२२.१०.२५ को हेमन्त ऋतु प्रारंभ। कार्तिक व्यापारी

नववर्ष १ बुधवारी शुभ व चांदी,अफीम,अनाज,घी तेज। १ बुध ५ रविवारी से गेहूँ तेज,पूर्णिमा से तेजी। ता.२३ चंद्रोदय मु.४५ मंदी। गुरुवारी से अफीम,रुई कुछ तेज, घी शक्कर मंदे। तुले चंद्र व्यापारी सुखी। ता.२४ स्वात्यां रवि,शुक्रवारी से सफेद वस्तुयें,ऐरण्डी,मेवे,रंगीन वस्त्र,रसकस तेज। लाल वस्तुयें,जवाहरात,मुद्रा, सोया,घास,चमड़ा,पत्थर मंदे। ता.२५ से २८ तक वृश्चिके बुध पर गुरु,शनि की दृष्टि से बुध की वस्तुओं में उठाव पटक ज्यादा,तेल तिलहन में मंदी। ता.२४ से ३० तक चंद्र की वस्तुयें तेजी से मंदी में रहेगी। ता.२६ चित्रायां शुक्र चित्रान्न (कठोल) सोना चांदी,सफेद वस्तुयें,स्त्रियोंचित वस्तुयें मंदी। मेवे,तेल तिलहन तेज। ता.२७ को ६ सोमवारी गुड़,गेहूं ,लाल वस्तु तेज। ता.२८ अनुराधा बुध सोना,चांदी,रुई,सूत,सन मंदे। ता.२८ अक्टूम्बर से १६ नवंबर तक वृश्चिके मं.+बु.युति से लाल वस्तुयें,रसकस,शस्त्र,केमीकल्स,चमड़ा,मूंगफली,अरण्ड,तेजाब, सुपारी,बिल्डिंग का सामान व बुध की वस्तुयें तेज। ता.२९ से वर्ष पर्यन्त भौमास्त प.तेज रहने से लाल वस्तुयें,मशालें,खनीज वस्तुयें,रेल्वे शेयर,सोना चावल,तेल तिलहन, अरण्ड, अलसी, मूंगफली,धातु ,शस्त्रास्त्र, मशीनरी, कॉफी, चाय, हल्दी, किराणा आदि में एक तरफा तेजी रहेगी। ता.२९ को ८ बुधवारी चांदी अनाज, तेज,अफीम में घटाबढ़ी। ता.३० से १ नवम्बर तक चंद्र की वस्तुयें तेजी। ता.३१ को १० शुक्रवारी रुई तेज। ता.१ से १६ तक तुले सू.+शु.युति से सफेद वस्तुयें, तेल,तिलहन,ऐरण्ड,मेवे,रंगीन वस्त्र,शक्कर शेयर,टेक्सआईल शेयर,सोना चांदी, सौन्दर्य वस्तुयें,स्टील,कांच तेज,लाल वस्तुयें मंदी। वक्री बुध से बुध की वस्तुयें तेज। ता.२ से ३ तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.४ से ८ तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.२ अनुराधा भौम लाल वस्तुयें,गेहूं ,मशाले तेज। ता.४ वक्री विशाषा बुध ता.२४ तक ता.५ से २१ नवंबर तक बुधास्त प.से बुध की वस्तुयें अच्छी तेज। ता.५ को १५ बुधवारी अनाज तेज,रुई मंदी। शत्तभिषा ४ कुंभे राहु से काली वस्तुयें, प्याज लसण,सीसा,लोहा तेज।

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षः- पांच गुरु का मास मंदी। ता.६.११.२०२५ को विशाषा रवि गुरुवारी लाल वस्तुयें,रसकस,तेल तिलहन मंदे। स्वात्यां शुक्र अनाज मंदे। ता.७ को २ शुक्रवारी चांदी मंदी। ता.८ को १२ तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.१२ नवम्बर से ता.१४ मार्च २०२६ तक गुरु वक्री से गुरु की सब वस्तुयें व ता.२१ दिसम्बर तक चंद्र की सब वस्तुयें आगे बुध की सब वस्तुयें एक तरफा तेज रहेगी। कुछ जिंसों में मार्केट देखकर चलें। ता.१२ से २१ नवम्बर तक बुध,गुरु, शनि तीनों वक्र तीनों की वस्तुयें में एक तरफा तेजी रहेगी। ता.१५ को ११ शनिवारी कपास,सूत खरीदें वैशाख में लाभ होवे। ता.१६ वृश्चिकेऽर्क रविवारी लाल वस्तुयें तेज। ता.१३ से २२ तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.१६ से २५ तक वृश्चिके सू.+मं.+बु.से बुध की सब वस्तुयें व मेवे,रसकस,तेल तिलहन,किराणा, मकान निर्माण सामग्री ,शस्त्रास्त्र,केमीकल्स,सुपारी आदि तेज। ता.१६ विशाषा शुक्र धान्य,रुई मंदी,तुष धान्य तेज। ता.१९ अनुराधा रवि गेहूँ जौ चणा आदि अनाज तेज। ता.२० ज्येष्ठायां भौम चांदी मंदी,रुई में घटाबढ़ी। अमा.गुरुवारी चांदी रुई अनाज मंदे।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षः- १४ दिन का पक्ष रुई चांदी,अनाज,घी तेज। प्रजा बढ़े। ता.२१.११.२०२५ को १ शुक्रवारी रुई तेज। बुधोदय पू.मंदी। मार्गी शनि विपरीत बाजार(तेजी से मंदी)। चंद्रोदय मु.१५ तेजी। वृश्चिक चंद्रे। रुई में घटाबढ़ी से तेजी। ता.२२ को २ शनिवारी रुई तेज। ता.२२ से २६ तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.२४ मार्गी बुध विपरीत बाजार। ता.२५ वृश्चिके शुक्र जो ता.९ दिसंबर तक वृश्चिके सू.+मं.+बु.+शु.यति में सफेद वस्तुयें, सौन्दर्य वस्तुयें, शक्कर टेक्सटाईल शेयर कठोल रुई चांदी, जूट, ऐरण्डी, कांच, सफेद कपड़ा, स्टील तेज। ता.२६ को ६ बुधवारी अनाज १ मास तेज। ता.२७ से २९ तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.२७ अनुराधा शुक्र रसकस चावल,नमक मंदे। योगक्षय घी मंदा। पंचक गुरुवारी मंदी। ता.२७ से २९ तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.३० को १० रविवारी रुई ,घी,अनाज तेज। ता.१ दिसम्बर अनुराधा बुध एरण्ड,बिनौला तेज,सोना चांदी रुई सूत सन मंदे। ता.२९ से ता.१ दिसम्बर तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.३ ज्येष्ठा रवि बुधवारी से लाल वस्तुयें,कठोल रसकस, हींग, ऐरण्ड, गुग्गल मंदे। ता.१ से ५ तक वचंद्र की वस्तुयें तेज। १४ क्षया मूंग,घी तेज। ता.४ को १५ गुरुवारी मंदी।

पौष कृष्ण पक्षः- पांच शुक्र का महिना मंदी। ता.५ दिसम्बर २०२५ को १ शुक्रवारी अन्न मंदे। १ रोहिणी से धान्य संग्रह से ७ वें मास में लाभ। ता.६ से ९ तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.९ मूले धने भौम ता.१५ तक किराणा,सभी धातु , हल्दी,रबड़ प्लास्टिक व पीली वस्तुयें तेज। ता.१० से १२ तक चंद्र की वस्तुयें तेज। आगे ता.१७ तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.१५ दिसम्बर से ता.१ फरवरी २०२६ तक शुक्रास्त पू.से सफेद वस्तुयें,सौन्दर्य वस्तुयें,सफेद कपड़ा,स्टील,कांच रुई चादी, शक्कर व टेक्सटाईल शेयर, ऐरण्डी तेज। ता.१६ मूले धनेऽर्क मंगलवारी से लाल वस्तुयें,मशाले मेवे रसकस,तेल,मसूर,लाल वस्त्र तेज। ता.१७

से २१ तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.१६ से १६ तक वृश्चिके चं.+बु.+शु.युति गुरु दृष्ट से बुध,शुक्र,चंद्र की वस्तुयें घटाबढ़ी से मंदी। बाजार देखकर चलें। ता.१८ से २७ तक धनु सू.+मं.+शु.युति से लाल वस्तुयें मंदी व सफेदवस्तुयें, सफेद कपड़ा,सौन्दर्य वस्तुयें शेयर,रसकस, रुई चादी,स्टील तेज। ता.१७ ज्येष्ठा बुध गुड़,ईख,खांड,घी,चावल तेज। ता.१८ मूले धने शुक्र कंदमूल फल,औषधी,चंदन, सोना चांदी,तांबा तेज। ता.१९ अमा.शुक्रवारी मंदी। अमा.ज्येष्ठा अन्न,तृण तेज।

पौष शुक्ल पक्षः- ता.२०.१२.२०२५ को १ शनिवारी रुई अनाज तेज। ता.२१ चंद्रोदय मु.३० स्थिरता धनु चंद्रे रुई में घटाबढ़ी से मंदी। ता.२१ वक्री पुन.३ मिथुने गुरु से गुरु की व मिथुन राशि की वस्तुयें तेज। ता.२२ से २४ चंद्र चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.२४ बुधास्त पू.बुध की वस्तुयेंव सप्त धातु तेज। ता.२५,२६ चंद्र की वस्तुयें तेज। आगे ता.२७ से ६तक चंद्र की वस्तुयें घटाबढ़ी से मंदी। ता.२६ पूषायां भौम लाल वस्तुयें सोना चांदी,चावल,घी,मूंगफली,उड़द तेज,धान्य मंदे। ६ शुक्रवारी सब वस्तु १ मास तेज। ता.२७ को शनि पंचक व्यतिपात शेयर एकदम तेज। ता.२७ दिसम्बर से १४ जनवरी २०२६ तक धने सू.+मं.+बु.+शु.युति गुरु दृष्ट से कंद मूल किराणा,सप्तधातु,स्टील,हल्दी,प्लास्टिक,रबड़ तेजी से मंदी। ८ क्षया मूंग घी तेज। ता.२९ पूषायां रवि सोमवारी से सर्दी बढ़े। तेल तिलहन रसकस,हल्दी,मेवे,गुग्गल,चांदी,कपूर,ऊनी वस्त्र,सन तेज। ता.३१ दिसम्बर से ८ फरवरी २०२६ तक सर्दी का चालीसा,सर्दी पड़े। पूषायां शुक्र कठोल मंदे। ता.३ को १५ शनिवारी शेयर,अनाज तेज,रुई मंदी।

माघ कृष्ण पक्षः- पांच रवि का मास तेजी कारक है। ता.४ जनवरी २०२६ को पूषायां बुध धान्य,सोना चांदी मंदे,तेल तेज। रोग उपद्रव ज्यादा। रवि+वैधृत से रुई अवश्य मंदी। ता.६ से ८ तक चंद्र वस्तुयें तेज। ता.७ शत्त.३ कुंभे राहु पूफा१ सिंहे केतु से चणा,कठोल में लाभ। ता.८ पूभा.३शनि धान्य तेल,तिलहन, कठोल,मेवे,मशाले तेज। ता.९ से १५ तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.९ उषायां शुक्र सफेद वस्तुयें,सौन्दर्य वस्तुयें,अनाज तेज। रसकस सोना मंदा। ता.११ उषायां रवि रविवारी से लाल वस्तुयें,तुष धान्य,रसकस तेज। मकरे शुक्र सफेद व सौन्दर्य वस्तुयें,शक्कर टेक्सटाईल शेयर,मशाले,रुई चांदी,सोना ऐरण्ड,मेवे मंदी। ता.१२ उषायां बुध हरी वस्तुयें,बुध की वस्तुयें मंदी। ता.१३,१४ को मकरे बु.+शु. से मंदी का झटका। ता.१३ उषायां भौम ता.१८ तक मंगल,बुध,शुक्र तीनों उषा पर होने से बाजार में भारी घटाबढ़ी रहे। ता.१४ से १७ तक मकरे सू.+बु.+शु.युति से हरी व सफेद वस्तुयें तेजी,लाल वस्तुयें मंदी रहे। ता.१६ से ता.२२ तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.१७ जनवरी से १ फरवरी तक मकरे सू.+मं.+बु.+शु. से लाल वस्तुयें मिर्च मशाले मंदे,सफेद वस्तुयें तेज। ता.१८ वक्री पुन.२गुरु रुई में अचानक मंदी,अनाज तेज। अमा.रविवारी अनाज संग्रह से लाभ। ता.१८ से ३० जनवरी तक अंगारक योग बाजार में भारी तेजी आग लगे।

माघ शुक्ल पक्षः- १४ दिन का पक्ष रुई चांदी अनाज घी तेज। ता.१९.१.२०२६ को श्रवणे बुध+श्रवणे शुक्र ता.२४ तक सफेद,हरीवस्तुयें,सफेद कपड़ा,सौन्दय वस्तुयें आभूषण,सोना चांदी में मंदी का झटका व ता.२३ से २ फरवरी तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.२७ तक श्रावण पर सूर्य,बुध,शुक्र होने से लाल वस्तुयें मंदी व सफेद हरी वस्तुयें तेज। ता.२४ बुधोदय प.हरी वस्तुयें,पिस्ता मेवा कठोल में मंदी। ता.२५ को ७ रवि+ रेवती व रुई में अच्छी तेजी। ता.२७ धनेष्ठा बुध सोना, चांदी,मेवे मंदे,रुई में घटावढ़ी। ता.३० श्रवणे भौम धान्य मंदे,सोना चांदी आदि धातु तेज। धनेष्ठा शुक्र गेहूं मंदे,सोना चांदी,रुई कपास,कठोल ज्वार बाजरा तेज। १३क्षय रुई मंदी,घी तेज। ता.१ फरवरी शुक्रोदय प.सफेद वस्तुयें,सौन्दर्य वस्तुयें,आभूषण,शक्कर,टेक्सटाईल शेयर,स्टील आदि में विपरीत बाजार तेजी से मंदी। १५ रविवारी रुई घटावढ़,अलसी मंदी,सरसू तेज। ता.१ से ४ फरवरी तक कुंभे बु.+श.+रा.से हरी वस्तुयें,मेवे तेज। काली वस्तुयें,प्याज लसण मंदे।

फाल्गुन कृष्ण पक्षः- पांच सोम का मास मंदी। १६ दिन का पक्ष रुई गेहूं तेज,चांदी मंदी। ता.३ से ४ फरवरी २०२६ तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.२४ कुंभे शुक्र ता.१२ फरवरी तक कुंभे बु.+शु.+श.+रा.युति से काली वस्तुयें मंदी, हरी सफेद वस्तुयें,सौंदर्य आभूषण,मेवे मशाले शेयर तेज। ता.५ से १४ तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.६ धनेष्ठा रवि लाल वस्तुयें,मशाले मेवें मंदे। ता.९ शत्तभिषा शुक्र सफेद वस्तुयें रसकस,रुई,कपास,सोना चांदी,आभूषण तेज। ता.१० को ८ वृद्धि तेजी। ता.१२,१३ तक कुंभे सू.+बु.+शु.+श.+रा. व ता.१७ फरवरी सू.+बु.+शु.+रा.युति से बाजार में उठा पटक तेजी। ता.१३ फरवरी से वर्ष पर्यन्त मीने शनि से मीन राशि की सब वस्तुयें तेज परन्तु कुछ शनि की वस्तुओं में ६ मास तक मंदी का वातावरण रहता है। बाजार देख कर चलें। ता.१५ रविवारी+व्यतिपात रुई अवश्य मंदी। ता.१५ से २१ तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.१६ धनेष्ठा भौम रसकस सप्तधातु तेज। ता.१७ पंचक मंगली प्रत्येक

MANAV ASTRO & VEDIC 8586094945 , 8302680069

वस्तु तेज। अमा.मंगली अनाज संग्रह से लाभ,१ मास में गेहूं तेज।

फाल्गुन शुक्ल पक्षः- १४ दिन का पक्ष रुई चांदी अनाज,घी तेज,प्रजा बढ़े। ता.१८ फरवरी २०२६ को चंद्रोदय मु.४५ मंदी। शत्तभिषा पर अन्न तेज। १ बुधवारी चांदी,अफीम,अनाज,घी तेज। ता.१६ शत्तभिषा रवि को गुरुवारी से लालवस्तुयें मंदी,मेवे रसकस,मशालें तेज। ता.२० पूभायां शुक्र रुई तेज,धान्य मंदी। ता.२१ वक्री पुन१गुरु रुई में अचानक मंदी। कुंभे सू.+बु.+शु.+रा.युति ता.२० से २५ तक आगे ता.२८ फरवरी तक कुंभे सू.+मं.+बु.+शु.+रा.युति से बाजार तेज। ता.२२ से १ मार्च तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.२३ वक्रीबुध रसकस तेज,अन्न मंदा। ७क्षय बाजार तेज। ता.२५ कुंभे भौम सोना रसकस तेज। रुई चांदी में घटाबढ़ी। ता.२७ बुधास्त प.हरी वस्तुयें मेवा,मशाले,तेज,रुई मंदी। ता.२८ मीने शुक्र तेल तिलहन,रसकस मंदे। रुई चांदी,सफेद वस्त्र,आभूषण तेज। ता.२ से ६ मार्च तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.३ खग्रास चंद्र ग्रहण मंगलवारी लाल वस्तुयें, सफेद वस्तुयें तेज। उभायां शुक्र मूल फलफूल तेज। शनि अस्त प.होने से मीन राशि की सभी वस्तुयें तेज। सुगंधित पदार्थ,चंदन केसर तेज।

चैत्र कृष्ण पक्षः- पांच बुध का मास तेजी। ता.४ मार्च २०२६ को १ बुधवारी अफीम चांदी में घटाबढ़ी। पूभायां रवि रुई,सूत,सोना,चांदी,रसकस,कठोल,रेशम गुग्गल तेज। ता.५ शत्तभिषा भौम लाल काली वस्तुयें तेज। धान्य मंदे। ता.७ वक्री शत्तभिषा ३ बुध हरी वस्तुयें,तेज। सोना चांदी,गेहूं मंदे। ता.७ से १६ तक चंद्र की वस्तुयें मंदी। ता.८ योग वृद्धि घी तेज। ता.१० शत्त.२ कुंभे राहु मघा ४ सिंहे केतु चणा,छौला,गेहूं,गुड़,जौ में लाभ। ता.१३ रेवत्यां शुक्र रुई,कपास,चांदी,चावल, रसकस मंदी। ता.१४ मीनाऽर्क शनिवारी लाल वस्तुयें,सोना चांदी,रसकस,कपास ,शक्कर तेज। मार्गी गुरु मंदी। उभा.१शनि सुगंधित वस्तुयें,धान्य केसर,चंदन, चांदी तेज। ता.१५ बुधोदय पू.मंदी। ता.१४ से वर्ष पर्यन्त मीने सू.+शु.+श.युति व १६ से १८तक कुंभे चं.+मं.+बु.+रा.युति से लाल वस्तुओं में मंदी,सफेद,हरी, वस्त्राभूषण में तेजी। ता.१६ पंचक सोमवारी मंदी। १२ वृद्धि घी रुई मंदी। योगक्षय घी तेज। १४ क्षया रुई घी तेज। ता.१६ से २० तक चंद्र की वस्तुयें तेज। ता.१८ उभायां रवि रुई सोना चांदी रुई रसकस गेहूं तेज। मार्गी बुध सरसों,सोंठ, लाट व चमड़ा मशाले मंदे। आठ दिन घटबढ़ से गेहूँ तेज। अमा.बुधवारी चांदी, रुई ,अनाज मंदे। □□□

दृष्टि दोष नाश मंत्राः

(इस मंत्र से बालक को झाड़ फूंक करनें पर निजर(दृष्टि दोष)ठीक हो जाती है।)

ऊँ अंजनी गर्भ संभूतं कुमारं ब्रह्मचारिणाम्।
दृष्टि दोष विनाशाय हनुमन्तं स्मराम्यहम्।।1।।
अन्नं ब्रह्मा रसो विष्णु र्भोक्ता देवो महेश्वरः।
इति संचिन्त्य भुंजानं दृष्टि दोषो न बाधते।।2।।

गर्भरक्षा यंत्र

४	२	१
२	३	२
१	२	४

इस यंत्र को अष्ट गंध से भोज पत्र पर लिख कर गर्भिणी स्त्री की कटि में बांधनें से गर्भ की रक्षा होती है।

४	२	२
२	४	२
२	२	४

यदि गर्भिणी को दुःस्वप्न दिखे,रात को डरे, चौंके, तो इस यंत्र को लाल चंदन से कोरे वस्त्र पर लिख कर उस गर्भिणी को दिखा कर जलानें से गर्भ सुरक्षित रहता है व भय दूर हो जाता है।

इक्कीसा यंत्र-

४	५	५	७
८	४	८	१
६	३	६	६
३	९	२	७

यह यंत्र अनुभव से प्रमाणित है इस यंत्र को यदि कोई गंगाजल से भोजपत्र पर लिख कर किसी गर्भवती स्त्री को 21 दिन तक धोकर पानी का पान करावे तो उसको प्रसव के समय वेदना नहीं होती है और प्रसव बिना किसी पीड़ा के हो जाता है।

वास्तु विज्ञान

लेखक–अरुण कुमार दवे (वास्तुविज्ञःस्नातक)

{मोबाईल नं.9414688805}

गृह,फैक्ट्री,दुकान,क्वाटर,उद्योग धंधे आदि सभी प्रकार के निर्माण में व ग्राम नगर निवास, बाग, बगीचा, बावड़ी, कुँआ, देवस्थान, दुर्ग निर्माणादि में भी वास्तु विज्ञान के अनुसार कार्य करनें से आर्थिक सम्पन्नता, सुख संतोष व समृद्धिः कीर्ति की प्राप्ति होती है। अतः दिशानुसार निम्न बातों का ध्यान रखना अत्यावश्यक है:-

(१) **पूर्व दिशाः**–वर्गांक १ अ वर्ग (अ ई उ ए = गरुड़) स्वरांक ८, नगर के पूर्व दिशा में ब्राह्मणवास, जलाशय (नदी,तालाब,नाला,कुँआ, बावड़ी,बोरवेल,पानी का टांका,पानी की निकासी) स्नानघर, पूजाघर, बालकनी,बरामदा,पार्किंग,सड़के एक या दो,मुख्य कार्यालय नीचा,छोटी मशीनीरी,छोटागोदाम,तराजु(कांटा) छत का ढलाव,केंटिन (अल्पाहार स्थान), भूमि विस्तार,मुख्यद्वार– **पूर्वदिशा के नौभाग करके ईशान से तीसरे चौथे भाग में बनावें**। वृक्ष– नाग,वट,बरगद, आम,केतकी के श्रैष्ठ है। वैश्य का पूर्व द्वार मुख श्रैष्ठ। मेष सिंह धनुराशि। पीपल भय कारक। घोड़ा मुख नैष्ट।

(२) **पूर्वअग्निकोण के बीच**–दधीमंथन,अर्कशाला,मंथन,आलौडनस्थान।

(३) **अग्निकोण में**–वर्गांक २ क (क ख ग घ ड़=बिलाव), स्वरांक ५,सोनार,लुहार,आदि अग्निजीवियों का वास,पाकशाला,विद्युतगृह, बिजलीधर,जेनरेटर, बॉयलर, ट्रांसफार्म, एयर कंडीशनींग, कूलिंग टॉवर, चिमनी, केंटिन (अल्पाहार स्थान)। टॉयलेट ब्लाक, चौकीदार कक्ष,गैराज, पार्किंग,स्टाफघर ऊँचे वा नीचे,गोदाम। केशर,अनार के वृक्ष। कुँआ भय से दाह।

(४) अग्निदक्षिण के बीच–घी रखने का स्थान। भैंस भेड़ श्रैष्ठ।

(५) **दक्षिण में**–वर्गांक ३ च वर्ग(च,छ,ज,झ,ञ=सिंह),स्वरांक ६, क्षत्रियवास। शयनकक्ष,मेहमान कक्ष, भण्डार (स्ट्रोर), तिजोरी, स्नानघर, शौच घर,पूर्व उत्तर मुख, सीढ़ीयां, जीना गार्डरूम, कार्यालय ऊँचा, स्टाफ क्वाटर ऊँचें व नीचे, भारी मशीनरी, गोदाम बड़ा,तैयार माल का स्थान, चिमनी, स्क्रेपयार्ड, प्रबंधक, मालिक या चेयर मेंन का स्थान। वृक्ष नींबू, गूलर (उदंबर), नारियल, बेल,वट,शुभ। **मुख्यद्वार बींचों बीच में रखें। शूद्रों का दक्षिण द्वार मुख श्रैष्ठ।** वृषभ कन्या मकर राशि। पाकर वृक्ष पराजय।

(६) **दक्षिण नैऋत के बीच**– पाखाना,वृक्ष–जामुन,कदंब।

(७) **नैऋत में** –वर्गांक ट वर्ग (ट ठ ड ढ ण=श्वान),स्वरांक ४, अन्त्यज,चमार वैश्यावास। वस्त्र,शस्त्रघर,शयनकक्ष,तिजोरी,सीढीयां, गार्डरूम, स्ट्रोर, मुख्यकार्यालय ऊँचा,स्टॉफघर ऊँचें,सड़कें दो,भारी मशीनरी,बड़ागोदाम, तैयार माल स्थान, स्क्रेपयार्ड,प्रबंधककक्ष। अनार,इमलीवृक्ष। कुँआ से बालक मरे।

(८) **नैऋतपश्चिम केबीच**–अभ्यासस्थान,विद्या आदि अभ्यासस्थल।

(९) **पश्चिम दिशा में**– वर्गांक ५ त वर्ग (त,थ,द,ध,न= सर्प), स्वरांक ७,जलाशय (नदी, तालाब, कुआ, बोरवेल,पानी का टेंक,पानी की टंकी) भोजनशाला, डायनिंग,शयनकक्ष,तिजौरी, स्नानघर,शौचघर पूर्व उत्तर मुख, सीढ़ीया,गार्डरूम, स्ट्रोर,मुख्य कार्यालय ऊँचा,स्टाफघर ऊँचे,सड़क एक या दो,भारी मशीनरी,बड़ा गोदाम,तैयार माल,स्क्रेपयार्ड,प्रबंधककक्ष,मुख्य द्वार बीच में रखें। अशोक पीपल आम केतकी के वृक्ष शुभ वट अशुभ। **ब्राह्मण का पश्चिम** द्वार श्रैष्ठ। मिथुन,तुला,कुंभराशि। बड़ नैष्ट। घोड़ामुख नैष्ट।

(१०) **पश्चिम वायव्य के बीच**– रोदन कक्ष,संवेदन कक्ष।

(११)**वायव्य कोण में**– वर्गांक ६ वर्ग (प फ ब भ म= मूषक), स्वरांक१,व्याध,शिकारीजातियां,भील,डोम कोली,आदि का वास। अन्नभण्डार, पशुशाला,पाखाना,पाकशाला(रसोईघर)मेहमान कक्ष,भंडार(स्ट्रोर) शौचघर पूर्व उत्तरमुख, सीढ़ीयां, चौकीदार कक्ष, सेप्टीक टैंक, बालकनी,बरामदा,गैराज, कार्यालय व नीचा पार्किंग, स्टाफघर नीचे, सड़क दो,विद्युत घर,हल्की मशीनरी,छोटा गोदाम,तराजु (कोटा),कलिंग टावर,चिमनी छत ढलाव,टायलेट ब्लॉक, केंटिन,मुख्य सड़क। चमेली,बेल का वृक्ष। कुँआ से स्त्रियों की हानि।

(१२) **वायव्य उत्तर के बीच**–रतिकक्ष।

(१३) **उत्तर दिशा में**–वर्गांक ७ वर्ग (य,र,ल,व=हिरण),स्वरांक ३ शूद्र वर्ग का वास। भंडार (स्ट्रोर), जलाशय पानी का टांका, पूजाघर, शयनकक्ष, बालकानी, बरामदा,कार्यालय नीचा, पार्किंग, स्टाफ घर नीचे, हल्की मशीनरी, छोटा गोदाम, तराजु छत का ढलाव, पानी की निकासी,केंटिन,मुख्य सड़क, भूमि विस्तार,**मुख्यद्वार उत्तर दिशा के नौभाग कर वायव्य से उत्तर के बीच तीसरे चौथे भाग में बनावें**। वृक्ष केशर, केथ, पाकर, नारियल, बेल, वट, पीपल श्रैष्ठ हैं। क्षत्रिय का उत्तर द्वार घर। कर्क वृश्चिक मीन राशि। गूलर से नैत्र रोग।

(१४) **उत्तर ईशान के बीच**–औषध,दवाईयां।

(१५) **ईशान कोण में**–वर्गांक ८ श वर्ग (श ष स ह=मेढ़ा), स्वरांक २, रंगरेज, जुलाह, धोबी, आदि का वास। देवस्थान, जलाशय, शयनकक्ष, सेप्टीक टैंक, बरामदा, सड़कें दो,तराजु पानी का बहाव,भूमि विस्तार, मुख्यद्वार। गुलाब, केला,आंवला के शुभ।

(१६)**ईशानपूर्व के बीच में**–सर्वधाम,शयनकक्ष ऊंट,गधा स्थान शुभ,वृक्ष–कटहल,

(१७) **मध्य में**– बनियें,दुकानें, राजद्वार, मन्दिर। आंगन, पार्किंग, छोटी मशीनरी, छोटा गोदामं चंदन बिल्व के वृक्ष घर के पास खैर शत्रु,अंक अरंड धन नाश, आम्र फलनाश। अशोक, नीम शुभ। ▢▢▢

भारत सरकार समाचार पत्र रजिस्ट्रेशन नं.43583/81 "त्रिकाल ज्योति" समाचार पत्र का विशेषांक पोस्टल रजि. पोस्टल रजि.नं. BAM/13/2024-26

अ,इ,उ,ए गरुड़,सर्प वैर	क,ख,ग,घ,ङ बिलाव,मूषक वैर	च,छ,ज,झ,ञ सिंह,मृग वैर	ट,ठ,ड,ढ,ण श्वान,मेष वैर	त,थ,द,ध,न सर्प,गरुड़ वैर	प,फ,ब,भ,म मूषक,बिलाव वैर	य,र,ल,व मृग,सिंह वैर	श,ष,स,ह मेष,श्वान वैर

त्वं ज्योतिः श्री रविश्चन्द्रो विद्युत्सौवर्ण तारकाः। सर्वेषां ज्योतिषां ज्योतिस्त्रिकाल ज्योति स्थिते नमः॥

वर्ष लग्न-चैत्र कृ.अमा. जगल्लग्न,मेषे ऽर्क प्रवेशः

॥ द्वादश भावाः ॥

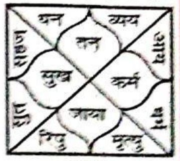

पंचांगीय क्षेत्र में अनुपम्

त्रिकाल ज्योति

अप्रतिम पंचांग

यह पंचांग जोधपुर अक्षांश २६/१९ रेखांश ७३/४ के आधार पर बनाया गया है। इस वृहद् त्रिकाल ज्योति पंचांग में रवि उदयास्त स्टैण्डर्ड टाइम में है शेष तिथ्यादि घटीपल में दिये गये है। लघु त्रिकाल ज्योति पंचांग संपूर्ण घंटा मिनट में अलग से प्रकाशित किया गया है। विशुद्ध भारतीय गणित व विविध शास्त्रीय विषयों से समलंकृत सर्व जनहिताय सर्व जन सुखाय धर्मकृत्योपयोगी है। सरल सुलभ लघु जेबी पंचांग भी उपलब्ध है। इस पंचांग में पुनर्मुद्रणादिक सर्वाधिकार प्रकाशक के अधिनस्थ है।

प्रकाशक व मुद्रक-पं.पृथ्वीराज द्विवेदी-त्रिकाल ज्योति पंचांग कार्यालय,बालोतरा

विक्रेता:- अचलेश्वर बुक सेलर, जालोरी गेट - जोधपुर **मूल्य120/-रुपये**

[illegible]